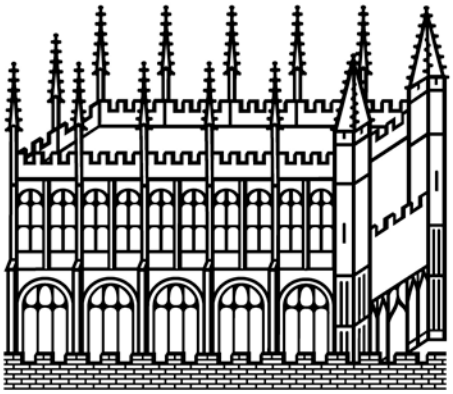

Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

13. D. 28 Hindi Ghul 1

Indian Institute, Oxford.
The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.



E lajul gurba Bhasha

इलाजुल गुरबा भाषा

علاج الغربا بھاکھا

अर्थात

दीनजन चिकित्सा

जिसमें

यूनानी हिकमत और वैद्यों की रीति से सम्पूर्ण रोगों के निदान बिचार और यत्न सुगम और सरल रीति से वर्णित हैं

जिसका

पण्डित प्यारेलाल कश्मीरी रुग्गू ने श्री मन्मुन्शी नवलकिशोर अवध समाचार पत्र सम्पादक की आज्ञा से भाषान्तर किया

पहली बार

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने में छापा गया

अगस्त सन १८८२ ई०

विज्ञप्ति।

इस महीने अर्थात् अगस्त्तसन् १८८२ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचनेके लियेतय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्तमें लिखी हैं और उन का मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्यापारकी इच्छा हो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेज कर क़ीमत का निर्णय करलें॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भाषाइतिहास	२-सभापर्व्व	मयतसवीरवदेपक	श्रीअनुरागरस
महाभारत	३-वनपर्व्व	रामायणतुलसीकृत	सौदागरलीला
१-पहिलेहिस्सामें	४-बिराटपर्व्व	सातोंकाण्ड	रासलीला
आदिपर्व्वसभाप-	५-उद्योगपर्व्व	१-बालकाण्ड	नाटक
र्व्ववनपर्व्व	६-भीष्मपर्व्व	२-अयोध्याकाण्ड	प्रबोधचन्द्रोदय
२-दूसरेहिस्सामें	७-द्रोणपर्व्व	३-आरण्यकाण्ड	रामाभिषेक
विराटपर्व्वउद्योग	८-कर्णपर्व्व	४-किष्किंधाकाण्ड	आनंदरघुनंदन
पर्व्वभीष्मपर्व्वद्रो-	९-शल्यपर्व्वगदा	५-सुन्दरकांड	भ्रमजालनाटक
णपर्व्व	पर्व्वसौप्तिकपर्व्व	६-लंकाकांड	वेदान्त
३-तीसरेहिस्सामें	मयोशिकवदि-	७-उत्तरकाण्ड	योगवाशिष्ठ
कर्णपर्व्वशल्यपर्व्व	शोकवस्त्रीपर्व्व	रामायणशब्दार्थको-	सुंदरविलास
गदापर्व्वसौप्तिकपर्व्व	१०-शान्तिपर्व्व	रामायणकाइतिहास	आनंदामृतवर्षिणी
योशिकपर्व्वविशोक	राजधर्म्ममोक्षधर्म्म	रामायणमानसदीपि-	सांख्यतत्वकौमुदी
पर्व्वस्त्रीपर्व्वशान्ति	वदानधर्म्म	रामायणकविताबली	काव्य
पर्व्वमेंराजधर्म्मआ	११-अश्वमेधआ	रामायणगीतावली	सूरसागर
पदधर्म्ममोक्षधर्म्म	श्रमवासिकमुशल	सटीक	कृष्णसागर
४-चौथेहिस्सामें	पर्व्वमहाप्रस्थान	भुवनेशभूषण	विश्रामसागर
शान्तिपर्व्वदानध-	स्वर्गारोहन	विनयपत्रिकावा-मो	प्रेमसागर
र्म्मअश्वमेधआश्र-	१२ रिवंशपर्व्व	विनयपत्रिकाबा-शि-	ब्रजविलासव-व-छो
मवासिकपर्व्ववमो	रामायणरामविलास	विष्णुपुराण भाषा	कृष्णप्रिया
शलपर्व्ववशाराश्र	रामायणतुलसीकृत	सिंगपुराण	विजयमुक्तावली
स्थानस्वर्गारोहन	रामायणसटीकमध्य	ब्रह्मोत्तरखंड	विजयदोहावली
पर्व्वहरिवंशपर्व्व	मानसदीपिकाकांड	शुक्रनीति	अनेकार्थ
महाभारतपर्व्वअ-	आदि	रसहरिवंससंद्रोदय	छंदोर्णवपिंगल
नेकहदभीहैं	तथाजिल्दबंधी	सुदामाचरित्र	रसराज
१-आदिपर्व्व	तथामोटेअक्षरोंकी-	कृष्णगीतावली	सतसई मू-व-स-

इत्तिलाअ़ाम ॥

यह किताब इलाजुलग़ुरबा भाषा देवनागरी इस्ब मन्शाय दफ़ा १८ ऐक्ट २५ सन् १८ ६७ ई० नम्बर ३०२ पर दाख़िल रजिस्टर गवर्नमेण्ट ऊई कोई साहब बग़ैर इजाज़त इस मतबे के छापने का इरादा न करें ॥

अलमुश्तहर मनेजर
अवध अख़बार

न लक्ष्मी समुद्र से उत्पन्न हुये जो चौदह रत्नों में एक रत्न गिने जाते हैं इनका माहात्म्य इस विद्यामें बहुत है इनके विशेष इस सिद्ध और अपूर्व्व विद्या के जाननेवाले बहुत से सामर्थ्यवान् वैद्य व्यतीत हुये हैं उनका वर्णन कहां तक किया जावे ॥

यूनानियों के ऐतिहासिक प्राचीन ग्रन्थों में लिखा है कि तिबमें मुख्य अफलातूं हुये हैं अर्थात् उन्हींसे इस विद्याका प्रचार हुआ इसके उपरान्त बहुत से बुद्धिमान् हकीम हुये जिनका आज तक डङ्का बज रहाहै ॥

इन दोनों विद्याओं के देखने से भली भांति सूचित होताहै कि इन में एकही प्रकार, वहीनिदान, वही औषधि पर कुछ थोड़ा अन्तर है सो वह मतान्तर वा देशान्तर का कारण है और दोनों विद्या मनुष्योंके लिये जो लिखने के प्रमाण चलेजावें जीवन मूलहैं ॥

यह उत्तमोत्तम पुस्तक इलाजुलग़ुरबा भाषा जिसका नाम उल्यक ने चिकित्साकलिका रक्खा फारसी भाषा में थी जिसको हकीम असग़र अ़ली साहब ने मोलवी मुहम्मद यूसुफ़अ़ली साहब की प्रेरणा से उर्दूमें तरजुमा किया और वह उल्या यंत्रालय के व्ययसे हुआ इसमें मुख्य करके नीचे लिखीहुई बातें और ग्रन्थों से विशेष हैं ॥

जो इलाज सैकड़ों रुपयों के खर्च करने से होता है वह इस पुस्तक के द्वारा थोड़ेही में होता है अर्थात् और ग्रन्थों की औषधियों में सैकड़ों रुपये के खर्च से वह लाभ न हो और इसमें कौड़ियों के ख़र्च से फायदा दिखाई दे इसीलिये यह गरीब और अमीर और सबके लिये गुणदायकहै और बीमारियों की पहिचान और उनके निदान तो इस तरहपर लिखेहैं जो थोड़ा भी लिखा पढ़ा हो समझसक्ता और दूसरे की दवा करसक्ता है इस एकही पुस्तक से मनुष्य अभ्यास द्वारा वैद्य हो सक्ता है ॥

भाषा इतिहास	२- सभा पर्व	रामायण तुलसीकृत	सौदागर लीला
महाभारत	३- वनपर्व	सातों काण्ड	रासलीला
१- पहिले हिस्सा में	४- विराट पर्व	१- बालकाण्ड	नाटक
आदि पर्व्व सभा पर्व्व वन पर्व्व	५- उद्योग पर्व्व	२- अयोध्याकाण्ड	प्रबोध चन्द्रोदय
२- दूसरे हिस्सा में	६- भीष्म पर्व्व	३- आरण्यकाण्ड	रामाभिषेक
विराट पर्व्व उद्योग पर्व्व भीष्म पर्व्व द्रोण पर्व्व	७- द्रोण पर्व्व	४- किष्किंधाकाण्ड	आनंद रघुनंदन
	८- कर्ण पर्व्व	५- सुन्दरकांड	भ्रम जाल नाटक
३- तीसरे हिस्सा में	९- शल्य पर्व्व वगदा पर्व्व सौप्तिक पर्व्व	६- लंकाकांड	वेदान्त
कर्ण पर्व्व शल्य पर्व्व गदा पर्व्व सौप्तिक पर्व्व	मय योषिक व विशोक व स्त्री पर्व्व	७- उत्तरकाण्ड	योग वाशिष्ठ
	१०- शान्ति पर्व्व	रामायण शब्दार्थ को	सुंदर बिलास
योषिक पर्व्व विशोक पर्व्व स्त्री पर्व्व शान्ति पर्व्व में राज धर्म्म आपद धर्म्म मोक्ष धर्म्म	राज धर्म्म मोक्ष धर्म्म दान धर्म्म	रामायण का इतिहास	आनंदाऽमृत वर्षिणी
		रामायण मानस दीपिका	सांख्य तत्व कौमुदी
४- चौथे हिस्सा में	११- अश्वमेध आश्रमवासिक मुशल पर्व्व महाप्रस्थान स्वर्गारोहन	रामायण कवितावली	काव्य
शान्ति पर्व्व दान धर्म्म अश्वमेध आश्रमवासिक पर्व्व मोशल पर्व्व तथा आप्रस्थान स्वर्गारोहन पर्व्व हरिवंश पर्व्व महाभारत पर्व्व अंतेहदा भी हैं	१२- हरिवंश पर्व्व	रामायण गीतावली सटीक	सूरसागर
	रामायण रामविलास	भुवनेश भूषण	कृष्णसागर
	रामायण तुलसीकृत	विनय पत्रिका बा- शि-	विश्रामसागर
	रामायण सटीक मध्य	विनय पत्रिका बा- शि-	प्रेमसागर
	मानस दीपिका कोष	विष्णु पुराण भाषा	ब्रजबिलास ब- व- छो
	आदि	सिंघ पुराण	कृष्णप्रिया
	तथा जिल्द बंधी	ब्रह्मोत्तर खंड	विजय मुक्तावली
	तथा मोटे अक्षरों की-	शुक्रनीति	विजय दोहावली
१- आदि पर्व्व		रसतरंगिणी रसचंद्रोदय	अनेकार्थ
		सुदामा चरित्र	छंदोर्णव पिंगल
		कृष्णगीतावली	रसराज
			सत्सई सू- व- स-

भूमिका ॥

उस सच्चिदानन्द ईश्वर का धन्यबाद है जिसने मनुष्यों के कल्याण निमित्त उनके रोग दोष दूर करने के लिये अपनी अपूर्व्व रचनासे वैद्यक विद्याको प्रकट किया—इस विद्याकी उत्पत्ति इसभांतिहै कि जब देवता और दैत्यों ने समुद्र मथन किया तो धन्वन्तरि जी महाराज दो हड़ोंको हाथ में लेकर समुद्र से उत्पन्न हुये जो चौदह रत्नों में एक रत्न गिने जाते हैं इनका माहात्म्य इस विद्यामें बहुत है इनके विशेष इस सिद्ध और अपूर्व्व विद्या के जाननेवाले बहुत से सामर्थ्यवान् वैद्य व्यतीत हुये हैं उनका वर्णन कहां तक किया जावे ॥

यूनानियों के ऐतिहासिक प्राचीन ग्रन्थों में लिखा है कि तिबमें मुख्य अफलातूं हुये हैं अर्थात् उन्हींसे इस विद्याका प्रचार हुआ इसके उपरान्त बहुत से बुद्धिमान् हकीम हुये जिनका आज तक डङ्का बज रहाहै ॥

इन दोनों विद्याओं के देखने से भली भांति सूचित होताहै कि इन में एकही प्रकार, वहीनिदान, वही औषधि पर कुछ थोड़ा अन्तर है सो वह मतान्तर वा देशान्तर का कारण है और दोनों विद्या मनुष्योंके लिये जो लिखने के प्रमाण चलेजावें जीवन मूलहैं ॥

यह उत्तमोत्तम पुस्तक इलाजुलगुरबा भाषा जिसका नाम उल्यक ने चिकित्साकलिका रक्खा फारसी भाषा में थी जिसको हकीम असग़र अली साहब ने मौलवी मुहम्मद यूसुफ़अली साहब की प्रेरणा से उर्दूमें तरजुमा किया और वह उल्या यंत्रालय के व्ययसे हुआ इसमें मुख्य करके नीचे लिखीहुई बातें और ग्रन्थों से विशेष हैं ॥

जो इलाज सैकड़ों रुपयों के खर्च करने से होता है वह इस पुस्तक के द्वारा थोड़ेही में होता है अर्थात् और ग्रन्थों की औषधियों में सैकड़ों रुपये के खर्च से वह लाभ न हो और इसमें कौड़ियों के ख़र्च से फायदा दिखाई दे इसीलिये यह गरीब और अमीर और सबके लिये गुणदायकहै और बीमारियों की पहिचान और उनके निदान तो इस तरहपर लिखेहैं जो थोड़ा भी लिखा पढ़ा हो समझसक्ता और दूसरे की दवा करसक्ता है इस एकही पुस्तक से मनुष्य अभ्यास द्वारा वैद्य हो सक्ता है ॥

इस प्रकार उर्दू में इस पुस्तक की बड़ी चर्चा हुई तो वैद्यों और सब लोगों की इच्छाहुई कि यदि यह विचित्र सिद्ध पुस्तक नागरी अक्षरों में उल्था करके छापी जावे तो सबके लाभकारी और उपकारी हो, सो श्रीमान् मुंशी नवलकिशोर साहब अवध समाचार सम्पादक ने आज्ञादी कि इस पुस्तक का नागरी में उल्था हो तो इस आधीन ने इसका प्रत्यक्षर देवनागरी ठेठ भाषा में वैद्यक की रीतिपर उल्थाकिया—श्रेष्ठजन जहां भूल पावें क्षमा करके सुधार लें ॥

और इस पुस्तक के अन्तमें कुल तौलों का विस्तार भी लिखदियागया कि पाठकों को किसी तरह का भ्रम न पड़े ॥

अन्तमें ईश्वर से हाथ जोड़कर मांगता हूं कि ऐसे उपकारी सदा चारी धर्म व्रतधारी गुणग्राहक गुणिजनसुखदायक श्रीमन्मुंशी नवलकिशोर साहब अवधसमाचारसम्पादक की आयुरारोग्य प्रताप धनकी वृद्धि करो और चारोंओर यश छाया रहे और यह पुस्तक पढ़ने पढ़ानेवालों और रोगियों को कल्याणदायक गुणदायक हो और हाथों हाथ बिक कर फिर छापने का अवसर मिले ॥

जो कि यह उल्था मुख्य यंत्रालय के व्ययसे हुआ इसलिये कोई इस के छापने का इरादा न करे ॥

(प्यारेलालपण्डितशर्म्माकश्मीरीहुगू)

इलाजुलग़रबा भाषा ॥

प्रकृतिके विषयमें ॥

अर्थात् वह बातें जो प्रकृति से सम्बंध रखती हैं और वह सात हैं एक उनमेंसे तत्वहै और वह चारहैं अग्नि गर्म औरखुश्कहै वायु गर्म व तर है पानी ठंढा व तर ख़ाक सर्द व खुश्क है दूसरे के नौ प्रकार हैं चार विषम गर्म, सर्द, तर, खुश्क और चारसंयुक्तगर्म खुश्क, गर्म तर, सर्द वखुश्क, सर्द व तर नवां मोतदिल, आर्थात् मध्यम, वह दो प्रकार का है मोतदिल हक़ीकी और ग़ैर हक़ीकी मोतदिल हकीक़ी काकोई शरीर नहीं तीसरेदोष और वह चार हैं एकरक्त है जो गर्म व तर है उत्तमोत्तम रुधिर लालरंग मीठा बिना दुर्गंधिहै जो दूनगुणों से बदल जावे वह ठीक नहींदूसरा पित्तकि वह गर्मवखुश्कहै उत्तमोत्तम पित्त लाल ज़र्दी मायल तेज मजाहै और ग़ैरतबई चारहैं मर्री सफरा और सफराय सुर्ख़ी और सफराय कासनी सफराय जंगारी मर्री सफरा वह कि बाजे हिस्से पित्तके जलकर बाकी हिस्सों में मिल जायें और रंगउस का गंदने के सदृश होताहै उसकी उत्पत्ति पक्वाशय में है सफराय जंगारी वहहै कि बिल्कुल जलजाय और रंगत उसकी जंगारकीसी होतीहै वह विषके तुल्यहै उसकी उत्पत्ति कलेजेमें तीसरा कफ जो ठण्ढा व तर है उत्तमोत्तम कफ वह है जो रुधिर होजावे और ग़ैरतबई क़वाम की राह से पतला है उसको माई कहते हैं व गाढ़ा उसको जस्सी अर्थात् गचके सदृश वा अन्य २ क़वाम कि बाजे भाग उसके पतलेहों और बाजेगाढ़े उसको मखातीबो

लते हैं चौथा दोष सौदा वह सर्द और खुश्क है निर्मल सौदा रुधिर का तलछट है उसका कालारंग खटाईलिये और सौदाय ग़ैरतबई (अर्थात् न्यूनाधिक्य) हर दोष के जलजाने से उत्पन्न होताहै यहांतक कि जो सौदा जलजावे और हरदोष का जलना उसके क़वामके गाढ़े होने को कहते हैं और दोषका न्यूनाधिक्य उस दोषके न्यूनाधिक्य के जलजाने सेहै—लाभ—दोषों की उत्पत्ति द्वितीय बेर के पाचन से होतीहै और पाचन शक्तिचारहैं प्रथम पाचन शक्ति पक्वाशय में उसके रसको कैलूस कहते हैं उसका फोग विष्टा है दूसरी पाचन शक्ति कलेजेमें इस प्रकार सेकिभोजनका रस महीन रगोंसे जो हृदय और पक्वाशयमें है हृदयमें आकर पचता है उसके रसको कैलूस कहते हैं उसका फोग मूत्रहै तीसरा हज़म अव्वल अर्थात् रगेंहैं चौथा पचने का रस जोड़ोंमें है इन दोनों पाचक शक्ति का फोग पसीना और मैल होकर बालों के छिद्रोंके द्वारा और कुछ नाक कान आदि से दूरहोता है चौथे जोड़हैं उनके दो प्रकार हैं अलग २ मिले हुये अलग जोड़ोंसे हड्डियां यह शरीर की मूलहैं और वह सब दोसौ अड़तालीस हैं दूसरे कुर्दी तीसरे पट्ठे वह दो प्रकार के हैं एक ब्रह्माण्ड से उगे हैं उसके सात जोड़ेहैं जोड़ोंकी प्रेरणा उन्हीसे है दूसरे हरामगज़से उगेहैं वह इकत्तीस और एक फर्दहै सिवाय गर्दन के सम्पूर्ण जोड़ोंकी प्रेरणा उनके सम्बन्ध रखतीहै चौथे अज़ला अर्थात् अदला वे कुल पांचसौ उन्नीसहैं पांचवें तांत इनदोनों का लाभकि जोड़ों को हिलातेहैं छठे रुबात वह भी महीन पट्ठे हैं वह जोड़ों को बांधते हैं सातवें शरायें अर्थात् हिलने वाली रगें जो मन से उगी हैं और सब वह रगें सिवाय शिरयान वरीदीके दो तरहैं उनमें यहगुण है कि जीवको सम्पूर्ण शरीरमें पहुंचाती हैं और दह अर्थात् स्थिररगें कलेजेकी पीठसे उगी हैंऔरसब औरवह

शिरियान वरीदी के सिवाय दो तरहैं वह सम्पूर्ण शरीर में रुधिर पहुंचातीहैं नवेंझिल्ली कि वह जोड़ों की रक्षा करतीहै और यह सबजोड़ वीर्यसे उत्पन्न होतेहैं दसवां मांस वह गाढ़े रुधिरसेउत्पन्न होताहै और चरबी रुधिर के पतले पानी से उत्पन्नहै और सपेद मांस जिससे मनुष्य मोटा होताहै मेद और मज्जा से संयुक्त है ग्यारहवें त्वचा और बाल और नाखून बाजे हकीमोंने इसकोजोड़ गिना है और बाजों ने मल और आजायरईस जिनसे मनुष्य का जीवन है तीनहैं मन, ब्रह्माण्ड, कलेजा और जिनके कारण मनुष्यत्व रहे चार हैं ऊपर वर्णन कियेहुये तीनजोड़ों में चौथे लिंगेन्द्रीहै पांचवें प्राकृतिक विषयोंमें प्राणहैं वे प्राण एक उत्तम धुवेंके सदृश हैं कि दोषों की उत्तमता से उत्पन्न होतेहैं और प्राण तीनप्रकार के हैं रूह हैवानी कि वह मनमेंहै रूहनफ्सानी उसका स्थान ब्रह्माण्ड है और रूहतबई कि उसका ठिकाना हृदय है छठे मानसी विषयमें बलहै और वह तीन प्रकार का है एक कुव्वत हैवानी जोमनमेंहै दूसरे कुव्वत नफ्सानी जो ब्रह्माण्ड में है तीसरे कुव्वत तबई हृदय में है कुव्वत नफ्सानीभी दो प्रकारकीहै मदरका अर्थात् मालूम करने वाली और हिलानेवाली प्रकटमें पांच हैं सुनना १ देखना २ स्पर्शकरना ३ चखना ४ सूंघना ५ और अप्रकट भी पांच हैं खयाल, वहम, विचार, स्मरण, क्रोध ॥

अवस्था विचार—अवस्थाचारहैं एकबढ़ने वालीजोतीस वर्ष पर्य्यन्त है दूसरी जवानी पैंतीसवर्ष पर्य्यन्त और बाजे चालीसवर्षतक बतातेहैं इसअवस्थामें विशेष करकेपित्तकी प्राबल्यता रहतीहै तीसरी अवस्था अधेड़ साठ वर्षपर्य्यन्त इस अवस्था में शीतका अधिकार रहताहै चौथी अवस्था बुढ़ापा वह साठ वर्षसे आयुके पूर्णहोने पर्य्यन्तहै इसआयु में शीत तरी के साथ प्रकृतिपर वेग करताहै और स्त्री नपुंसक की प्रकृति सर्द सर्दके मुवाफिक होतीहै ॥

सते जरूरिये अर्थात् छः आवश्यक वस्तुका वर्णन—यह प्राणकोउचितहैं एकउनमेंसे वायुहै उत्तमोत्तम वायुवहहै जिसमें बुखार और धुवां मिलानहो वायु हरऋतुमें बद-लतीहै और ऋतुचार हैं—सैफ १ ख़रीफ २ ग्रता ३ रबी ४ हकीमों के विचारमें खरीफ और रबी का समय डेढ़ २ महीने काहै और सैफ़ अर्थात् गरमी और शीत अर्थात् सरदीके साढ़े चार २ महीनेहैं रबीमें वायुका गुण गर्म तर गर्मी में गर्म खुश्क खरीफ में सर्द खुश्क जाड़ेमें सर्द तर होता है और हिन्दुस्तान में तीन ऋतुहैं गरमी बरसात जाड़ा और इन तीनों ऋतुओंका समय चार २ महीने काहैं गरमी फागुनसे शुरूहोतीहै चैत बैशाख ज्येष्ठ पर्य्यंत रहती है यदि गर्मीका प्रारम्भ फाल्गुन सेहै परंतु रात्रि से प्रभात पर्य्यन्त सरदी रहती है और दिनको दोपहर के वक्त गरमी होतीहै इस महीने में सर्दी और गरमीसे बचना चाहिये कि शरीर पीड़ा आदिसे रक्षित रहे और गर्मीमें थोड़ा भोजन करना चाहिये कि इस ऋतुमें ग-रमीके कारण ठण्ढाजल बहुत पिया जाताहै उससे पाचन शक्ति निर्व्वल होजाती है और ठण्ढी चीज़ों का सेवन और ठण्ढे मकानोंमें रहना चाहिये बरसात का प्रारम्भ आषाढ़से आवण भादों कुवार तकहै बरसात की दशा भिन्न २ होती है अबजल बर्षता है पवन शीतल और अब नहीं बरसता गर्म होजाता है यह ऋतु जलवायु के विरुद्ध होने और दर्द और सर्दी गर्मी के कारण शरीर पर अच्छी नहीं और जाड़े का प्रारंभ कार्त्तिक से अग-हन पूस माघ तक रहताहै शीत ऋतु में पाचनशक्ति बल-वान होती है कि भीतर गर्मी रहती है इस ऋतु में अधिक भोजन करना कुछ हर्ज नहीं और परिश्रम गुण कारी है और भूँखके लिये यह ऋतु सम्पूर्ण ऋतुओं से उत्तमहै और गर्मी के प्रारम्भ में बहुधा रोग उत्पन्न होतेहैं जब तक वायु ऋतु के अनुकूल न होजावे—दूसरा

सताजरूरिबा खाना पीना है जिस भोजन से पतला रुधिर उत्पन्न हो उस भोजन को लतीफ (श्रेष्ठ) कहते हैं और जिस भोजनसे गाढ़ा रुधिर पैदा हो उसको कसीफ (नेष्ठ) कहतेहैं और जिस भोजन से उत्तम रुधिर उत्पन्नहो वह भोजन महमूद उलकैमूसहै और जिससे नष्ट पैदाहो वह रस उलकैमूस और जिससे बहुत रुधिर प्राप्त हो कसीरुलगिज़ा कहलाताहै नहीं तो कलीलुलगिज़ा जानना चाहिये कि आरोग्यता के रक्षक को उचितहै कि दोदिन में तीन बेर भोजन करने का अभ्यास रक्खे इस रीति से कि एक दिन में सुबह और शाम दो बक्त और दूसरे दिन दोपहर में दिनको भोजन करे और सच्ची भूख बिना न खावे भोजन बहुत चबावे कि जल्दी पच जावे और जब दो तीन ग्रास की क्षुधा शेष रहै छोड़ देवे कि पचनेके समय अफरा और बोझपक्वाशयमें न हो कि आरोग्यता में उपाधि करके वास्ते भोजन की आधिक्यता से अधिक कोई ख़राबी नहीं इसी कारण हकीम लिखते हैं कि बहुत से शरीर के रोग पेट भरे रहने से उत्पन्न होते हैं और जबतक भोजन पच न जावै जोड़ों का हिलाना जैसे मैथुन और परिश्रम और दौड़ना बुराहै और चिकना भोजन बहुत खाया हो उसकी दुरुस्ती नमकीन चीजसे करै और जो चीज खट्टी खाई हो उसकी दुरुस्ती मीठी चीज से करै जो गाढ़ी औरउत्तम वस्तु जमाहो पहिले उत्तम खावे और सच्ची भूख में अवश्य भोजन करे न खानेसे दुष्ट मल पक्वाशय में गिरतेहैं और मनुष्य के वास्ते उत्तमोत्तम भोजन गेहूंकी रोटी और हलवानका मांसहै यह भोजननहीं किन्तुयह भोजन और औषधि दोनों का काम देता है॥

अन्न का विषय॥

मनुष्य के लिये उत्तम अन्न गेहूं है कि पालनशक्ति

अधिक रखता है और गर्मी और सरदी में सम है इसके उपरांत खानेको चावल भी उत्तमहैं जितने सुगन्ध वाले और महीन और पकाने पर लम्बेहों और साबत रहें और चावल गर्मी और सरदीमें समान परन्तु दूसरे दरजे में खुश्क हैं और बाजे हिन्दुओं के विचार से ठंढाहै और मुख्य करके गरम स्वभाव में गर्मी ठंढेस्वभाव में सरदी पैदा करता है और लाल और गुन्दे चावल पालन शक्ति में कम हैं और कब्ज अधिक करते हैं और गेहूं की भूसीमें पकाने से चावलकी दुरुस्ती होजाती है इनके उपरांत मूंगहै यह ठंढा और कुछ खुश्क है और शीघ्र पचता है और इतना अफरा नहीं करता इसी लिये बहुतसे वैद्य इसको रोगों में खाने को देतेहैं इसके उपरांत चना वहगरम है छिलका उसका तरहै उस में पालन शक्तिअधिक और बलदायकहै परन्तुउदरमें पवन पैदाकरताहै उसके उपरांत जो ठंढा खुश्क हल्का और अफराका करनेवालाहै और कावित्जहै और पुराने जौ कि जिसपर एक बर्ष बीता हो और मसूर और अरहर इन सबमें मसूर कुछ खुश्क सरदी सेहैऔर उसका छिलका अरहर से गरम है अरहर गरम और खुश्क और कई वैद्यों के विचारसे मसूर के अनुमान है और अफरा मसूरसे अधिक रखताहै यह दोनों बुरे दोष पैदा करते हैं और उड़द सरद और तर है और देर में पचता है उसके दुरुस्त करनेवाली सोंठ और हींग है और अरहर और मसूर से पालनशक्ति अधिक रखता है और और इतना कब्ज का करनेवाला नहीं जो पच जावे तो अपनी लससे दूध और वीर्य पैदा करताहै और बाजरा ठंढा और खुश्क है और कावित्ज और पालनशक्ति कम रखता है और खून को पैदा करता है और इसी कारण मुख में दाना पैदा करता है और खुश्की और प्यास अधिक लाता है इसीकारण हिन्दू और लौकिक में इस

को गरम जानते हैं और दुरुस्त करनेवाला दूसका दूध है जवार कि सपेद और गुंदी हो अफरा कम करती है और खाने में अच्छी है परन्तु बद्धकोष्ठकारक है मोठको हिन्दू गरम और खुश्क जानतेहैं अफरा करती है और बुरे दोषों के उत्पन्न करनेवाली और देर में पचती है और मटर अफरा करनेवाला और उपद्रवी दोष का पैदा करनेवाला और अतीसार का कारणहै देहातियों का अन्न, काकुन और मंडवा और सावां और कोदो हैं मंडवा और काकुन सावां और कोदोंसे उत्तम है यह तीनों ठण्ढे खुश्क बद्धकोष्ट करनेवाले और हल्के हैं इनके दुरुस्त करनेवाला घी है—लाभ—खमीरी रोटी जो खट्टी नहो सादी रोटीसे उत्तम भोजनहै और जल्दी पचती है परन्तु सादी रोटी से अफरा अधिक करती है और सादी रोटी खमीरी से देरमें पचती है और मैदेकी रोटी बज़ुत भारी है और वह रोटी जिस मेंभूसी अधिक हो हल्की है और उससे सुद्दा नहीं पड़ताहै और गरम रोटी खाना कोष्ठकी तरीको खुश्क करताहै ठंढी रोटी कोष्ठको तर करती है और जो रोटी कि सर्दी और गर्मीमें समान है उसका खाना उत्तमहै और सूखीरोटी खुश्क करनेवाली और देरमें पचती है और बाजरे और जवारकी रोटी ठण्ढी खुश्क और कब्ज़ करनेवाली और कोष्ठ की हानिकर है जौकी रोटी बाजरे से शीघ्र पचती है परन्तु ठण्ढी खुश्क और अफरा करती है जानना चाहिये कि उत्तम भोजन मनुष्य के लिये मांस है पैगम्बर साहबके बचनके अनुकूल लोक परलोक का सुंदर भोजन मांस है और परदार जानवरों का मांस चारपायों के मांस से हल्का है परदार जानवरोंमें मुरगा तीतर बटेर हंस लवा चिड़िया सब्जक का मांस उत्तम है और चौपायों में बकरी भेड़ मेढा हिरन विशेष करके इनके बच्चों का मांस उत्तम है परन्तु हिरन के मांसमें गर्मी अधिक

है और भैंस और ऊँट और गायका मांस मोटा है क्योंकि जितना पशु बड़ा और बड़े शरीर का हो मांस उसका मोटा होता है और मांसमें तरकारी डाल कर रोटीसे खाना वह भोजनही मानों औषधि है और सादा कलिया और कबाब उत्तम सालन है और कलिये से उत्तम मांस पैदा होता है और कबाब से अच्छा नहीं और पुलाव उत्तम भोजन है और दूध चावल से मनी अर्थात् वीर्य्य पैदा होता है॥

जलका वर्णन॥

उत्तम नदी का जल है उसके उपरान्त कुएं का सच्चो प्यास लगनेपर पानी पीना चाहिये चाहे भोजन करते हुये लगे या उसके पीछे—और भोजन करने के उपरान्त दो तीन घड़ी के पीछे पानी पीना अच्छा है इसके उपरान्त भोजन करनेके पीछे तत्काल भोजन में पानी पीना उत्तम नहीं परन्तु जिस मनुष्यकी गरम प्रकृति हो और कोष्ठ में गर्मी रखता हो उचित है कि भोजन में थोड़ा पानी पिये एकही बेर बहुत न पी ले और भूख के समय पानी कम पिये चूसने की रीति से पिये या पानीके बदले शरबत या थोड़ा भोजन खाकर पिये कि हानि कम हो और निहार मुंह पानी पीना निषेध है बिबुढ़ापे और रोगोंका कारण है और इसी प्रकार रात्रिको जागतेही पानी पीने से नक्सला पैदा होता है और परिश्रम करने और मैथुन और नहाने और तर मेवोंके सेवन जैसे तरबूजे और खरबूजे आदिके उपरान्त पानी पीना बहुतही अवगुण करता है और हर समय बहुत पीना हानिकर है और बेकलईदार तांबेके बर्त्तन में और शीशेके बासन में पानी पीना मना है जो सफर आदिमें तरह २ के पानी पीने का अवसर हो तो उसके अवगुण को दूर करने के लिये कच्चा प्याज खाना चाहिये और जो भंग पीने का

अभ्यास रखता हो तो उससे भी पानी नहीं लगता तीसरा सताजरूरया सोना जागना है चित सोना मना है कि वह विपरीत स्वप्नों और दिमाग़ अर्थात् भेजे का हानिकारकहै जो अभ्यास भी हो तो छोड़दे और पट सोना इस तरह से कि शिर को तकिये पर ऐसा रक्खे कि मुंह और दोनों आंखें दाहने या बायेंतरफ झुकें गुण करताहै और भोजन पचाताहै और बाईं और दहिनी करवट सोना हानि नहीं रखता और निहार सोना नजला पैदा करता है और भूख में सोना शरीर को क्षीण करता है और धूपमें सोना मना और चांदनीमें गुणदायक है और बज़्त सोना सरदी और तरी का चिन्ह है और अधिक जागना गर्मी और खुश्की की निशानी है और सोने और जागने में समभाव रखना उत्तम है अर्थात् न बज़्त जागे न बज़्त सोवे क्योंकि बज़्त जागना क्षीणता और तबाही का कारण है और बज़्त सोना सांदगी और इन्द्रियोंके आलस्य का कारण है—चौथा सता जरूरिया लाभ कारी वेगों का रोकना और उपद्रव कारक मल से शरीर को खाली करना है मनुष्य को दो बेर दिशा जाना शरीरके आरोग्यता का कारणहै और बद्धकोष्ठ की दशा में उचित है कि उत्तमोत्तम शोरबों और पालक के साग और फिसलाने वाली चीज़ों आदि का सेवन करें और क़ब्ज करने वाले द्रव्योंसे पथ्य करेंकि क़ब्जसे भूख जाती रहती है और जो दो समय दिशा जावे और मल नरम हो क़ब्ज करने वाले द्रव्यों का सेवन करें हर तरह से अपना लाभ विचारलेपांचवां सता जरूरिया उसमें एक क्रोध और दूसरे खुशीहै इन दोनों से जीवको बाहर की ओर प्रेरणा होतीहै और गरमी और सरदी का गुण शरीरमें मालूम होताहै कि प्रकटमें शरीर गरम और अंदर ठंढा होजाताहै तीसरे भय-चौथे चिन्ता और उनदोनोंसे जीवको अन्दरकी ओर प्रेरणा होतीहै प्रकट

मेंशरीरठंढाऔर अन्दर गरम होजाता है—पांचवें लज्जा इसमेंपड़िले जीव भीतर प्रेरणा करता है फिर बाहर की ओर—सो किसी समय प्रकटमें गरम होताहै और किसी समय अन्दर इसवास्ते लज्जावान् का मुख कभी लाल होजाता है—छठा सतावरूपिया स्थिर और अस्थिरताहै सामान्य शरीरका फिलना चलना शरीर को गरम और मल को निकालता है और अधिक चलन शक्ति का सेवन शरीर को ठंढा करता है इसकारण कि उससे पित्त पचता है और अधिक स्थिरता से भोजन नहीं पचता और चलने से यहबड़ा भारी गुण है कि भोजन को कोष्ठ से पक्वाशय में पहुंचताहै—वह परिश्रम कि जिससे सब शरीरके अंग फुर्त्तहों बदनकी कीमियाहै अंगकी सूरत दुरुस्त करताहै और रोगों को दूर करने वाला और गरिष्टता को पचाने वाला और स्वभाव का बल दायक और शरीर को आरोग्य देनेवाला है और मुख्य एक अंग का श्रम उसी अंग का बलदायक है परन्तु समभाव हो अधिक नहीं और मलना और दबानाभी एक प्रकारका श्रमहै किमल को दूरकरे परंतु बहुत मलने और दबानेसे शरीर क्षीण होजाता है और सम भाव से मलने और दबाने से पुष्टता होती है मैथुन का उपाय वह भी शरीर में आवश्यक है मैथुन समभाव से आवश्यकता के अनुकूल बलवान् को बलवान् करता है और उसकी यह रीतिहै कि अति आवश्यकता पर लिंग खड़ा हो तो मैथुन करे इस शर्त्तपर यह बात सहज स्वभाव और सुंदरस्त्रीके विचारने और उसकास्वरूप देखने बिना केवल वीर्य की अधिकता और इच्छासे हो क्योंकि बुद्धिमानों ने लिखाहै कि वीर्य का बिन्दु जीव का जल है कि उस से मनुष्य उत्पन्न होता है उस बहुमूल्य मोती को कुसमय और व्यर्थ अलग न करना चाहिये और अधिक मैथुन की हानि लिखी नहीं जासक्ती हैं जो पुरुष

युवावस्थामें अधिक वीर्यसे बहुतही मैथुन करतेहैं उसकी अधिकता से जल्द बूढ़े होकर दुःख झेलते हैं और बहुत बुरा है—मैथुन वहहै कि बिना इच्छा और रंज सेहो और कम उमर और बढ़िया और ऋतुके समय स्त्री से और कुरूप और रोगिनी स्त्रीसे भोग करना अरुचि कारक है और अति हानिकरताहै और उत्तम यहहैकि इस कार्य में प्रवृत्त न रहै और बराबर भोग न करे औरदो बेरमैथुन में तीन दिन अन्तर अवश्य चाहिये और वैद्य एक बेर के भोग के उपरान्त तीन दिन की मोहलत उचितजानते हैं—नहाने का उपाय—जो कि शरीरों को हमाम मयस्सर नहीं इसलिये कुछ लाभ और हानि नहाने की लिखी जाती हैं—ठंढे पानी में नहाने से गुनगुने पानी से नहाना उत्तम है और हवा में ठंढे पानी से नहाना विशेष करके ठंढे स्वभाववाले को अवगुण करता है और कफ के स्वभाववाले को अधिक नहाना मना है और विशेष करके ठंढे पानीसे नहाना नजलेवाले और अतीसार के रोगी और लड़कों और बुड्ढोंको हानिकरहै और जब कोष्ठ में भोजन भरा हो और मैथुन के उपरान्त शीघ्र नहाना हानि करता है और बहुत दिनोंतक न नहाना शरीर को शीघ्रही बूढ़ा करताहै और शरीरकी क्रांति और सफ़ाई खोदेता है—भोजन पचने के उपरांत नहाना उत्तमहै और जाड़ोंकी ऋतुमें गरमीसे कम नहाना चाहिये और मैथुन के उपरांत नहाना और शरीर कोमलवान भी हानि करहै और नहाना चाहे गरम पानी से हो या ठंढे पानीसे हो पट्ठोंको क्षीण करता है इसलिये गरम पानीसे त्वचा और रगें ढीली होजाती हैं और ठंढे पानी से रगों में शीतमयी सरदी बढ़जाती है इसी कारण बहुतसे हिन्दुओं कोकि सदा नहाते हैं चाहे युवावस्था में स्वभाव में गरमी होनेसे हानि कम मालूम होती है परन्तु जब युवावस्था से बढ़जाते हैं रगों और

गुरदे में निर्बलता के चिन्ह प्रकट होते हैं और वीर्य कम होजाने को कहते हैं और बाजे हिन्दू कईबेर नहाते हैं दिशा के पीछे भी नहाते हैं यह नहाना उनके शरीरको बहुत दुखदायक है॥

नाड़ी के विषय में॥

नाड़ी का मालूम करना हकीमों के लिये बहुतही कठिन है फिर विद्यार्थी क्या जानसकेंगे सो हम भी थोड़ा सा वर्णन करते हैं नाड़ी हिलनेवाली रगों का हिलना है कि शोखी हुई पवन से प्राण को समभाव प्राप्तहो नाड़ी उस समय देखना चाहिये कि रोगी क्रोध और प्रसन्नता और परिश्रम और मांदगी और आदत के छोड़ने से खाली हो और नाड़ी पर हाथ रखना कम से कम उस नाड़ी के बारह बेर हिलने तक देखना चाहिये परन्तु नाड़ी चार उंगुल से लंबाई में अधिक हो और उंगलियों को उसके हिलने का जोर मालूम हो और शीघ्र चलती हो और छूने में गरम मालूम हो। गरमी है और जो चार उंगल से लंबाई उसकी कम हो और उंगलियोंपर जोर न मालूम हो सरदीहै और जो उंगलियों की चौड़ाईसे उसका हिलना अधिक हो वह अरीज है और मतली करनेवाली वह नाड़ी है कि शिरियान के भीतर दबाने से उंगलियों में नरमी मालूम हो और इस तरी से उसमें उसका संयुक्त होना प्रमाण है और जो नाड़ी एकही लकीर पर हो उत्तम है और जो सम न हो बुरीहै और जो नाड़ी हिरनकी भांति उछले तो भोजन के कच्चेपनेकी है या लहरके मानिन्द हो वह मौजी है या चींटीकी भांति हो वह निमली है या कांपनी के मानिन्द हो वह मुरतअश है या तागा बटने की तरह हो वह मुल्तवी है या आरीके सदृश है वह मन्शारी है यह सब नाड़ीके प्रकार बिगड़े हुये और कमजोर

हैं और पुरुषोंकी नाड़ी स्त्रियोंसे बलवान होती हैं और लड़कों की नाड़ी नरम और कुछ जल्दी चलती है और जवानोंकी नाड़ी लम्बाई और चौड़ाईमें अधिक होती है और बूढ़ोंकी नाड़ी सुस्त चलती है॥

क़ारूरे का वर्णन॥

क़ारूरा शीशीको बोलतेहैं जो कि रोगी का मूत्र कई कारणोंसे शीशीमें डालकर देखतेहैं इसलिये मूत्र क़ारूरे के नामसे प्रसिद्ध होगया—जानना चाहिये कि मूत्र परीक्षा में यह बातें चाहियें कि सुबहको मूत्र कियाहो और सोने के उपरान्त पानी न पिया हो और ऐसी वस्तु न खाई हो जिससे मूत्र रँगदार होजाता है और जागने क्रोध औ मैथुन और मद्यसे भी मूत्रका रँग बदल जाताहै और जो देर तक क़ारूरा रक्खा रहे तो उसके देखनेका कुछ निश्चय नहीं—जो मूत्रका रंग पीला हो तो पित्त और लाल हो तो रुधिर और सफ़ेद हो तो कफ़ और काला रंग सौदा अर्थात् दग्धित दोष और सब्ज रंग हो तो सरदी जानना—और जो मूत्र मांसके धोवन कासा हो कलेजे की नाताक़ती बताता है और जो दूध कासा रँगहो तो अंगोंका खिलाना बतलाताहै—निज्जिन अर्थात् मलके पकनेका निशान पेशाब में यह है कि पहिले पतला या गाढ़ा हो और फिर उसका समानक़वाम होजावे और ज्वरमें सदा मूत्रका गाढ़ा रहना बुराई की निशानी है और मूत्र का पतलापन सरदी बताता है और उसकी खुटाई दोषकी अधिकता बताती है मूत्रमें बिल्कुल दुर्गन्ध न होना सरदी मिजाज़ है और दुर्गन्धि से दोष का सड़जाना मालूम होताहै और मूत्रका बराबर करना हर विषयमें उत्तमहै और मूत्रमें कफ़की अधिकता और देर तक रहना अधिक बातके चिन्हहैं जो मूत्रमें सत्तू या छीछड़ों या तारों या बालू या चरबी के सदृश कोई वस्तु

पाई जावे इसको रसूबतबई बोलते हैं चरबी जोड़ के खिलने को बतलाती है और पीव अन्दरके फोड़ेके फूटजाने को और मूच की थैली के पत्थर या गुरदे को बताती है स्त्रियोंका मूच पुरुषों से सफेद और गहरा होता है और गर्भवाली स्त्रियोंका मूच साफ़ होता है परन्तु उसमें कुछ धनकी रुई सई के सदृश मालूम होता है और गर्भ की आदि में मूच पतला होताहै और अन्तमें कुछ सियाही लिये होताहै—और तरीके स्वभावसे लड़कों और बुड्ढों का मूच गाढ़ा होजाता है—लाभ—वैद्यक की रीतिसे मूच देखने की रीति यह है कि मूच प्यालेमें करके उस पर एक बूंद तिलके तेलकी टपकावे जो बूंद मूचपर फैलजावे रुधिर और पित्तका उपद्रव है और जो तेल उसी प्रकार शेष रहे बुराई की निशानी है और जोबूंद मूच के नीचे चली जावे मृत्युके लक्षण हैं और जो बूंद मेंछिद्र होजावे वह भी कालेके चिन्ह हैं और जो बूंद मूचमें चौड़ी हो जावे आरोग्यता है और जो बूंद टुकड़े २ होजावे रोग बढ़ जावे औरजो मूचमें बूंद पूर्व्वकीओर झुके आरोग्यता है और मुंह पश्चिमकी ओर झुके रोग बढ़जावे और जो दक्षिण और उत्तरको घुसे बुराईकी निशानीहै और पीला और साफ़ पेशाब पित्तको बतलावे औरजो पीला सुरखी से हो मिलीऊई बीमारी का निशान है परन्तु पित्तकी अधिकता बतावे और जो मूच बकुत हो और उसमें कुछ सफ़ेदी हो अजीर्णता के लक्षण हैं और मांसके धोवनकी तरह का मूच पार्श्व शूल को बतलाताहै और जो कुन्दर के तेलके सदृश उसमें दाने दिखाई दें वह मूच शोथ और शरीरकी नागवारी और जलन्धरको बताता है और जो मूच मिश्रीके रंग कासा हो वह कासश्वास को बताता है और जिस मूचका रंग केशर की सदृश हो तो उसे दग्धित पित्त और रुधिर का जानो और आग के रंगका मूच सरसाम अर्थात् भेजेके वरमको बताता है

और जो मूत्र पीला और साफ़ हो कलेजे की पीड़ा को बतावे और मूत्र ज़रदी माइल और कुछ स्याही लिये हो कलेजे की गरमी के लक्षण हैं समान्य मल वह है जिस के टुकड़े बराबर हों और पतलापन और गहरे पनमें बराबर और गुड़गुड़ाहट और शब्द से खाली हो अर्थात् मल निकलने पर उदर में वातका शब्द नहो और निकले के समय भी शब्द न होऔर विष्टा का रंग काहाल मूत्र के रंग के हाल के सदृश है और जो विष्ठा भोजन से अधिक और पतली और लसदारहो दोषकी अधिकता या अजीर्णता याअंग का गलना बताताहै और यह ज्वर में बुराहै और विष्टा कीअधिक दुर्गन्धि दोष की दुर्गंधि को प्रकट करतीहै—मुसिल—मुंज़िज का सेवन मुसिल के पहिले उचितहै मुंज़िज अर्थात् दोषका पकना उसे कहते हैं किपेशाब का क़वाम सम होजावे और मुसिल उस को कहतेहैं कि मलको रगों और जोड़ोंसे निकाल लावे और तलीन वहहै कि जो मल कोष्ठ आंतों और उस के इधर उधर हो उसको निकाले पहिले मुंज़िज देना चाहिये और तलीन नहीं और दो मुसिलों का सेवन एक दिन में न चाहिये और मुसिल पीने के समय नाक बंदकर ले कि मुसिल की दुर्गंधिसे ग्लानि न हो और क़ै नहोजावे और दोनों बाजू ज़ोर से बांधे और सुगन्ध सूंघना और इलायची और पोदीना लौंग को साथ चाबनाकै नहीं होने देता और जब तक मुसिल अमल न करे कुछ न खाना चाहिये और मुसिल में सोना मना है और मुसिल बज़ुत मीठा न करें और आबदस्त का पानी समान हो न गरम न ठंढा जब मुसिल बलवानदे और वह गुण न करे और उन्माद और मूर्छा प्रकट हो शीघ्रही वमन करें और बुरा मुसिल बज़ुत हानि रखता है-जिस तरह कि फसद बुरी और रोगी जो बलवान हो मुसिल तल जपरदे और जो निर्बलहो एक दो दिन के

अन्तरसेदें क्योंकि दस्तों की अधिकतासे रोगी बदहाल न होजावे और मुसिल के दिन सरदीसे बचजाना उचित है और खुश्क स्वभाव वाले और लड़के और बूढ़े को बलवान मुसिल न देना चाहिये और मुसिल पर गोलियां या चूर्ण या माजून या सौंफका अरक गुनगुना या गरम पानी दस्तों की मदद के लिये उत्तमहै और मुसिल के काढ़े पर ठण्डा अरक सौंफ का पीना चाहिये और मुसिल से छुट्टी पाने के पीछे गरम मिज़ाजको इसपगोल और ठंढे मिज़ाज को बाजबो के बीज या मजलके के बीज पिलाना उचितहै और कोई दवा मुसिलकी ऐसी नहीं कि सिवा एक दोष के बाक़ी दोषों को न निकाले और जो औषधि कि पित्त या कफ या दूषित दोष के लिये बतलाई गईहै उसका यह कारण है कि औषधि और दोषों से अधिक उस दोष को निकालतीहै जानना चाहिये कि बाज़े आरोग्य पुरुष आपही आरोग्यता के लिये प्रति वर्ष मुसिल लेनेका अभ्यास डालतेहैं और बाज़े छः महीने के पीछे आदत रखतेहैं यह आदतें अच्छी नहीं हां रोग की शांति के लिये आवश्यकता पर मुसिल ले जो ऐसी आदत हो चाहिये कि धीरे २ उस को छोड़े क्योंकि आदत दूसरी प्रकृति है॥

पित्तके मुंज़िज अर्थात् पकानेकी औषधि॥

कासनी की जड़—नीलोफर—परसियावशान—खतमी कीजड़—खुबाज़ीकेबीज—बिनफशा—गुलाबकेफूल—कासनी केबीज—शाहतरा—गुलखैरू—मुंज़िज देनेके उपरान्त पित्त तीन दिनमें पकताहै परन्तु इस शर्त्त पर कि खालो पित्त-हो और जो खाली पित्तनहो तो पांचदिनमें पकताहै कफ़ के मुंज़िजकी औषधि सौंफ की जड़—बड़ेसुनके—मको—परसियावशान—गावज़बां—बादरंजबोया—बशफायज—सुलहठीकी जड़—अजखर किरफ्सके बीज—कबरकी जड़—अनीसोनशकाई—अस्तो—खदूस—कफ नौ दिनमें पकताहैऔर

बज़ुत गाढ़ा कफ दो तीन दिन अधिकमें और पतलाकफ पांच दिनमें सौदा अर्थात् दग्ध दोषकी औषधि बादरंज बोया,गावजबां, लसौड़ा,कासनी,की जड़,सौंफ,शाहतरा उन्नाब अस्त खदूस, परसियावशान, मुलहठी बसफाइज सौदा पन्द्रह दिन में पकता है और कभी पन्द्रह दिनसे कमया अधिकमें भी पकताहै—पित्तके मुसिलकी औषधि, पीले हड़की छाल, इमली,आलूबुखारा, अफ्तीन,सकमूनिया,गुलाब के फूल,बिना भूनने के सेवननकरेंऔर भूनने की रीति बड़ी पुस्तकोंमें लिखीहै-कफ की मुसिल की औषधि-इंद्रायण काफल,माही ज़हर जगारी,ख़ून ज़ब्बुल नील तुर, बुद खीरे ककड़ी के बीज सौदा के मुसिल की औषधि-काबली हड़, काली हड़, अफ्तीमूंहजर लाज बर्द गेरू,गारीख़ून,सनादूमकी-रुधिर के स्थिरता का मुसिल-कासनी कीजड़ खीरेककड़ीके बीज, उन्नाब, अंजबार, केवड़े की जड़, तरबूज का पानी, बिनफ्शा, इमलीखट्टा, शहतूत,बुजरकतूना,शाहतरा,ख़ाकशीरप्रकट और अन्दरके बज़ुतसेरोगों कोगुणकरेऔर बज़ुत स्वभावोंको गुणकरताहै यहांतक कि गर्भवतीस्त्रीऔरबूढ़ों औरबालकोंकोभी देतेहैं ज्वर और शोथको गुणकरताहै औरसब माद्दोंके मुवाफ़िक़ है आवश्यकता के अनुकूल अमलतास लें और गुलाब या गरम पानी या सौंफके अरक या कासनी के अरक या मको के अरकमें मलें जो थोड़ा बादाम का तेल मिलावें उत्तम है नहीं तो घी डालकर गुलक़न्द या शीरखिश्त या तुरंजबीन से मीठा करें और जो बिनफ्शेंके फूल और मुनक्के और उन्नाब और गावज़बां और उसके सदृश आवश्यकता के अनुकूल कुछ गुलकन्द समेत अमलतास में मिलावें उत्तम है और दूध पीते छुये लड़के के लिये बादामका तेल मिलाने की आवश्यकता नहींहै और कौलंजमें मुंजिज देनेकी आवश्यकता नहीं॥

फ़सद का वर्णन ॥

फ़सद से हर दोष निकलता है परन्तु रुधिर सब दोषों से अधिक निकलता है और बारह वर्षके कम में फ़सद लेना मना है फिर आयुके अन्त पर्य्यन्त बल होने पर आवश्यक हो तो उचित है परन्तु बाज़ोंने साठ वर्षके उपरान्त फ़सद की मनाही की है और फ़सद के पीछे लेटना चाहिये परन्तु तत्काल सोना मना है और उस दिन फ़सद के पीछे भोजन थोड़ा और उत्तम खाना चाहिये और जिस दिन फ़सद ले बुरा भोजन न दें और फ़सद के पीछे हरीरा और ठंढाई मना है परन्तु गरम स्वभाववाले को ठण्ढाई पिलाना मना नहीं और ठण्ढे मिज़ाज वालेको गरमद्रव्य देना चाहिये कि बलहो परंतु आवश्यकता के बिना कुछ न देना चाहिये फ़सदमें रुधिर कम निकालने से माद्दा हरकतमें आजाता है और ज्वर आजाताहै उस समय आवश्यकता पर फ़सद लेना उचित है जिस मनुष्य को फ़सदके उपरान्त मूर्च्छा आवे उत्तम उपाय यहहै कि मुरग़ का पर कण्ठमें डालकर बसना करावें और सरेरू और जबलअरज़ा कि एकरगहै जोऊपर को गईहै सिर और गरदनको साफ़ करती है और फ़सद हफ्तअन्दाम सम्पूर्ण शरीरको साफ़ करती है और दूसरी वह रग है जो बगलसे आईहै बदनकी कोठी और नीचेके अंग को शुद्ध करती है और बासलीक को रक्षा पूर्व्वक खोलना चाहिये कि उसके नीचे शिरयानहै और असलीम कि बासलीक की एक शाखहै कलेजेकी बीमारीके लिये दाहनी ओर से खोलें और तिल्ली और मानसी रोगोंके लिये बाईं ओर से परन्तु उससे विशेष रुधिर न निकालें और माथे के रग की फ़सद शिरपीड़ा और नेत्र रोगोंको गुणकरे और चार रगोंकी फ़सद जो दोनों नीचे होठोंके है और वह होठोंके अन्दरकी ओर

खोली जाती है मुखके व्रणोंको गुण करतीहै और जिह्वा के नीचे की रग खुनाक को गुण करे और साफ़न के रग की फसद जो पिंडली में है और माबिज की फसद जो घुटनोंके नीचे है स्त्रियोंके रक्तुके रुधिरके जारी करने को और बवासीर के रोग और नकरस और दबाली को गुण करे जो फसद कि उत्पात कारक रुधिरके निकालने के वास्ते खोलते हैं जब रुधिर की बुरी रंगत बदल जावे और रुधिर अच्छा आने लगे बन्द कर दें अगर फसद खोलें और रुधिर बन्द न हो मकड़ीका जाला या गौका चमड़ा कच्चा उस पर रखकर बांधदें और जो शोथ के लक्षण प्रकटहों ठण्ढा लेप जैसे कि रक्तचन्दन और रसौत उस पर करें॥

क्षौरपछने और सिंघियों और जोकोंके विषय में॥

जो लड़कों के लिये मानोफसद है और दो बर्षसे कम की आयुमें उचित नहींहै और साठ बर्षके उपरान्त निषेध है और क्षौरके दो प्रकार हैं एक केवल सिंघी पछने के बिना दूसरा प्रकार पछने देकर यह मुख्य जोड़ और त्वचा की तरफोंके साफ़ करने के लिये श्रेष्ठ है मासके मध्य में क्षौर कराना उत्तम है और पिण्डलियोंका क्षौर फसद बासलीक और साफन के बदले है त्वचा के रोगों में जोकोंका सेवन उत्तम है परन्तु मलके अनुसार लगावें अधिक और कम न लगावें बाजी जोकें विषैली हैं वह बड़ी होती हैं और उनपर काली और सब्ज लकीरें होती हैं जोकों के छूटजानेके उपरान्त रुधिरबहे तो राख महीन छानकर उसपर बांधें॥

दोषों की अधिकता का बर्णन॥

रुधिरकी अधिकता—रुधिरकी अधिकतासे मुंह मीठा और उसका रंग लाल रहे और मूत्र भी लाल हो और

सिर और बदन भारी रहे और शरीर में दाने निकलें और दांत और मसूढ़ों से बकृत रुधिर निकले॥

पित्त दोषकी अधिकता—मुंह आंख जिह्वा और मूत्र का रंग पीला रहे मुंह कड़ुवा और नाक में खुश्की और खरखराहट हो बकृत जर्ग और प्यास और जलन की अधिकता हो॥

कफकी अधिकता—मुंह जिह्वा आंख और मूत्र का रंग श्वेत और शरीर ढीला हो और नाकमें सरदीऔरप्यास कम और निद्रा बकृत हो और मुखका स्वाद बुरा हो॥

सौदा अर्थात् दग्धित दोष की अधिकता-इसके होने से काला पड़ जाताहै और मूत्रका रंग भी काला होताहै और जलन और बदन की खुश्की और क्षीणता होती है मुंह खट्टा रहताहै और अंग भारी रहते हैं और आलस्य की अधिकता और भूख कम होजाती है और मूत्र गहरा रहता है और जानना चाहिये कि श्वेत रंग से शरीर की पुष्टता कफके होने का प्रमाण है और पीलापन क्षीणता के साथ पित्तसिद्ध होताहै और सुरखी रंग पुष्टताके साथ रक्ताधिक्य जानो और काला रंग क्षीणता के साथ सौदावी है और क्षीणता बदन की खुश्की बताता है और मोटा होना कफ का चिन्ह है और बालों का पेचदार होना और उनकी अधिकता गरमी बतलाता है और बालोंका सीधा होना और उनकी कमी शीत बतलाता है और हर दशामें शीघ्रही प्रभावका स्वीकार करलेना उस दशा के अधिकता का प्रमाण है और स्मरणाधिक्य बुद्धिमानी और जल्दी २ बातें करना गरमी के चिन्ह हैं और स्मरण का कम होना और लज्जा और प्रतिष्ठा की अधिकता शीतल स्वभाव को सिद्ध करता है और मल में पक्का रंगका होना गरमी है उसके बिपरीत शीतहै मलकी अधिकता तरी है और उसकी कमी खुश्की है॥

———

शरीर को रोगोंसे रक्षा करने का विषय ॥

वर्त्तमान आरोग्यता की रक्षा करना गई हुई आरोग्यता के फेरने से सुगम है आरोग्यता की रक्षा करने वाले को उचित है कि हानिकारक वस्तुओं से जो आगे लिखी जावेंगी पथ्यकरे और अपनी आयुरारोग्य का मिच रहे किसी का लोभ न करे जो छोड़नेके योग्य वस्तु है उसमें कुछ भी बुद्धि न लड़ावे और उसकी कुछ भी इच्छा न करे विशेषकर रोग और निर्बलता में और जिन वस्तुओं का सेवन अवश्य हो उनमें कोताही न करे और किसी चीजकी आदत न डाले क्योंकि आदत भी प्रकृति से मिल जाती है सामान्य श्रम भी आरोग्यताका रक्षक और मलका पाचक और क्षुधा का कर्त्ताहै उसको करना चाहिये और थोड़ी सी बीमारी में भी पौष्टिक औषधियों का सेवन न करे किन्तु जो आरोग्य देनेवाला भोजन मिले औषधि का सेवन न करे जहां औषधि रूप भोजन से काम निकले औषधि न खावे औ जब तक एक औषधिसे काम निकले दो न खावे इसीतरह जो दो दवायें न मिलें तो तीन दवा न खावे और सुगम दवा से उपाय करना आरम्भ करे उपाय तीन प्रकार का होताहै एक उद्योग और भोजनसे-दूसरा दवासे-तीसरे हाथके कामों से जैसे चीरना फाड़ना आदि—सतेजरहिये में कि भोजन भी संयुक्तहै काममें लाने का नाम उपाय है कभी भोजन मना किया जाता है जैसा बोहरान में कभी बलकारक भोजन की आज्ञा दी जाती जो कुछ बल बाकी रखना स्वीकार हो और पुष्ट भोजन वा उसका अनुमान राह से होताहै वा भोजन के भारीपने से उसके अनुमान की कमी उससमयचाहिये कि भोजन न पचासके और भारीपनकी कमी उसीसमय कीजावेगी कि भूख बहुतहो और रोगोंमें अधिक दोष हों यद्यपि भोजन बलकारक है परंतु

शत्रु भी है क्योंकि रोगको सहायता देता है और रोग शत्रुहै और शत्रुका मित्र शत्रु होता है सो रोगमें भोजन का सेवन उतनाही चाहिये जिससे इलाज होसके और बच जावे—इलाज करने की तीन रीतें हैं—एक औषधि का तौल मालूम करना—दूसरे दवाके हाल अर्थात् गरमी, सरदी, खुश्की, तरी को जांचना—तीसरे रोगका समय मालूम करना कि चारों समयों से कौन समय है॥

सम्पूर्ण वैद्य इस बात की आज्ञा देते हैं कि पीलीहड़ की छालको एक बर्ष तक नीचे लिखीहुई रीतिके खानेसे सम्पूर्ण रोग नाश होजातेहैं और आरोग्यता प्राप्तहोती है कि चैत और बैशाख में तीन मासे गहद के साथ और ज्येष्ठ और आषाढ़ में सुनके के साथ और श्रावण और भाद्रपदमें यथा रुचि लाहोरी लवणके साथ और कुवार और कार्त्तिक में बराबरकी मिश्री के साथ तीन मासे के अनुमान खावें ईश्वर चाहे तो सब रोगों और बद्धकोष्ठ से रक्षा रहेगी॥

शिरके रोगका बर्णन॥

जो शिरमें एक ओर पीड़ा हो उसको शक़ीका बोलते हैं जो उसका कारण चारों दोषों से कोई दोष या बायु हो उसको माही कहते हैं और जो उसका कारण इन में से कोई वस्तु नहो उसको साज़िज कहतेहैं और जो धूप अग्नि बायुकी गरमी या गरम दवाके खाने से हो वह हारसाज़िज है और ठण्ढी हवा या ठण्ढे पानी के सेवन या ठण्ढी जगह में ठहरने या शीतल औषधि के खाने से उत्पन्न हो वह बारद साज़िज है गरमीके चिन्ह त्वचामें जलन और गरमी और भारीपन का न होना और ठण्ढी चीज़ों से आराम और गरम से हानि है सरदी के चिन्ह—आलस्य और त्वचा में सरदी और जलन का न पाया जाना और ठण्ढी चीज़ों से हानि

और गरम से लाभ पाया जाना मूल यह है कि किसी कारण में गर्मी और सर्दीके पहिचाननेमें कठिनतानहीं होती और हर दोषके अधिकताके चिन्ह पीछे कहचुके वायुके चिन्ह एकही जगह से दूसरी जगह पीड़ा का जाना और कान में किसी प्रकार का शब्द होना॥

शिरोरोग का यत्न॥

जो रुधिर की आधिक्यता हो तो सरेरू की फस्द खोलें और जो कफ या पित्त या दग्ध दोष या वायु का जोर हो तो मुंजिज अर्थात् मलके पकाने के उपरान्त ग्रंथोंके अनुसार मुसिलोंसे मलको निकालें और साजिज में प्रकृति को बदल डालें अर्थात् जो गर्मी हो तो ठंढा करें और जोसर्दी होतो गर्मकरें—अब यहां थोड़ेसे नुसखे शिरकी पीड़ा औरशक्रीके के लिखेजातेहैं—इतरी फलकिशनीजी जो शिरपीड़ा और सिरके घूमने और नेच के रोगोंको दूर करतीहै पीली हड़की छाल काबली हड़ कालीहड़ धनिया छिला हुआ यह सब एक२ तोला कूट छानकर घीमें भूनकर तीन भाग शक्करके कवाममें माजून बनावें और दोतोले खावें-(इतरीफलमुलय्यन) जो स्वभाव को नरम करताहै औरहानि कारक दोषों को पक्वाशय और दिमागसे निकालताहैऔर कानकेशब्द और भिनभिनाहटऔर नेत्रोंकी सियाहीको दूरकरताहै काबली हड़की छाल, पीलीहड़कीछाल, आंवलेकीछाल, बहेड़ा और काली हड़ यह सब तीन २ दाम गुलाब के फूल, सना, तुरबुदकीछाल एक२ दाम, सोंठ आधाटंक कूट छान कर बादामके तेलमें भूनकर तीन हिस्से शक्कर यामिसरी मिलावें रुचि के अनुसार शरबत लें और (पाशोया) माहो यासाजिज शिरो रोगों को आराम करता है खारी नोन दो दाम, गेहूं की भूसी दो मुट्ठी, बेर की पत्ती, खतमी की पत्ती, मको के पत्ते हर एक आध २ पाव, खतमी

के बीज चार दाम पानी में काढ़ें जब आधा पानी शेष रहे तो कुछ गरमसे पांव धोवें जो सब दवायें न मिलें तो जितनी ही मिलजावें आराम देंगी जो कोई दवा न मिले केवल गरम पानी गेंहूं की भूसीऔर खारी नोनही लाभ देताहै और पावों का दाबाना और तलवे सहलाना ठंढी और गरम शिरपीड़ा को अच्छा करता है (अन्य)—पांवधो या पांवों का धोना और तलवों में भावें करना शिर पीड़ा के लिये श्रेष्ठहै, सेना के पुत्र शेख अबूअली ने क़ानून में लिखा है कि मैं बहुधा शिर पीड़ावाले के हाथ पावोंपर गरमपानी का तरेड़ा देता रहा जहां तक कि मालूम हुआ कुछ चीज़ शिरसे हाथ पावों की ओर उतरती है इससे शिर की पीड़ा दूर होगई और अबूमाहर ने लिखा है कि ठण्ढे पानी से नहाना गरम शिर पीड़ा को उत्तम है (लाभ) सर्वप्रकार की शिर पीड़ा में आराम से रहना और खाने पीने में कमी करना श्रेष्ठ है और इस रोगमें बहुत हिलना झुलना न चाहिये और मलकारक और बद्धकोष्ठ और हानि कर भोजन से पथ्य करना उचितहै बफारह भी शिरपीड़ा को दूर करताहै एक तगारमें पानीभरकर अपने आगेरक्खें और अपने को अच्छीतरह चादर से छिपालें और एक २ मट्ठी का ढेला गरम करके उस में डालें और शिर झुका कर उसकी भाफ़ का बफारहलें शिरपीड़ा दूर होजावेगा—अन्य—बफारह जो गरम और ठंढी शिर पीड़ा को उत्तम है काक जंघा एक वृक्ष है उसको मिस्सी बोलतेहैं टुकड़े २ करके जोशदेकर बफारह लें उसके उपरान्त चन्दन दो भाग रेंडी एक भागपीसकर लेपकरें (हरीरा) ब्रह्मारुड का अति बलकारक भूने हुये चनों का छिलका दूरकरके नौटङ्क महीन पीसकर बारह टङ्क बादाम के तेल में भूने फिर निशास्ता नौटङ्क, सफ़ेद खशखाश के बीज नौ टङ्क मिसिरी चार टङ्क मिलाकर गाय के दूध में

हरीरा पकावें फिर नौटङ्क घीमें बघारकर गरम२ खावें—(अन्य औषधि) जो गरम शिरपीड़ा के लिये अति श्रेष्ठ है—धनिया काहू दोनों एक २ टङ्क पानीमें पीसकर रस छानकर थोड़ीसी शक्करसे मीठा करके एक तोला इसबगोल छिड़क के खावें या नीलोफर की शरबत हो तो ले मिश्री के बदले डालें (अन्य) विशेष करके उस पीड़ाको दूर करतीहै जोनजलेसे हो—सीप सिरकेमें घिसकर कान की दोनों लवों में लगाते रहें (अन्य) बिशेष लाभ देती है—मजीठको शिरपर बांधें (अन्य) जिसको बहुत दिनोंसे शिरो रोग हो उसके लिये उत्तम है धतूरेके दोचार बीज रोज निगलें (मझ्ये के फूलों का तेल) जो सरदी और गरमी की शिरपीड़ा को श्रेष्ठहै सोंठ, वायविडंग, छिली हुई मुलहठीकुचलकर, भांगरा, मझ्येकेफूल, यह सब बराबर ले तिलकातेलचारभाग—मझ्ये के पुष्पों का जीरा निकाल डालें और सब औषधियों को पहिले इतने पानी में कि तेलसे दुगना हो औटा के जब पानी तेल के बराबर रह जावे साफ़ करके तेलमें मिलाकर जोश दें जब तेल मात्र रह जावे और पानी जल जावे छानकर रक्खें छः बूंदें नाकमें टपकावें बहुत प्रकारकी शिरपीड़ाको श्रेष्ठहै-(नास) कि शिरपीड़ा और सरसाम पैत्तिक को दूर करताहै—कपूर, चन्दन, गुलाबमें पीसकर नाक में टपकावें, (अन्य नास) काहू, काहू, धनियाहरा, कासनीहरी, मको की पत्तियां सबको या एक एक या दो दोको यथा बिधि निचोड़ साफ करके कई बूंदें नाक में टपकावें, (अन्य नास) शिरपीड़ा और सर्व्व प्रकार के शीतकी बीमारियों को उत्तम है—कालीमिरच, पीपल, लवंग इन सबया दो एक को समय के अनुसार सौंफके अरक़में पीसकर नाकमें टपकावें(अन्य नास)जो सरदी और कफकी शिरपीड़ा को दूरकरे—जूफेकी पत्तियोंका पानी साफकरके नाकमें टपकावें (अन्य) सरदी की शिरपीड़ा को दूरकरे कटहल के

मूलको उबालकर उसको कुछ बूंदें नाकमें टपकावें(अन्य) सरदीकी शिरपीड़ाको गुणकरे वायविडंग, सोंठ, गुड़, बराबर गरमपानीमें पीसकर नाकमें टपकावें (अन्यनास) जो ब्रह्माण्डको तरीसे साफ़करे चमेली के पुष्प तीन—गुल रौग़नमें मलकर नाकमें टपकावें (अन्य) शक़ीकाके पीड़ा को श्रेष्ठहै गुलदुपहरिया एक प्रकारका प्रसिद्धपुष्पहै की दोपहरके समय खिलताहै उस फूलकी पंखुड़ियां मलकर उसका जल नाकमें टपकावें (अन्य) नाजबू पत्तों के जलकी कई बूंदें जो बाईं ओर पीड़ा हो तो दहने नथनेमें जो दहने नथने में पीड़ा हो तो बायें नथने में टपकावें (अन्य) कालीमिरच १ मक्खी की विष्ठा उसके बराबर उस स्त्री के दूध में टपकावें जिसके पुत्र उत्पन्न हुआ हो और थोड़ा २ आंखों में भी लगावें (अन्य) शक़ी का को गुणदाय क ढाई रवासन के फूल, फिटकरी, आधी कालीमिरचके-साथ पानीमें पीस कर जो दरद दहने तरफ हो तो बायें नथनेमें जो बायें तरफ हो तो दहने नथनेमें टपकावें (तथा) शक़ीक़ाको गुणदायक रीठे की छालको पानीमें खूब मले जब कफ निकले गरम करके ढाई बूंदें दोनों नथने में टपकावें (तथा) शक़ीके के लिये सिरस के बीज थोड़े पानी में पीसकर कपड़े में पोटली बांधकर जिस तरफ कि सिरमें पीड़ा है अढ़ाई बूंदें उस तरफ के नथने में टपकावें (तथा) शक़ीका को दूर करे-नौसादर, कालादाना, हरएक दो रत्ती पानी में पीसकर गौ के घी में मिलाकर नाक में टपकावें (तथा) शक़ीक़ा को—प्याज़ थोड़े मज़यके बीज चार कालीमिरचों के साथ पानी में पीस कर जो बांयें तरफ पीड़ा हो तो दहने नथने में और दहनी ओर हो तो बांयें नथनेमें टपकावें—और केवल कालीमिरचके साथही गाय का घी नाक में टपकाना शक़ीक़े को श्रेष्ठ है (तथा) जो शक़ीक़े की पीड़ा को उत्तमोत्तम यतन है— समन्दर फल की मींगी को जल में पीस कर जो पीड़ा बाईं ओर

हो तो दहने नथने में टपकावें अथवा दहने तरफ हो तो बायें कान में टपकावें—और जो उसकी तीक्ष्णता का भय हो तो स्त्री के दुग्ध में पीस कर सेवन करें (अन्य) उस शक़ीक़े की पीड़ा के लिये श्रेष्ठ है जो बारी से आता हो— बन्दाल पानी में भिगोकर जल छानकर दो बूंदे नाक में टपकावें मस्तकके मल को बहारकर दूरकरेगा— (चूर्ण) जिसको फंकी भी बोलते हैं—बिनफ्शा दोमासे, अस्तोखदूस एकमासा, धनिया दो मासे, बालछड़ एक मासा, मुण्डी एक मासा, गुलाबके फूल दो मासे, बादाम की गिरी दो मासे, मिसरी सब दवाओंके बराबर पीस छानकर रक्खें खाने का प्रमाण एक तोला (हड़का शरबत) पैत्तिक शिरोरोग के लिये श्रेष्ठ है और स्वभाव को नरम करता है दस पीले हड़ों की छाल जव कुटकर के चीनी की प्यालीमें पानी में भिगोकर ३ दिनधूपमें रक्खे चौथे दिन मलकर छाने और फिर पीलीग्यारहहड़ों की छाल को उसी रीति से उसी पानी में धूप में रोज रखकर चौथे दिन मलकर छान के एकसौ पचासमिस्काल सफेदशक्कर मेंक़वामकरे और जोशक्करकेबदले सफेद तुरंजबीन होतोश्रेष्ठहै (शरबत) शिरोरोगको दूरकरे बिनफ्शा, नीलोफर, गुलाबके फूल यहहरएक चार२ मिस्काल अस्तखदूस दोमिस्कूल आलूबुखारेदस दाने पानीमें भिगोकर मलें और छानकर तिगुनी शक्करमें क़वाम करें, दो तीन तोले खावें जो आलूबुखारे न हों तो उसके बदले इमली मिलावें (सूंघने की दवा) जो गर्मी के शिरो रोग को श्रेष्ठ है— कपूर या चन्दन सूंघे और ककड़ी और खीरेका सूंघना भी पैत्तिक शिरो रोग को दूर करता है (अन्य) सरदी के शक़ीक़ा और शीत की शिर पीड़ाको गुणकरे नौशादर— और हलदी को मिलाकर सूंघे (लाभ) संपूर्ण भांति के गर्म अतरोंके सूंघने से भेजेमें बल होताहै—और इसी प्रकार से ठण्ढी सुगन्धों का सूंघना भेजे को लाभ

देताहै (लेप) शिर पीड़ा और शक्री क्रे को श्रेष्ठ है—सोंठ चन्दन रण्ड की जड़ की छाल कूट छानकर पानी से धोकर सांठी के चांवल के साथ महीन पीस कर गह-रा२लेपकरें(अन्य)गरमीकीशिरकीपीड़ाकागुणकारकद्-सबगोल का लुआब खतमीके फूलों में मिलाकर पतला २ लेप करें और पीना भी इसका उत्तमहै (अन्य) शिरपी-ड़ा को श्रेष्ठहै जो गरमी से हो चूका और दूब दोनों को बराबर पानी से पीसकर सिरपर लेप करें (तथा) कक-ड़ी के टुकड़े और कद्दू के ताजे छिलके सिरपर रखनेसे भी अच्छे हैं (तथा) गरमी के शिरो रोग के लिये अति श्रेष्ठ है—खतमी के पत्ते या बीज, धनिया, गेरू जल में पीस कर सिर और माथे में लेप करें (अन्य) मेंहदी के फूल जलमें पीसकर मलें यह गरमी के सिरदर्द को श्रेष्ठ है (अन्य) यागरमी के शिरो रोग को दूर करे—काहू के बीज पानी में पीसकर माथेपर लगावें—(अन्य)गरमी की सिरपीड़ा का गुणदायक तिलके वृक्ष की पत्तियां सिरके या पानी में पीसकर मलें (अन्य) खुरफेके पत्ते— सिरके या पानीमें पीसकर लगावें—अन्य-चन्दन घिसकर लगा-वें (अन्य) काईमलें (अन्य) धनिया पीसकर अरंडेकी सपे-दीमेंमिलाकर मलें (अन्य) जौकाआटा पानी मेंघोल कर लगावेंअन्य—लसौड़ाका लुआब गरमीकीशिर पीड़ाको श्रेष्ठहै (अन्य) सालकी लकड़ी जिसको साज भी बोल-तेहैं पानीमें घिसकर लगाना गरमी कीशिरपीड़ाको श्रे-ष्ठ है (अन्य) अफीम—गुलरोगनमें कजली करके शिरपर मलें— (अन्य) कासनी के बीज गुलाब में या पानीमें पीस कर मलें (अन्य) मेंहदीकी पत्ती लगाना सिरपीड़ा और मस्तक पीड़ा को गुण करता है (अन्य) बकायन के पत्तों को पीसकर लगाना गरमी के सिरदर्द को दूर करता है (अन्य) शीतल चीनी गुलाब में पीस कर मलें (अन्य) क-बाबह गुलाब में पीसकर मलें (अन्य) अनार की जड़

पानी में घिसकर गहरा लेपकरें (अन्य) सोंठरेंड़ीके तेल में घिसकर गरम करके लगाना सरदीकी शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है (अन्य) सरदी और साज़िज और कफ़ की शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है सहँजन के पत्ते पानी में पीसकर गरम करके लेप करें (अन्य) सरदी और कफ़ की शिर पीड़ाका गुणकारक पीपल पानीमें पीसकर लगावें(अन्य) कलौंजी-काली जीरा पानी में पीस कर मलें (अन्य) रेंड़ी, सोंठ—अजवायन पानी में पीसकर गरम करके लेपकरें— (अन्य) सरदी की शिरपीड़ाका गुणकारकनर-कचूर पानी में पीसकर तलवेमें मेंहदी की तरह लगावें अन्य—शिरपीड़ाको गुणदायक निबौली की मींगी पीस कर माथे पर मलें— (अन्य) गरमी और सरदी के शिरो रोग को सपेद चन्दन तज बराबर घिसकर कुछ गरम करके लगावें— (अन्य)सरदी और गरमी की शिरपीड़ा को गुण करे तरबूज़े के सपेद बीज मुचकुन्द के फूल दोनों या एक इनमें से पानी में पीसकर गहरा लेपकरें(अन्य) शिर पीड़ा को श्रेष्ठ है चाहे वह खुश्की से हो या गरमीसे—बकरीका मक्खन सिरमें मलें(अन्य) जो नज़लेसे शिर पीड़ा हो उस के लिये उत्तम है— दो लौंग— अफी-म चार रत्ती पानीमें पीसकर कुछ गरम करके लगावें— (अन्य) शक़ीक़ा का गुण कारक हड़के बीज गरम पानी में पीसकर मलें (तथा) शक़ीक़ा को लाभ दायक है मुरगी की विष्ठा—काली मिरच दोनों पीस कर जो पीड़ा बां-ईं ओरहो दहनी ओर जोदहनी तरफहो तोबांईं ओर सिरमें मलें (अन्य) पुराने शक़ीक़े को दूर करे— जंगली कबूतर की बीट राई के साथ पीसकर लेप करें(अन्य) ज-मालगोटा जलमें पीसकर जिसओर पीड़ा नहो मलें जब जल न हो कुछ गरम पानी से धोडालें यह बीमारी दूर होगी लाभ इस रोग का यत्न शीघही करना उचित है नहीं तो यह पीड़ा अति कठिनता से दूर होती है जब

पुराना होजावे निःसंदेह शीतसे होगा गरम औषधियों के सेवन केबिना कदाचित् दूरन होगा(अन्य) लेप जोशिर पीड़ा को आराम करे—एक बादाम की गिरी सरसोंके तेलमें पीसकर सिरपरमलें पीड़ादूरहो(अन्य) रेंडीएलुवा बराबरपानीमेंपीसकरगुनगुनालेपकरें पीड़ादूरहो(अन्य-उपाय) ठण्डी शक्कीक़ाऔर ठण्ढी शिरपीड़ा दूरकरे बाबूनेकेपुष्प मेथीके लुआबमें मिलाकर कपड़े मेंबांधकर गरम करके रक्खें और टकोर करें(और पीसकर फूकनेकी औषधि)ठण्ढी शिर पीड़ा के लिये नाक में महीन पीपल पीसकर नाकमेंफूकें(औषधि)ठण्ढेशक्कीक़ाके लिये अकरकरादांतौंमें दबावें(टिकिया) तिकोनी शकीका की पीड़ा शिरो रोग को दूरकरे धनिया, आमला, काहू के बीज, सोंठ, यह सब दो भाग अफीम खुरासानी अजवायन कतीरा हरएक २ भाग पीसकर तिखूंटी टिकियां बना रक्खें समय पर पानीमें रगड़ कर कुछ गरम कर के मलें (अन्य) कान में टपकानेकी पतली दवा शकीकाकी पीड़ा को गुणदायक गाजर की पत्तियों को ऊपर नीचे घी लगाकर तवे पर गरम करके उसका अरक निचोड़ कर कान में टपकावें यह यत्न मुजर्रिबात अकबरी में लिखा है दोतीनबूंदें नाकमेंभीटपकावें बहुत छींकेंआवेंगीऔर अधासीसी की पीड़ा दूर होजावेगी (टकोर) गरम शिर पीड़ा के लिये नीबूके दो टुकड़े करके गरम तवे पर रक्खें पहिले एक टुकड़े से माथे को सेंकेंजब वह ठण्ढा होजावे उस को तवेपर रखकर दूरसे सेंकें इसीप्रकार एक घड़ी पर्यंत सेंकते रहें(सुरमा)जो आधासीसी को लाभ दायक है साबनलाहौरी थोड़े पानी में पीसकर दोनों नेत्रों में या केवल उस नेत्र में जो पीड़ा की ओर है सुरमे की भांति लगावें गुलकन्द बिनाफ्शाशिरपीड़ा खांसी और हृदय के रोगों को श्रेष्ठ है— बिनफ्शों के फूल एक भाग मिसरी दो भाग परस्पर खूब मिलाकर रक्खें और एक

तोला भरखावे (चटनी) भंजे की बलकारक मेंहदीके बीज तीन मासे पीसकर शर्बतमेंमिलाकरचाटें(काढ़ा,जोपैत्तिक औरशीतक शिरोरोगकोअति उत्तम है बांसकीजड़पांचटङ्गजवकुटकर पानी में काढ़ाकरके छान के आधादाम मिसरी मिला कर पिये (अन्य) ठण्ढी औरकफकी शिर पीड़ाका गुणदायकहै जवकुट कीजड़ सौंफ दोटङ्ग और अधकुचली सौंफकी जड़ चार टंक, अस्तखदूस तीन टंक, आधसेर जलमें काढ़ा करें जब तिहाई जल शेष रहै साफ करके दो तोले शर्बतरा बिनफ्शेके सरबतमें डाल कर पिये (अन्य)काढ़ा शिर पीड़ाके लियेपीली हड़का बक्कल, सोंठ, धनिया, आमला, बहेड़ेकीछाल, बायबिडंगबराबर एक टंक कूट आध सेर जल में औटावे जब जल चतुर्थ भाग शेषरहै छान कर पिये बाजे लोग सोंठ के बदले चिरायता मिलाते हैं (तरेड़ा) शीत की शिर पीड़ा को श्रेष्ठ है वाबूना (सोया) सौंफ, औटाकर शिरपर तरेड़ा दें औषधि गरम शिरपीड़ाको गुणदायक दो तोले इमली जलमें भिगोकर उसकासाफ पानीकोलेकर थोड़ीशक्कर मिलावें और पिये (तरेड़ा) गरमीकी शिर पीड़ाको गुण कारक छिलेजौ कहूके टुकड़े, काहूके बीज, इसबगोल, बिनफ्शा खतमी के बीज, नीलोफर जल में औटा कर शिरपर तरेड़ादें और तरेड़े का सेवन मुंजिजके सेवन के उपरांत उत्तमहै (अन्य) शिर पीड़ा और आधा सीसी के लिये सफेद कनेर की पत्तियां छाया में सुखाकर महीन पीस रक्खे जिस ओर पीड़ा हो उसी नथने में दो चावल के बराबर फूंके छींकें लावेगा और नाक मेंसे बहुत जल निकलेगा और पीड़ा दूर होजावेगी बहुधा ऐसाहुआ है कि पाखाने और गन्दी जगहों की दुर्गंधि और चमड़े की सड़ाद से पैत्तिक शिर पीड़ा पैदा होतीहै उसके दूर करने का यत्न कुछ गरम पानीसे नहाना और सिरका सूंघना और कभी ब्रह्मांड में कीड़े पड़ जानेसे शिर में

पीड़ाहोती है उसके लक्षण कीड़ोंका भी निकलानाऔर दुर्गंधि आना उसका यत्न मलीमन एक लकड़ी प्रसिद्ध है उसे महीन पीसकर नाक में फूंकें (इस्पन्द का तैल) शिर पीड़ा को श्रेष्ठ है चार टंक इस्पन्द तेल में जलावे जब खूब जलजावे उसी तेल में पीसडाले वह तेल हर दिन माथे पर मल करके तीक्ष्ण अग्नि से सेंके फिर गरम जलसे धोडालें(सतावर का तेल) जिसको हिंदू बहुधा सेवन करतेहैं शक़ीक़े की पीड़ा को दूर करताहै सतावर की ताज़ी जड़ कूट कर उसका अरक़ निचोड़ लें उसके बराबर तिलका तेल औटावे जब पानी जलजावें और तेल रह जावे शिरपर मले (टपकानेकी औषधि) आरूतिकी पत्तियों के रसमें एलुवा मिला कर दो तीन बूंदें नाक में टपकावे ब्रह्मांड के सब कीड़े मर जावेंगे (अन्य) नीवके पत्तों का जल मीठे तेलमें मिलाकर कानमें टपकावे कभी सर्प के काटने और उसका विष दूर होने के उपरांत शिर की पीड़ा बाकी रहजाती है उसका यह यत्नहै कि विनौली की मींगी का शीरा एक तोले भर पानी में निकाल कर बहुधा शिरपर लेपकरे और वह शिरपीड़ा कि चिन्ता की अधिकतासे उत्पन्न हो उसका यत्न कोई वस्तु खालेना और अंजीर के वृक्ष की छाल की भस्म सिर में या केवल जलमें घोलकर सिरके में मलना॥

सरसाम की औषधियों का वर्णन॥

सरसाम ब्रह्मांडके शोथका नामहै-मुख्य भेजे में होया भेजे के परदोंया दोनों में और उसके कई प्रकार हैं सरसाम के लक्षण ज्वर बराबर रहे और कफभी न उतरै प्रलाप और पीड़ा और सिर भारी रहे जो सरसाम पित्तकी अधिकता से हो उसको करानी तसखालिस बोलतेहैं और कफके सरसाम को लैसरगस कहना चाहिये हर एक दोषसे उस दोषका पहिचानना सम्भवित है

पैत्तिक और रक्त के सरसाम में ज्वर बेग से होताहै और कफ और दग्ध दोष के सरसाम में कम होताहै और पैत्तिकमें कठोर चित्त और कफ के सरसाम मेंआलस्य और रक्तमें तेज़ी औरदग्धदोषमें बज़धाबिच्छिन्नता होतीहैदग्धदोषका सरसाम कम होताहैइस रोगमें फसद जल्दी खुलवानी उचित है बिशेष करके रक्त के और पित्त के सरसाम में कभी गरम तपमें बिना भेजे की सूजन के बाफ भेजे की ओर जातीहै उससे बक और शिर पीड़ा होती है इस दशा को सरसाम ग़ैर हक़ीक़ी बोलतेहैं उस समय फसद सरेख और पिण्डलियों में पछने देकर सिंगी खींचना और रुधिर के सरसाम में बिनापछने के सिंगियां खींचना और दूसरे प्रकारों में पाशोया करना उचित है और ठंढाई पिलाना और स्त्री के दुग्धको नाक में टपकाना और सिरपर दुहना उचितहै जो स्त्री का दुग्ध न मिले बकरी का दूधही सिरपर डाले और कद्दू का तेल मलना उत्तम है (क़द्दू का तेल) कद्दू का जलनिचोड़ कर छान के बराबर के मीठे तेल में जोशदेंजब पानी जलजावे तेल का सेवन करे (लखलखा) उसको कहते हैं कि गीली चीजें किसी शीशी में रखकर सूंघे जो गरम सरसाम को दूर करे ताजे धनिये का पानी खीरे ककड़ी के बीजोंका जल थोड़े सिरके में मिलाकर शीशीमें रखकर सूंघे (अन्य) चन्दन सब्ज़ कासनीके अरक और तरबूज़के जलमें रगड़ कर थोड़ा सा कपूरभी मिलाकर शीशी में रखकर सूंघे (नीलोफरका तेल) जो सरदी की सिर पीड़ा और सरसाम को दूर करे नीलोफर के फूल लेकर गुलरोगन की तरह उसकातेल बनाले(अन्य)जदकीशरबतजो ब्रह्मांडको अति बलदायक है अर्थात् अगर पांच टंक,लौंग, बालछड़, दार चीनी, हर एक डेढ़२ टंक मिसरी पाव भर यह सब दवा जब कुट करके वस्त्रमें बांध कर गुलाब में भिगोकर जोश दें जब चौथाई शेष रहे छान कर मिसरी मिलायें

शरबत का क्वाम करें फिर ढाई रत्ती भर कस्तूरी और अंबर मिलावें (अन्य) गरम सरसाम को दूर करे—चन्दन और कपूर घिसकर काहू के पत्तों के पानी में मिलाकर नाक में टपकावें (पाशोया) जो सरसामको दूर करे—खैरूके फूल, नीलोफरके फूल, छिलाऊ आकदू, हर एक आध पाव जौकी भूसी तीन मुट्ठी जल में जोश देकर कुछ गरम जलसे पाशोयाकरें और चन्दन रगड़कर सुघावें खाने को आशजौ दें—फिर ज्वर और शिरपीड़ा का यत्न करें॥

मिरगी की औषधियों का वर्णन॥

यह रोग बहुधा कफ सेहोताहै और जब मिरगी आतीहै तो रोगी पृथ्वीपर गिरपड़ता है हाथ पांव टेढ़े होजातेहैं चेष्टा बिगड़ जातीहै कफ मुंहसे निकलताहै इस रोग में अवश्य करके सिर भारी होता जिह्वा की नीची रगें सबज होतीहैं (यत्न) जब मिरगी आवे तो रोगी के अवयवों को मूल दशा पर देखते रहें—और सोंठ, काली मिरच, पीपल, नौसादर, इन्दरायन के फल का अन्दर का परदा, कलौंजी आदि हर एक अलग २ या मिलाकर पीसकर नाक में फूकें जब मिरगी दूर हो तो मुंजिश देकर जुबअयारज से मुसिल दें और चौपायों के मांस और तर मेवों और दूध प्याज और ममूर बरन उन बस्तुओं से जो तन्द्रा या नशा करतीहैं पथ्य करें और दुर्गन्ध के सूंघने और बहुत जागने और ठंढे पानी में नहाने और पेट भर करसोने और धप और मेह में फिरने और भयानक शब्दों और और ठेठढी पवन से भी अलग रहें जो लड़कों की मिरगी में ज्वर बहुत हो तो गरम बस्तुओं का अधिक सेवन न करें और अधिक ठंढाई भी मना है और शाफे अर्थात् वस्ति से बद्धकोष्ठ दूर करना उचित है इस जगह थोड़ी सी सुगम औषधियां जो इस रोग के लिये उत्तमोत्तम हैं लिखी जाती हैं (गोलियां) कि जब

मिरगीका दौरा नहोतो देनी चाहियें (गूगल की गोली) मिरगी को गुणकरे मुसिल देने के उपरान्त वैद्य प्रकृति के सम करने के लिये सेवन करतेहैं, कूट, सोंठ, कबाबा देव-दार हरएक तीन २ टंक भांगराकाला, कालीमिरच, अकर-करा, गजबेल, सन के बीज हर एक नौ २ टंक गूगल सबके बराबर कूट छानकर शहदमें गोलियां बनावें खूराक २ टंक प्रभात और संध्याको कुछ गरम पानीसे निगलें, (औषधि) जदवार नरीना लड़केवाली स्त्री के दुग्ध में रगड़ कर पि-लावें, (दाग़), लड़कों की मिरगी के लिये आजमाया हुआ है, दोनों भवों के बीच में मूंगे का दाना गरम कर के दाग दें और बकरी की मेंगनी से भी दाग देना उत्तमो-त्तम है (अन्य) औषधि मिरगी के दौरे के समय श्रेष्ठ है शरीफ़ेके बीजों की गिरी को पीस कर कपड़े की बत्ती में रख कर उस का धुंआ नाक में पहुंचावें (अन्य) मिरगी केसमय कपड़ेकाबन्द खटमलके रुधिरमें भिगो कर उसका धुंआ नाक में पहुंचावें, (अन्य) मिरगी के दौरे के समय याउसकेआगे पीछे लाभदायकहै- आककी जड़ का बक्कल बकरी के दुग्ध मेंघिसकर नाकमें टपकावें कछुये का रुधिर जौका आटा शहदमें सबको बराबर मिलाकर कालीमिरच की बराबर गोलियां बनावें सुबह और शाम एक २ गोली खावें (अन्य) मिरगी केसमय ढाककी जड़ जलमें रगड़ कर नाकमें टपकावें (अन्य) गीदड़के पित्तकोकई कालीमिरचें डालकर सुखावें मिरगीके समय उनमेंसे दो मिरचें पानी में पीसकर दोनों नयनोंमें दो तीन बूंदें टपकावें मिरगी जाती रहेगी (अन्य) मिरगी के समय काम आती है- आधे मड़वे की गुठली अढ़ाई काली मिरचों के साथ पानीमें पीस कर नाकमें टपकावें (अन्य) मिरगी के दौरे के समय सेवन करने से तत्काल मूर्छा दूरहो कड़वी तोरई जलमें पीसकर दो तीन बूंदें नाकमें टपकावें (अन्य) छोटी कटाई का दूध दौरे के समय नयनों में टपकावें (अन्य)

कूई हाथी की मस्तीमें अर्थात् उस तरी में जो मस्ती के समय हाथी के कान के पास या उसके माथे से बहती है भिगो कर मिरगीके समय दो तीन बूंदें नाकमें टपकावें (अन्य)दो भाग नौसादर आधा हिस्सा सबसकूतरी चौथे हिस्से तिलोंके तेल में पीस कर कई बूंदें नाक में टपकावें (अन्य) कटाई की जड़ भंगके बीज बराबर लेकर लड़के के मूत्रमें पीस कर नाकमें टपकावें (अन्य) बकरी के सींगका धुआं दौरेके समय नाकमें पहुंचाना शीघ्रही लाभ देता है (चूर्ण) जो विशेष करके इस रोगको दूर करे—भैंसे का सुम जला कर एक टङ्क के प्रमाण मिरगीवाले को खिलाना आराम करता है (गुललाला की शरबत) कि अन्य समय या दौरेके वक्त मिरगी दूर करता है—लाले के फूल बीस टङ्क लेकर जलमें औटावें और साफ करके चालीस टङ्क मिसरीमें क़वाम करके शरबत तय्यार करें लड़केको आधा टङ्क और दाई को दो टङ्क खिलावें (औषधि) दौरे के समय राई को पीसकर सूंघे (अन्य) कुन्दश पिसा हुआ थैलीमें बांधकर सूंघें—इस मिरगीके रोग के लिये जाली-नूसकी परीक्षासे अकरकरा अति उत्तम है सुसिल लेने के उपरान्त समय पर वा अन्य समय में अकरकरा कूट-कर बराबर सिरके में पीस कर तीन हिस्से शहदमें पाक बनावें और सात मासे कुछ गरम जलसे खावें (अन्यऔ-षधि) छोटी कटाईका फल सुखाका कायफल नकछिक-नी दोनों छः छः मासे तम्बाकू की नास चार तोले सबको कजली करके दो मासेके अनुमान प्रतिदिन सूंघें (नाकमें फूंकने की औषधि) जो दौरेके समय काम आती है घोस के पत्ते में काली मिरच भरकर छायामें सुखावें समय पर पीसकर दो चावल भर नाक में फूंकें (अन्य) रलज्योति पीसकर नाक में टपकावें (अन्य) दौरेके समय वा अन्य समय सेवन कर सक्ते हैं साबूत रीठा उसके बल्कल और बीज समेत पीस कर नास लिया करें (अन्य) समय पर

मिरगीको दूर करे—बड़ा बोट कि आक के दूधपर अनेक रंग का होता है उछलता है उड़ नहीं सक्ता उसको सुखा कर काली मिरच की बराबर लेकर पीस कर रोगी की नाकमें फूंकें आजमाया हुआ है और साहब खैरुल-तिजारब ने कालीमिरच के बदले गौ का घी लिखा है—(अन्य)चूहेका भेजा सुखाकर पानीमें पीसकर आधे मासे के अनुमान नाकमें फूंकें तीन दिनमें आराम होजावेगा॥ (औषधि)जो विशेष करके मिरगीको दूर करे तिबफरीदी में लिखा है कि मिरगी के रोगी के गले में जायफल लटकाना अति लाभकारक है मिरगी को फिर नहीं आने देता इसी प्रकार हींग का लटकाना और सुव्वर के सुम की अँगूठी मंगलके दिन दहिने हाथमें पहिनना मिरगी को दूर करता है और वह मिट्टी जिस पर सुव्वर ने मूत्र कियाहो अपने पास रखना विशेष करके मिरगीको दूर करे और भेड़ियेके दांत लड़के पर बांधने से मिरगी नहीं आती और भेड़ियेकी बिष्ठा और हड्डी अपने पास रखने से मिरगी दूर होती है और गायके बायें सींगकी अँगूठी बना कर बायें हाथमें पहिनाना भी श्रेष्ठ है और चूहे का होंठ लड़के की गरदन में लटकाना लड़कों की मिरगी को दूर करता है॥

सकते की औषधि का बर्णन

सकता वह रोग है कि जिसमें मनुष्य हिल जुल नहीं सक्ता और वह रोगी मुरदा मालूम होता है उसका कारण मुख्य भेजेमेंमल की गांठ पड़नेका है(यत्न)जोरधिरसे होतोसरेकी फस्द खोलें जो कफ़की अधिकताहो तो कफ़केवास्तेवस्ति कर्मऔर शाफे केद्वारा मलनिकालेंऔर शिरकोभीसेंकें औरकानमें औषधियां टपकावें और सूंघें और वमन कराना उत्तम है और हाथ पांव का मलना और बांधना श्रेष्ठ है और सिर में तालूपर नश्तर देकर

उसपर पारा मल लाना लाभ देताहै और मुंजिशके उपरान्त कफ़ के निकलने का उपाय करें जब इस रोग में सांस का चलना मालूम न हो तो असाध्य जानो और जो सांस का आना जाना मालूम हो तो साध्य जानो सक्ते के बीमार और मुरदे में इतना अन्तर है कि सक्ते की हालत में रोगी के नेत्र में देखनेवाले का प्रतिबिम्ब मालूम होता है और मुरदे की आंखमें नहीं मालूम होता (नाक में टपकाने की औषधि) जो सक्ते को दूरकरे कुकन्दश , पपड़ियाखार, एलवा, चुक़न्दर के जल में कजली करके छानकर कुछ बूंदें नाकमें टपकावें (अन्य) घोड़ीसी हींग सौंफके अरकमें पीसकर कण्ठमें टपकावें—(औषधि) जो शिर मुंडाकर पछने लगाकर मनुष्य के मूच में बच्छनाग पीसकर उसपर मलें तो तत्काल संज्ञा होगी॥

निसियान अर्थात् स्मरणजातेरहने के रोग के बिषय में॥

बहुधा बुढ़ापेमें कफ़की अधिकता से निसियान अर्थात् स्मरण जाते रहने का रोग होता है जो यह रोग युवावस्था में होतो ब्रह्माण्डकी बीमारियोंके रोगोंकी ख़बर देता है इसका मुख्य यत्न यह है कि मलके पकने के उपरान्त ब्रह्माण्डको ठण्ढे सुसिल से साफ़करें (भिलावेका पाक) जो निसियान और रोगों को श्रेष्ठ है—पीले हड़की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, बालछड़, तज, तेजपात, नागरमोथा, अस्तोखदूस हरएक पांच २ मिस्काल कालीमिरच, नरकचूर आधी २ मिस्काल भिलावे का तेल दो मिस्काल गुड़ एकसौ मिस्काल (अन्य)जो तज की माजूनतो निसियानकी बीमारी को दूरकरे—तज,नागरमोथा दोनों दस २ टङ्क, सोंठ, कालीमिरच हरएक पांच २ टङ्क कूट छानकर दुगने गुड़ में मिलावें बाजी

पुस्तकोंमें औषधियोंकी तोल बराबरलिखीहै—खूराकदो टङ्क (चूर्ण) जो इस रोग को दूरकरे—कुन्दर, सोंठ,नागर-मोथा बराबर कूटकर फंकीबनावें अपनी रुचि के अनुसार मुनक्के के सात दानों का रस निकालकर उसकेसाथ एक सप्ताह भर फांकें (अन्य) वजकी मजून जो निसियान को दूरकरती और पट्ठों को गरम करतीहै सपेद शक्कर पाव-भर क़वाम करके तीनटंक वज औषधि पीस कर उसमें मिलाकर माजून तय्यार करें खूराकएक तोलेके अनुमान् (औषधि) जो स्मरण को उत्तमहै काली मिरच, पीपल, हल्दी, कठमीठी, मुलहठी, काला जीरा, साम्हरनोन अजमोद सबएक२टंक महीन पीसकर प्रति दिन एक टंक शहद और घीमें मिलाकर खावें(अन्य)यह औषधिब्रह्मांड की सरदीके रोगों और निसियानको श्रेष्ठ है पांच टंक मिलावा प्रति दिन खावें (अन्य) एकतोला ब्रह्मदण्डी कूट छानकर गायके दूधसे पन्द्रहदिन फांकें परन्तु जागने और शीतल जलसे नहाने और मदिरा और बहुत पानीपीने से पथ्यकरें (जवारिश सोंठ सादीकी) जो कोष्ट की बीमारियोंमें वर्णनहोगी निसियानके लियेलाभदायकहै (अन्य) मालकांगनी का तेल पानमें लगाकर एकमासा पारा उसपर रखकर खूबमलें पाराउसीसमय बिथरजावेगा उसी समय इसपान को पारेसे साफकरके पानको गिलौरी में रखकर खावें और इसी प्रकार सर्व्वदा खायाकरें मालकांगनीके तेलके निकालनेकी यहरीति है कि मालकांगनी को कूटकर गजीकी थैलीमें भरकर उसका मुंह सीकर तांबे के बरतन में रख कर उसके नीचे कोलेकी आग सुलगावें और थैलीपर एक भारी पत्थर रखदें तेल निकल आवेगा (औषधि) जो निसियान को अच्छा करे एकटंक कुन्दर राचि को जल में भिगो दें प्रात समय साफ करके थोड़ी शक्कर मिला कर खावें ॥

———

द्वार सदर बीमारियों का बर्णन ॥

द्वार उस रोगकानामहै कि हरएक वस्तु फिरती हुई मालूमहो और सदर कि उठनेकेसमय आंखके नीचेअंधेरा आजावे यहरोग दोषोंकी भाफ के हिलने और उनके ब्रह्मांडपर चढ़नेसे पैदाहोताहै रोगके वेगके समयपर मुंजिज़ को उपरांत भेजे को साफकर ना उचितहै(इतरीफल)जिसे शिरोरोगमें वर्णनकरचुकेहैंउत्तमहै(कल्क) दोनोंरोगोंको श्रेष्ठहै परन्तु जो वह पित्तसेहों धनियां,आमला कुचलकर तीनटंकरातको जलमेंभिगोकर प्रभातको मलकरथोड़ीसी शक्कर या शहद मिलाकर पिलावैं (काढ़ा)द्वारका गुणकारक सरफूंका-धनिया-पीसी हड़की जड़ जवकुट करके हर एक साढ़े तीन२ तोले औटाकर एकसप्ताहभरपिये (अन्य) जो दौरानसर को दूरकरे खशखाश का रस दो टंक धनियेका शीरा दो टंक थोड़ी शक्कर मिलाकर पियें(अन्य) द्वार को गुणकरे पटसनके बीजोंको पीसकर गेहूं के आटे में मिलाकर रोटी पकाकर खावें(चूर्ण) जो सदर और दवारको गुणकरे सपेद खशखाश,धनियां, बिनौलेकी मींगी,बराबर ले कर दुगनी मिसरी मिलाकर पीस छानकर प्रतिदिन गुलाब या जलके साथ फांकें ॥

सुबात अर्थात्अधिक सोनेकी दवाओंके विषयमें ॥

यह रोग बहुधा अधिकता से भेजेपर चाहे सादा हो यामलका होताहै औषधि मुंजिजके उपरांत कफकासुसिल दें उसके उपरान्त कालीमिरच घोड़ेकी लारमें पीसकर नेचमें लगावें निन्द्राके अधिक वेगकोदूरकरेगी औरठण्डी वस्तुके खानेसे पथ्यकरें और सिरका सूंघना नींदकी अधिकता दूरकरताहै और इतरीफल खानाभी उत्तमहै ॥

सहरअर्थात् निद्रानआनेकी औषधियोंकाबर्णन ॥

बहुत जागना भेजे की खुश्कीका कारणहै सादाहो वा

मलका उपाय भेजे को तरकरे और जोयह रोग मलसे हो तोभेजको साफ़ करनाभी अवश्यहै बकरी कादूध हाथ की हथेली और पांव में मलना श्रेष्ट है और खशखाश का तेल तलुओं और तालूपर मलना लाभ करताहै और खश-खाश का तेल को बादाम के तेलकी तरह निकाल लें और अफ़ीम सूंघना और पसलियों पर मलना नींद लाताहै और नाजबो के पुष्प का सूंघना और सोयेके साग को तकियेके नीचे रखनेसे अवश्यही निद्रा आतीहै—(औषधि जोनिद्रालावे) खशखाशके बीजदोटंक, काहूएकटंक,शीरा निकालकर थोड़ी शक्कर मिलाके पियें तैल पांच बीजों का जिसका नाम रौग़न हबूबख मसाहै और नींद लाताहै और सिर पीड़ा औ पैत्तिक सरसाम को लाभ देता है काहू के बीज,कहू के बीजों की गिरी, तरबूज के बीजों की गिरी,खशखाश,तिल बराबर लेकर बादाम रौग़न की तरह तेल निकाल कर सिरपर मलें काहू का तेल सिर पर मलना नींद लाताहै उसकी रीति यह है कि काहू के पत्तों का जल दो भाग निकाल कर एक भाग मीठे तेल में मिला कर खूब औटावें जब तेल मात्र रह जावे तो उ-तारलें(लेप जो निद्रालावे) हरीभंग की पत्तियां बकरी के दूध में मेंहदी की भांति पीसकर तलुओंमें लगावें या भंग का तेल तलुओं में मलें और भंग के तेलके निकालने की यह रीति है कि भंग के पत्ते बकरी के दुग्ध में पीसकर टिकिया बनाकर घी में जलावें जब काली हो जावे छान-कर उस घृत का सेवन करें और जो रोगी के हाथ पांव इतने खींचकर बांधें कि खिंचावट से पीड़ा करें और ऊंघा न जावे और एक दीपक उस रोगी के आगे जलावें और लोग इकट्ठे होकर क़िस्सा कहानी कहना शुरू करें जबदेखें कि रोगी थकगया है हाथ पांव खोल दें और सब चुप होजावें चिराग उठालें तो यह उपाय निद्रा लाने काहै और चक्की की आवाज़ और जल के बहनेके शब्द

पवन और दरख्तों के पत्तों के हिलने की आवाजसे भी निद्रा आती है और काहूका तेल सिर पर मलने से भेजे की खुश्की दूरहो— काहूके तेलके निकालनेकी रीति सरसाम में वर्णन होचुकीहै—(औषधि) स्त्रीकेदूधके नाकमें टपकाने से भेजे की खुश्की दूर हो और भोजन के पचजाने के उपरान्त कुछ गरम जल से नहाना निद्रा लाता है और जो ज्वरके कारण निद्रा न आवैतो पाशोयाकरें—(चूर्ण)जो निद्रा दोष और नजले को दूर करे—और भेजे का बलदायक है भुनाहुआ धनियां,काहू के बीज की मींगी,भुनी हुई खशखाश के बीज, हर एक अढ़ाई २ मिसकाल शक्कर सपेद बारह मिसकाल,कूट छानकर चूर्ण बनावें शरबत दो मिसकाल(औषधि)जोनिद्रा लावे, बिनफ्शा,पोस्ता,काहू के बीज,खशखाश,नाशवो औटा कर तरेड़ा दें (अन्य)नास जो निद्रा लावे खशखाश के बीज, काहू के बीज, धनियां, सूखे सोयेके बीज,बराबर लेकरभूने और कपडेमेंढीला २ बांध२ सूंघे (अन्य)हरे काहू का पानी लेकर छानकर स्त्री के दूध में मिलाकर नाक में टपकावें (निद्रा के लिये सुरमा)स्त्रीकी कंघीपर चराग़से काजल पारें और आंखमें लगावें और कंघी सिरहाने रखकर सोरहें॥

लकवहऔरफालिज अर्थात् अर्द्धितरोगकेविषयमें॥

फालिज उसरोगको कहतेहैं कि जिससे आधा शरीर लम्बाई में ढीला होजाता है और लकवह एकओर को मुंह टेढ़ा होजाता है और यह दोनों कफ़ से होतेहैं इन दोनों रोगों का यत्न मिलता हुआ है इसलिये एकही जगहपर लिखाजाता है इस रोग की आदि में उत्तम से उत्तम यह उपाय है कि दो तीन लंघन कराकर जल की जगह माउलअसल पियें और जो यह रोग बहुत बली हो सातदिन पर्यंत भोजन न करें (माउलअसल के बनाने की रीति) अदरक एक भाग, जल दो भाग, औटावें जब

तीसरा हिस्सा शेषरहे साफ़ करें और जहां शहद न मिले उसके बदले गुड़की ऊपर की लिखीहुई रीति से औटाकर सेवनकरें—(भोजन)कबूतर या चिड़िया का शोरबा और चनों का पथ्य दोष का पकाना रोग से चौथे दिन आरम्भ करके ज़ुबअयारिज का नवें दिन या चौदहवें दिन मुसिलदें और दूसरी बार भी मल निकालना इस रोग में अवश्यहै और हरदोष के मुंजिज की औषधि हरदोष के नीचे वर्णन होचुकी (मुंजिज का काढ़ा) सौंफ छः मासे, सौंफ की जड़, एक तोला, सोयेके बीज, अजग्रायन, अजमोद तीन २ मासे, बालछड़ चार मासे, कासनी की जड़ एक तोला, गुलक़न्द दो तोले डेढ़ पाव जलमें औटावें जब आधपाव रहे तो पियें और प्रतिदिन इसीतरह सेवन करें—(अयारज की गोलियां) फैक़राअयारज फैक़रा छः टङ्क, पीले हड़ों की छाल पांच टङ्क, शोधीतुरबुद चार टङ्क, जुबुलनील दो टङ्क, इंदरायन के फलका परदा दोनों एक २ टङ्क, हिंदी नमक पांच टङ्क कूट छानकर गोलियां बनावें (अयारज फैक़रा की तरक़ीब पिछले हकीमों की तरक़ीबपर) असारों, बालछड़, तज, मस्तगी, दारचीनी, अस्लोखदूस, सौंफ, गुलाबकेफूल हरएक एक २ टङ्क एलुवा दुगना कूट पीसकर छानलें मुसलों के देचुकने के उपरांत इस रोगके बराबर करनेके लिये जिसका वर्णन किया जाताहै सेवनकरें (गोली जो कांपनी और कफ़के संपूर्ण रोगों और कमर की पीड़ा और पेटके दरदको बैठहै) धोईहुई गन्धक, पारा, लाल हरताल, वेशमदोर जो एक प्रकारका विषहै नींबू के जल में आठपर खरल करके उड़द के बराबर गोलियां बनावें खुराक एक गोली से तीन गोली पर्य्यन्त घृत के साथ (अन्य)जो फालिज और लकवेमें मुसिलोंके उपरांत प्रकृति के बराबर करने के लिये श्रेष्ट है—अकरकरा, काली मिरच, पीपल, हरएक तीन२ मासे, पीपलामूल छः मासे,

सोंठ, मीठा तेलिया एक२ तोला कूट छानकर गुड़ और घी में मिलाकर मूंग की बराबर गोलियां बनावें और खुराक एक गोली से दो गोली तक—(गोली)वैद्यक की रीति पर—मालकांगनी, रत्नज्योति, पीपल, तीन २ टंक, मुसली काली पन्द्रह टंक, सोंठ सोलह टंक, जमालगोटे की गिरी सब्जी दूर करके चार टङ्क यह सब दवा कूटछान कर जल मिलाकर खरलमें पीस कर काली मिरच के बराबर गोलियां बनावें और दो गोलियां प्रतिदिन खावें—(अन्य) जो लकवे को श्रेष्ठ है—सोंठ, बच, बराबर कूटकर गुहद में मिला कर अखरोट के बराबर प्रति दिन दोबार खाया करें और इस औषधि के सेवन के समय में माउलअसल का पीना उचित है—(बफ़ारह) फालिज और लकवे के लिये लहसन एक टङ्क पक्का, सोंठ एक टङ्क पक्का, बकायन के पत्ते, संभालू के पत्ते पाव २ सेर, सोंठ जयकूट करके सब को मिला कर दोसेर जल में औटावें जब आधा रहे रुमाल के लिहाफ़ के अन्दर उसका बफ़ारा लें—(अन्य) कुचला फालिज लकवे और भेजे के रोगों और कटि पीड़ाके लिये श्रेष्ठ है और शीतल प्रकृति वालों के स्वभाव को अच्छा कर देता है—पन्द्रह कुचले पन्द्रह दिन जल में भिगो कर तीन दिन पीछे जल बदलते रहें जब पन्द्रह दिन पीछे नरम हो जावें बक्कल दूर करके सुखावें फिर अग्नि में इतना जलावें की धुवांबन्द होजावे कोला बनाकर ठण्डा करके उसके बराबर काली मिरच मिला कर पीसकर काली मिरच के बराबर गोलियां बांधे एक गोली प्रति दिन भोरके समय खावें—(अन्य) वैद्यक की रीति का नुसख़ा जो फालिज और कफ़के रोगों को शान्त करता है—कुचला, भंग के बीज, नकछिकनी, आठ २ टङ्क तीनों औषधियों को पाव भर दूध और आधपाव जलमें औटावें जब चतुर्थांश शेष रहे कुचला और भंग के बीज छिलके उतार कर, तज, पी-

पल, सोंठ, सौंफ, हर एक डेढ़ २ टङ्क कूट छान कर हरी ब्रह्मडंडी के जलमें या सूखी ब्रह्मडण्डी के पानी में औटा-कर उस जलमें सब औषधियोंको खरल करें और चनेकी बराबर गोलियां बनाकर प्रात और संध्या को एक वा दो खावें इस रोगमें जबतक भूख सच्ची न हो भोजन न करें और जबतक प्यास न लगे माउलअसल न पियें और लकवे के रोगी को अँधेरे निर्वातस्थान में बैठाना उचित है और जिसको फालिज ज्वर के साथ हो गरम दवायें न दें किन्तु पहिले ज्वरका यत्न करें फिर फालिज को दूर करे गरम जल फालिज के रोगी को हानि कारक है—(औषधि) वैद्यों की जो फालिज के लिये आजमाई हुई है—कलई, जस्त, बेशसियाह, पारा हर एक दश मासे, काली मिरच पांच टङ्क पहिले जस्त और कलई को गला कर पारे में डाले कि गोला बंधजावे फिर छः पहर खरल करें फिर बेशसियाह को थोड़ा २ उसमें छिड़क कर छः पहर पीसें फिर काली मिरच थोड़ी २ डाल कर उसी प्रकार खरल करें कि अठारह पहर खरल हो जावे और प्रभात उठ कर एक चावल भर खावें और उड़ने वाले जानवरों का मांस भोजन करें—(वजकी माजून) जो लक-वे के लिये आजमाई हुई है—वज बीस टङ्क, सोंठ, काला-जीरा, सात २ टङ्क सौ टङ्क शहद में मिलावें और प्रति दिन एक टङ्क खाया करें इस औषधिके सेवन में माउल-असल अवश्य पियें—(अन्य) जो फालिज और सम्पूर्ण कफ़ के रोगों के लिये उत्तम है—वज दश टङ्क, काली मिरच, पोदीना, कालाजीरा, कलौंजी तीन२टंक, पावभर शहद में मिलावें और दो टंक खावें—(अन्य) मिलावें की मींगी को शक्कर के साथ विरेचन के उपरान्त खाना फालिज लकवे और मिरगी को दूर करे—(मलने की औषधि) कि जिह्वा पर मलने से फालिज को अच्छी है राई, अकरकरा, पीस कर शहद में मिलाकर जिह्वा पर मलें—(औषधि)

जो फालिज के रोगी की प्रकृति को समान करतीहैं एक बीरबहूटी सिरपांव उखाड़ कर पानकी गिलौरी में प्रतिदिन खाया करें—(औषधि) फालिज में उत्तमोत्तम औषधि भंगहै जालीनूस कहता है कि जो कालीमिरच महीन पीसकर तेलमें मिलाकर मलें कोई औषधि इसके बराबर नहीं—(अन्य) लकवे को श्रेष्ठहै—सनके बीज पांच टङ्क अदरखमें मिलाकर जुल्लाबके उपरांत पन्द्रह दिनखावें-(तेल) जिसका मलना फालिज और लकवे के रोगी को श्रेष्ठ है—सफ़ेद कनेर की जड़ की छाल, सपेद घुंघची की दाल, काले धतूरेकी पत्तियां हरएक दो दाम सबको कूट छानकर टिकियां बनाकर पावभर तेलमें तलें जब टिकियां जलजावें उसी तेल में कजली करें जब वह थिरा जावे फालिज के रोगी के जोड़ों पर उस तेल को मलें और इस तेलका लगानावीर्य कोभी बल देताहै—(अन्यतैल)जिसका मलना अर्द्धित रोग को दूर करे मीठा तेल पाव भर, कठ, कलौंजी, दालचीनीदोदोदामइनदोनोंको तेलमें, खूबजलाकर सेवन करें—(अन्य) जिसका मलना फालिजको अच्छा करे अरण्ड के पत्ते, धतूरे के पत्ते, आकके पत्ते, सहदेई के पत्ते, सहँजन के पत्ते, असगंध के पत्ते, सँभालूकेपत्ते—सब बराबर कूट कर पानी निचोड़ कर बराबर मीठे तेल में औटावें यहां तक कि पानी जल कर तेल रहजावे उसके उपरांत सोंठऔर कड़वी कठवीसकर मिलाकरसेवनकरें—(अन्य) वहतैलकि पट्ठोंको बलदे और फालिज और झोलकोगुण करे और पेटकी बातको निकाले—कट दो टङ्क, बालछड़, अशनातेजपात, अकरकरा, सोंठ,हरएक एक टङ्क जब कुट कर जल में भिगो दें और प्रात.काल औटावें कि तीसरा हिस्सा रहजावे और मलकर छानकर पावभर मीठा तेल मिलाकर फिर औटावें कि पानी जलजावे और तेल रहजावे—(दाउदीका तेल) जो बाबूनेके बदलेभीकाममें आता है और सरदी के रोगोंको उत्तमहै गुलदाऊदी से यथा

विधि रोशनगुल तैयार करें परंतु फूल तीन बेर बदले (तितली का तेल) कि उसका मलना बदन के झोले को और पट्ठोंको अति श्रेष्ठ है तितली के हरे पत्तों को चौगुने मीठे तेल में औटावें जब केवल तेल शेष रहे सूखी साढ़ेचार अदकिये तितली सेरभर जलमें पकावें जबआधा रहजावे साफ़ करके एक अदकिया वही मीठातेल डालकर यहां तक औटावें कि तेल माचही शेष रहजावे-(बाबूनेका तेल-भेजेकी सरदीके रोगोंको अति श्रेष्ठहै बाबूनेके हरेफूल दो भाग,मेथी एक भाग,तिल का तेल छः भाग शीशे में करके चालीस दिनधूपमें रक्खेंऔर बाजे बाबूनेके फूल और मेथी को दश भाग जलमें औटातेहैं यहां तक कि तेलमाच शेष रहे—(अन्य)तितलीके हरेपत्तोंके साथतिलोंका तेल मिला कर शीशी में करके धूपमें रक्खें चालिस दिन के उपरांत सेवनकरे—(अन्यतैल)जो मलनेसे फालिज और कांपनीको दूरकरे—जवा छिलाहुआ चार दाम, कठ कड़वी, दो दाम, कायफल, धतूरे के बीज दोदो दाम कूटछान कर पानीमें टिकियां बनाकर बांधकर दुगने मीठेतेल में जला करसाफ़ करके मलें-(तैल)जो वायु कफ़के रोगोंको दूरकरे अजवायन, अकरकरा, इस्पंद, खारीनोन, बराबरलेकर अधकुचला करें और आठहिस्सेजलमें भिगोकर औटावें जब चौथाभाग रहे छानकर तिलोंका तेल बराबर औषधियों को मिलाकर फिर औटावें कि तेल शेष रहजावे—(बावचीका तेल)जो फालिज कोश्रेष्ठ है बावची आध सेर, सुरख अजवाइन अढ़ाई दाम, कूटछानकर पानी में टिकियां बनाये और अढ़ाई सेर धतूरे के वृक्षका जल और आधसेर मीठातेल मिलाकर लोहे की कढ़ाहीमें पकावें जबटिकिया जलजावे छानकर मलें—(तेल) सम्पूर्ण शीतके भेजेकीबीमारियों को दूर करे— मालकंगनी, भिलावा लहसुनबराबर कूटछानकर गोलियां बनाकर तीनदिन सुखा के पातालयन्त्र में तैल खींचें और एक धुंधची

चार घुंघची पर्य्यन्त पान में खावें (तेल) जो झोले के रोग और बायु आदिक शीतके रोगोंको श्रेष्ठ है मैनफल पांच दाम चार मासे,सोंठ, कुरंजुवह, बाबूना, कठकड़वी तीन २ दाम, कलौंजी, अंवारके बीज, धतूरे के बीज, अजमोद, मालकंगनी, इस्पंद, पीपला मूल, कायफल खुरासानी अजवाइन,अकरकरा, अजवाइनदेशीदो२ दाम,दारुहल्दी, बायबिडंग एक २ दाम,तिलों का तेल दो सेर, रेंडी का तेल आध पाव,अलसी का तेल आध पाव, यथा विधि तैल तैयार करके मर्द्दन करें परन्तु सरदीके दिनोंमें बायु और ठण्ढी चीजोंसे पथ्य करें-(फंकी) जो फालिज और बातज रोगोंके लिये श्रेष्ठहै—अजमोद, बायबिडंग,काबली, नमक लाहौरी,देवदारु, शैतराचीता, पीपलामूल, सौंफ,पीपल, कालीमिरच,हर एक अढ़ाई टङ्क,पीले हड़की छाल साढ़े बारह टङ्क, बिधारा सोंठ एक २ टङ्क, कूट छानकर एक तोलेसे डेढ़ तोले पर्य्यन्त खायाकरें—(लहसुनकी माजून) आध पाव लहसुनके बड़े२जवे छीलकर डेढ़पाव गायके दूधमें औटावें जब घुल मिल जावे छान कर कवाम करके बाबूनेकेफूल,सोंठ,कालीमिरच,पीपल,कालीहड़कीछाल, अकरकरा,कबाबा,खूलंजान,अर्थात् कुलींजनएक२ दाम, कूट छानकर कवाम मेंलावें—(अन्य) औषधिजो फालिज और लकवे को श्रेष्ठ है—सोंठ, लाहौरीनमक, पीस कर नाकमें नासलें—(बावची की माजून) जोशीतके रोगों को दूर करे—बावची सोंठ,तेजपात, बालछड़,नागरमोथा,का लीमिरच, अकरकरा, कलौंजी, कठ,शहद, भिलावा, यह सब दो २ भाग,भंग, राई, पीपल एक २ भाग, कूट छान कर बादाम के तैलमें पकाकर तिगुने शहद में मिला कर रक्खें छह महीनेके उपरान्त सेवन करें—(शरबत) एकटङ्क से दो टङ्क पर्य्यन्त—(नाकमें टपकाने की औषधि) जो लकवे और मिरगी को श्रेष्ठ है और भेजे की तरीसे साफ करता है थोड़ी कलौंजी और इस्पंद लेकर चुकन्दर की

जड़ और इन्द्रायण की जड़को जलमें पीस छानकर दो तीन बून्देंनाकमें टपकावें—(ग़रबत) जोलकवे और फालिज के रोगी के भेजे के साफ करने के लिये काम आता है सोंठ, बालछड़, कुलींजन, एक २ मिस्काल काली मिरच पीपल आधा २ टङ्क यह सब औषधि कुचल के थैली में बांध कर तीन सेर ग़हद और तीन सेर जल में औटावें और बार २ थैलीको मलते रहें कि कवाम होजावे और दो तोले प्रभात उठकर पियें—(चटनी) जो फालिज और कफ़के रोगोंको उत्तम है—वच, अकरकरा, कायफल, कुलीजन, कालीमिरच, पीपल, सोंठ, नरकचूर, पीपलामूल बराबर लेकर बराबर ग़हद में मिलावें और वैद्य की मति के अनुसार खावें॥

मालखोलिया अर्थात् बिक्षिप्त होनेका यत्न॥

जो यह रोग अधिक हो तो उसको जनून कहते हैं और जो क्रोध और चिन्ता अधिक हो तो मानिया बोलते हैं और जो हँसी खेल और दुख देना अधिक हो उसको दाअलकलब कहना उचित है जो अशीलता और मनुष्यों से अरुचि हो उसको फितरब कहते हैं मालखोलिया के यत्न में शीघ्रता अवश्य है—पहिले पहिल फसद करें क्योंकि पहिले यह यत्न सुगम है और स्थिर होने के पीछे बड़ी कठिनता होती है और हर दशामें रोगी को प्रसन्न रखना और अच्छी जगह बैठाना और घृतसंयुक्त भोजन खिलाना और बहुत सुलाना उत्तमसे उत्तम यत्न है और कई बेर मुसिलों के द्वारा मल निकालें और मन को पुष्ट रखना और मालखोलिया के रोगी को जो अच्छा लगे उसीमें प्रवृत्त रखना उचित है परन्तु एकान्त और भय हानिकारक है और जो ऐसा रोगी काम की अधिक चिन्तना करे तो आज्ञा दे दे परन्तु अधिक नहीं और फसद के उपरान्त माउलअसल पिलाना उत्तम है

और माउलजबन के सेवन के दिनोंमें बल देखकर मुसिल देते रहैं—(अफ्तैमूनीकी सिकंजबीन) जो दग्धित दोषको श्रेष्ठ है अफ्तैमूनी सात मिसकाल, शाहतरा, गावज़बान हर एक चार मिसकाल, मिसरी तीन भाग, सिरका खूब तुर्श, मिसरीका तीसरा हिस्सा सबको कवाम करैं बकरी का दूध जिसका माउलजबन बनावें इसी सिकञ्जबीन से फाड़ें मालखोलिया में बज़्धा शिर पर मारना लाभ करता है कि उसको बुद्धि आवे और इन्द्रियों का बल पीड़ाके कारण चैतन्य होजावे जो रोगी फिर जावे फिर मारें और अफीम खिलाना उसकी औषधि है और दो रत्तीसे प्रारम्भ करके आधे टङ्क पर्य्यन्त पञ्चावें परन्तु यह उसीको लाभ करती है जो युवा हो और दागकर दागको छोड़ देना उत्तमोत्तम यत्न है तिब्बयूसफी में सर्व्वदा मद्यपीना और नाच दिखाना इसकेयत्नमें लिखाहै (अन्य) सिकंजबीन अफ्तीमूनी माउलजबन में इस दग्धित दोष के रोग के लिये सेवन करते हैं काली हड़ नमकहिन्दी एक२ मिसकाल, अफ्तैमूनी पांच मिसकाल, सिरके में भिगोकर इस सिरके से सादी सिकंजबीन बना कर आधे अदकिये दो रतल भर दूध में मिलाकर पका कर ठंढा कर के टपकावें पांच अदकिये से नौ अदकिये पर्य्यन्त जितना चाहें खावें—(नाक में टपकाने की औषधि) जो विक्षिप्तता को लाभदायक है—मनुष्य के केश जला कर गुलरोगन में कजली कर के नाक में टप कावें—(कहानी) एक मनुष्यको अकेले बैठनेका व्यसन और उन्माद शुरू हुआ गरीबी के सबब उस बेचारे को रोग शांति का मकदूर न था मैंने पहिले हफ्तन्दाम की फस्द खोली फिर उसको बकरीका दूध खाकशीरके साथ पिलाया बहुत गुण किया और माल खोलिया का एक प्रकार मिराक के साथ होता है और मिराक एक कोष्ठका ऊंचेका परदाहै उसके लक्षण गुदा के बवन की

अधिकता अफरा, पीड़ा, उदर, दाह, और खट्टी डकार जलीऊई और मन्दाग्नि और खफ़कानअर्थात् उन्माद है उस का यत्नहर चिल्ले में बासलीक की फस्द लें और ताजखरूस के पत्तोंका रस पिलाना इस रोग में अति गुणदायक है और मालखोलियाका एक प्रकार और है उसको इश्क़ कहतेहैं॥

(यत्न) रोगीको किसी और कामोंमें लगावें और उस के प्रीतमकी भेटधर्मशास्त्रानुसार उत्तम यत्न है और उन मनुष्योंको रोगीके आगे नियतकरें कि उसके प्यारेकी बुराईकरेऔर जो प्यारा नहो उससे भोग करनाभीप्रीति को कम करताहै तिबफ़रीदीमें लिखाहै कि लोहेके बुझे हुये जल का पीना प्रीतिको कम करताहै और उसकी यहरीतिहै कि लोहेको गरमकरके जब पानीमें बुझाने लगें यहकहेंकि जिसतरह यह गरम लोहा पानीमें ठंढा होताहै उसी प्रकार अमुकके पुत्र अमुककी प्रीति अमुक कीसन्तान अमुकसे ठण्ढी करदे तीन बेर यह कहकर लोहा ठंढा करें फिर उस जल से प्रीति करनेवाले का मुख धोवें और उसके हृदय पर छिड़कें तीन दिन के सेवन में प्रीति भूल जावेगी तिबफ़रीदी और अन्य पुस्तकों में लिखाहै कि उस संगमर्मर का टुकड़ा जिसमें किसी के मरने की तारीख लिखी हो लेकर थोड़ा घिसकर प्यारे और प्यार करने वाले के वियोगके संकल्पसे दोनों को कहे बिना खिलावें विशेष करके प्रीति को दूरकरता है और एक पुस्तक में मैंने देखा कि जो बिच्छू का डंक और कुत्ते का नाखून और कछुये का नाखून ऊंट के चमड़े में यन्त्र बना कर विच्छिन्न रोगवाले के गले में बांधे तो यह बीमारी दूरहो और यहयत्न मिरगी को उत्तमहै—(औषधि नाक में टपकाने की) कि फ़रंगीडाक्टर ने विच्छिन्नताके दूर करनेके लिये आजमाई हुई बताई है उल्लू का भेजा अढ़ाई रत्ती टिघला कर कौड़ीभर कपूर मिलाकर

पीसें कि खूब मिल जावे फिर अढ़ाई रत्ती कञ्चेका रुधिर उसमें मिला कर दो जौके अनुमान लेकर कई बून्देंतुलसी के रस में नाक में टपकावें बिच्छिप्तता दूर होजावेगी (अन्य) कद्दूका तेल जिसका सहर और सरसाम में वर्णन हुआ बिच्छिप्तता को उत्तम है—(अन्य) तोफतुलमोमनीन में लिखा है कि नये कुल्हड़ में स्त्री के केश जला कर उस कुल्हड़में प्यारकरने वाले पुरुष को जल पिलाने से प्रीति कम होतीहै किन्तु उस से अरुचि हो जातीहै॥

शरीरके फड़कने का यत्न॥

फड़कनेका कारण पवनहै फड़कने की अधिकता किसी रोग का कारण होतीहै—(यत्न) नोन और भूसी से सेंकें और जो तैल कि फालिज में वर्णन कियेगये उनको मर्दन करें गरम दवा का लेप भी गुणकारी है जो इन चीज़ों से दूर न होतो कफ को मुसिल से निकालें॥

अंगोंके कांपने का यत्न॥

जो मल कफ़काहो तो उसके लक्षण मालूम करके उसी अंगके मल को साफ़करें और जो कांपनी मैथुन की अधिकता से हो तो मैथुन छोड़ दें और जो मद्य की अधिकता से हो तो मदिरा छोड़ दें और ताज़ा दूध पीना और आधाभूना मुरगीका अंडाखाना कांपनीको गुणदायकहै॥

नेत्र रोगका यत्न॥

शरीरका उत्तमोत्तम अंगनेत्रहै जो इसमें कोईदोष आजावेतो उसके यत्नमें आलस्य न करनाचाहिये और आंख को झांप और धुवें और गंदी पवनसे बचाना चाहिये और रोनेकी अधिकता और मैथुन और नशे और खींचने वाली अधिक चीजें नेत्र को हानि कारक हैं और सर्व्वदा सूक्ष्म वस्तुओं को देखना निषेध है परन्तु श्रम की रीति पर उचित है हरियावल पर दृष्टि करना नेत्र के तेजको संचित

करता है और नेत्र रोग पर जबतक तीनदिन न बीतें कोई यत्न न करनाचाहिये—नेत्रकी पीड़ा और शोथकोजो मांस के परदे की लाली के साथहो रमदकहते हैं—(यत्न) सरेरू की फस्द लें जो नाना प्रकार कीरमदको गुणदायक है और जोंकें लगानाभी लाभदेताहैमांस और मिठाई और खटाई से पथ्य करना उचित है और रमद के प्रारम्भ ठंढा जल नेत्रपर लगाना निषेध है और पीला कपड़ा हल्दी में रंगकर या नीला कपड़ा आंख के सामने लटकाना उचित है अब कई दवा रमद की जो सुगम हैं वर्णन करताहूं—(गोली) जो रमदके लिये श्रेष्ठहैं लिखा है कि इस से रमद की पीड़ा के लिये कोई उत्तम यत्न नहीं है भुनीफुई फिटकरी पक्के दो दाम, हल्दी सात मासे, जो कच्ची हो तो उत्तम है—अफीम पांच मासे पक्के पावभर कागजी नींबू के रस में लोहेकी कड़ाहीमें नरम आगमें पकाकर कजलीकरें जब गोलियां बनानेके योग्य हो गोलियां बना रक्खें जलमें रगड़कर पतला २ आंख पर मलें और नेत्रको किनारों की तरफ से थोड़ी आंख में भी लगावें—(औषधि) जो गुणकारी है और कानके जख्मों को टपकाने की दवा की रीति पर सेवन से गुणकारी है और दूध में मिलाकर उसकी पिचकारी लेना मूत्र के निकलने की जगहको उत्तमहै—धोयाहुआ सपेदा छः टङ्क निशास्ताकतीरा, बबूल का गोंद, हरएक डेढ़ टङ्क कपूर दोदाम;कुन्दरअफीम आधी २ दिरमटशाफा बनावें—(औषधि) कि नेत्र की पीड़ाको एक दममें ठहरावे लोध, गेहूं की मैदा, घी हरएक चार टङ्क सबको खूब मीर करें और चार गोलियां बनावें और ठीकड़ा आग पर रखकर उसमें एक गोली रखदें जब कुछ गरम हो नरम २ नेत्रपर बांधें ठंढा होने के उपरांत दूसरी गोली बांधें इसीप्रकार चारों गोलियां बांधनेसे पीड़ा दूर होतीहै—(पोटली) जो नेत्रकी पीड़ाके लिये अद्वितीय

घीकुवार की गूदी एकमासा, अफीम एकरत्ती खूब पीस करघीकुवारकी गूदीमें पोटलीबांधकर पानीमें भिगोकर आंखपर फेरें एक दो बूंदें नेचके बीच में भी टपकावें (अन्य) जो नेच पीड़ा के लिये आज़माया हुआ है—लोध एक मासा, भुनी फिटकरी एकमासा, अफीम आधा मासा, इमली की पत्तियां चार मासे सबको पीसकर पोटली बनाके प्रतिसमय आंखपर फेरें—(अन्य) आंखों की पीड़ा और सबल वायुको उत्तमहैइमलीकी पत्तियां सिरसकी पत्तियां, हल्दी, फिटकरी आधा २ टङ्क महीन कूटकर पोटली बनाकर पानी में भिगोकर प्रति समय आंख पर फेरें और कुछ उसका जल आंख में टपकावें—(तथा) रमदके लिये—कोकनार एक, अफीमएक रत्ती, दो लौंग, भुनीफुई बेलगिरी चारमासे, हल्दी चने के बराबर, इमली की पत्तियां थोड़ी सी पोटली बांधकर पानीमें भिगोकर आंखपरफेरें और अन्दरभी टपकावें (तथा रमद की औषधि) कपूर तीनभाग, पठानी लोध एकभाग आपस में पीस कर पोटली बांधें और दो घड़ी पानी में भिगो कर आंख पर फेरें और भीतरभीटपकावें (तथा) लोध, फिटकरी, सुदारसंग, हल्दी, जीरा सपेद, हर एक एक २ टंक अफीम चने के बराबर, काली मिरचें चार, तूतिया हरे उड़द के बराबर कूटछान कर पोटली बांधकर पानीमें भिगोकर आंखपरफेरें—(अन्य) रमद को दूर करे—पीली हड़की छाल, काबली हड़ की छाल, आमला, रसौत, गेरू, इमली की पत्तियां, अफीम, भुनी फिटकरी, सपेद जीरा यहसब थोड़ी २ कपड़े में पोटली बांध कर गुलाब हो तो अच्छा नहीं तो जलसे भिगोकर आंख पर फेरें—(औषधि) जो नेचों की पीड़ा को लाभ दे काला जीरा सपेद लोध महीन पीसे और भुनी फिटकरी भी पीसकर घीकुवारके गूदेमें मिला कर पोटली बांधे और पानी से भिगो कर फेरे—(अन्य)

जो सर्व्व प्रकार के नेत्र रोग को गुण करे अफीम एक मासा, भुनी फिटकरी दो मासे, इमलीकी पत्तियां दश मासे सब महीन पीस कर पोटली बांध कर आंख पर फेरें और पानी उसका आंख में टपकावें—(औषधि जो आंख की ललाई को गुणकरे) फिटकरी एक मासा, अलसी दो मासे दोनों साबूत पोटली बांध कर पानी से भिगो कर आंख पर फेरें—(अन्य) पैत्तिक नेत्र पीड़ाको गुण दायक है—इसपगोल का लुआब आंख में लगावें—(अन्य) जो नेत्र की ललाई को गुण देता है—जिसदिन नेत्र पीड़ा हो उसी दिन धतूरे की पत्तियां कुछ गरम करके कान में टपकावें जो बांईं आंख में पीड़ा हो तो दाहनी में जो दाहनी में हो तो बाईं में—(अन्य) जो बच्चों के रमद को गुणदायक है—नींब की कोंपल पीस कर कुछ गरम करके जिसतरफ पीड़ा न हो उस ओर टपकावें और जो दोनों नेत्रोंमेंपीड़ा होतो दोनोंकानमें टपकावें—(अन्य) नेत्र पीड़ाको दूरकरे—केवल घीकुवार की मींगी पीसकर सोनेके समय आंखमें टपकावें—(औषधि) जो आंखोंकी पैत्तिक पीड़ा को दूरकरे—गोंदीकी पत्ती मलकर उसका पानी निकालकर आंख में टपकावें—(अन्य) जो नेत्रपीड़ाको दूरकरे हल्दी जलमें पीसकर अन्योन्य ओर कानमें टपकावें—(औषधि) जो आंखकी ललाई को श्रेष्ठहै बिहीदाने का लुआब उसस्त्रीके दुग्धमें जो बेटी जनीहो और धनिये के पत्तोंका जल मिलाकर छानकर आंखमें टपकावें—(औषधि) जो नेत्र रोगको दूरकरे—नींबूका रस लोहेके बरतन में लोहेके दस्तेसे हलकरें जबकाला होजावेआंखके चौगिर्द अनुलेपन करे—(अन्य) जो नेत्र पीड़ा को गुणदायक है (लोध) आंवला गायके घीमें भूनकर ठंढे जलमें पीस कर मलें परन्तु आंख के बीच जानेन पावे—(अन्य) नेत्र पीड़ाको गुण दायक—पीली हड़ की छाल, गेरू, रसौत, जङ्गी हड़ घिस कर आंख के गिर्द लेप करें—(अन्य) आंख की ललाई

को गुण कारक,सूखी इमली,बीज निकाल कर पानी में भिगो कर मल कर छान कर अफीम तीन रत्ती,फिटकरी पांच रत्ती उसी इमली के जल के साथ लोहे के बासन में पकावें कि पानी गाढ़ा होजावे उस को सीप में रख कर लेप करें जो इमली न मिले उस के पत्तों का जल लेकर पका कर लेप करें—(अन्य) सोंठ, सम्मग अरबी, एक २ टंक गेरू एक मिस, काल अफ़ीम दो टंक कूट छान कर पानी में कजली कर के शाफा बना कर लेप करते रहें—(अन्य) अमचूर लोहे के तवे पर लोहे के दस्ते से थोड़ा२ पानी के साथ खूब पीस कर लेप करें और आंख में टपकावें—(औषधि) जो नेत्र पीड़ा कोतत्काल दूर करतीहै—बरगद का दुग्ध आंखमें लगावें—(अन्य)नेत्रपीड़ा को गुणदायक है नींबके पत्ते, और सोंठ बराबर अलग २ पीस छान कर दोनों को बराबर लेकर चने की बराबर गोलियां बनावें समय पर जलसे पीस कर लगावें—(औषधि) जो आंख कीललाई और गुबार को जो बगल की दुर्गन्धि से हो गुण दायक है अढ़ाई काली मिरचें थोड़ी चूल्हे की मिट्टी लाल जली हुई तीनों को बांस के चोंगे या चीनी के प्याले में खूब कजली करें जब काला होजावें आंखमें लगावें—(औषधि) जोनेत्र की सुरखी को आराम करे बांसे के पत्ते पीस कर टिकिया करके तीन दिन आंख पर बांधे—(अन्य) कपास की पत्ती दही में जोश देकर पीस कर आंख में लगावें—(अन्य) अनार की पत्ती पीस कर टिकिया करके सोते वक्त आंख पर बांधे—(अन्य) जो लड़कों की रमद को गुण करतीहै लड़के मूत्र में रुई भिगो कर आंख पर बांधें—(अन्य) जब रमद शुरू हो जो पीड़ा दहने नेत्र में होतो बायें अंगूठे के नाखून में और जो पीड़ा बायें नेत्र में होतो या दहने पांव के अंगूठे के नख में मदार का दुग्ध भरदें—(औषधि) जो रमद को गुण करे गोभी को पीसकर टिकिया बनाकर आंख पर बांधें

(अन्य) आंख हृदय और पेट की जलन को गुण दे मको-आमला, मुलहठी, नागरमोथा, खस, नीलोफर के बीज, एक २ टंक मिसरी नौटंक कूट छान कर दो दाम के अनुमान खावें—(अन्य) कफ़के रमदको गुण दायक—सहंजने के पत्तों का थोड़ा सारस शहद में मिलाकर आंख पर लगावें उस परबस्त्र बांधकर सो रहें प्रात समय खोलें तीन दिन में आराम होगा—(अन्य) जो लड़कों आदिके रमद को गुणकरे—साफ किया हुआ चाकसू दोमिसकाल, अंजरूत, मिसरी एक२ मिसकाल महीन कूट छानकर छिड़कें और बाजे अंतरूत के बदले मामीरा डालते हैं—(अन्य गुणदायकरमद) जलीऊई मेथीका लुआब थोड़े कतीरे के साथ आंखमें टपकाना बड़ीपीड़ाको दूर करता है-(अन्य) आंबकी कैरी पीस कर आंख पर बांधें—(अन्य) कटाई के पत्ते पीसकर आंख पर बांधें और कटाईके पत्तों का पानी भी आंखमें टपकाना अति श्रेष्ठ है—(अन्य) कि सुरखी दूर करे छीलीऊई मुलहठी ,कूटके थोड़े जलमें पीस कर रूई उसमें भिगो कर आंख पर रक्खें—(अन्य) सुरखी को दूर करे—लोध छः टङ्क, पीली हड़ की छाल दो टङ्क, अनारके पत्तोंके जलमें पीसकर,रूई उसमें भिगोकर तीनदिनबराबर रातको आंख पर रक्खें—(अन्य) वह औषधि पतली जिससेकिसी अंगकोधोवें जोनेचोंके बुखारकोदूरकरेऔर खुजलीको गुणकरे और सुरखीको दूरकरे पीली हड़की छाल,बहेड़ेकी छाल,आमला जवकुट कर रात्रिको जलमें भिगो रक्खें प्रातःकाल को उस जलसे नेचामें एक दिनके धोवें—(औषधि)कि आराम होनेकी दशसेवन करनेसे एक वर्षआंख न दूखेचालीस सुएडी निगल जावेंदो वर्ष पर्य्यन्त आरामसे रहेंयह आजमाया हुआहै यूनानी कहतेहैं कि जो बुधवार को सूर्य्योदय के समय एकअनारकी कलीजो फूली नहो वृक्षसे मुखसे तोड़कर निगलें एक वर्ष पर्य्यन्त रमदसेरक्षित रहेजो दोनिगलें तोदो वर्षपर्य्यन्त बचेरहें॥

रतौंधी का यत्न ॥

काली मिरच,कमीला,पीपल बराबर बारीक़ पीसकर आंखमें लगावें—(अन्य)काली हड़,सोंठ,कालीमिरच,कूट छानकर गोली बनाकर पानीमें घिसकर लगावें-(औषधि) आजमाई हुई बौअलीसैना की बकरी की कलेजी का क़बाब बनावें उससे जो जलटपके आंखमें लगावें कईसाबूत पीपल कलेजी में रखकर आगपर इतनी देर रखते हैं कि जलजावे फिर पीपलको निकालकर अदरक मिलाकर आंख में लगातेहैं—(अन्य) प्याज़ का जल आंखमें लगावें सिरस के पत्तोंका पानी आंख में लगावें—(अन्य) समन्दर फलकी गूदी बकरीके मूत्रमें घिस कर आंखमें लगावें—(अन्य) लाहौरी नमक की सलाई आंखमें फेरें—(अन्य) दहीके तोड़ में थूक मिलाकर आंखमें लगावें—(अन्य) अदरक पीस कर उसका जल नेचमें टपकावें जो अदरक नहो सोंठ पानीमें घिस कर दो तीन बूंदें आंख में टपकावें—(अन्य) कालीमिरच थूकमें घिसकर आंखमें लगावें—(अन्य) रोहू मछली का पित्ता आंख में लगावें—(अन्य) कसौंधीके फूल का पानी आंख में लगावें—(अन्य) सहँजने की कोमल डाली का जल दोमिसकाल अदरकमें मिलाकरआंखमें टपकावें—(अन्य) रतौंधी का गुणकारक सिरस के बीज चार दाम खूब पीसकर आटेमें मिलाकर रोटी पकाकर तीन दिन खावें—(अन्य) हड़,लालमिरच,अदरकमें मिलाकर आंख में लगावें—(अन्य) काली मिरच रोहू के पित्ते में भिगो कर सुखावें जब पित्ता मिल जावे मिरच घिस कर आंखमें लगावें—(अन्य) गधेका रुधिर ताज़ा आंखमें लगावें दो तीन दिनमें दूरहो—(अन्य) मनुष्य के कान का मैल पीली हड़ की छालके साथ बराबर पीस कर गोलियां बनावें और जलमें कजली करके सन्ध्याके अनुमान आंख में लगावें—(अन्य) सरकंडेको गिरहसे तोड़कर उसीके ऊपरकी छाल

जलावें जब चार उंगुल जलने से शेष रहे उसके दो टुकड़ करें बालतरी कि उस के बीच जमा होगी आंखमें लगावें यद्यपि वह तेजीके कारण पीड़ा और दाह करेगी परन्तु मल को आंसुओं के साथ बहा कर रोग खो देगी—(अन्य)हुक्के की नैजिसपर चिलम रखते हैं उसकी कीट आंखमें लगावें॥

दिनौंधी का यत्न॥

भेजेको तर करें और बकरे का कल्ला और पाय और उड़दकी दाल खाया करें कि रुधिर गाढ़ा होजावे ठण्ढे जल में गोते लगाना और उस में आंखें खुली रखना गुण करता है॥

पलकों के मोटा होजाने का वर्णन॥

सलाक पलकोंके मोटा होजानेको कहते हैं कि उसके साथ खुश्की औरखुजली हो और पलक के बाल गिर-जावें उसको लौकिक में बाम्हनी बोलते हैं इसका उत्त-मोत्तम यह उपाय है कि सरेकू की फस्द लें और सिरके पीछे पछने लगावें फिर औषधि का सेवन करें—(सलाक का गुणकारक यत्न) जो पलकों को घासकी भांति उगा-ताहै रुईकी बत्ती मदारके दुग्धमें भिगोकर सुखावें और दियेमें मीठा तेल भरकर वह बत्ती जलाकर काजल पार के आखमें लगावें कई पुस्तकोंमें मीठे तेलके बदले घतलि-खा है—(अन्य) सलाक को गुण करे—धतूरे और भँगरे के पत्तोंका पानीलेकर उसमें रूईभिगोकर छायामें सुखावें और मीठे तेलमें वह बत्ती जलाकर काजल पारें वह का जल बासी पानीसे आंख में लगावें—(अन्य)पुराने डोलका चमड़ा कोलोंकी आग पर जला कर कोला करके पीस-कर धुनीहुई रूईमें रखकर बनावें और सरसों के तेल में जलावें और उसका काजल लेकर आंखमें लगावें—(अन्य) मदार की जड़ जलाकर राख उसकी पानीमें मिला कर

आंखके गिर्द अनुलेपन करें आंखकी खुजली और सुरखी और पलकों के फूलने को दूर करती है और बाजी पुस्तकों में लिखा है कि जो नींबके पत्ते पीसकर उसका पानी लेकर आंखमें लगावेंतो खुजली और सलाकको दूरकरे—(अन्य) अधिक बालों को जो पलकों में निकल आते हैं अर्थात् प्रबाल को श्रेष्ठहै और सलाक और आंसू और आंखकी खुजली और सुरखी को दूरकरे दोदाम जस्त लोहेके बरतनमें कोलोंकी आगपर टिघलाकर बथुयेके साग का पानी थोड़ा२ उसपर टपकावें कि पीला या सपेद कुश्तां होजावे उसे महीन पीस कर आंख में लगावें—(अन्य)पलकोंके गिरजाने और सलाकको श्रेष्ठहै—छछूंदर का गूह आधा जलाकर और आधा बेजला दोनों को पीस कर गुहद में मिलाकर लेपकरें—(अन्य)जो सलाक को दूरकरे और खुजली और पलक की पीड़ा को श्रेष्ठ है सपेद बिसखपड़े की जड़ छाया में सुखा कर पानी में घिसकर आंखमें लगावें—(अन्य) मक्खी का सिर टूर कर के सुखाकर पानी में पीसकर मलें—(अन्य) पलकों के फूलने को दूरकरे सीप जलाकर पीस कर नेचमें लगावें—(अन्य) दिनौंधीको उत्तमहै कटाईका फलपानीमें उबाल कर इसका बफारालें—(अन्य) कबूतर की बीट गुहद में मिलाकर पलक पर लगावें—(अन्य) सर्प की केंचली जला कर तिल के तेल में मिलाकर पलक पर लेप करें—(अन्य) उस सलाकको दूरकरे कि पलक गिरजावे और किनारे लालहों बबूल की पत्तियां एक सेर पांच सेर जल में औटावें जब चतुर्थांश रह जावे छान कर प्रति दिन दोबेर पलक पर लेप करते रहें थोड़े दिनों में ईश्वर की कृपा से आराम हो जावेगा—(अन्य) गधे की लीद सुखा कर पाताल यन्त्रकी रीति पर तेलखींचें और पलकपर मलें—(अन्य)कद्दू को जलाकर उसकी राख सुरमे की भांति लगावें—(अन्य) जो सलाक को श्रेष्ठ है—पुराना कपड़ा

गाढ़ा या रुई तीन बेर हल्दी में रँगकर सुखा के फिर उसी प्रकार तीन बेर निबौलीकी गिरीके क्षीरमें भिगो कर सुखाकर बत्ती बनाकर सरसों के तेल में जला कर उसका काजल लेकर लगावें—(अन्य) संग बुसरी, तूतिया, कपूर, मिश्री बराबर कूट छान के पानी में खरल करके गोलियां बनावें आवश्यकता पर जलमें घिसकर आंख में लगावें—(अन्य) कुन्दर को सुरमें की भांति करके नेत्र में लगाना आंख की ज्योति को साफ़ करता है और आंख के घाव और आंख के जमे हुये रुधिर और आंख के आंसू बहने और सलाक और आंख की सपेदी और खुजली को गुण करता है और धुंध को दूर करता है विशेष कर शहदमें मिलाकर और कुन्दर का काजलभी यही गुण रखताहै काजल पारने की यह रीतिहै कि कुन्दर को दिये में जलाकर उसपर एक बरतन औंधावें कि काजल उसमें इकट्ठा हो—(अन्य)कि पलकों के झड़ने को गुण करे खुरमा के बीज तीन टङ्क, बालछड़ दोटङ्क, पानी में पीस कर आंख में लगावें—(अन्य) पलकोंके बाल जमाने के लिये कि कोढ़ से गिरगये हों जंगी हड़ माजू फल,को जलाकर सुरमा मिलाकर लेपकरें॥

मोतिया बिन्दका यत्न॥

उसके यह लक्षणहैं कि प्रारंभमें रोगीके विचारमक्खी और मच्छर की भांति नेत्र के सामने मालूम हों और दिन२ अधिक होतेजावें और उतरने के उपरांत पुतली बदल जावे और ज्योति जाती रहे पानी (उतरने के बन्द करने का यत्न) कि पहिले कनपटियों पर गुल देना है कि सुरमा बनानेवाले जानते हैं जोंकें लगाना कनपटियों पर प्रारम्भ में भी गुण करताहै जब पानी सब उतर आवे मलके पकाने के उपरांत भेजे को साफ़ करें—(बचकी माजून) कि उसका सेवन प्रारम्भमें मोतियाबिन्द के करना

उचितहै—बज, हींग, सोंठ, सौंफ, बराबर लेकर ग़हद में मिलावें और एक मिस्काल के अनुमान खावें—(अन्य)जो मोतियाबिन्द को दूर करे प्रारंभ में निरमली ग़हद में पीस कर आंख में लगावें—(अन्य) जो मोतियाबिन्द को दूर करे प्रारम्भ में हंकूत के बीज दो भाग, अफ़ीम एक भाग, कूट और छानके ग़ाफ़ा बनावें—(अन्य) नौसादरको सुरमेकी भांति नेत्र में लगाना मोतियाबिन्दको दूर करताहै—(अन्य) सपेद घुंघची का जल कागजी नींबू के रसमें मिलाकर प्रातःकाल नेत्रमें लगायें—(अन्य)मोतियाबिन्द के लिये आश्चर्यदायक गुण रखताहै और अधिक होने नहीं देता—इमली के पत्ते दश तोले फूलके कटोरे में नींब की लकड़ी के दस्ते से कि उसमें पैसा जमाया हुआहो इतना कजली करें कि गाढ़ा होजावे फिर उस स्त्री के दुग्ध में कि पुत्र जनीहो चालीस पहर खरल करके सेवन करें—(सौंफ का सुरमा मोतिया बिन्द नाशक) सौंफ का हरा हत्था लेकर शीशे या चीनी के बासनमें रक्खें जब सूख जावे पीस कर सुरमा लगावें—(सेवती का सुरमा) सेवती के फूल कुन्दर बराबर पीसकर रुई में लपेटकर बत्ती बना कर मीठे तेलमें जलाकर काजल उसका लेकर लगावें—(औषधि) भीमसेनी कपूर स्त्रीके दुग्धमें कि लड़का रखती हो पीसकर लगावें—(औषधि) जो संकल्प को जो मक्खी की भांति उड़ते हैं आंख के आगे दृष्टि पड़ते हैं कव्वे का पित्ता आधा वजन ग़हद में मिलाकर खूब कजली करके आंख में लगावें रोग शान्ति को प्राप्त होगा—(औषधि) निरमली हींग, सपेद फटकरी, संगबुसरी, तूतिया एक २ दाम बारीक़ पीस कर दही में खरल करें यहां तक कि आठ सेर दही खरल में भली भांति कजली करें इसके उपरान्त गोलियां बनाकर रक्खें और आवश्यकता पर स्त्रीके दुग्धमें घिसकर लगावें—(अन्य)कि प्रारम्भ में सेवन करने से मोतिया बिन्द दूरहो हड़की गुठली की गूदी

स्वच्छ जल में तीस पहर खरल करके गोलियां बनाकर नेत्र में लगावें —(अन्य) मोतियाबिन्द के लिये आजमाया हुआहै जो इस रोग के प्रारम्भ में सेवन करें अधिक होने न दें दो कागजी नींबू का रस लेकर चार तोले गायके मक्खन में खूब मलकर मक्खनमें थोड़ा जल डालकर दो रात दिन रखदें फिर मक्खन को जल से धोकर उसी प्रकार दो नींबू के रस में कजली करके जल डाल कर दो रात दिन रक्खें और धोवें इसी प्रकार पच्चीस बेर करके चीनीवा शीशा के बासन में रक्खें और दो दाने खशखाश के बराबर लगाया करें—(अन्य) नींब के बीज का सुरमा लगाना पानी उतरने को गुण करता है—(औषधि) मनुष्य के कान का मैल,हींग, बराबर शहद में पीसकर आंख में लगाया करें दूध मछली खाना मोतियाबिन्द के रोगी को हानि करता है॥

आंखऔर पलकोंकी खुजलीकायत्न॥

पहिले सरेरू की फस्द लें फिर खुजली की औषधियों का सेवन करें—(यत्न)माजू,जंगीहड़,पीस कर आंखपर लेप करना आंख और पलकों की खुजली को गुण करताहै—(मनुष्य के शिर के बालोंका सुरमा)मनुष्य के शिर के केश जलाकर महीन पीस कर आंखमें लगावें—(अन्य)अंडे का छिल का जलाकर महीन पीसकर लगावें नींब का सुरमा बहुधा नेत्र रोगोंको गुण दायक है नींब के पत्तों को आबखोरे में रख कर कपड़ौटी करके इतनी देर आग में रक्खें कि भीतर जलकर राख होजावें उस राख को नींबू के रस में खरल करकेलगावें—(अन्य) आंखकी खुजली और दाह को गुण करे शीशे का मैल आंख मे लगावें और सीसे के मैल उस स्याही को कहते हैं कि सीसे के टुकड़े को जूती के तले या बांस के चँगले पर रगड़ने से प्रगट हो उस स्याही को उंगली में लेकर आंख में लगावें॥

नेत्र की ज्योति का यत्न

यह रोग कई प्रकार से होता है बज़ुधा बुढ़ापे म भेजे की कमज़ोरी और अग्नि के मन्द होने से नेत्रकी ज्योति कम होजाती है यह असाध्य है परन्तु उपाय से हाथ न उठाना चाहिये कि अधिक न होजावे (यत्न) भेजे का मल निकालें और बलदें कच्चेशलगम और पकाकरखाना नेत्र की ज्योतिको गुण देताहै और शिर में कंघी करना बूढ़ोंकी ज्योतिको उत्तमहै चाहियेकि प्रतिदिनकईबेर कंघीदें कि बुखारको आंखसे सिरकीओर सुखादें और शेखुलरईशने कहाहै कि साफ़ पानीमें पैरना और उसमेंआंख खोलनाभी लाभदेताहै और थोड़ा वमन आंखकी ज्योति को गुण देताहै और नीचे के शरीरका श्रम और उसका दबाना और मलना ज्योति को श्रेष्ठहै और ज्योति की हानि कारक यह बातें हैं बज़ुत रोना, और गरदन के पीछे पछने लगाना और बज़ुत भूखारहना और बज़ुत भोग करना और सोया मसूर और जो कुछ बध कोष्ठ कार कवस्तु हों विशेष कर के ज्योति की हानि कारक हैं (सुंडी की शरबत का नुसख़ा) जो ज्योति की हीनता और दिमाग़ की तरीको गुणदायक है और बुखारों को बिभाग से दूर करताहै सुंडी के फूल पावभर, शक्कर सपेद तीनपाव, सुंडी के फूलोंको डेढ़ सेर जल में रात्रि को भिगो कर प्रातःकाल जोश दें जब तृतीयाश रहे छान कर शक्कर मिला कर शरबत का क़वाम करें और चार तोले खावें सुंडीका अरक़ भी नेत्रोंकोबल देताहै—(चूर्णसौंफ़का) जो नेत्रोंकीज्योतिको बलदायक आजमाया हुआहै तिबदाराशिकोही से यह औषधि प्रतिकी गई—रात्रि को दो टंक सौंफ कूट छानके दो टंक सपेद शक्करके साथ मिला कर खाकर सो रहें, इसीप्रकार से सर्व्वदा सेवन करें सौंफ की अतर सौंफ के अरक़से

निकाल कर आंख में लगावें बहुत गुण करता है—(औषधि गोली) चमेलीके फूल डंडी तोड़कर बराबर मिश्री मिला कर खरल करके आखमें लगावें—(अन्य) ज्योति को बलदे संग बुसरी आधा तोला टुकड़े २ करके दो तीन कागजी-नींबूके रसमें भिगोवें और मट्टी के बरतन में रख कर कपड़ौटी कर के जंगली कंडों में रख कर आगदें फिर निकालकर पीसकर आंखमें लगावें—(गोलियां) ज्योति को श्रेष्ठहैं हड़के बीजकी मींगी बारह, पीपल पांच, कालीमिरच पांच, आंवले के रसमें इतना पीसें कि काली होजावें फिर गोलियां बनाकर पानीमें घिसकर आंखमें लगावें—(अन्य) रीठेके बीजोंकी मींगी नींबू के रसमें खरल करके गोलियां बनाकर रक्खें प्रात समय थूकमें घिसकर आंखमें लगावें-(गोली)ज्योतिकीहीनताको गुणकरे औरआंखकी ललाईको श्रेष्टहै—जंगी हड़ मिश्री बराबर पीसकर गोलियां बांधकर आंखमें लगावें—(सलाई)जिसका सेवनवैद्यकमें लिखाहै शीशेको अग्निमें गलाकर त्रिफले के जलमें बुझावें फिर मुंहके पानीमें फिर भंगरेके जलमें फिर घृतमें बुझावें फिर शहदमें फिर सलाई बनाकर प्रात समय आंखमें फेरें आंखकी सब बीमारियों को श्रेष्ठहै और ज्योतिको बल देतीहै—(औषधि) बज्रधा नेचकी बीमारियों को गुणकरे और उसके सर्व्वदा सेवन से आंख अच्छी रहती है जब कि नींदसे जगे अपना थूकआंखमें लगावे—(अन्य) ज्योति को उत्तम है हकूत की गूदी पानी में पीस कर आंख में लगावें—(अन्य) निर्मली जलमें घिसकर आंख में लगाना ज्योतिको अधिक करता है—(अन्य) सिरस का चूर्ण गजी का कपड़ा सिरसके पत्तोंके पानीमें भिगोकर सुखावें तीन बेर इसीतरह करें फिर उसकी बत्ती बनाकर चमेली के तेलमें जलाकर उसका काजल लेकर रक्खें और अंजनकी रीति पर आंखमें लगायाकरें—(लेप) आंखके बुखार और लाली और नेत्र की ज्योति की कमजोरी को गुण करे

परन्तु बहुत दिनों तक लगाना चाहिये जंगीहड़ बहुत छोटी दो, अफ़ीम चार रत्ती, लौंग, सिरकीतरफ़से सबको खूपजलमें पीस रक्खें और आंखपर लगाया करें जो किञ्चित् नेचमें जावे तो कुछ हानि नहीं—(औषधि) बहुधा नेच रोग और ज्योति और मोतियाबिन्द के प्रारम्भको श्रेष्ठहै—प्याजका जल शहदमें मिलाकर आंखमें लगावें—(सुरमा ज्योति कारक) सोलह काली मिरचें, साठपीपल पचास बंबेलीकी कली, अस्सी तिलके फूल सबको मिलाकर खरल करके सुरमा लगावें—(अन्य) कालीमिरच एक मासा, पीले हड़की छाल दोमासे, छिलीहुई हल्दी तीन मासे, गुलाब या पानीमें खरल करके सुरमेकी भांति करके आंख में लगावें—(अन्य) ज्योति को श्रेष्ठ है सोजिज फ़ारसी पुस्तककी प्रति दो अखरोट, हड़की मींगीतीन, दोनोंको जलाकर पीसें और चार काली मिरचें मिलाकर खरल करके सुरमेकी भांति बनावें रसौंतको सुरमेके बदले लगाना सर्व्वदा नेचमें बहुत गुण रखता है—(अन्य) ज्योतिकी बलकारक—नींबके फूल छायामेंसुखाकर उसके बराबर कलमीशोरा लेकर सुरमा करके सोने के समय नेचमें लगावें सबल और नाखुनाको भी लाभ करता है—(औषधि) धुनीहुई रूई मदारके दुग्धमें भिगोकर छाया में सुखा कर बत्ती बनाकर सरसोंके तेल में जलाकर उसका काजल रत्ता पूर्व्वक लेकर नींबकी लकड़ीमें पीसकर फूलके कटोरे में गुलाब के साथ सात दिन खरल करें और सलाई के साथ आंखमें लगावें॥

सबलबाय और आंखकी सफ़ैदी इत्यादि का वर्णन॥

सबल एक परदाहै आंखकी रगों में मलके भर जानेसे उत्पन्न होताहै उसको मांडा और फूली बोलतेहैं जफ़रह अर्थात् नाखुना आंख के बड़े कोये की ओर पैदा

होताहै आंखकी सफ़ैदीको हिंदीमें जाला बोलतेहैं वह सफ़ैदीहै कि आंखकी स्याही पर पैदा हो—(यत्न) पहिले फस्द सरेू या माथे की रग खोलें उसके उपरांत जो दवायें आंख को साफ़ करती हैं सेवन करें आंख के दर्द नाखुना और दमा का गुणकारक— अरहरका रस एक दाम छान कर बिना कलई किये हुये बरतन में उस नींब की लकड़ी से जिसमें पैसा जमाया हो दस कागज़ी नींबू के रसमें खरल करके गोलियां बना रक्खें समय पर घिस-कर आंख में लगावें—(गोली) सबल और आंख के गुल अर्थात् फूलीको उत्तमहै सिरसकेबीजोंकीमींगी खिरनी के बीज कूटछान कर सिरस के पत्तों के रसमें मिलाकर खरल करके गोलियां बांधकर समय पर स्त्री के दूध में घिसकर लगावें—(अन्य) फूलीको गुण कारक जंगोहड़, पलास, पापड़ा, लाहौरी नोन, रक्त चन्दन बराबर कूट छान कर गोलियां बनावें और पानीमें घिसकर लगावें—(गोली) कि सबल और सलाक और नज़ले को गुणकार-कहै समुद्र फलकी मींगी, रेठेकी मींगी, खिरनीके बीज, काली हड़के बीज, बराबर लेकर नींबू के रसमें कजली करके खरल करें और गोलियां बनाकर लगावें—(अन्य) रक्त चन्दन एक तोला, भुनी हुई फिटकरी, बराबर कूट छान कर घिकुवार के लुआब में खरल करके गोलियां बनाकर एक गोली घिस कर आंखमें लगावें—(अन्य)ना-खने के श्रेष्ठ बोअलीसीना का आज़माया हुआ है अदरक बकरी के पित्ते में मिलाकर आंख में लगाया करें—(अमल) आज़माया हुआहै कि जालेको आंखसेदूरकरता है नोन और शक्कर को जिह्वा पर रक्खें कि जिह्वा खर-खरी होजावे सो उस जिह्वा से आंख के जाले को चाटें—(गोली) कि नाखुना और सपेदी और पानी उतरने के प्रारम्भ को गुणदायक है-साबून कच्चे पांचदाम, तूतिया, राल, साढ़े तीन२ मासे साबून को छुरी से टुकड़े२ करके

लोहे के बरतन में आगपर गलावें फिर तूतिया पीस कर साबून में मिलावें फिर राल डालके उस बरतन को आग पर रहने दें और लोहेके दस्तेसे कजली करें जब काला होजावे उतारलें समय परखशखाशके दानेके बराबर लेकर सीपमें मिलाकर आंख में लगावें फिर उसी प्रकार तीन दिनके उपरान्त लगावें—(औषधि नाखुनेकी गुणकारक) हल्दी, दारचीनी, आंवाहल्दी एक २ दाम नींब के पत्ते छः टङ्क कूट छानकर छः महीने के बछड़ेके मूत्रमें दो पहर खरल करके गोलियां बनाकर छायामें सुखाकर आवश्यकता पर गुलाब में घिसकर लगावें—(औषधि नाखुने की गुण कारक) एक हल्दी की गिरह लम्बी चौड़ी लेकर उसमेंछिद्रकरके गेहूंकी दोकच्ची रोटियोंमें उसगांठको रख कर तवे पर आगसे पकावें जब रोटी जल जावे हल्दी निकाल लें समय पर हल्दी को फिटकरी के साथ घिसकर आंखमें लगावें—(बारहसिंगे की सींग की गोलियां) जो आंखके जालेका गुणकारकहैं-पहले बारहसिंगेके सींग को पानीमें पीसें फिर कागजी नींबूके रसमें खूब पीसकर काली मिरचके बराबर गोलियां बनावें समयपर घिसकर आंखमें लगावें थोड़े दिनोंमें आराम होजावेगा-(सुरमा जालेको दूरकरे और मोतियाबिन्दको खोदे मिश्री दो भाग, लाहौरीनोन एक भाग, दानों पीस कर सुरमे की भांति करके आंखमें लगावें एक सप्ताह में मोतियाबिन्द जाता रहेगा—(औषधि) सबल को दूर करे—कबूतर या मुरगी की बीट कागजी नींबूके रसमें कजली करके तांबेके बरतन में रक्खें समय पर आंखमें लगावें—(अन्य) अमबीलकी बीट गहदमें मिलाकर आंखमें लगावें तिबफरीदी के ग्रंथ कारने जालेके लिये आजमाया हुआलिखाहै-(औषधि) जो जालेको गुण करे—बारासिंगे का सींग दूध में घिसकर लगावें—(अन्य) लाहौरीनोनसे सलाई बनावें और दिनमें कई बेर आंखमें फेरें नाखना और जाले को

गुणदायक है—(अन्य) फूली को गुण करे कबूतर या चिड़िया की बीट पीसकर आंख में लगावें—(अन्य) नाखुना की गुणदायक—मदार की जड़ जल में घिस कर लगावें—(अन्य) नेच पीड़ा और जाले को दूर करे कटाई की जड़ नींबूके रसमें घिसकर लगावें—(अन्य) फूली अच्छी हो—अरहरके पुराने वृक्षकी जड़ घिसकर लगावें—(अन्य) सपेदी को दूर करे बरगद के वृक्ष का दूध आंख में भरदें—(अन्य) फूलीको उत्तम बैंगन की जड़ पानीमें घिसकर लगावें—(अन्य) फूलीको गुणकारककड़वी तोरईके बीजकी गिरी मीठे तेलमें पीसकर आंखमें लगावें—(अन्य) समुद्रझाग पीसकर लगावें और बाजे समन्दरझाग बिनौलीके तेलमें पीसकर लगाते हैं—(अन्य) सपेदीको श्रेष्ठ है—लाले का पुष्प शहदमें महीन पीस कर लगावें—(अन्य) लड़कों की फूली को श्रेष्ठ है मिश्री उस स्त्रीके दुग्धमें कि बेटा रखताहोपीसकर लगावें—(अन्य) सोंठ, फिटकरी, लाहौरी नोन बराबर कूट छान कर प्रति दिन आंख में लगावें कि जाला दूरहो—(अन्य) सपेदीको गुणकरे—गधेका सुम जलाकर महीन पीसकर लगावें—(अन्य) चमेली के फूलों की गोलियां जो नेच की ज्योति के विषय में वर्णन हुआ जालेको उत्तम है—(औषधि) नाखुनेको उत्तम है प्याजका लाल पानी कई दिन आंखमें लगावें—(अन्य) तेजपात महीन पीस कर आंख में लगाना आंखों की अंधेरी और नाखुना और मोतियाबिन्द को गुण देता है—(औषधि) नेचकी ज्योतिको बलदे—और नाखुना और फूली और बहुतसे रोगों को गुणकारक है—कलमीशोरा बहुत सपेद महीन पीसकर हल्दी रंगके अनुमान मिला कर लगावें—(औषधि) गुणदायक है बिषखपड़ेकी जड़ और सपेदा पानीमें पीसकर लगावें—(अन्य) जो सबलको श्रेष्ठहै रेंडी एक, मिसरी साढ़े चारमासे, अंजरूत शोधीहुई तीन मिस्काल पीस कर (अन्य) शाकासबल और नाखुने

और खारिश गुणकारक जंगारसम्मग़, अरबीसपेदा, काशगरी बराबर पीसकर पानीसे ग्राफा बनाकर सुखाकर रक्खें समय पर जलसे घिसकर लगावें—(टपकाने की दवा)आंखकी फूलीकोदो दामआंवले जवकुटकर पानीमें दो घंटे औटावें और साफ़करके प्रतिदिन तीन बेर आंख में टपकावें—(सुरमा) जो सबल फूली नाखुनाको उत्तम है चूरी सब्ज एक दाम महीन पीसकर नींबूके रसमें खूब खरल करें जब सूखजावे आंखमें लगावें—(अन्य) सुरमा फूली और सबल और रतौंधी तरीके सुखाने और ज्योति को गुणकरे—नौशादर फिटकरी बराबर महीन कूटछान कर अच्छी तरह खरल करके लगावें—(अन्य) फूली को श्रेष्ठहै आध सेर प्याजका जल निकाल कर उसमें कपड़ा भिगोकर फिर सुखावें और घट्टेमिट्टी से बचावें फिर उसकी बत्ती बनाकर पावभर मीठे तेलमें जलावें और उसका काजल पारकर आंख में लगावें— (काढ़ा) बैद्य का बनाया हुआ सबलको श्रेष्ठ है पन्द्रह दिन सेवन करना चाहिये पीले हड़की छाल,हड़की छाल, आमला,नींब के वृक्षकी छाल,गुड़च, चिरायता,रक्तचन्दन, ग्राहतरा,खस सुरडीके फूल तोला २ भर औटाकर साफ़करके एकदाम मुद्ग ग्रहद मिलाकर पियें—(अन्यकाढ़ा) रक्तचन्दन,निबौल बेर, नीबूकी छाल, आंबाहल्दी, पीलेहड़ों की छाल बहेड़ा,आमला,बांसा दो२ दाम कुटकी तीन दाम,फलूस की गिरी चार दाम, कड़वा चिरायता डेढ़ दाम, सोंठ गुरच,नागरमोथा एक २ दाम सबको कूट कर प्रति दिन दो दाम तीनपाव जलमें औटावें जब आधपाव जल शेष रहे छान कर दो दाम ग्रहद मिलाकर चौदह दिनतक इसी तरह पियें—(सुरडीकीमाजून) आंख की बीमारियों को श्रेष्ठहै—पीले हड़की छालबहड़ेकी छाल,जंगीहड़की छाल,कावली हड़ की छाल, धनियां, ग्राहतरा, मुलहठी एक २ तोला सुरडी के फूल सब औषधियों के बराबर

मिश्री तीन हिस्से सब हड़ोंको तेल में भूनकर मिश्री में आवाम करें—खूराक दो तोले॥

ढलका अर्थात् आंखसे प्रतिसमय बिना इच्छा आंसू बहनेका यत्न॥

इस रोगमें मुंजिनके उपरान्त जुल्लाब दें फिर औषधियों का सेवन करें—(गोली) कि खुजली और ढलके को दूर करे—पीली हड़के बीज दो भाग बहेड़ेकी मींगी तीन भाग, आमले के बीज कीगिरी एक भाग पीस कर रक्खें और समय पर पानीमें पीसकर लगावें—(अन्य) ढलकेको गुणदायक सिरसके बीज काली मिरच बिनफशा अलग २ कूट छानकर शहद में मिलाकर गोलियां बनाकर नेत्र में लगाया करें—(अन्य) जो ढलके को दूर करे जंगीहड़, माजूफल, बालछड़, पीलेहड़की छाल बराबर जलमें पीस कर गोलियां बनाकर आंखमें और आंखके गिर्द लगावें शाफा किरमह ढलका और नेत्रकी लाली और खुजली को गुणकरे समन्दर झाग, सपेद कत्था, भुनी फिटकरी, पीली हड़की छाल, रसौत, अफीम, तूतिया बराबर लेकर स्वच्छ जलमें खरल करके शाफाबनाकर लगावें—(सुरमा) ढलके का गुणकारक जलेज़ये पीले हड़के बीज तीन टङ्क, माजूफल, लाहौरीनोन डेढ़ २ टङ्क पीस छान कर सेवन करे और कइयोंने जलेज़ये पीलीहड़ों के बदले जलीज़ई काली हड़ लिखा है—(सुरमा) ढलके का गुणकारक नोन, कालीमिरच एक २ भाग, पीपल दो भाग, समन्दरझाग अर्द्धभाग, सुरमा औषधियों के तीन भाग—(औषधि) जो घोड़े का ऊपर का दांतपानीमें रगड़ कर आंख में लगावें पानी उतरने को श्रेष्ठहै—(औषधि) अधिक ढलके के पानी गिरनेकोश्रेष्ठहै—तीन बत्तियां धुनीज़ईरुईकीबनाकर सात टङ्क धतूरे के जल में दो बेर भिगो कर सुखावें फिर मदार के दूध में दो बेर तरकर के छायामें सुखाकर रेंड़ी के तेल

से चराग़ भरकर वही बत्तियां जलावें और उसका काजल लकर थोड़े घृत और भुनीफुई फिटकरी और तूतिया में मिलाकर रक्खें और आंखमें लगावें—(औषधि) ढलकेको श्रेष्ठ है कुन्दर जलाकर गुलाबमें मिलाकर आंखको उससे धोयें जो गुलाब न हो तो पानी काफ़ी है—(अन्य) आबनूस की लकड़ी घिसकर आंखमें लगावें—(अन्य) पीले हड़ को छाल अंजरूत बराबर पीसकर लगायें॥

करंजे होनेका यत्न॥

जो जन्मसे है तो उसका यत्न नहीं परन्तु लिखा है जब लड़का करंजा उत्पन्न हो तो उसको उस स्त्रीका दूध कि बज़ुत काली हो पिलाना चाहिये जो दाई हब्शन हो तो सबसे उत्तम और शेख़रईश ने अपनी पुस्तक क़ानून में लिखा है कि सलाई इन्द्रायण के हरे फल में चुभा कर आंखमें फेरें और इसी प्रकार गाजरका छिलका महीन पीस कर लगाना गुण देता है॥

अरबका यत्न॥

यह एक नासूर है कि नाककी तरफ़के आंखके कोयेमें होता है जब उस तरफ़ दबावें तो उससे आलायश निकलती है—(यत्न) नासूरको मैलसे साफ़ करके मरहम लगावें—(नासूरकी औषधि) संगजराहतके दो टुकड़े रेंडीके तेलमें घिसें जबगाढ़ा होवे बत्ती उससे भरकर नासूरमें रक्खें—(अन्य)चराग़कीकीट कि पुरानेदियेकी जगहपरजमजाती है लेकर कपड़ेमेंलगाकर नासूरपर जमावें—(औषधि)बथुये केपत्ते तम्बाकूके फूलबराबर लेकर गौकेघृतमें कजलीकरके लगावें—(अन्य) हुक्केके नैकी कीट अफ़ीम बराबर पीसकर बत्ती बनारक्खें—(औषधि)समुद्रशोष नरम पीसकर पानी मिलाकेबत्ती बनाकररक्खें—(अन्य)नींबके पत्तेपेंवंदी बेरके पत्ते पीसकर कपड़े पर लपेट कर लगावें—(अन्य) कत्था इलवाबराबरपीसकर नासूरपर सेवनकरें—(अन्य)कुत्तेकी

सिद्धा जलाकर थूकमें मिलाकर लेप करें—(गुड़चका तेल) गुड़च हल्दी को कूटकर मीठेतेल में औटाकर छानकर नाक में टपकावें—(औषधि) खच्छ शहद आगपर रखकर गहरा करके थोड़ा समन्दरझाग उस में मिलाकर उतार लें और बत्ती उसमें डुबाकर नासूर में रक्खें—(अन्य) छिली ज़ई मसूर और अनार का छिलका कूट छानकर लगावें॥

घांजनी का यत्न॥

रसौत, गेरू, जंगीहड़, पोस्ता पीसकर लेपकरें—(अन्य) लौंग हल्दी पीसकर लेपकरें—(अन्य) हींग सिरके में कजली करके कुछ गरम करके लेप करें— पुरानी कच्ची दीवार का कोला गरमपानी में घिसकर लगावें—

शईरह वह लम्बा शोथ कि पलकपर
जौके आकार का होता है॥

मक्खी का सिर दूरकरके उस जगह मलकर गरम मोम से सेंकें॥

प्रबाल का यत्न॥

बालों को अन्दर से उखाड़कर खटमल का रुधिर लगावें—(औषधि) बालों के उखाड़नेके उपरांत नौशादर बकरी के पित्ते में मिलाकर मलें—(चूर्ण) जो आंख की बज़ुत बीमारियों कोगुणकरता है—मुण्डीकी जड़ छाया में सुखाकर कूटकर उसके बराबर शक्कर मिलावें आधा दाम हर सुबहको पन्द्रह दिन पर्यंत गायके दुग्धमें फांकें॥

कर्ण रोग का यत्न॥

हकीमों ने लिखा है कि जो मनुष्य कान के रोगों से बचारहनाचाहे तोसोतेवक्तकानमें रुई रखकरसोये और कहा है कि जो वस्तु कान में टपकावें कुछ गरम करके टपकावें अब यहां कर्ण रोगों की औषधियों का वर्णन

करताङ्गं—(औषधि) जो सरदी के कर्ण शूलको गुणकरे बकरीकीमेंगनी, अजवायन, मनुष्य के मूत्रमें औटाकर बफारालें—(तथा) कर्णपीरा को गुणकरे घावको पीप से साफ़ करे नींब के पत्ते औटाकर बफारालें—(मूली का तेल) मूली के पत्तों का रस तीन भाग तिलका तेल एक भाग सबको औटावें जब तेल शेष रहे छानकर कान में टपकावें—(अन्य तैल) सब प्रकारके कर्णरोगों को कि शीत से हों गुणकरता है—इस्पन्द, मालकांगनी, अजवायन, बराबर मीठेतेलमें कि औषधियों की तौलके बराबर हो जलाकर छानकर सेवनकरें—(अन्य) सरदीकी कर्णपीड़ा को गुण कारक—कूठ, इस्पंद, सोंठ, बराबर पीस कर टिकिया बनाकर सरसोंके तेलमें पकावें जब जलजावे साफ़ करके कई बूंदे कान में टपकावें—(अन्य) सरदी की कर्णपीड़ा और शीत की शिरपीड़ा को गुणदेता है—किस्त अर्थात् कूठ, चरायता, बायबिड़ंग, असगंध, बिधारा हल्दी, आंवाहल्दी, संभालूकेपत्ते अंजीरकी जड़, इस्पंद, सुहागा, सोंठ, मिरच, यह एक २ टङ्क तेल दो सेर दवा कूटकर रातको आधसेर जल में भिगोकर प्रातःकाल औटाकर छानकर तेल मिलाकर आग पर रक्खें जब पानी जलकर तेलमाच शेष रहै तो सेवन करे—(टपकाने की औषधि) कानकी पीड़ा को गुणकरे—सुखदर्शन के पत्ते निचोड़ कर उसका जल कुछ गरम करके कई बून्दें कानमें टपकावें—(अन्य) शीत की कानकी पीड़ा को श्रेष्ट है लहसन कूटके उसका साफ़ रस लेकर कुछ गरम करके कान में लगावें—(अन्य) गरमी और सरदीकी कर्णपीड़ा को गुणदायक भंगके पत्तों का रस निचोड़ कर छानकर कुछ गरम कानमें टपकावें—(अन्य) भंग के पत्तों के रसमें बत्ती लपेट कर कानमें रक्खें या भंगको पीसकर मीठे तेल में जलावें और छानकर कानमें टपकावें—(अन्य) कानकी पीड़ा और कान के बहने को उत्तम है महावर रातको

पानीमें भिगोकर प्रातसमय साफ़करके कुछ गरम करके तीन बूंदें कान में टपकावें—(अन्य) कानकी पीड़ाको गुण करे जो सरदी सेहो नींबकी पीली पत्तियां अढ़ाई थोड़ी अजवायन हल्दीचने बराबरलड़केकेमूचमें पीसकर दोतीन बूंदेंकुछ गरम करके टपकावें—(अन्य) कर्णपीड़ा को गुणकारक सिरस या आंबकी पत्ती का रस निकाल कर कुछ गरम दो बूंदे कानमें टपकावें—(अन्य) कर्णपीड़ा का गुणकारक थोड़ी मक्खीकी विष्ठा जलमें कजली करके कुछ गरम करके कानमें टपकावें—(अन्य) कानके दर्द को कि सरदी से हो श्रेष्ठहै काला नोन मूच में पीस कर कुछ गर्म करके कानमें टपकावें—(अन्य) दूध पीते बच्चे का मूच कुछ गरम करके कानमें टपकावें—(अन्य) मनुष्य के शिरके केशजलाकर उसकीराख गुलरोग़नमें कजली करके कान में टपकावें—(अन्य) घिकुवार के पत्ते गरम करके दूसरे कानमें टपकावें—(अन्य)जो पीड़ा शीतसे हो तो मुरमकी गौकेमूचमें मिलाकर कुछ गरम कानमें टपकावे—(अन्य) रैहां अर्थात् नाजबोके बीज निचोड़कर कुछ गरम करके कान में टपकावें पीड़ा खोदेगा—(अन्य)चुकन्दर निचोड़ कर कानमें टपकावें—(अन्य) आज़माई हुई एक रती भर अफ़ीम जलाकर उसकी भस्मचार चावलभर लेकर गुल-रोग़न में कजली करके कान में टपकावें—(अन्य) कान में जमेहुये रुधिर को घुला कर निकाल डाले करम्बके पत्तों कारसनिचोड़कर सिरकेयागुंदनीकेरसमेंकुछगरमकरके टपकावें—(अन्य) गौका पित्ता कुछगरम कान में टपकावें बातकी और कफ़की पीड़ाको शान्त करें—(अन्य) मुरगी के अंडेकी सपेदी कानमें टपकाना कान केगरमशोथ को नाशकरे—(अन्य) पके इन्द्रायणकेफलके परदे मीठे तेल में मिलाकर टपकाना ऊंचा सुनने को गुणकरे—(अन्य) राई का तेल कानके सुहे को खोलताहै और दिनी बहिरेपन

को गुण करताहै—(अन्य) पपड़ियाखार में कुछगरम पानी मिलाकर टपकाना अत्यंत पीड़ा को गुण करता है—(अन्य)खट्टे अनारका अरक़ शहद केसाथ पैत्तिक कर्णपीड़ा को नाश कारक है—(अन्य) खुरफे के पत्तों का रस तेल के साथ पैत्तिक कर्णपीड़ा को नाश करता है—(अन्य) प्याज़के रसमें अंडेकी सफ़ैदी मिलाकर टपकाना श्रेष्ठहै-(लेप) कानकी कठोरता को कि पित्त से हो गुण दायकहै—पपड़िया खार खतमी पीसकर लेपकरें॥

ऊंचासुनने का यत्न॥

जो प्रारंभ में होतो जुल्लाब दें जब बहुत दिनों का होताहै नहीं जाताहै इसलिये उचितहै किशीघ्र इसरोग में जुब अयारज से जिस का वर्णन करचुकाहूं ब्रह्मांड के मल निकलने को जुल्लाबदें फिर दवा कानमें डालें—(औषधि) कान के भारी होनेकोगुणकरे मदार के पीले पत्ते जो अछिद्र हों आगपर गरम करके उसका रस कान में टपकावें इसी प्रकार दो सप्ताह पर्य्यंत करें—(अन्य)कानके भारीपनेको लहसनमें बकरीका पित्तामिलाकर थोड़े तेल में औटाकर कुछगरम कानमें टपकावें—(अन्य) ऊंचा सुनने को गुणकरे ऊंट का मूच कुछ गरम कानमें टपकावें—(अन्य) काली गाय कलोरका मूच सवा सेरमधुराअग्निमें औटावें जबपांचदामशेषरहेसाफ़ करके शीशे में रखकर प्रति दिन अढ़ाई बून्देंकान में टपकावें—(अन्य) प्याज़का रसकुछ गरमकानमें टपकानाऔर ऊंचे सुनने औरभिनभिनाहट और पीड़ाऔर कानकेबहनेको गुणकारी है—(इन्दरायण का तेल) बहरेपन और कान की भर भराहट को श्रेष्ठहै हरा इन्दरायण का फल तिलों के तेल में तलकर साफ़ करके रक्खें दो तीन बून्दे कान में टपकावें—(औषधि) बहरेपन को नाशकरे, दो कालीमिरचें पीसकर छूछी में रख कर प्रतिदिन एक बेर कान में

फूंकें और चिल्लानेकी आवाज़ और नक़ारह और नरसिंहा और तोप आदि का शब्द सुनना ऊंचा सुनने को श्रेष्ठ है कि यह कान के लिये मानो उत्तम परिश्रम है—(अन्य) पपड़िया खार शिरके में कजली करके छानकर कुछ गरम कान में टपकावें॥

कान के घाव का यत्न

जब कान से मल निकलने लगे शीघ्र खुश्क औषधि का सेवन न करें कि उससे पीड़ा पैदा हो जाती है किन्तु उस मैल को औषधिसे साफ़ करे उसके उपरान्त खुश्क दवा डालें और शहद कानमें टपकाना बत्ती शहद में भिगो करके कान में रखना कानके मैल को साफ़ करता है और पीड़ा को नाशकरता है और नींब के पत्तों का बफारा लेना भी कान की मैल को साफ़ करता है—(अन्य) कान के घाव को गुणकरे, प्याज़ कारस मुरग़ के अंडेकी सपेदी में मिलाकर कान में टपकावें—(औषधि)नींब के तेलमें शहद मिलाकर बत्ती उसमें भिगोकर कानमें रक्खें—(अन्य) कान के घाव को गुण करे एलवा, समन्दरझाग, गेरू, कुन्दर हरएक थोड़ी २ पीर रोग़न में पीसकर सुरमा मिलाकर कान में टपकावें—(अन्य) बकरी का दूध कान में टपकावें—(अन्य) लड़के के मूत्र में अनार की छाल जोश देकर साफ़ करके कान में टपकावें—(अन्य) भुनी फिटकरी मुरमकी हरएक बराबर शहद में मिला कर उसमें बत्ती तर करके कान में रक्खें—(अन्य) भुना सुहागा पीस कर छूंछी में रख कर कान में फूंककर उसके ऊपर कई बूंदें नींबू के रस में टपकावें—(अन्य)मैल निकलने को गुण करे और घाव को भरदे, विशेष कर के बालकों को अति उत्तम है गंगन धूल कान में फुंक कर उसके ऊपर कई बूंदे टपकावें (अन्य) खुजली और पीब बहने को गुण करे मेथी दूध में सान कर और छान कर कुछ गरम कान में टपकावें कर्ण

पीड़ा में स्त्रीका दुग्ध और दूधोंसे उत्तम है—(अन्य) कान की आलायश को उत्तम है घड़बच पानी में पीसकर कुछ गरम कान में टपकावें—(अन्य) कानके घावको नाशकरे, कान से मैल साफ़ होनेके उपरान्त पीलीकौड़ी जलाकर कान में फूंक कर उसके ऊपर कई बूंदे नींबू के रसमें टपकावें—(अन्य) लोध महीन पीसकर कानमें डालें—(अन्य) कान के कीडों को नाशकरे और घावको सुखावे लाल सागका रस निचोड़कर कानमें टपकावें—(अन्य)कर्ण व्रण को श्रेष्ठहै एक जुगनूगुलरोग़नमें पीसकर टपकावें (तैल) कि कानके नासूर को दूरकरता है छोटी घोंघी सजीव पावभर महीन खरल करकेउसके बराबर सरसों पीसकर मिलावें और दोसेरजल डालकरइतना औटावें कि पानी जल कर तेल शेष रहजावे प्रतिदिन कान में टपकावें और जो घोंघा तेल में भूनें यही गुण करता है और जहां सरसों का तेल न मिले मीठा तेलही डालें तेल नासूर और साफा को श्रेष्ठ है जो एकप्रकार की फुनसियां हैं कड़ुवा तेल पावभर, आमला, सुरडी, एक २ तोला, नींबू के पत्ते दस कमीला, कालीमिरच, तीन २ मासे, तूतिया एक मासा, पहिले तेल को गरम कर के कमीले के सिवा सम्पूर्ण औषधि उसमें डाल कर जलावें फिर निकालकर पीसें और कमीलाभी पीस कर मिलावें और कान में टपकाया करें—(औषधि) उस घाव को दूर करे कि जो बज़धा लड़कोंके कान के पीछे होताहै रोली जिसका टीका लगाते हैं उस को बालक के मूत्र वा जल में पीस कर लगावें यद्यपि कुछ दाह होगा परन्तु बज़तगुणकरेगा॥

कानबहने और उसके मैल के निकालने कायत्न॥

जो बोहरान के कारण से हो बन्द न करें और बोहरानसे न हो माजून व कुट कर सिरके में औटावें और मलकरछानकर कान में टपकावें॥

कान के शोथ का यत्न ॥

जो शोथ कानके भीतरहो तो अति भयानकहैइस दशा में सरेरूकी फस्द खोलना उचित है—(लेप) इस सूजन को जो कान के पीछे हो श्रेष्ठ है मसी अर्थात् चक सौनी कि एक प्रसिद्ध वृक्ष है उस की नई पत्तियां लाहौरी नोनके साथ पीस कर लेपकरें—(अन्य) उसी सूजनको गुण करे सुपारी, बिस्मारी की जड़, करेले के बीज, गेरू कालाजीरा, कुचला पानी में पीसकर कुछ गरम कर के लेप करें—(अन्य) उसी शोथ को गुण करे लहसुन की जड़ पीसकर कुछ गरम करके मलें—(औषधि) कानके शोथ को अच्छा करती है और शीघ्रही बहाकर निकाल देती है झलझलकी पत्तियां कूटकर कई बून्दें कई दिनतक कानमें टपकावें—(अन्य) प्याज का रस मेंथी या अलसी या इसब गोलके लुआबमें पकाकर टपकाना भी गुण रखताहै॥

कानके कीड़ोंका यत्न ॥

कभी गरमीके कारण कानमें कीड़े परजाते हैं उसका यत्न—एलवा जल में पीस कर उस पानीसे कान को भरदें और देरतक भरा रहने दें कि कीड़े मरजावें फिर कान को इस तरह झुकावें कि पानी निकल जावे—(औषधि) मलीम एक लकड़ी होती है उसे महीन पीसकर कान में डालें कीड़ों को दूरकरे—(अन्य) संभालू के पत्तों का रस कान में टपकावें—(अन्य) हल्दी की एक गांठ और आधा दाम शहदनींबके पत्तोंकारस सरसों केतेलमें डालकर यहांतक औटावेंकि औषधियां जलजावें इस तेलकी दो बूंदें कान में टपकावें शीघ्र आनंद होगा—(अन्य) आधा टङ्क तिलों का तेल कान में टपकानेसे कानके कीड़े और वह कीड़े जो कान में घुसगये हों मरजातेहैं इसी तरह प्याज का रस जो वह मक्खी कि घोड़े और कुत्तों परबैठतीहै कानमें घुसजाके मकराके पत्तेकि हिंदू उसको

चन्दनके बदले समझतेहैं कान में टपकावें अश्चर्य दायक फल रखताहै—(अन्य) तेज शराब कान में टपकाना कान की पीड़ा और मलको नाश करे॥

कानकीखुजलीकायत्न॥

(यत्न) तेल और सिरका औटाकर छानकर टपकावें (अन्य) चंबेली के तेलमें थोड़ा एलवा कजली करके कुछ गरम करके कान में टपकावें॥

कानमें पानीरहजानेकायत्न॥

छींकना और खासना उसको गुण करता है और सिर उसतरफ़ झुकारखान कि जिस तरफ़ के कान में जलहै या सौंफ की लकड़ी कान में लगाकर चूसैं और तिल का तेल कुछ गरम करके टपकाना गुण करताहै या हथेली कान पर रखकर एक पांव पर खड़ा होकर जिस ओर के कान में पानी है सिर को उसतरफ़ झुका कर कूदें॥

नाकके रोगों का यत्न॥

नाक में दोराहें हैं एक भेजे की तरफ़ दूसरीमुखकी ओर और नाक की बिमारियों में एक रोग़न कसीरहै जो वह ज्वर या सरसाम या बोहरान के दिन कि चौथा सातवां ग्यारहवां चौदहवां दिन है नकसीर फूटे बन्दन करें क्योंकि बोहरानी नकसीरमें मुख्य मलको,इस ओर से दूरकरतीहै परन्तु अधिकतामेंशीघ्र बन्दकरे जोदोनों रानों और दोनों पाओं और दोनों अंडकोष्ठों को जोरसे बांधेंतो नकसीर बन्द होजातीहै और ठंढा पानी सिर पर डालना और उस से ग़रग़रा अर्थात् कुल्ली करना उत्तम—है(लेप) जो नकसीर को गुणकरे—सरेश मुल्तानीमट्टी बराबर पीसकर कुछ गरम माथे और नाक

पर मलें—(अन्य) इसपगोल सिरकेमें भिगोकर माथेपर मलें—(अन्य) माजूफल खूब पीसकर नाकमें फूकें—(अन्य) रसौत की राख नाकमें फूकें—(अन्य) चक्की की गरद नाक में फूकें—(अन्य)उड़द का आटा नरम गूदकर तालूपर लगावें—(अन्य) बेरकी पत्ती पीसकर माथेपर मलें—(अन्य) छोटी कटाई पानीमें पीस कर तालू पर लगावें और उस के पत्तों और जड़ का पानी निचोड़ कर नाक में टपकावें (अन्य) केले के वृक्ष का रस सुड़कना नकसीर को गुण करे अंडे का छिलका इस तरह जलावें कि काला होजावे उसको पीस कर छूछी में रख कर जिस नथनेमें कि नकसीर फूटी हो फूकें—(अन्य) घोंघा और गौका सींग और बकरीका सींग जलाकर महीन करके नाकमें फूकें—(अन्य) आमला भिगोवें जब नरम होजावे टिकिया बना कर तालू में बांधें—(अन्य) गधे की लीद निचोड़ कर नाक में टपकावें—(अन्य) गाय का सूखा गोबर पीस कर नाक में फूकें और ताजे गोबर को माथे पर लगाना गुण करता है (अन्य) नींब के पत्ते और अजवाइन पीसकर माथे पर लगावें—(अन्य) शोरा कल्मी सिरकेमें पीसकर माथेपर मलें (अन्य) बत्ती को मुरगे के अंड़े की सपेदीमें मिला कर थोड़ा कपूर उसपर छिड़क कर नाकमें रक्खें—(अन्य) गधे की लीद जलाकर उसकी राख नाकमेंफूकें— (अन्य) जंगली कंडे की राख महीन पीसकर नाक में फूकें—(अन्य) गूलर के वृक्ष की छाल पानी में पीस कर तालू पर बांधें-(अन्य) नीबके पत्ते चौलाई पीसकर माथे पर लगावें—(अन्य) पुरानी गज पानीमें पीसकर माथेपर लगावें—(अन्य)जौका आटा,सुल्तानीमिट्टी,धनियां,इसपगोल,आमलां,गेरूबरा बर पीसकर माथेपर लगावें—(अन्य) ऊंटके बाल जलाकर उसकी राख घीमें मिलाकर पतला पतला नाकमें टपकावें (अन्य)ढाक के फूल चार सेर पानीमें औटावें जब आधसेर शेष रहे ठण्ढा करके तीन टङ्क शक्कर मिलाकर पियें नक-

सीर और स्त्रीके वस्तुके रुधिरको बन्द करे-(अन्य) कुंदर मछीन पीसकर नाकमें फूकें—(अन्य)हरी दूब कूट निचोड़ कर उसका साफ रस लेकर नाकमें टपकावें—(अन्य) रक्त-चन्दन पीसकर थोड़ा कपूर कजली करके कुछ दिनखावें नकसीर दूर होगी—(अन्य)निशास्ता सिरकेमें मिलाकर शिर पर आगेकी तरफ रक्खें—(अन्य) नकसीर को गुण-दायक—कुन्दर अफीम एक२ कौड़ीके बराबर लाल साग के रसमें जो मिले तो उत्तम है नहीं तो पानीमें पीसकर नाकमें टपकावें ॥

ज़ुकाम और नज़ले का यत्न ॥

जो मैल भेजे से नाककी ओर निकले उसको ज़ुकाम बोलते हैं और जो कण्ठकी ओर गिरे उसका नाम नज़-ला है जो इन तरियों के निकलनेमें छीलन और पीलाई और नेचमें जलन मालूम हो गरमी से है जो इस तरह न हो तो वह सरदी से है इस रोगमें मैथुन और औंधे सोने और खटाई और दूध दहीसे पथ्य करें और सिरके नीचे ऊंचा तकिया न रक्खें और एक दो दिन भोजन न करें और न पानी पियें ज़ुकाम चाहे शीतसे हो या पित्त से शिरको खुला न रखना चाहिये अब कुछ औषधियां ज़ु-काम और नज़ले की गुणकारक लिखता हूं—(माजून)जो ज़ुकाम और नज़लेको गुणकरे—अजवाइन,अफ़ीम पांच२ टङ्क कालीमिरच दश २ टङ्क अकरकरा,बालछड़,नरक चूर,गूगल,तज,कायफल,सोंठ एक २ टङ्क मुरमकी आधा टङ्क तिगुने शहद में कवाम करें—(अन्य) जो ज़ुकाम को उत्तमहै—भाजकी पत्तियोंका बफारा लें—(अन्य) कूठका बफारा लें और इस तरह कोरे कागजका धुआं नाक में पहुंचाना ज़ुकामको गुण करता है—(अन्य) शक्कर और चन्दरस का धुआं गरम ज़ुकामको गुणकरे—(गोली) जो नज़ले और ज़ुकामको गुण करे और भूख बढ़ावे जद बार

खंताई चार मिसकाल,अजवाइन पांच मिसकाल,अफीम सात मिसकाल,कतीरा,बबूल का गोंद,मुलहठी, काली-मिरच,इलायचीकेदाने दो २ मिसकाल, नरकचूर, नाग-रमोथा,बालछड़,तेजपात,कबाबा,खोलन्जान,पीपल,अज-वाइन,सोंठ,इस्पन्द,दो२टङ्क सुरमकी,अकरकरा आधा२ मिसकाल पीसछान कर चने की बराबर गोलियां बनावें एक गोली रोज खावें—(खशखाश का खमीरा) पैत्तिक जुकामको गुणकरे—खशखाशके पोस्त२५ पानीमें भिगो-कर आध सेर शक्करमें क़वाम करें क़वाम के अन्त में सपेद खशखाशका दूध इसपगोलका लुआब पांच २ मिसकाल उसमें डालें उतारनेके समय बबूखका गोंद, खतमीके बीज निशास्ता, छिलीछुई मुलहठी चार २ टङ्क कूट छान कर मिलावें—(अन्य) जो नजलेको छाती पर गिरने न दें और खांसीको गुण करे खशखाश के पोस्ते बिये समेत बीस टङ्क सपेद मिश्री पचास टङ्क पूर्ववत् क़वाम में लावें खूराक दश २ टङ्क पानीके साथ—(अन्य) जुकामका गुणकारक सात काली मिरचें थोड़े पानीमें निगलें मुहम्मद जक-रिया ने बरूलसाअत में लिखा है कि जो गरम पानी से जुकाम वालेके शिर पर तरेड़ा दें और पानी की गरमी भेजेमें अपना फलकरे तो शीघ्र शांति होतीहै और कपड़ा सेंक कर तालू पर रक्खें जब गरमी उसके भेजे में पहुंचेगी तो शीघही आनन्द होगा—(अन्य) नजले को नाक की तरफ गिरावे पुरानी रुईकी बत्ती नाकमें रखना उत्तमहै और कई बेर परीक्षा हुईहै जो शिर पीड़ा नजले से हो उसको दूर करता है—(गोली) नजले को दूर करे—अज-वाइन एक मिसकाल,काहूके बीज एक मिसकाल, पोस्ता आधा मिसकाल मूंगके बराबर गोलियां बनाकर मुंहमें रक्खें—(अन्य) नजलेको गुणकरे और भेजेकोतरीसे साफ करे समन्दरफलकी मींगी स्त्रीके दूधमें पीसकर नाक में टपकावें—(अन्य) जुकाम को गुण करे कलौंजी भुनी हुई

नौसादर दो २ मासे सोंठ तीन मासे पोटली बांध कर सूंघें और बाजेउसमें सिरका भी मिलाते हैं—(अन्य)कि-सुह्रा खोलता हैं और ज़ुकामको गुण करता है इस्पन्द थाड़े सिरके में भिगोकर भूनकर कपड़े में ढला बांधकर सूंघें—(अन्य) कलौंजी पीस कर गुलरोग़न में मिला कर सूंघें-(लेप) नज़लेकोगुणकरे मुरमक्की,एलुवा,बबूलकागोंद, निशास्ता,गेरू, छालिया तीन २ मासे,अजवाइन,अफीम डेढ़ २ मासे कूट छान कर कागज़पर कि सूईसे उसमें छेद कियाहो मल कर दोनों कनपटियों पर लगावें -(गोली) खशखाशके बीज सपेद,छिलीछुई मुलहठी,कुचली अफीम तीन२टङ्क सम्मग अरबी,जो एकप्रकारको बिलायतीगोंद होताहैकतीरा,निशास्ता, काछूकेबीज, दो२ टङ्क अजवा-ईन,मुरमक्की अकरकरा आधा२ दाम कूट छानकर चनेकी बराबर गोलियां बनावें खूराक दो गोली—(लेप) शीत के नज़ले को उत्तम है—लौंग पीसकर तालूमें लगावें ज़ुकाम को उत्तम है गेहूंकी भूसी भिगोकर उसकापानी लेकर सिरके में औटावें और सिरकेको उसके बुखारपर रक्खें (अन्य)कफ़केज़ुकामको गुणकरे सोंठ,धावेकेफूलडेढ़२ मासा खशखाश का पोस्ता एक तीन पाव जलमें औटावें जब चारदाम शेषरहे उसको बुनकी तरहपियें— और चाहें मीठाकरलें—(अन्यनास) मस्तक पीड़ाकोगुणकरे औरबंद नज़ले को खोलती है हड़ के बीज छः मास सपेद घुंघची की मींगी चार मासे, कालीमिरच दो मासे, नौसादर एक मासे कूट छानकर घोड़ा नासलें नाक से पानी बहे-गा और बहुत तेजहै—(अन्य नास) नज़ले को उत्तमहै—सिरस के बीजों को महीन पीसकर नास लें॥

नाक की बदबू का यत्न॥

यदि नासिका की दुर्गंधि भेजे के दोष से हो ब्रह्मारंध्र को साफ़ करे और जो नाक के घाव के कारणहो घाव पर

मरहम लगावें—(अन्य) नाक की दुर्गंधि को मेटहै—तोंबे का रस एक बूंदभर नाकमें टपकावें और जो हरातोंबा न मिले तो सूखा तोंबा पानी में भिगोकर ओस में रक्खें प्रभात को एक बूंद उसमेंसे नाकमें टपकावें—(अन्य) गधे का मूच नाक में टपकावें॥

बहुत छींकों के आने का यत्न॥

यद्यपि थोड़ी छींके आना आरोग्यता के चिन्ह हैं परन्तु बहुत मनुष्य उसको रोग जानतेहैं—(उपाय) छींकरोंके छोंगनिको उसीहाथकी तर्जनीउंगलीऔर अँगूठे से पकड़ जोरसे दबावे और जोर से मले और धनिये की पत्तियां और चन्दन सूंघना छींकको गुणकरे—(अन्य) कुलीजन की पोटली बांधकर सूंघे छींक को दूर करे जो बालक को छींके आवैं बकरी का कल्ला आगपर भूने जो पानी उससे टपके लड़के की नाक में टपकावें॥

पीनस का यत्न॥

यह वह रोग है कि रोगी नाक में बोलता है और बहुधा खाना पानी नाक से निकल आता है—(गोली) पीनसको दूरकरे सोंठ, पीपल, छोटी इलायचीके दाने एक २ टङ्क, पुराना गुड़ चौबीस टङ्क कूटकर गोलियां बनावें और दो मासे रातको प्रतिदिन खायाकरें बहुत गुण करेगा॥

मुंहके रोगों का यत्न॥

किसीवस्तुके स्वाद न मालूमहोनेको बुतलानऊक बोलतेहैं कभी इतना मुखकास्वाद जाता रहताहै कि रोगी मिठाई और खटाईकास्वादनहीं जानता इसकाकारण तरी की अधिकता—(यत्न) पहिले भोजन के उपरांत भोजन को जुल्लाबदें नानखाह और तीक्ष्ण वस्तुओंका चाबना जैसे कि मिरच और राई और सिरका और लहसुन और प्याज गुणकरता है॥

दांतों के रोगों का यत्न॥

दांत के रोगी को उचित है कि कठोर वस्तु दांतों से न तोड़े और जिस चीज़ के खानेसे दांत झूठे पड़ें न खावे और जब कोई वस्तु खानेके समय दांतोंमें रहजावे दांतों को खिलाल से साफ़ करता रहे कि दुर्गंधि न आवे परंतु इतना बक़्त खिलाल न करे कि दांतों की जड़ खराब होजावे और गरम और सर्द चीज़ोंसे पथ्य करें॥

दांतों की पीड़ा का यत्न॥

जो दांतों के हिलनेसे हो और दांत कम हिलते हों और बुढ़ापा न हो यत्न करें और जो अधिक हिलें दांतों का उखाड़डालें थोड़ा नरकचूर सदा मुंह में रखना दांतों की रक्षा करता है जो पीड़ा के साथ मसूढ़ोंपर शोथ हो तो उन चीज़ों से कुल्ली करें जो सूजन को गुण करें और एक बेर गरम जल और ठण्ढे पानी से कुल्ली करें और ध्यान रक्खें कि किस जलसे पीड़ा शान्त होती है जो गरमसे पीड़ा होगी तो ठण्ढे पानीसे पीड़ा शान्त होगी और जो शीत से पीड़ा होगी तो गरम जलसे दर्द दूर होगा इस जगह कुछ सुगम औषधियों का जो दांतों की पीड़ाको श्रेष्ठहैं वर्णन करताहूं—हल्दी महीन पीसकर कपड़े में रखकर जो दांत कि पीड़ा करता है उसके नीचे रक्खें और इस का मंजन भी मलना उत्तम है (अन्य) शीत के दन्तरोग को नाशकरे— अदरक के बरक करके नोन पीसकर उसपर छिड़कें और पीड़ावाले दांत पर रक्खें—(अन्य) तुलसी की पत्तियां और कालीमिरच पीसकर गोली बनाकर दांतों के नीचे दबावें— (अन्य) बिनौला गरम करके दांत के नीचे दबाकर सोरहें और बिनौला औटाकर कुल्ली करना भी श्रेष्ठ है— (अन्य) मजीठका लगानादांतकी पीड़ाको दूरकरताहै—(अन्य)

अंजीर के दूधसे रुई भिगोकर दांतों के नीचे दबावें गुण करेगा—(अन्य) इसपगोल सिरके में भिगोकर दांतोंपर रखना पैत्तिक दन्त पीड़ा को शांति करे—(अन्य) पुराने दांतोंकी पीड़ाको श्रेष्ठ है—कपूर दांतोंके नीचे रक्खें जो दांतोंको कीड़ोंने खाया हो छेदों में उसके भरदे अधिक छिद्र बढ़ने न देगा और कीड़ों को मार डालेगा—(अन्य) अकरकरा एक टङ्क नौसादर अफीम पांच २ टङ्क महीन पीसकर कीड़के खाये हुये छिद्रों में रक्खें—(अन्य) दांतों की पीड़ा को शांत करे और कीड़ों के खाये हुयेको गुण करे—सोंठ नरम कूटकर शहद और सिरके में मिलाकर दांतोंके छिद्रों में रक्खें—(अन्य) मदार की जड़ का बक्कल चौथाई टङ्क पानी में भिगोकर दांतों पर रक्खें—(अन्य) नौसादर जवारके बराबर रुईमें लपेट कर दर्दवाले दांतों के नीचे रक्खें और जितना जल मुंहसे निकले निकलने दें पीड़ा शांत होजावेगी—(अन्य) दांतोंके कीड़ोंको गुणकरे बायबिडंग छील कर सालू मे जो लाल कपड़ा है पोटली बांधकर कीड़े खायेहुये दांतोंके नीचे रक्खें—(अन्य) थोड़ा गन्धक सिरके में मिला कर उससे रुई भिगोकर कीड़े खायेहुये दांतों पर रक्खें—(अन्य) मुलीम घिस कर दांतों पर रक्खें—(अन्य) जो दन्तपीड़ा और मसूढ़ोंकी सूजनको गुणकरे—प्याज़ कलौंजी दोनों बराबर चिलममें रखकर तम्बाकू के बदले इतना पियें कि मुंहसे लार बहे—(अन्य) दांतोंको सुगमता से निकालता है सेंधे दूधका दूध छिलते हुये दांत पर रक्खें और इस बातकी रक्षाकरें कि दूध दूसरे दांत पर न पहुंचे—(अन्य) दांतके दर्दको गुणकरेहै अकरकरा मस्तगी बराबर लेकर थोड़ा मोम मिलाकर एक चनेके बराबर दांतोंके नीचे इतनी देर रक्खें कि लार मुंहसे बहने लगे—(अन्य) उस दांत के रोगको श्रेष्ठ है कि कीड़ोंके खानेके कारण हो छोटी कटाईका फल तम्बाकू की तरह हुक्केमें पीकर उसका धुआं मुंहमें रोकें—(अन्य

सुहागा मोम मिलाकर दांतोंके छिद्रमें जिसको कीड़ोंने खाया हो रक्खें पीड़ा जाती रहेगी—(अन्य) विशेष करके दांतों की पीड़ा को श्रेष्ठ है— लड़के का दांत कि छोटी उमरमें गिराहो उसको दूधका दांत बोलते हैं चांदी में यंत्र बना कर अपने पास रक्खें पीड़ा को दूर करें—(अन्य) पीलूकी लकड़ी से दातोन करना दांतोंको पुष्ट करताहै (अन्य) नीब की लकड़ी से जो दातोन करने का अभ्यास करें तो दांतोंमें कीड़े नहीं पड़ते हैं और गरमीसे दांतों में दर्द नहीं होताहै—(मंजन) कि दांतोंकी पीड़ा को गुण करे—भुनी फिटकरी एक टङ्क जला छुयेकर जुवे दो भुना तूतिया एक टङ्क काली मिरच बारह कूट छानकर मलें-(अन्य) जली फिटकरी बराबर उसके मिस्सी मिलाकर मलें—(अन्य) शीतकी दन्त पीड़ाको गुणकारी है तम्बाकू दो भाग काली मिरच एक भाग पीसकर दांतों पर मलें (अन्य) हर प्रकार की दन्तपीड़ा को दूर करे सुपारी और कत्थेकी राख पीपलकी राख तीनों बराबर तूतिया एक औषधि का चतुर्थ भाग सबको कूट छान कर दांतों और दांतोंकी जड़पर मलकर एक घण्टा सिर नीचे करें कि मुंहसे लार निकले फिर कुछ गरम जलसे कुल्ला करें (अन्य) करंजुआ जलावें और राख उसको नमकमें मिला कर मले— अन्य) ठण्ढी पीड़ाको गुण करे सज्जी काली-मिरच पीसकर मलें—(अन्य)हर प्रकारकी पीड़ाको शांत करे—अकरकरा कपूर बराबर पीसकर मलें—(अन्य)दांतों को दृढ़ करे भुनी फिटकरी एक भाग,तूतिया भुना चतुर्थ भाग,कत्था डेढ़ भाग कूट छान कर मंजन बना कर मलें (अन्य) तूतिया सज्ज आधा दाम भर घीमें जलावें और नींबकी पत्तियोंकी राख कि उसको छोटे कुल्हड़े में जलाया हो आधा दाम संगजराहत एक दाम बराबर मिला कर दांतों पर मलें—(अन्य) कत्था सपेद एक तोला गुलसेवती सूखी गुलनार तीन २ मासे मस्तगी आधा

मासा बड़ी इलायची छः मासे, मिस्सी एक तोले, भुनी सुपारी डेढ़तोला, भुनी धनियां छः मासे सबको जलाकर पीसें और मंजन बनावें—(अन्य) रेवन्द चीनी पीस कर मिस्सी उसमें मिलाकर मलें शीघ्रही आराम होगा—(अन्य) भिलावा जला कर इस्पन्द महीन पीस कर मलें दांतोंको दृढ़ करताहै—(अन्य) सुपारी, माजूफल, भिलावा तीनों औषधि जलाकर मंजन बनाकर मिस्सी की भांति मलें लार मुंहसे बहेगी और दांत दृढ़ होंगे और पीड़ा दूर होजावेगी—(अन्य) पीड़ाको गुण करे और दांतोंको दृढ़ करे हिन्दी तूतिया तेल में भूनकर, सोंठ, सपेद, कत्था सुपारी जलाकर मंजन बनावें—(अन्य) उस दांतकी पीड़ा और मसूढ़ोंको गुण करे कि शीतसे हों सोंठ, हल्दी, लाहौरी नमक, काली मिरच, तम्बाकू की नास सम्पूर्ण औषधि बराबर पीस कर दांतों पर मल कर लार मुंह से निकालें और एक घण्टेके उपरान्त पान खाकर दांतोंको पीक से धोवें फिर दूसरी गिलौरी खावें जो आवश्यक हो तो दो घड़ीके उपरान्त पानी पियें—(अन्य) दांतोंको दृढ़ करता है फिटकरी दो टङ्क, नोन एक टङ्क कूट कर मंजन मलें—(अन्य) रालका मंजन मलना गुण करता है—(अन्य) दांतोंकी दर्द और कीड़ोंके खायेहुये को गुणकरे तूतिया अग्नि पर रक्खें और लोहे के दस्तसे पीसें फिर अग्निसे उतार कर पीसकर दांतोंपर मलें—(अन्य) दांतों से रुधिर निकलने न दें—जासुनकी लकड़ी जलाकर और पीसकर मलें—(अन्य) चन्दरस मलना दांतोंकी पीड़ाको गुण करे—(अन्य) मोलसिरीकी लकड़ी जलाकर पीसकर मलना उत्तम है—(अन्य) संगजराहत मलना मसूढ़ों से रुधिर निकलनेको बन्द करे—(अन्य) कचनालकी लकड़ी जलाकर मंजन बनाकर मलें—(अन्य) पीड़ा को गुणकरे राई पीसकर मंजन बनावें—(अन्य) बारहसिंगे का सींग जलाकर पीसकर मलना दांतों को बल देता और साफ़

करता है—(अन्य) बसद पीसकर मलना दांतों को दृढ़ करता और साफ़ भी करता है—(अन्य) मसूर जलाकर मलें साफ़ करता है—(अन्य)सरू की पत्तियां जलाकर राख उसकीमलना दांतों को साफ़करताहै—(अन्य) बरगद की छाल पीसकर दांतों के नीचे रक्खेंपीड़ा दूर करे—(अन्य) काली मिरच, सोंठ, मुरमकी, थोड़ा नमक मिलाकर पीस कर मलें दांतों की पीड़ा को कि शीत से हो गुण करता है—(अन्य) सीप जलाकर मलना दांतों को साफ़ करता है—(अन्य) बालछड़ पीस कर मलना मसूढ़ों और दांतोंको बल देता है और मुखको सुगन्धित करता है—(अन्य) शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है—पाव कालीमिरच बराबर कूट छानकर दांतों पर मलें—(अन्य) दांतों को मज़बूत करे और पीड़ा को खोदे सिरस का गोंद कालीमिरच महीन पीसकर मंजन बनाकर मलें—(अन्य) जला हुआ माजूरका,बेजला एक, जली हुई छालियां एक, बेजली एक कूट छानकर मंजन मलें फिर कुछगरम जलसे कुल्ली करें—(कुल्ली) जो दर्दको खोदे और दांतोंको मज़बूत करे बायबिडंगसैंतीस दाने, कबाबचीनी अठारह दाने, मसूर की पत्तियां ग्यारह,झाऊकी कोंपल एकदाम आधपाव जल में औटावें जब तृतीयांश शेष रहे कुछ गरम से कुल्ली करें (अन्य) दांतोंके कीड़ोंको उत्तमहै चंबेलीकी पत्तियां एक मुट्ठी,इस्पन्द डेढ़तोला,सेरभर जलमें औटावें जब पावसेर शेष रहे साफ़ करके कुल्ली करें—(अन्य)दांतोंकी पीड़ाको श्रेष्ठ है पीपलकी छाल,बरगदकी छाल,पानीमें औटाकर कुल्ली करें—(अन्य) फिटकरी एक तोला, मोचरस छःमासे जवकुट कर आध सेर पानीमें औटावें जब आधा शेष रहे कुल्लीकरें पीड़ाको शांत करे औरदांतोंको मज़बूत करे—(अन्य) बबूलकी छाल दो दाम,कायफल तीन मासे,इस्पन्द तीन मासे कूट कर पाव भर जलमें औटावें जब आधा शेष रहे तो सोनेके समय कुल्लीकरें—(अन्य) उस पीड़ाको

शांति करे जो नज़ले और बात और तरी और मसूढ़ों के ढीले होने से होवे मको, खशखाश का पोस्ता, इस्पन्द मजीठ बराबर पानीमें औटावें जब अर्द्ध भाग शेषरहे कुछ गरमसे कुल्ली करें—(अन्य) अकरकरा, मसूर, खशखाश का पोस्ता औटाकर कई बेर कुल्ली करें—(अन्य) दन्तपीड़ा को गुणकारक अबहलपाइ कि वह कसीस की भांति होती है औटाकर कुल्ली करें—(अन्य) गेहूंकी भूसी पुराने जवकी भूसी औटा कर कुल्ली करें—(अन्य) जो दांतों से मैल या पीप आने को गुणकरे फिटकरी, माजू औटाकर कुल्ली करें—(अन्य) पीड़ा को शांति करे माजू. तोंबरी के बीज चार दामके अनुमान लेकर एक सेर जलमें औटावें जब आधा शेष रहे साफ़ करके कुल्ली करें शीघ्रही फल करेगा और तोंबरी खिलेहुये कबाबकी सूरतकी होतीहै (अन्य) मसूढ़ोंकी सूजनको गुण करे काले चने भिगोकर औटाकर कुछ गरमसे कुल्ली करें—(अन्य) दांतोंकीपीड़ा और कीड़ोंसे खोखलेहुये दांतों को गुणकरे—कटाई का वृक्ष डाल फूल और फल समेत कूटकर पानी निचोड़ कर उससे कुल्ली करें या कटाई को पानी में औटाकर चार दिन पर्य्यन्त कुल्ली करें—(अन्य) सरू के फूल औटा कर कुल्ली करें—(अन्य) पियाबासा की पत्तियां औटाकर कुल्ली करें—(अन्य) मोलसिरीकीछाल औटाकर कुल्लीकरें—(अन्य) कचनाल की छाल औटाकर कुल्ली करें—(अन्य) सिरसके वृक्षकी छाल कुचल कर औटा कर कुल्ली करें—(अन्य) रूसेकी पत्तियां औटाकर कुल्ली करें—(अन्य) अनार, और गुलनार, और माजू, यह सब एक २ या दो दो और मसूर उसके बराबर मिलाकर औटाकर कुल्ली करना मसूढ़ों को बलदायक है और रुधिर निकलने को बन्द करता है—(अन्य) गुनगुने पानी से कुल्ली करना मसूढ़ोंकी पीड़ाको गुणकरे—(अन्य) माजू दांतोंपर मलना मसूढ़ों को बलदायक है और रुधिर आनेको गुणकरे—

(लेप)इस्पन्द पीसकर कुछगरम जलमें मिलाकर गालकेों ऊपर जहां पीड़ाहो लगावें॥

दांतोंकेखट्टे होनेकायत्न॥

खट्टी और कसैली चीज़ खाने से दांत खट्टे होजाते हैं-(यत्न)गेहूंकी रोटी गरम दांतोंमें दबावें नारियल बादाम और पीलामोम और हींग चबाना दांतों के खट्टे होने को दूर करे—पैत्तिक प्रकृतिवाले को खुरफे के बीज चाबना और राई का मलना गुणकरे और हर प्रकार के खट्टे दांतों को नोन पीसकर मलना लाभ करता है॥

दांतोमें छिद्र होनेका यत्न॥

नौसादर अफ़ीम कूटकर दांतोंके छिद्रोंमें रक्खें और थोड़ी मस्तगी पीस कर दांतों पर लगावें—(कुल्ली) मसूढ़ों के शोथ और दन्तपीडा को गुणकरे पीले हड़ों की छाल मको, धनिया, इस्पन्द दो २ मिसकाल, खशखाश के पोस्तेदो, अजवाइन दोटंक, आधसेर जलमें औटावें जब आधा शेषरहे साफ़ करके कुल्ली करें॥

उन औषधियों का वर्णन जिनसे लड़कों के दांत सुगमता से उगें॥

चिकनी चीजें जैसे कि अंडे की जरदी और हराम मगज़और भेजा और मुरग़ का पर धीरेसे दांतोंकी जगह पर मलें—(औषधि) गुल रौग़न मको के पत्तोंका रस निचोड़ कर उसमें मिलाकर पीड़ा के समय मलना श्रेष्ठहै किताबुलखवास में लिखा है कि लड़के के गले में सीप का लटकाना मुख्यकर के शीघ्रही दांतों को उगावेगा इस प्रकार होंठ छछून्दर का और संभालू की जड़का लड़के के गले में लटकाना मुख्य करके फल रखता॥

जिह्वा के रोगों का यत्न ॥

जिह्वा के भारी होने का इलाज ॥

यह रोग बज़ुधा तरी से होता है(यत्न)राई, पीपल, सोंठ नौसादर, अकरकरा इन दवाओं से एक२ या सब पीस कर जिह्वा पर मलें और कभी उसमें सिरका मिलाते हैं और कायफल के काढ़े से कुल्ली करना गुण कारी है—(अन्य) जिह्वा के भारी होने को कि पित्त के शोथसे हो गुणकारी है गुलाब के फूल छिलीउड़द मसूर दोनों के साथ पीस कर और मको की पत्तियों का रस मिला कर जिह्वा की जड़ पर मलें ॥

जिह्वाके दाहका यत्न ॥

दही पानीमें मिला कर कुल्ली करें और कत्था जिह्वा पर रक्खें ॥

जिह्वा के दानों का यत्न ॥

इस को मुंह आना भी कहते हैं कदाचित् रुधिर के दोषसे होतो दोनोंका रंग लालहोगाऔर पित्तकीअधिकता में पीला कफ में सपेद और सौदावी अर्थात् दग्धित दोष में काला रंग होता है जो यह रोग दग्धित दोष से होतो बज़ुत बुरा है जो बालकों को होतो मृत्यु के चिन्ह हैं—(यत्न) जो युवा मनुष्य का मुंह आवे चार बन्द की फस्द लें—(अन्य) औषधि जो जवानों और लड़कों के मुंह आने को गुणकरे—बकायन की छाल पीस कर उस केबराबर सपेद कत्था मिला कर जिह्वापर छिड़कें(अन्य) जला ज़ुआ कागज़, बडीइलायची के दाने सपेदकत्था भुनी फिटकरी बराबर पीस कर थोडा२ मुह में छिड़कें—(अन्य) मसूर जला कर उसके बराबर सपेद कत्था मिला कर पीसकर मुख में छिड़कें—(अन्य) जला ज़ुआ गावज़बां, उस के बराबर सपेद कत्था मिला कर मुंह में छिड़कें—

(अन्य) बड़ी इलायची के दाने, छालिया दोनों जलाकर महीन करके मुंह में छिड़कें—(अन्य) सपेद कत्था शोरा-कल्मी बराबर पीस कर मुख में छिड़कें—(अन्य) मुंह आने का गुण करे और विशेष कर के लड़कों की जिह्वा के दानों को दूर करे मिश्री पीस कर थोड़ा कपूर मिला कर छिड़कें—(अन्य) भुनी फिटकरी, माजू बराबर पीसकर मुख मेंछिड़कें—(अन्य) लड़कों के मुंह आने को दूर करे बाज या जुर्रा या बाशा की बीट दो रत्ती भर पीसकर लड़के के मुंह में छिड़कें—कफ के मुंह आने को गुण करे-(अन्य) छिले हुये जौ जलाकर कत्था सपेद बराबर मिलाकर पीसकर छिड़कें—(अन्य) लड़कों के मुंह आने को गुण करे मनुष्य के शिर के केश जलाकर राख उस की जिह्वा पर मलें जो कफ से मुंह आवे तो सहद में मिला कर मलें—(अन्य) रसौत नींबू के रस में पीस कर मलें—(अन्य) जो लड़कों के मुंह आने को गुण करे निशास्ता जल में कजलीकरके मलें—(अन्य) गुलाब की पत्तियां, और खुरफे की पत्तियां चाबना गरमी के मुंह आने को दूर करे—(अन्य) अमलतास की पत्ती जिह्वापरमलें—(अन्य) शहतूत कीपत्ती चावें—(अन्य) गोंदी की छालमें कत्था लगाकर चावें—(अन्य) बबूल की कोंपल पीस कर मलना और पीना हर प्रकार के मुंह आने को गुण करे— (कुल्ली) गरम मुंह आने को गुण करे फिफला, और सपेद कत्था औटाकर कुल्ली करें—(अन्य) गर्म मुंह आने कोगुण करे माजू, गुलनार सिरके में औटाकर कुल्लीकरें—(अन्य) आमलेपानीमें भिगोकर उसजलसे कुल्लीकरें-(अन्य)सौदाबी अर्थात् दग्धित दोष के जिह्वाके दानोंको गुणकरे मेंहदी की पत्तियां चबावें—(अन्य) गायकी हड्डी की मींगीमलें—(अन्य) अनारकीछाल, गोंदीकीछाल, सपेद कत्था औटा करकुल्ली करें—(अन्य) बबूल की छाल, झड़बेरीकी छाल औटाकर कुल्लीकरना श्रेष्ठ है और जो पारे और शंग-

रफ और रसकपूर खाने से हुआहो उसको भी गुणकरे-(अन्य) मुंह आने के गुण कारक अरहर की पत्तियों का शीरा निकालकर उससे कुल्ली करें—(अन्य) अरहर की दाल पानी में भिगोकर उस पानी से कुल्ली करें—(अन्य) अरहर की दाल मसूर की दाल औटावें और साफ़ करके कपूर मिला कर कुल्ली करें—(अन्य) मेंहदी भिगोकर उसके जल से कुल्ली करें—(अन्य)उस मुंह आने को श्रेष्ठ है जो पारे और रसकपूर खानेसे पैदाहो त्रिफला, मोचरस खशखाश का पोस्ता औटाकर कुछ रेंडी का तेल मिला कर कुल्ली करें—(अन्य)जिह्वा के फटजाने को गुण करे लसोंड़ा मुंहमें रक्खें और इसपगोल के लुआब से कुल्ली करें और कत्था मुखमें रखना गुण करता है॥

मुखसे लार बहने का यत्न॥

बहुधा सोने के समय मुंह से लार बहना कोष्ठ की तरी से होताहै (यत्न)कोष्ठ को साफ़करें और इतरीफल सगीर खावें और राई पीसकर उसमें शक्कर मिलाकर फांकना गुणकरता है और देरतक दातौन करना श्रेष्ठहै और कासनी जवकुट कर थोड़ा नोन मिलाकर चूर्ण बनाकर कुछ दिन फांकें-(औषधि) ये लार बहने को बन्दकरे शक्कर सपेद आधपाव कवामकरें,सातमासे मस्तगीउसमें मिलावें लड़के के लिये खुराक दो मासे जवान के लिये नौ मासे॥

होंठों के फटजाने का यत्न॥

होंठोंके फटनेकाकारण खुश्कीहै-(यत्न)घृतमें नोनमिला कर प्रतिदिन तीनबेर नाभि परमलें गुणदायक है—(अन्य) होंठ और जिह्वाके फटजाने को उत्तमहै मीठेकद्दूकेबीजोंकी मींगी या तरबूजके बीजोंकी मींगी,पानीमें पीसकर मलें—(अन्य)कतीरा पीसकर और इसपगोल का लुआब होंठोंपर मलें—(अन्य) बायबिडंग की झाग निकाल कर होंठोंपर मलें॥

कण्ठ के रोगों का यत्न ॥

खुनाक ॥

खुनाक वह शोथ है कि नरखरे या नरखरे के पट्ठे या मरीया मरी के पट्ठे में पैदा होता है नरखरा उस को कहते हैं कि उससे आवाज़ निकलती है और मरीसे भोजन और मद्यका सेवन होता है जो नरखरे में शोथ होतो उस के चिन्ह खांसका रुकना है और जो मरी में शोथ होती कठिनतासे खाना पीना उतरना उस के चिन्ह हैं—(यत्न) सरेरू की फस्द और जिह्वा के नीचे की रग खोलें और अमलतास मुखमें रखना बज़ूत लाभ करता है और खुनाक में माउलशईर, कि मसूर और खशखाश उसमें मिलाकर पकाया हो भोजन करें जो दो भाग खशखाश और मसूर बराबर—(शहतूत की शरबत) खुनाक की सूजन और गले के शोथ और कव्वे और तालू और जिह्वा की सूजन को श्रेष्ठ है खट्टे शहतूतका रस निचोड़कर बराबर मिश्रीमें क्वाम करें—(ग़रग़रा अर्थात् कुल्ली) जो गले की पीड़ा और सूजनको गुणकरे—नींब की पत्तियां, थोड़े शहद और सूखे मको में मिलाकर औटाकर साफ़ करके कुछ गरम करके कुल्ली करें—(अन्य) खुनाककी गुणकारक—अमलतास, मसूर, मकोकी पत्तियों के रसमें औटाकर कुछ गरम ग़रग़रा करें—(अन्य) शहतूत का रस, धनिया, मसूर, भिगोकर उसके पानी में मिलाकर ग़रग़रा करें—(अन्य) जव अधकुचले भिगोकर उसका साफ़ पानी लेकर कुछ गरम ग़रग़रा करे ठंढा और ग़रम शोथ और कंठ की पीड़ा को श्रेष्ठ है इसी प्रकार कुछ गरम पानी से ग़रग़रा करना खुनाक को गुण करे-(अन्य) बबूलकी पत्तियां औटाकर ग़रग़रा करें-(अन्य) खुनाक को गुण करे अरहर की पत्तियोंका रस निकाल कर कुछ गरम करके ग़रग़रा करें—यदि अरहर की

पत्तियां न मिलें अरहर की दाल पानीमें भिगोकर कुछ गरम करके गरगराकरें—(अन्य) तूतकी जड़,और पत्तियां और उसकी नरम डालियां पानी में औटाकर गरगरा करें—(अन्य) धनियेका चावनागलेकीपीड़ाको गुणकरे—(अन्य)मको,कालीजीरी,कालीमिरच,खड़ियामट्टी बराबर पानी में पीसकर लगावें गलेके शोथ और खुनाकको दूरकरे—(अन्य) जदवार,रेवंदचीनी तीन २ मासे, अफीम तीन रत्ती कुछ गरम पानी में मिलाकर लेपकरें—(अन्य) सूखा करेला सिरकेमें पीसकरगुनगुना लेप करें—(अन्य) गलेकी पीड़ा को गुणकरे इतीस की जड़ पानीमें घिसकर कुछगरम करकेमलें—(अन्य)नौसादर मलना खुनाक को नाशकरे—(अन्य) मुरगीका विष्टा सिरके में मिलाकर कण्ठ पर लगावें शोथ को गुण करता है—(अन्य) तोंबे के बीज, गेरू, लालचन्दन, कालाजीरा, सिरस की छाल मसूर, कालीमिरच, काली जीरी, सूखा करेला, सोये के बीज ये सब औषधि बराबर पीसकर सिरके में मिलाकर गुनगुना मलें—(अन्य) मोरया किरिन्दी जड़ है मैला रंग पीसकर लगावें—गले की पीड़ा को गुण करे—(अन्य) रेवंदचीनी, गेरू,कालीजीरी, कालीहड़, हल्दी, आमला सुलतानी मिट्टी बराबर कूट छानकर कुछ गरम जल में मिलाकर मलें—(अन्य) जो लड़कोंका कण्ठा लटक आवे उसको गुण करे—सुल्तानीमिट्टी सिरके में मिलाकर तालूपर रक्खे—(अन्य) माजू सिरकेमें घिसकर तर्जनी अंगलीमेंलगाकर कण्ठा लटकगयाहो उससे उठावें-(अन्य चूल्हे की खाल मिट्टी, एक कालीमिरच पीस कर मिलाकर कण्ठा उससे उठावें—(अन्य) कपोल के शोथ को श्रेष्ठ है—सेंभल की छाल जलाकर तिलों के तेल में मिला कर लेप करें—(अन्य) मेथी जौ का आटा बराबर सिरके में मिला कर लेप करें—(अन्य) खुनाक को श्रेष्ठ है और यह औषधि उलवीखां की आजमाई हुई है कछुवे को लेकर

मुख उसका रोगी के मुख के बराबर रक्खें कि कछुवे के मुख की श्वास रोगी के कण्ठ मेंभी प्रवेश करे और उसकी खुनाक़ गलकर नाश हो और गर्दन की पीठ पर पछने लगाना खुनाक को नाश करता है॥

आवाज़ के पड़जाने का यत्न॥

जो नज़ला कण्ठ की ओर गिरे और उससे आवाज़ पड़जावे थोड़ी अफीम खावे और खशखाश का पोस्ते और अजवाइन को औटाकर ग़रग़रा करें गुण देता है और जो कफ़ के कारण हो तो तीन बरस की पुरानी गोंदी की जड़ को कि पृथ्वी के नीचे होती है थोड़ी २ मुख में रक्खें दूरपन्द से ग़रग़रा करना आवाज़ को साफ़ करता है—(अन्य) बन्द आवाज़ को खोले अदरक लेकर उसे भीतर से खाली करके थोड़ी हींग और नमक पीस कर उसके छेद में रक्खें फिर अदरक को कपड़े में लपेट करउसपर खमीर लगा कर भूभल में रक्खें जब अदरक पक कर उसमेंसे गन्ध आनेलगे आगसे निकाल कर छील कर खावें—आवाज़ खुलजावे—(अन्य) बन्द आवाज़ को गुण करे मुजरिबात अकबरी में लिखा है कि चावल गुड़ में पका कर सोने के समय पेटभर कर खावें फिर एक घण्टेके उपरांत दो चमचे गुनगुना पानी पियें तीन दिनमें आवाज़ खुलजावे—(अन्य) थोड़ी हींग गरम जलसे कण्ठ के नीचे उतारें—(अन्य) मूली के बीज कूटकर गरम पानी में मिलाकर खावें—(अन्य)हड़ के बीजकी मींगी, पीपल जाइफल नोन बराबर शहद में मिलाकर गोलियां बनाकर प्रतिदिन एक तोला दोसप्ताह पर्यंत खावें—(अन्य) बन्द आवाज़ को कि कफ़ से हो उत्तम है—मालकांगनी बच, खुरासानी,अजवाइन,कुलीजन, पीपल पीसकर शहद में मिलाकर एक दाम के अनुमान प्रभात और सन्ध्या चाटें—(अन्य) मुजरिबात अकबरी से लिखा गया कि च-

राग का गुल पानमें डालकर खावें उस बन्द आवाज़ को कि सेंदूर खाने से हो अधिक गुण करे— (अन्य) आवाज़ खोलता है गन्ना भूमल में गुनगुना करके छीलकर खावें— (अन्य) मुखमें क़बाबा रखना आवाज़को खोलताहै करंब की चटनी आवाज़ के खोलने को गुणकरे और करंब की डालियां थोड़े पानी में पकाकर कपड़े में छानकर श हद में क़वाम करके सेवन करे॥

कण्ठमाला की औषधियों का यत्न॥

कण्ठमाला शोथ है कि गले में पैदा होता है— (यत्न) मुंजिज के उपरांत कफ़ का जुल्लाब दें—(अन्य) कण्ठमाला को उत्तम है मूली के बीज बकरी के दुग्ध में पीसकर लेप करें—प्रतिदिन लसौड़ेकी पत्तियां नरम भूमलमें गुनगुनी करके दशदिन तक कण्ठमाला पर बांधें— (अन्य) थोड़ी कसौंधीकी पत्तियां चार काली मिरचों में पीसकरमलें— (अन्य) सरसों पीसकर लगायाकरें—(अन्य) लिखाहै कि जुल्लाब देनेके उपरांत जब तक रोग नाश न हो चारमासे अंगीहड़ कूट छानकर रात को सदा खाया करे—और यह मरहम लगावें गूगल एक तोला, कालीमिरच तीन मासे सिरकेमें पीसकर मरहम बनावें—(अन्य)मसूर,धनिया सिरकेमें पकाकर पीसकर लगाया करें—(अन्य) सोंठ एक टङ्क, कुलथीके बीज तीनटङ्क गोमूत्रमें पकाकर ठण्ढा करके लेप करें— (अन्य) यह औषधि कराबादीन शफ़ाई से प्रति की गई है कण्ठमाले को श्रेष्ठ है—कतीरा पांच भाग,नानख्वाह दो भाग कूट छानकर धनियेकी पत्तियों का रस निचोड़ कर उसमें मिलाकर मलें— (अन्य) बकरीके कंधेकी हड्डी लेकर जलाकर एक सप्ताह पर्यंत दो टङ्कखावें—मोरयाकी लकड़ी उसको मदनमस्त भी कहते हैं कूट छानकर गुनगुना करकेलेपकरें ऊपरसेपुरानीरुई गरम करके बांधें—(अन्य) गौका सींग और नख जलाकर

तेलमें मिलाकर कण्ठमालाके रोगी को लेपकरें—(अन्य) पीलू की पत्तियां, ऊंट या गौ के मूत्र में पीसकर लगावें-उसके ऊपर पान बांधें—(अन्य)मुंडीके फूल दो तोले पानी में भिगोकर सुबह मलकर साफ़ करके पियें—इसीप्रकार एक मास पर्यंत सेवन करें—(अन्य) आज़माया हुआ है कण्ठमालाके मलकोउखाड़े और यह औषधि मुजर्रिबात अकबरी की है एक भाग सिरसके बीज कूट छानकर दो भागशहदमें मिलाकर हाड़ीमें रक्खें और उसपर सरपोश ढांक कर उसके किनारे उड़द का आटा लगावें और एकसप्ताह पर्यंत धूपमेंरक्खें इसके उपरांत खोलकर प्रतिदिन एक तोलाभरखावें और खटाई और बादीसे पथ्य करें यद्यपि इस औषधि में दुर्गंधि है परन्तु कण्ठमालाके मलके दूर करनेमें अद्वितीयहै—(अन्य) चूकेकी जड़बांधना विशेष करके कण्ठमाला को श्रेष्ठ है—(अन्य) बकरी के सींग का गूदा जंगली करंडे की आग में जलावें जब जल कर सपेद होजावे चूर्ण बनाकर प्रतिदिन सात मासे चौदह दिन तक फांकें भोजन खिचड़ी खावें—(अन्य) कण्ठमाला को दूर करे जौ का आटा, अलसी, कबूतर की बीट सिरके में पीस कर लगावें—(अन्य)धनिया, और जौ का सत्तू सदा कण्ठमाला पर लगाया करें—(अन्य) सिरस की छाल, तोंबा, कालीमिरच, कालीजीरी बराबर पीसकर लगाया करें—(अन्य) बरगद का दूध कण्ठमाला पर लगाना कण्ठमाला को पचाता है— (अन्य) सरेकू की फस्दखोलना और भोजन कमकरना उत्तमोत्तमयत्न है॥

कण्ठ में जोंकके लिपट रहने का यत्न॥

नोन, नौसादर, सिरकेमें मिलाकर ग़रग़राकरें और गन्धक का धुवां कण्ठ में पहुंचाना जोंक को कण्ठ से गिरा देता है और धुवां पहुंचाने की यह रीति है नरकुल लेकर एकओर उसके गन्धक रक्खें उसपर आग रखकर

दूसरी ओर से झुके की भांति खींचें जो जोंक कंठ से छूट कर कोष्ट में गिरजावे शीघ्रही बमन करें न निकले तो मुसिल लें—(अन्य) काली मिट्टी कपड़े में बांधकर रोगी के मुख में रक्खें शीघ्रही जोंक मट्टी की सुगन्ध से निकल आवेगी—(अन्य) पिसी हुई राई दो भाग सिरका आठ भाग दोनों मिलाकर ग़रग़रा अर्थात् कुल्ली करें—(अन्य) राई कलौंजी पीसकर नाकमें फूंकें गुण करतीहै—(अन्य) सोठ हिन्दी मुखमें रक्खें जोंक उसकी प्रीतिसे निकल आवेगी॥

हृदय के रोगों का यत्न

दमा अर्थात् श्वास बड़ुधा बुढ़ापेमें कफकी अधिकता से होताहै यह रोग बहुत दिन रहने वाले रोगों मेंसे है इस के उपाय से भूलन करे सुंघिज के उपरान्त कभी २ कफ का जुल्लाब मुसिल से करते रहें—(गोली) श्वास रोग को श्रेष्ठ है करंजुवे की गूदी, पीपल पीसकर अदरक के रस में कालीमिरचके बराबर गोलियां बनाकर दोतीन गोलियां प्रभात को खायाकरें—(अन्य गोली) हल्दी, राई, सज्जी चार २ भाग गुड़ अठारहभाग कूट छानकर जंगली बेरके बराबर गोलियां बनाकर एक सुबह और एक शाम को इसीप्रकारचालीस दिनतकखावें—(अन्यगोली)सीप जला कर अदरक के रसमें खरल करके चनेकी बराबर गोलियां बनाकरखावें—(अन्य) गोली जोश्वासरोगको गुणकरे मदारकी कली जो खिलीनहो दोभाग,पीपल एकभाग,लाहौरीनोन एकभाग महीन पीसकर जंगलीबेरकी बराबर गोलियां बनावें एक गोली प्रति दिन खावें—(गोली) एक मदार का पत्ता पच्चीस, काली मिरचें कूट छानकर काली मिरच के बराबर गोलियां बनावें जवान को सात गोली और लड़के दो गोली खावें—(अन्य) पीपल, कालीमिरच एक २ टंक, काकड़ासिंगी आधा टंक, सज्जी सपेद चौथाई टंक, अफीम चार रत्ती कूट छान कर अदरक

के जल में जंगली बेर की बराबर गोलियां बनावें खूराक एक गोली जो अदरकनमिले तो पांचटंक सोंठ मिलाकर गोलियां बनावें (अन्य) एलवा सपेद, सज्जी, काली मिरच हल्दी कूट छान कर घीकुवार के रस में खरल करके जंगली बेर की बराबर गोलियां बनावें खूराक एक गोली गुन गुने जलसे—(अन्य) नील चौका लकड़ी दो २ टंक, माल कंगनी चौथाई टंक कूट छानकर पानी में खरल करके चनेकी बराबर गोलियां बनावें प्रात संध्या एक गोली खाया करें खटाई से पथ्य करें चिकना भोजन खावें—(अन्य गोली) सांक और कफकी खांसीको श्रेष्ठहै अकरकरा काली मिरच, अनार की छाल, अजमोद, बांसेकी पत्तियां, छोटी कटाई की जड़, बबूल की छाल, सपेद सज्जी लाहोरी नोन, साभर नोन एक २ मासा, अफीम दो मासे कूट छान कर अदरक के रस में चने की बराबर गोलियां बनाकर मुखमें रखकर उसकी राख निगल जावें (अन्य) दमेको श्रेष्ठहै एलवा, सुहागा, सुरमकी कूट छान कर चने की बराबर गोलियां बनावें दो प्रभात को दो संध्या को खाया करें—(अन्य) पीपल एक तोला कपड़े को पानी में भिगोकर पीपल उसमें लपेटकर भूभल में रक्खें एक घण्टे के उपरान्त निकालकर भुना सुहागा, कुलीजन, काली मिरच एक २ मिसकाल, पीपल, अकरकरा डेढ़ भाग, बारीक पीसकर घीकुवार के रस में खूब खरल करके चने की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली रोज खावें—(अन्य) बांसा, कायफल, पुष्करमूल, काकड़ासिंगी; काली मिरच, कलौंजी, पीपल, मारंगी, कटाई के बीज बराबर लेकर अदरक के रस में गोलियां बनावें एक टंक के अनुमान खावें—(अन्य) कसौंधी का हराफल भून कर खावें—(अन्य) रीठे की गिरी खाना सांक को गुण करे—(अन्य) आश्चर्य दायक औषधिहै कूसे के बीज, नकछिकनी, पान तीनों औषधि भून कर पीसकर चार

रत्ती के बराबर पान में खावें—(अन्य) मदार के पत्ते, सुरमकी, कत्था सपेद पानी में पीसकर मलें और सुरमकी घीके मिट्टी के बासन में रक्खें और बरतन का मुख बन्द करके जलते हुये चूल्हे या तन्दूर में रक्खें जब जलकर राख होजावे पीसकर प्रति दिन एक रत्ती पानमें खाया करें—(अन्य) कास खास को नाश करे मदार की पत्ती कि पीली होकर दरख्तसे गिरपड़ी हों एक सेर, चूना, नोन दोदो टंक दोनों को जलमें पीसकर मदार के पत्तों पर लगाकर सुखाकर मिट्टी के बासन में रख कर अंगनी कंडे की आगमें एक पहर तक जलावें जब भस्म होजावे एक रत्ती रोज खाया करें दूध दही और खटाई से पथ्यकरना उत्तम है—(अन्य) मदार की कोंपल पानमें रखकर सरदी में तीनदिन पर्य्यन्त प्रतिदिन एक कोंपल खावें चौथेरोज डेढ़ कोंपल पांचवें दिन दो कोंपल इसीप्रकार चालीस दिन पर्य्यंत आधी २ कोंपल प्रतिदिन अधिक करके खावें—(अन्य) मदार की कली जो खिली न हो जितनीचाहें लेकर हरफूल में एक काली मिरचरखकर मिट्टीकी नईहांडीमें रक्खें उसपर खारीनोन बिछाकर हांडीकामुख मूंदकर तन्दूरमें रक्खें ठण्ढेहोनेके उपरांतनिकालकर चाररत्ती उसमेंसे रोजखायाकरें—(अन्य) कफके दमेकी नाशकारक इलायची के दाने,माल कंगनी दोमासे लेकर निगलजावें—(अन्य) अदरकका रस, प्याज का रस, लहसुन का रस, घीकुवारका रस, शहद यह सब औषधिबराबरलेकरचीनीयाशीशेके बासनमेंरखकर पृथ्वी मेंगाड़ें तीनदिन के उपरांत निकालकर एककौड़ीकेबराबर प्रतिदिन खायाकरें—(अन्य) विसख परे की थोड़ीसी जड़ प्रतिदिन पानमेंखावें—(अन्य)तम्बाकू का गुल आगमें जलाकर सपेद करके पीसकर दोरत्ती पानमें खायाकरें बादी और खटाईसे पथ्यकरें—(अन्य)तम्बाकू का गुल इकट्ठा करके आगमेंजलावें जबसपेद होजावे उसको पानीमें

कजली करके एकरातदिन रहनेदें और प्रतिदिन दोतनी बेर उसको हिलाते रहें फिर छानकर और उसका जल लेकर पतीलेमें औटावें जबनोन होजावे उसमेंसे दोरत्ती लेकर पानमें खायाकरें—(अन्य)थूहरकी लकड़ी खोखली करके एकदाम फिटकरी उसमें रखकर कपड़ मिट्टी करके कंडेकी आगमें जलावें जबठंढा होजावे फिटकरीनिकालकर दोरत्ती के बराबर पानमें खायाकरें—(अन्य) दमेको गुणकरे चाहेवह सरदीसे हो या गरमी से इसपगोल अंगुलीभर बराबर तीनचार महीने सुबह और शाम फांकने से शांति होतीहै कफके खासरोगको शांतिकारक है पान सरवर, नाखूनके बराबर पानमें रखकरखायाकरें—(अन्य) समन्दर फलदो,पीपल चार दोनों को जलाकर पीसकर एकक्रौड़ी के बराबर पानमें रोज खायाकरें—(अन्य)मकड़ी का जाला साफ करके गुड़में लपेटकर खावें चाहे गरमी बहुत करताहै परंतु गुणदायक है—(अन्य)रूसेके पत्तों कारस दमेको गुणकरताहै—(अन्य) चारतोले गेहूं मदार के रसमें तीनदिन भिगोवें फिरमिट्टी के बरतन में रखकर उसका मुखबंद करके अंगली कंडोंमें जलावें जबठढा होजावे पीसकर छानकर चारतोले गुड़ मिलाकर दादोम आलम गीरी के बराबर गोलियां बनावें एकगोली प्रभात को खायाकरें और खटाई और बादी से परहेज करें (अन्य) बड़चड़ेका नोन थोड़ा खायाकरें हृदय को कफ से साफ करताहै और खासरोग को दूर करता है और थूहरका नोनभी यही गुण रखताहै और मदारका नोन खानाभी खासरोग को नाश करताहै और उसके नोनके बनानेकी यहरीतिहै मदारकेपत्ते सुखाकर जलाकर रात को बरतन में भिगोदें प्रभात को उसका साफ जल लेकर जलावैं कि पानी जलकर खारहोजावे और नोनभी इसी रीतिसे बनातेहैं—(सुसिल)जो विशेष करके खासरोग ने नष्ट करता है जमालगोटा छीलकर चराग में जलावें जब

राख होजावे पीसकर चारभाग करें प्रतिदिन एकभाग पानमेंखावें—(अन्य)भुनीफिटकरी मिश्री बराबर कूट छानकर फंकीबनावें खुराकएकमासेसेछःमासे पर्य्यंत—(अन्य) गेहूं आवश्यकता के अनुकूल नये कुल्हड़में जलाकर कोयल करके हल्दी जलेहुये गेहूं के बराबर लेकर जलावें फिरदोनों महीन पीसकर मिलावें पहिलेदिन साढ़ेपांचमासे गरम या ठंढे पानीसे खावें दूसरे दिन एककौड़ी के बराबर अधिक करें इसी तरह एकमासा इक्कीस दिवस पर्य्यंत सेवन करें जो ईश्वर चाहेतो सातदिन के उपरांत फर्क मालूम होगा—(अन्य) कली मदार की जड़ डेढ़भाग अजवाइन एकभाग कूटछानकर गुड़में मिलाकर गोलियां बनावें और एक तोला भर हर प्रभात को खावें— (अन्य) करील की लकड़ी जलाकर उसकी भस्म एक मासाभर खाया करें—(अन्य) आंवला सार गंधक सात मासे, मिश्री चारटंक, शहदमें मिलाकर दोमासे,पानपर लगाकर मलकर खावें—(अन्य) पियाबासाका छोटासा वृक्षजड़ और पत्तों समेत छायामें सुखाकर कूट छानकर चूर्ण बनाकर एकअंजुलीभर प्रतिदिन खावें—(अन्य)बांरहसिंगेका सींग जलाकर पहिलेदिन एक मासेभर शहदमें मिलाकर खावें फिर एक मासारोज़ अधिक करके एक तोले पर्य्यंत पहुंचावें जो इससे गरमी अधिकभीहो तो छोड़दें—(अन्य) मदारकी छाल , सहंजने की छाल तीन २ टंक, जवाखार एकटंक, पीपलसातटङ्क,सज्जतूतियाचौथाईटंक भूनकरचूर्ण बनावें खुराक आधाटंक—(अन्य) इन्द्रायनकीजड़, पीपल सज्जीबराबर कूटछानकर रक्खें एकमासासुबह और एक मासाशामकोखायाकरें—(अन्य) लाहोरीनोन पहिलेदिन दो मासे पीसकर सोनेके समय चाटें और हररोज आधा मासा अधिककरें कि छः मासे पर्यन्तपहुंचजावे इसपर जल न पियें जोप्यास बहुत मालूमहो गुनगुना पानीपियें—(अन्य) मदारकी पत्ती अढ़ाई पाव मंडवेकी टहनियां टुकडे २क-

रकेसवासेर सादी अजवाइन,और पन्द्रहदामअधकुचली आंबल सारगंधक,साम्भरनोन,लाहोरी नोन,कालानोन जवाखार,सज्जी,तीन२दाम यहसंपूर्णऔषधि हांडीमेंभरकर ढकनादेकर उसकामुख मिट्टीसे बन्द करदें उसपरसे कपड़ोटी करके बज्रतसी लकड़ियों में रखकर जलावें जब भस्म होजावे पीसकर खाया करें और थोड़ा २ बढ़ाकर एक अंजुली तक पहुंचावें परन्तु इसऔषधिसे रुधिर आनेका भयहै अधिक न खावें—(फंकी) वैद्यइसका अवश्यसेवन करातेहैं पुष्करमूल,भारंगी,कालीमिरच,पीपल, कटाई के बीज,काकड़ासिंगी, कालानोन, लाहोरीनोन, सज्जी,बिल्लीलोटन बराबर कूटछान कर फंकीबनावेंएकमासा सुबह औरएकमासा संध्याकोखावेंऔर भोजनमें घतअधिक करें (तम्बाकूकीशरबत)तम्बाकूके हरे पत्तोंका रस और उसके बराबर गुड़ लेकर शरबतबनाकर साफकरके रक्खें खुराक एकदामसे दोदामपर्यंत निर्बलको कमदें कि उसको वमन और अतीसार का भयहै और स्वासरोग को बज्रतही गुणदायकहै पांचदिनमें बिलकुल आरामकरदेता है-(चटनी)कास स्वासको किकफसेहा उत्तमहै अलसी और इस्पन्द बराबर पीसकर दुगने शहदमें मिलाकर प्रतिदिन उससे एकतोला भरचाटें बाजोंने लिखाहै कि भुनीअलसी तीसटंक, कालीमिरच दशटंक, तिगुने शहद में मिलाकर चाटें और बाजे मिरच के बदले पोदीना मिलाते हैं और बाजे केवल तिगुनी अलसीमें कवाम करतेहैं—(अन्य)सांक आनेको गुणकरे भुना सुहागा तीन तोले,शहद चारतोले मिलाकर रक्खें सोनेके समय उसमें से तीन उंगली लेकर चाटें —(अन्य)कफके दूरकरनेमें अद्वितीयहै कायफल,सोंठ पुष्करमूल,काकड़ासिंगी,भारंगी,पीपल बराबर कूटछानकर शहद में मिलाकर रोज एकदाम खायाकरें —(अन्य) बावची,हल्दी,पीपल,आंबाहल्दी,कालीमिरच,कालानोन,कालीचीता,भुनासुहागा एक २ दाम,सज्जीआधादाम

कूटछानकर खूराक एक मिसकाल गरम जलसे —(अन्य) काकड़ासिंगी,पुष्करमूल,भारंगी,कायफल बराबरकूटछानकर सोंठ भिगोकर उसकेपानीमें तरकरके प्रभात और संध्या एक २ टंक के अनुमान खावें—(अन्य) कासखास को गुणकरे हड़बहेड़ा दोनों एक२भाग कूट छानकर एकटंक प्रभात और एकटंक शामको खावें और दोटंक रीठे प्रतिदिनखाना दमेकोगुण करता है —(अन्य)कड़बी कुठ दुगने शहदमें मिलाकर चाटें कासस्वास को गुण करे—(अन्य) अलसी मेथी सातमासे,दाखमुनक्के एकतोला,पानीमें औटाकर साफकरकेपियें—(अन्य)बड़ी कटाईकी जड़ टुकड़े२ करके पावभर जलमें औटावें जब चतुर्थांश शेष रहे पियें (अन्य)कफकी खांसीको गुणकरें जगलीप्याज,शैतरा,सोंठ भारंगी कटाई जड़ और पत्तों समेत कूसा,बबूल की छाल दोदोदाम यहसंपूर्ण औषधि जब कुटकरके छः हिस्सेकरें एकभाग आध सेर जलमें औटावें जब आधपाव रहे साफ करकेपियें—(अन्य)दमे औरखांसीको गुणकरे छोटीकटाई कीजड़,गिलोय,पुष्करमूल,भारंगी,काकड़ासिंगी,नरकचूर तीन२ मासे एकसेरजलमें औटावें जब आधपाव रहे साफ करके पियें—(हलवा)सिलऔर रूखी खांसी को गुणकरे मीठेकद्दू के बीजोंकीगिरी,खीरे ककड़ीके बीजों की गिरी खशखाश,निशास्ता बराबरशीरानिकाल करसपेद मिश्री यातुरंजबीन याशीर खिश्तयाबिनफशेकी शरबत मिलाकर पियें—(हलवा)किहृदरोगसिल,खांसी और दिक अर्थात् जीर्णज्वर और आंतों की गांठको श्रेष्ठहै और बलकारक और भेजेका तरकरनेवालाहै निशास्तेको पानीमें औटाकर शक्कर मिलाकर कवामकरे फिरखशखाश और कद्दू के बीजों की गिरी का शीरा मिलाकर हलवा बनावें॥

सिल के रोग का यत्न॥

सिल फेफड़े के घावको बोलते हैं इस रोगवाले को ऐसा

ज्वर आवे जो कभी न उतरे कभी खांसी से रुधिर भी निकलताहै और रोगी दिन २ क्षीण पड़ता जाताहै यद्यपि यह रोग असाध्यहै परन्तु इसलिये कि रोगी शीघ्र मर न जावे बासलीक की फस्द खोलें फिर ज्वर और कास का यत्न करें—(गोली) कि सिल को गुण करे संगजराहत, जहर मोहरा, सपेद कत्था, कतीरा, सम्मगअरबी, निशास्ता, सपेद खशखाश, खतमी के बीज, गेरू एक २ टंक अफीम एक मासा कूट छान कर गोलियां बनावें और कभी ज्वर की अधिकता में थोड़ा कपूर प्रकृति के अनुसार मिलाया जाताहै (टिकिया) सिल और दिक को गुण करे गेंगटा जलाकर दश टंक निशास्ता, सपेद खशखाश, काली खशखाश दश २ टंक, साफ किये खुरफे के बीज, छिली हुई मुलहठी, छिले हुये खतमी के बीज तीन२ टंक, सम्मग अरबी, कतीरा एक २ टंक, इसबगोल के लुआब में टिकिया बनावें खूराक दो टंक (अन्य) सिल के रोग के लिये ईस्माईल खांका आज़माया हुआहै ख़शख़ाश सपेद अधकुचली दश टंक, इसबगोल तीन टंक, आध सेर जल में औटावें जब आधा पानी रहे आध सेर मिश्री में क़वाम करें ऊपर से सपेद खशखाश, सम्मग अरबी दोदो टंक पीस कर मिलावें एक तोला खावें—(अन्य) सिल को गुण करे मुल्तानी मिट्टी दो मिस्काल पीस कर पिये॥

लड़कों की पसली के रोग का यत्न॥

इस रोगमें ज्वर और खांसी होतीहै और पसली दब जातीहै यह दो प्रकार काहै एक वह कि उसका मल गरम हो उस में ज्वर भी होताहै इससे ऐसी चिन्ता नहीं इस में सात दिन पर्य्यन्त तेज़ चीज़ें कि जिससे भीतर के जोड़ छिल जावें जैसे कि तूतिया और जमालगोटा और वैसी कोई औषधि न दें और उत्तम उपायों से तलीन करना चाहिये कि अमलतास, उन्नाब, मुनक्के, बिनफ्शे

शीघ्रही मलको निकालें दूसरा वह कि कफकेदोषसेहो दूस में ज्वर और ऊर्धस्वास भी होता है पहिले से इस में भयहै—(गोली) जो लड़कों के डब्बे को दूर करे कमीला चूना, सब्जतूतिया, पीली हड़, बहेड़ेकी छाल,कत्था सपेद बराबर महीन पीसकर गोलियां बनावें समयपर थोड़े घृत में मिलाकर मलें—(गोली) केंचुवा, पेलेके बीज, लौंग बराबर लेकर गोलियां बनावें एक गोली प्रति दिन दें दो तीन दिन में रोग दूर होजावेगा—(गोली) करंजुवे के बीज की गिरी एक, कच्ची सब्ज तूतिया एक रत्ती भर महीन पीस कर सरसों की बराबर गोलियां बनाकर प्रतिदिन एक गोली खावें—(अन्य) एलुवा, जमालगोटा, सज्जी दूरकरके बराबर लेकर लोहे के बरतन में उस गोमूचमें कि जनी न हो लोहे के दस्ते से पीसकर मूंग के बराबर गोलियां बनावें आयुके अनुसार दाईके दूधमें दें— (अन्य) लड़कों के डब्बे को श्रेष्ठ है और कीड़ों को निकालती है कमीला आठ मासे, हींग एक मासे कूटछान कर दही के पानी में कालीमिरच के बराबर बनावें, दूध पीते छुये बालक को एक गरम जल के साथ और बड़े लड़के के लिये आयु के प्रमाण दें—(अन्य) लड़के को पसली के रोग को शान्त करे चूकाकी लकड़ी, कालीमिरच, पीले हड़ों की छाल, तुरबुद की छाल बराबर पीसकर काली मिरच की बराबर गोलियां बनावें खूराक एक गोली—(अन्य) सूखा केचुवा पानी में पीसकर एक बुन्द लड़के के कण्ठ में टपकावें बज़्त गुण करे—(अन्य) बकायनकी पत्ती कुछ गरम करके पहिले रेंडी का तेल पेटपर मलें उस पर पत्ती बांधें—(अन्य काढ़ा)कुसुम के फूल एक मासा दो टंक लड़की के मूत्र में औटावे जब आधा या चतुर्थांशरहे पिलावें—(अन्य) जवासेकी जड़ दो मासे पानी में औटाकर लड़के को पिलावें —(अन्य) लड़के की पसलीके रोग को दूरकरे सम्मग़ अरबी एकतोला, एलवाछ: मासे कूटछान

कर घीकुवार के रस में मिलाकर लगावें—(अन्य) यह औषधि वैद्यों के मत से निश्चय की गईहै कि एक गोली घुड़चढ़ी है अर्थात् उसका गुण रोगी को रोग से छुड़ानेमें उस मनुष्य के छूटने के अनुसार है कि घोड़ेपर सवार हो और यह नुसखा योगियों का है इस को झबमिसकीं निवाज भी बोलतेहैं इस के नुसखे बहुत हैं उस में से एक सुगम नुसखा लिखता हूं बहुधा रोगियों के रोग की शांति करता है विशेष करके लड़के की पसली कोजो ज्वर के बिना हो गुण करे—(घुड़चढ़ी कीगोली) पारा, गंधक, हरताल, सोंठ, कालीमिरच, पीपल पीलेहड़की छाल, बहेड़े की छाल, आंवला, सुहागा तरबूज के बीजों की गिरी, नाजबो के पत्तोंका रस बराबर लेकर पहिले पारेऔर गंधक को खूब पीसकर शेष औषधि लोहे के बासन में डालकर लोहेके दस्ते से भंगरे के रस में तीन दिनपीस कर मूंग के बराबर गोलियां बनाकर एक गोली प्रतिदिन खाया करेंदूसरा (घुड़चढ़ी कानुसखा)पारा एकदाम, गन्धक सपेद, तुरबद दादोटंक काली मिरच तीनटंक, सुहागा चारटंक, पीले हड़ों की छाल आठटंक, रेंडीसातटंक, शोधाजमालगोटा आठटंक, इलायची चतुर्थटंक कूटछानकर गोलियां बनावें यह गोलियां श्वासरोग के लिये हड़ बहेड़े और आमलेके साथ और जुकामके लिये शक्कर के साथ और सूखीखांसी के लिये भंगरेके रसकेसाथ और विषकेदूर करनेको ग्यारह गोलियां चढ़चढ़े के रसके साथ, और बातकेदूरकरने को शहद के साथ और बातिक कोलंज अर्थात् वहपीड़ा जोकूलों अन्तड़ीमें पैदाहोतीहै सौंफके अरकेसाथखाना और लगाना बकरीके मूचमें रगड़करसपेद दाग के लिये गुणकरे और आंखके जालेके लिये स्त्रीके दूधमें रगड़ कर लगाना और ताऊन अर्थात् एकफोड़ेकोजो अंडकोष या कुचों या बगलके नीचे निकलता है नींबूके रसके साथ दूर

करे और बातके लिये अदरक के रससे एकगोली निगल जाना श्रेष्ठ है॥

पहलू की पीड़ाका यत्न॥

जो पीड़ाके साथज्वर और खांसीभीहो बासलीककी फस्द खोलें और शेष यत्न जो बड़ी पुस्तकों में लिखीहै करें जो पहलूकी पीड़ा बात और शीतसेहो तो वह पीड़ा एक स्थानसे दूसरे स्थानमेंजावेउसमें ज्वरनहींहोता-(औषधि) पहलूकी पीड़ाको जो बात और सरदी सेहो गुणकरे थोड़ी सोंठ और थोड़ी अरंडकी जड़ कुचलकर पानीमें औटाकरपियें-(लेप) पहलूकी पीड़ाको कि ज्वरके बिनाहो गुणकरे मदारकीजड़ लड़केके मूत्रमेंघिसकर पीड़ाकीजगह पर लगाकर धूपमें बैठें और जंगली कंडों से सेंककरें (अन्य) बारहसिंगका सींग, काली मिरचें पांचपीस कर कुछगरम करके लेपकरें—(अन्य)हृदरोगको गुणकरे देवदार अढ़ाई मासे पीस कर पांचमासे गुड़मिला कर गोलियां बनाकर खावें बाजे उसके बराबर सोंठ भी अधिक करते हैं—(अन्य) छाती की पीड़ाको श्रेष्ठ है सहंजनेकी पत्तियां पकाकरखावें-(अन्य)मेथी शहद मिलाकर औटाकर पीवें पुराने हृद्रोग और खासरोग को गुणकरे॥

खांसी के रोग का यत्न॥

जो खांसी कि पहलूकी सूजन और फेफड़ेकी सूजन जातुस्सदर और कलेजे केशोथ और सिलआदि केकारण हो तो उन रोगों को शांत करे और खांसी का विस्तृत वृत्तांत यह है कि कभी सूखी होती है कि उसमें कोई वस्तु नहीं निकलतीहै और कभी तर होती है कि उसमेंसे कफ निकलताहै और छाती में खखराहट होती है जो यह रोग कफसे हो तो मुंजिजके उपरांत कफका जुलाबदें और सूखी खांसी में तर औषधियों का सेवन करें (गोली) उसखांसी को दूरकरे जो कफसे हो काकड़ा-

सिंगी कूट छानकर कालीमिरच के बराबर गोलियां बनाकर मुखमें रक्खें—(अन्य) तर और खुश्क खांसीको दूरकरे साफ की हुई मुलहठी, कतीरा, सम्मगअरबी मिश्रास्ता, मिश्री बराबर कूट छानकर चनेकी बराबर गोलियां बनाकर मुख में रक्खें(अन्य) जो आजमायाहुवा खांसीको गुणकरे पिस्तेहूलके फूल पीलीहड़ दोनों बराबरलेकर अदरककेरसमें मूगकीबराबर गोलियां बनाकर मुखमें रक्खें—(अन्य) कालीमिरच, सज्जी, चनेभूनकर छील करके बराबर लेकर अदरक के रसमें गोलियां बनावें (अन्य) एक सप्ताहमेंखांसीकोदूरकरे हल्दीएकटंक,सज्जी सपेद चौथाईटंक कूटछानकर खरलमेंपीसकर छोटेबेरकी बराबर गोलियां बनाकर प्रात औ संध्या एकगोलीखाया करें—(अन्य) कालीमिरच,सुहागा, काकड़ासिंगी, लौंग फिटकरी,भारंगी, हड़कीछाल, पीपल, लाहौरीनोन चने कीबराबर लेकर सब औषधियोंके बराबर सोंठमिलाकर कूट छानकर नींबूके रसमें खरल करके छोटेबेरकी बराबर गोलियां बनाकर सोनेकेसमय एक या दो गोलियां खावें (अन्य)लड़कोंकी खांसीको जो कफसे हो गुणकरे सुहागा आधाकच्चा और आधाभूनकरउसके बराबर कालीमिरच लेकर घीकुवारके रसमें खरल करके चनेकीबराबर गोलियां बनाकर सेवनकरें—(अन्य) छोटी कटाईकीजड़,मुलहठी,काकड़ासिंगी,कुलीजन,हड़की छाल पानी में औटाकर बबूलकी छाल मिलाकर चने की बराबर गोलियां बनाकर मुखमें रक्खें—(अन्य) स्वासकास को नाशकरे कालीमिरच,पीपल,करंजुवेके बीजों की गिरी, कटाईके बीज भुनासुहागा,सपेदकत्था एक २ टंक,अफीम आधाटंक कूट छानकर एक पहर अदरक के रस में खरल करके कालीमिरच के बराबर गोलियां बनाकर मुख में रक्खें—(अन्य) हड़की छाल, करंजके बीज कीगिरी, काकड़ासिंगी कालीमिरच,मुलहठी बराबर कूट छानकर चनेकी बराबर

गोलियां बनाकार मुंहमें रक्खें—(अन्य) थोड़ी खशखाश भूनकर पीसकर थोड़ा लाहौरीनोन और कालीमिरच मिलाकर एक मासे के बराबर प्रतिदिन दो तीन बेर खायाकरें—(अन्य) शलगम पर कपड़ौटी करके तन्दूर में पकाय उसका कुछ गरम पानी निचोड़कर मिश्री मिलाकर पियें—(गोली) जो कफकी खांसीको दूरकरे मुलहठी, कालीमिरचभूनकर उसके बराबर मिश्रीमिलाकर कूट छानकर चनेके बराबर गोलियां बनावें रात्रिको दो गोलियां मुखमें रखलें—(अन्य) हड़की छाल, बहेड़े की छाल, काकड़ासिंगी, भारंगी, दारचीनी, फिटकरी, सुहागा, चीत, लौंग—लाहौरी नोन, सोंठ बराबर ले और सुहागे को भूनकर छोटे बेरकी बराबर गोलियां बनावें एक गोली प्रभात एक सन्ध्या खावें—(अन्य) जो कफकी खांसीको गुणकरे पंवारके बीज पीसकर चार मासे की बराबर तीन सप्ताह पर्य्यन्त खावें—(अन्य) केले का पत्ता जलाकर उसकी भस्मलेकर थोड़ेनोन में मिलाकर प्रतिदिन कई बेरखाया करें—(अन्य) गुदापर तेल लगाना विशेष करके कासरोग को शांतकरता है—(अन्य)पुरानी खांसीको गुणकरे—पीपल चिलमपर रखकर तम्बाकूकी तरह पियें—(अन्य)—कि गलेमें लटकाना विशेष करके श्रेष्ठहै रियाज आलमगीरी में लिखाहै कि कछेकी बीट थैलीमें बांधकर लड़के के गलेमें लटकावें खांसी दूरहोगी—(अन्य)कफकी खांसीको गुण करे कुचला घीमें जलाकर पीसकर रक्खें प्रभातको दोरत्ती उसमेंसे खावें—(हरीरा) खांसीके लिये श्रेष्ठहै—गेहूंकी भूसी पानी में मलकर उसका रस निकाल कर बादाम की गिरी का रसऔर निशास्ता औरशक्कर मिलाकर हरीरा बनाकर कुछ पियें—(अन्य)—लाहौरीनोन, सम्हरनोन, कालानोन, अजवाइन, नमक, नमनी, सुहागा सम्पूर्ण औषधि बराबरलेकर मट्टीके कुल्हड़में रखकर ऊपरसे कौपड़टी

करके आधगज का गहरा एक गढ़ा खोदें उसमें जंगली कंडे भरकर उसके बीचमें कुल्हड़ रखकर जलावें जब ठंढाहोजावे जलाकरपीसकर उसके बराबर समग़अरबी मिलाकर एक मासा प्रतिदिन खायाकरें — (चूर्ण) खांसीका गुणकरे चिफला, लाहौरीनोन, अनार की छाल, कोंचकेबीजों की गिरी, कूसेके पत्तों की राख, जवासे की राख एक २ भाग, पीपल, कालीमिरच आधा २ भाग कूट छान कर एक मासा सुबहऔर शामखाया करें तीनदिन में आराम होवे—(अन्य) अनारकी छाल जो विलायती हो तो अति उत्तम नहीं तो पीपल, काकड़सिंगी छः छः मासे, लाहौरीनोन, कालानोन, एक २ तोला हड़की छाल दो तोले कूटछानकर फंकी बनाकर प्रतिदिन कई बेर खायाकरें—(अन्य)काकड़ासिंगी, छिली ज़ईसुलहठी, बबूरका गोंद, खशखाशकापोस्ता, पीपल समन्दरफल कीगिरी बराबर कूट छानकर फंकी बनावें तीन मासेके अनुमान खावें (जूफाकी शरबत) कफकी खांसीको गुण कारक साफको ज़ई सुलहठीसौंफ खतमी के बीजपर सिया व शान दो२टंक, जूफा सुलहठी एक२टङ्क, लसौडा तीस टंक, खशखाश के पोस्ते बीजोंसमेत ग्यारह पावभर शरबत बनावें,(अमलतासकी गुलकंद)तबियतको मुलायम करती है कफ़ छातीसे साफ करतीहै खांसीको मुफीद है अमलतास एकभाग, मिश्रीदोभाग यथाविधिगुलकन्दबनावें और एक तोला भरखावें—(अमलतास की चटनी) जो प्रकृति को नरम करने वाली और कफको हृदय से दूर करती है और खांसीको शान्त करतीहै अमलतास जलमें कजली करके तीनभाग शक्कर में कवाम करें और दो तोले सौंफके अरक या उसकेरसके साथ खावें—(हालिमकी चटनी) कफकी खांसी को दूरकरे और मलको हृदय पर गिरने से रोकती और पहलूकी पीड़ा कोदूरकरतीहै—हालिम कूटकरशहदमें मिलाकरचाटें—(अन्य)

सरसो पीसकर शहदमें मिलाकर चाटना तरखांसी को गुणकरताहै—(अन्य) खांसी और ज़ईखास और लड़कों के खरखर करने को गुणकरे बड़े मुनक्के दो दाम उत्तम शहद तीन दाम, कालीमिरच, पियावांसा, भारंगी, नागरमोथा, काकड़ा सिंगी, छः छः मासे, अतीस, बच, खुरासानी चार २ मासे कूट छानकर शहद में मिलाकर आयुप्रमाण दाईकेदूधमें मिला कर दें—(खशखाशकी चटनी)उसखांसीकाजो नज़लेसेहोगुणकरे खशखाशकेपोस्ते दानोंसमेततीस,लसौड़ाउसीके बराबर, सौंफ, खतमी केबीजएक२ तोलाआधसेर पानीमें औटावें जबआधारहे साफ करके पावभर शक्कर में क़वाम करें फिर साफ की ज़ई मुलहठी दो टङ्क, समग़अरबी एक टङ्क, कतीरा आधा टङ्क पीसकर मिलावें सोनेके समय और प्रभातको एक तोला उसमेंसे चाटें—(गोंदी की चटनी) खांसी को गुण करे—गोंदी लेकर उसका लुआब निकाल कर बराबर की शक्कर मिलाकर क़वाम के अन्तमें थोड़ा बबूलका गोंद पीसकर मिलाकर सेवन करें—(अन्य) लड़कों की खांसी और बमन को गुण करे— काकड़ासिंगी, अतीस पीपल, मुलहठी, समग़अरबी बराबर कूट छानकर शहद में मिलाकर चाटें—(अन्य) खांसी को गुण करे— समग़ अरबी डेढ़ तोला, कतीरा, निशास्ता एक२ तोला, छिली ज़ई मुलहठी आधा तोला, सपेदमिर्च बारहदाम, आलम गीरी और कभी गरमी के समय तरबूज के बीजों की गिरी एक तोला अधिक करते हैं—(अन्य) लड़कों के खरखर करने और कफ़ की खांसी को गुण करे— और उसका सदा खाना लड़कों की पुष्टता और बलको करता है काकड़ासिंगी पीसकर शहद मिलाकर लड़के को चटावें—खुराक आयु के प्रमाण—(अन्य) खांसी को गुण करे—और औषधि से बल में अधिक है मुनक्के बड़े दाने निकालकर, काकड़ासिंगी, दारचीनी मिलाकर चटावें—

(अन्य) नागरमोथा, मुलहठी कूटछानकर शहदमेंमिलाकर घोड़ा उससे दाई के दूध में मिलाकर लड़के को दें (पुस्तक निर्म्मापक कीवनाऊई चटनी) जो खांसी को गुणकरे छिलीऊई मुलहठी, मुनक्के बड़े चार २ टङ्क, खशखाश के पोस्ते दानों समेत सात लसौड़े, अलसी दो टङ्क, सादी अंजीरे तीन, सौंफ की जड़, जूफा एक टङ्क, सबको तीन पाव जलमें औटावें जब पावभर जल शेष रहे साफ़ करके पावभर मिश्रीमें कवाम करें फिर बादामकी गिरी निशास्ता, चिलगोजे की गिरी चार टङ्क, काकड़ासिंगी दो टङ्क रबिस्सूस, समग़ अरबी एक२ टङ्क, पीपल आधा टङ्क, मुनक्का एक मासा पीसकर मिलावें एक मिस्कालसे दो मिस्काल पर्य्यन्त खावें—(काढ़ा निर्म्मापक का वर्णित) जो खांसी को गुण करे गावजबां एक मिस्काल, सौंफ एक टङ्क, मुलहठी चारटङ्क, एक खशखाश का पोस्ता समग़अरबी आधाटङ्क, लसौढ़े सचह दाने, खुतमीके बीज एक टङ्क, बड़ेमुनक्के ग्यारहदाने,मिश्रीयथाविधि बनाकर सेवन करें—(अन्य)गेहूं चार टङ्क पावभर पानीमें औटावें और दो मासे या एक मासे लाहौरी नोन डालें जब तृतीयांश शेषरहे साफकरके पियें एक सप्ताहमें खांसी दूर होगी—(अन्य) उस खांसी को जो नज़ले से हो शीघ्रही गुण करतीहै—खशखाशके पोस्तों की डंडी टूरकरके चार लाहौरी नोन दो मासे अढ़ाई पाव जलमें औटावें जब तृतीयांश शेष रहे साफकरके सोने के समय पियें॥

रुधिर के थूकने का यत्न॥

जो खंखार से रुधिर आवे तो हृदय की गरमी से है और जो बिना खंखार के आवे भेजसे है और जो खांसी में आवे गले और मुंह और कलेजे से है—(यत्न) जो भेजे से रुधिर आवे सरेरू की फस्द खोलें और जो हृदय से आवे तो बासलीक की फस्द और जो मुखके किसी जो

ड़से आवे चारों रगोंकी फस्द खोलें—(कुहरबाकीटिकिया) मुंह से लहू आने और स्त्री के अधिक रज के गिरने और रुधिर के मूच का गुणकरै कुहरबा दो टंक, खुरफेके बीज,घोंघा जलायाङ्गआ,भुना धोयाङ्गआ धनियां,निशास्ता,गेरू, अकाकिय, कतीरा एक २ दाम लेकर टिकिया बनावें दो टंक खावें—(गुलनारकीटिकिया) खून थूकने के लिये गुण करें चार दाम चूके के बीज,धनियां दो दो टंक कतीरा,समग़ अरबी,सहंजना, माज़ू एक २ टंक टिकिया बनावें दो टंकखावें कदाचित् बद्धकोष्ठ अर्थात् कब्ज करने की आवश्यकताहो तो अढ़ाईरत्ती अफीम अधिक करें—(अन्य) समग़अरबी , मुल्तानीमिट्टी,कतीरा फंकी बनाकर सात मासे खशखाश के और अदरक के रसमें मिलाकर पियें—(अन्य)गेरू, कुंदर, गुलनार, समग़ अरबी बराबर पीस कर आमलेके शरबत में मिलाकर खावें—(आश्चर्य दायकऔषधि) थूक में लहू आने औ रुधिर के बमन करने केलिये बबूलकी कोंपल, अनारकी पत्तियां,आमला चार चार मासे, धनियां दोमासे राचि को जलमें भिगोकर सबको पीसकर साफ़ करके थोड़ीमिश्री या शक्कर मिलाकर पियें—(काढ़ा) लहू थूकने को गुणकरे गिलो बांसेकी पत्तियां एक एक तोला औटाकर साफ़ करके दो टंक समग़ अरबी पीसकर मिलाकर पिये—(कल्क)गुलखैरू एक तोले भर राचिको पानी में भिगोकर प्रातःकाल मलकर साफ़ करके पियें —(ज़ुब्बुल्लासकी शरबत) रुधिर के थूकने को जो खफ़कान अर्थात् उन्माद और इसहाल अर्थात् अतीसार के साथहो गुणकरे ज़ुब्बुल्लास चार टंक चन्दन कूर, छिलाङ्गआ आमला गुलनार दोदो टंक पाव भर शक्कर सपेद में कवाम करें और शीतल होने के उपरान्त भुनी समग़ अरबी एक टंक पीसकर अधिक करें—(अन्य) लहू थूकने को गुण करें बांसे की पत्तियां जो सूखी हों आधा तोला जो गीली हों एक तोला—

पीसकर शहदमें मिलाकर खावें—(अन्य) दो टङ्क खुरफेका जल पीना लह्म थूकनेको दूर करता है—(अन्य) लह्म थूकने और रुधिरके बमनको श्रेष्ठ है गोभी पानीमें पीसकर एक टङ्क के अनुमान खावें—(अन्य)खतमी के बीज, छोटी माई कूट छानकर पानीमें मिलाकर पियें—(अन्य)अफीम खाना लह्म थूकनेको गुण करता है जो तरकारियां कि लह्म थूकनेको श्रेष्ठहैं यहहैं तुरई,कद्दू,पालक का साग,खुरफा, लाल साग, छिलेहुये मसूर—(अन्य)कचनाल और उसकी कोंपलका रस लह्म थूकनेको गुण करे॥

मानसी रोगों का यत्न॥

खफ़कान अर्थात् हौलदिल जिसको संस्कृतमें उन्माद रोग बोलते हैं दो प्रकारका है एक यह कि उसका कारण मनमें हो दूसरे यह कि किसी दूसरे अंग के संयुक्त होनेसे होवे जैसे कि कोष्ठ,कलेजा,और भेजा,और आंतों और गर्भाशय आदिसेहो जो उन्माद किसी अंगके संयुक्त होनेसे हो उस अंगका यत्न करें और जो किसी अंग के संयुक्त होनेसे न हो तो मलको निकालें और सादे खफ़कानमें प्रकृतिको सम करना काफ़ीहै-(चन्दनकाखमीरा) जो पैत्तिक उन्माद के लिये श्रेष्ठ है चन्दन का बूर बीस मिस्काल रातको जो गुलाब हो तो उत्तम नहीं तो जलमें भिगोकर प्रातःकाल औटाकर साफ़ करके आधसेर शक्कर में क़वाम करें जो क़वाम पतला हो तो उसको चन्दनकी शरबत बोलते हैं और जो खट्टा करना चाहें तो नीबू का रस मिलावें—गावज़बां की शरबत जो मन की बलकारक और उन्माद को उत्तम है गावज़बां पावभर मिश्री एक सेर यथा बिधि शरबत बनावें—(रेशमकी शरबत) दिलको बलकारक है कच्चा रेशम चालीस टङ्क तीन दिन जलमें भिगाकर औटावें जब तृतीयांश शेष रहे खौलते में साजिज,बालछड़ दो२ मिस्काल,चन्दन बूरा इलायची केदाने

चार २ मिस्काल एक थैली में बांधकर डालें फिर शीघ्रही मलकर साफ़ करके आध सेर क़न्दमें क़वाम करें—(रूई के फूलोंकाशरबत) मनको बल और हर्षदेताहै और उन्माद दाह और बिच्छिप्तता को दूर करता है रूईके फूल गुलाब में जो गुलाब न हो पानी में औटावें जब आधा शेष रहे दूने गुड़में क़वाम करें खुराक़ बीस टङ्क पर्य्यन्त—(रंगतरेका शरबत) पैत्तिक उन्माद को बलकारक है पुस्तक निर्म्मापक ने बनाया रंगतरे का गूदा फांकोंसे निकालकर बीज दूर करके निचोड़कर उसका स्वच्छ रस लेकर बराबर मिश्रीमें क़वाम करें और अन्त में थोड़ा गुलाब मिलावें-(अनन्नासकी शरबत) निर्म्मापक का बनायाङ्ग्रआ अनन्नास का रस एक भाग मिश्री दो भाग यथाविधि क़वाम करें जो थोड़ा गुलाब और सुश्क अधिक करें तो उत्तम और बलकारकहोगा—(ताम्बूलका शरबत) शीतके उन्माद रोगको बलदेताहै औ निसियान और कफ़ और मन्द अग्निको दूर करता है ताम्बूल पक्के पीले रंगके सौ कूटकर पानी में औटाकर साफ़ करके आध सेर शक्कर के साथ क़वाम करें जो उसमें थोड़ा गुलाब मिलावें बलकारक है—(अन्य) जो पैत्तिक हौलदिल को गुणकरे और मनको गुणकारक है ज़हरमोहरा घिसकर एक टङ्क गुलाबके फूल,सूखी धनिया, छिलीङ्ग्रईखुरफा, चन्दन गुलाब में पीसकर यह सम्पूर्ण औषधि दो २ टङ्क, गावज़बां बंसलोचन एक टङ्क, सुश्क आधा टङ्क, दूनी सफेदशक्कर शहद बराबर—(अन्य) शीतकेउन्मादको श्रेष्ठहै नरकचूर, बालछड़, अश्वना, सोंठ, पीपलएक२ टङ्क, साज़िजहिन्दी, बड़ी इलायची के दाने दो, दो टङ्क, लौंग कस्तूरी आधा२ टङ्क शहद तिगुना—(अन्य) शीतके खफ़कान अर्थात् उन्माद को नाश करता है और जीवको रक्षित रखता है और इन्द्रीकोष्ठ और तिल्ली को बल देता है और पसीने की दुर्गन्धि को अच्छा करता है और वायु के पचानेवाला

आंतों को दुरुस्त करता और मुख की दुर्गन्धि को दूर करता है और शिरपीड़ा और उत्पातकारक मल को नष्ट करता और प्रसूति और इस्तस्का में गुण करता है साज़िज हिन्दी पीसकर दश दाम, शक्कर सपेद पाव भर यथा बिधि पाक बनावें चार टङ्क पर्य्यन्त खावें (ज़हर-मोहरा) जो अति सुगम औषधि मन की बलदायक है ज़हरमोहरा घिसाहुआ, अक़ीकपत्थर पशब पत्थर, बसद मूंगा दो २ भाग गुलाबमें घिसकर नारियल, दरयाई जदवार, तबाशीर एक २ भाग गुलाब में घिसकर सम्पूर्ण औषधियों को इकट्ठा करके खरल करके गोलियां बनावें फिर चौड़े पत्थर से चिकना करके उसपर सोने के वरक़ लगावें समय पर चार रत्ती के बराबर गुलाब में घिसकर पियें—(चांदनीके फूलोंकी गुलकन्द) पैत्तिक उन्मादरोग को गुणकरे चांदनीके फूलसौ सपेद, मिश्री सौ टङ्क, गुल-कन्द बनायें और थोड़ा गुलाब मिलाकर चालीस रात चांदनीमें रक्खें और एक तोलाभर खावें—(सेवतीका गुल-कन्द) हिन्दुस्तानके प्राचीन बैद्योंका सेवित है उन्माद रोगको गुण करे और प्रकृतिको नरमकरे हरे सेवती के फूल उसकी पँखुड़ी निकालकर ज़ीरा निकालकर दुगनी मिश्रीमें मिलाकर शीशेमें भरकर चालीस रात चांदनीमें रक्खें और तीन हरे सेवती के फूल उनका जीरा दूर करके चाबना और खाना उन्माद रोग को दूर करे—(गुड़हलका गुलक़न्द) मन और इन्द्री और धारणा बुद्धि को बलदेता है और हर्ष अधिक करता है और बिशेषकरके उन्मादरोग को दूरकरता है गुड़हल के फूल सब्ज़ी निकाल कर दूनी मिश्री में मलकर रक्खें—(हार-सिंघार का गुलक़न्द) जो मन को बल दायक और पैत्ति-क उन्माद के लिये अद्वितीय औषधि है हारसिंघार के फूलों की डंडी दूर करके सपेदी उसकी लेकर दूनी शक्करें में मलकर शीशेमें भरकर चालीस रात चांदनी में रक्ख

और प्रभात को एक तोला उसमें से खाया करें—(अन्य) पैत्तिक उन्माद रोग के लिये रक्तचन्दन आधा तोला, आमला, धनियां, पांच २ मासे आध पाव जल में भिगोकर प्रभात को उसका साफ़ जल लेकर दो दाम सपेद शक्कर मिलाकर खावें-(काढ़ा) शीत के हौलदिल के लिये-गावजबा दो टंक, लौंग ४ औटाकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पियें—(माजून मनको बलदायक) आमले का मुरब्बा, हड़ का मुरब्बा, सब दो गावजबां दो टंक, चन्दन घिसकर एक टंक, गुलाब के फूल दो टंक, रामतुलसी, गावज़बां के फूल एक दाम, चम्बेली का गुलक़न्द चारतोले, किशमिश साढ़े चार मासे, मिश्री तिगुनी—(औषधि) चम्पे के फूल शहद में मिलाकर खावें पित्त के हौल को गुणकरे चार कंधी का रस पानी में निकालकर मिश्री से मीठा करके पियें—(अन्य) पित्त के हौलदिल के लिये अद्वितीय है नाज़बों के बीज एक तोला राचि को जलमें भिगोकर बायुमें रक्खें प्रभात को दो दाम शक्कर मिलाकर चमचे से निगल जावें—(अन्य) इसबगोल एक तोला उसका लुआब निकाल कर थोड़ी शक्कर मिलाकर पियें—(अन्य) पित्त के खफ़कान और मनके नरम करने के लिये गुणदायक है इमली जल में भिगोकर पानी उसका लेकर सपेद शक्कर मिलाकर पियें—(अन्य) पान खाना ठंढे हौलदिल को गुण करताहै और अफीम खाना पैत्तिक उन्माद को श्रेष्ठ है अतरजसादे की जवारिश पैत्तिक उन्माद को श्रेष्ठ है और कोष्ठ की बीमारी और कै और मतली को भी दूर करतीहै—(अन्य) चने की दाल चार टंक राचिको पांच या छः दाम जलमें भिगोकर प्रभात को खूब मलकर शक्करमिलाकर खावें और खट्टी और बादी चीजों से पथ्य करें—(अन्य) रेवंद पानीमें पीस कर दोनों कन्धों के बीच में लगावें—(अन्य) खुलासतुलतिजारब साहब ने अपनीसुजरिब्बातमें लिखाहै कि चुकन्दरको भूभलमेंरक्खें

थोड़ी देर के पीछे निकालकर छिलका दूरकरके गरम२ उसके वरक़ छील कर मिश्री पीसकर सब वरक़ों पर छिड़कें उसमेंसे पानी मीठा निकलेगा उसको पियें इसी प्रकार कई बेर सेवन करें—(खसका अरक़) खसका अरक़ निकाल कर सेवनकरें पैत्तिक उन्माद और बद्धकोष्ठ को दूर करता है पुस्तकनिर्मापक ने कई बेर अरक़ निकाल कर सेवन कियाहै इस अरक़ में जो सपेद शक्कर मिलावें या खमीरा बनावें और खसका इतर उसमें मिला कर सेवन करें तो उन्माद को गुण करे और उसकी गरमी का नाशकारक है—(धनिये का अरक़) मनको बल देताहै और उन्माद रोगको दूर करता है धनियां छिलके दूर करके गावज़बां दोदो तोले, इलायची के दाने, चंबेलीके फूल, गावज़बां के फूल, गुलाबके फूल, चन्दन बूरापांच२ तोले, ऊद एकतोला, कस्तूरी एकमासा, गायका दूध पांचसेर पानीमें आवश्यकताके अनुकूल अरक़ खावें (अठ्ठासीका ख़मीरा) अठ्ठासी लालरंग के सेरभर लेकर अरक़ खींचें फिर गुलाब मिलावें फिर शक्कर मिलाकर क़वाम करें थोड़ा ज़हर मोहरा और बंशलोचन पीसकर मिलाकर ख़मीरा बनावें॥

मूर्च्छा का यत्न॥

मूर्च्छासंज्ञाकेजाते रहनेकोबोलतेहैंमूर्च्छाबहुत प्रकार से होतीहै जैसेमनकीनिर्बलता और मनमें खराबबुखारों और दुर्गंधके पहुंचनेके कारण सो मूर्च्छामें ठंढापानी मुख पर छिड़कें और सुगंध द्रव्य सुंघावें जो मूर्च्छा स्वभाव की गरमी सहो मिट्टी गुलाब या पानीसे भिगोकर सुंघाना श्रेष्ठहै और जो शीतसहो कस्तूरी सुंघावें और लोबानका धुंवालें और पावमलना और बमनकराना मूर्च्छाको गुण करता है और जब मूर्च्छा नहो मूर्च्छा का कारण मालूम करके यत्न करें शेखुलरईस ने लिखा है कि खीरा सुंघाना

विशेष करके मूर्च्छाको दूर करता है—(लाभ) कभी सुपारी खानेसे मूर्च्छा आजाती है—(यत्न)उसको शीघ्रही थोड़ा जल पिलावें और छींके लें और ठंढेपानी से दोनों हाथों की उंगलियोंके शिरधोवें इसीलिये सुपारीकी भूसी खाने से कि वह हृदयको छीलती है निषेध किया है परन्तु जो सुपारी मुंहमें रखकर उसका लुआब निगल जावें और भूसी दूरकरें तो मनको बलकरे॥

कुचों के रोगका यत्न॥

(लेप) कि लटके ढ्ये कुचों को कठोर करे बड़ी कटाई और छोटी कटाई की जड़,अन्दारकीछाल,कन्दौरी की जड़,कच्चीमोलसिरी बराबरमहीन पीसकरलेपकरें-(अन्य) जो छातियों के बढ़नेके पहिले सेवन करें तो छातियों को बढ़ने न दे कुंदरू और कौडी जलाकर बराबर पीसकरप्रतिमास में तीनबेर लगाया करें—(अन्य) चमगादर का रुधिर कभी २ लगाया करें—(अन्य)गंजाई किबरसातमें पैदा होती है चालीस लेकर नोन में डालें जब मिलजावे मुल्तानी मिट्टी मिलाकर लगावें कुचोंको कठोर करताहै (अन्य) बरगद का रेशा अर्थात् जटा जो पृथ्वी पर न लटकीहो उसकी कोमल पोली और लाल नोकें लेकर सुखाकर जलमें पीसकर लगावें—(अन्य) लजालू, असगंध की जड़ प्रतिदिन पीसकर लगावें—(अन्य) दूधका जो खुश्की और गरमी के कारण जमगया हो बहाताहै मूंग साठीके चांवल दोनों को पीसकर कुछ गरमजलमें लगावें (अन्य) कुचों के शोथ को गुण करे—मको, गुलखैरू, गोखरू, तिरबसी, अफीम, गेरू एक २ मासा पीसकर कुछ गरम करके लेप करें—(अनार की छाल का तेल) मकना कुचों को कठोर और योनि को संकीर्ण करताहै अनार की छाल पक्का सेरभर, छोटा माजूफल अधकुचला आधपाव चौगने मीठे जल में औटावें जब एकसेर शेष रहे उ-

स के बराबर तिल्ली का तेल मिलाकर फिर औटावें जब पानी जलकर तेलमात्र रहे सेवन करें—(अन्य) जौ अधकुचले करके अनार की छाल, भाउ महीन पीसकर दूध में मिलाकर रात दिन में दोबेर बराबर लगावें—(अन्य) अरंड के पत्ते सिरके में पीसकर लेपकरें—(अन्य) शीशम की पत्तियां पानीमें औटाकर सूजन उससे धोवें और पत्ती उसकी गरम करके बांधें—(चूर्ण) कि दूध अधिक करे सौंफ, सतावर बराबर कूट छान कर चूर्ण बनावें और चने भिगोकर उस के पानी के साथ यह चूर्ण फांके—कुछ दिन में दूध अधिक होगा और बाजों ने लिखाहै कि चने को दूधमें भिगोवें—(लेप) कि दूध की अधिकता को कम करे काहू के बीज, मसूर, जीरा सिरकेमें पीसकर लेप करें॥

मेदे अर्थात् पाकाशय का यत्न।

कोष्ठ की पीड़ा जो बोझ और भोजनके उत्पात से कि भोजन पचा न हो—(यत्न) गरम पानीमें नोन मिलाकर वमन करें और जब तक भूख मालूम नहो भोजन न करें और भूख के समय नरम अहार जो शीघ्र पचे खावें और जो पीड़ा वायुसे हो और बदलती रहे गेहूं की भूसी नोन या बाजरा या कंगनी कपड़ेमें बांधकर या गरम रेत से सेंकें और सादी अजवाइन के अरक़ का पीनागुण करताहै—पीपल बातको दूरकरे और भोजन को पचावे और कोष्ठ और वीर्य को बलदे और तरी को कोष्ठ से सुखावें—पांच टंक पीपल को पीसकर पावभर शक्कर में कवाम करें—(सोंठ की जवारिश) जो खराब बात और शीत के कोष्ठ की पीड़ा को दूर करे और भोजनको पचानेवाली और निसियानको दूर करनेवाली है और कोष्ठ और ठंढे कलेजे को गरम करती है सोंठ पीसकर पांच मिस्काल पावभर शक्कर में कवाम करें और बाजे सोंठको नींबूके रसमेंतीनदिन भिगोकर सुखा-

कर पीसकर शक्कर में क़वाम करतेहैं और बाक़े बीस टंक अदरक पीसकर पावभर शक्कर में क़वाम करते हैं—(मीठे और खट्टेजद का पाक) जो कोष्ठको बलदेता और अग्नि को तीक्ष्ण करता है लोबान पीसकर दोटंक सपेद शक्कर पाव भरमें क़वाम करके जवारिश बनावें जो खट्टा करना चाहें तो नींबूका रस आवश्यकता के अनुकूल अधिक करें (कुन्दर का पाक)कफके अतीसार को गुणकारक है और भोजनको पचाता औरशीतके कोष्ठको बलदेताहै—कुन्दर बड़ी इलायची दो२टंक, सोंठ, कुलीजन, अजवायन, बाल-छड़, कलौंजी, छोटी इलायची के दाने, कालीमिरच यह सब एक२ टंक शक्कर तिगुनी (सादे आमले का पाक) जो कोष्ठको बलदेता है आंवलोंका रस पच्चीस टंक जो गुलाब होतो उत्तम नहींतो जलमें निकाल कर आधसेर शक्करमें क़वामकरें और कवाम के अंतमें पांचटंक मस्तगी मिलावें (सादी अजवायनका पाक) भोजनका पाचक औरभूखको अधिककरेऔर बातकोदूरकरे (औषधि) अजवाययनींबू के रसमें दोबेर भिगोकर सुखाकर दशटंक पीसकर आध-पाव शक्करमें क़वामकरें—(सादी कुलीजनका पाक)बातको दूरकरे और भोजनको पचावे और कोष्ठ और कलेजे को गुणकरे और मेदे की तरी और खट्टी डकार और शीत के पार्श्वशूल को दूरकरे पावभर शक्कर को क़वाम में ला-कर पांचटंक कुलीजन पीसकर यथाविधिमिलावें—(कलौं-जीकापाक) कफको दूरकरे और बात और कोष्ठके अफ-रा को पचावे और जानवरों के विष और दीवाने कुत्तेके काटे को गुणकरे और कोष्ठके कीड़ोंको मारे और स्त्रीके ऋतुके रुधिर और मूचको खोले और गुरदे और मूचको गुणदायक और गर्भाशय और पार्श्वशूल को दूरकरे और कफके और सौदा अर्थात् दग्धित दोषके पुराने ज्वर को गुणकरे पांचटंक कलौंजी एकरात सिरके में भिगोकर सु-खाकर भूनकर आधसेर शक्करमें क़वाम करें—(अन्य) कोष्ठ

पीड़ा को नाशकरे काला जीरा बनाया हुआ पच्चीसटंका बालछड़ दशटंक,कालीमिरच दशटंक,बूरैअरमनी अढ़ाई टंक, शहद सम्पूर्ण औषधियों का तिगुना—(अन्य) कोष्ठ की वात और स्वभाव की सरदी को गुणकरे और कोष्ठ को गुणकरे और कोष्ठको बलदे और भोजन को शीघ्र पचावे काला जीरा बनाहुआ तीसमिसकाल, सोंठदशमि-सकाल, अजवायन,पीपल,बालछड़,तज,बूरैअरमनी दोदो मिसकाल, शहदतिगुना—(मस्तगी का पाक) कि कोष्ठकी शीतको गुणदायक और बलदायक और पाचकहै यह से-लान लुआबसे लिखागया—(वज का पाक) यह औषधि कुचोंके रोगमेंबर्णन होचुकी—(पुदीने की माजून) कोष्ठकी पीड़ाको गुणकरे पोदीने की पत्तियां छः टंक,सोंठ,अजवा-इन, कालाजीरा तीन२टंक, बड़ीइलायची के दाने, सौंफ कालीमिरचदो२ टंक,मिश्री तिगुनी—(अनीसूनका पाक) जो कोष्ठका बलदायक और पाचकहै और भूख और कफ के अतीसार को गुणकारक और कोष्ठकी पीड़ा और अफरा और गुदाकी पवनको दूरकरे अनीसून सिरकेमें भिगोकर छायामें सुखावें फिरथोड़ी भूनकर दशटंक कूट छानकर आधसेर शहदमें कवाम करें—(लोहे के मैल का पाक)जोभूखलावे और कोष्ठको गुणदायक और वीर्यको अधिक करे और रंगको अच्छाकरे और बवासीरको गु-णदायकहै काबली हड़ की छाल,बहेड़े की छाल,आमला सुलहठी,सोंठ,इलायची के दाने, बालछड, गुलाब के फूल यहसब बराबर ले और शोवा लोहेका मैल हड़ोंको कूट छानकर घीमें भिगोकर औषधियों के बराबर मिश्री या शहद में मिलावें और एकटंक से दोमिस्काल पर्य्यंत खावें (बड़ा इतरीफल) जो कोष्ठ को बलदे और अफरा को दूरकरे और रंगको अच्छाकरे पीलेहड़ों की छाल,काले हड़ोंकी छाल, काबली हड़ोंकीछाल,आमला कूट छान-करतेल में भूनकरपीपल, काली मिरच छः छः टंक, सैत-

रज, इन्दरजौ मीठे, छिलेहुये तिल, सपेद खश्खाश, मिश्री दोदोटंक तिगुने शहद में मिलावें—(औषधि) भोजन को पचावे और भूख लावे गुलाब के फूल छः टंक, नागरमोथा पांचटंक, बड़ी इलायची के दाने चारटंक, बालछड़, असारों, कुलीजन, साजिज तीन २ टंक, तज, जरनब, मस्तगी तुरंज की छाल, नरकचूर दोदो टंक आमले का रस आधसेर, मिश्री एकसेर, यथाविधि माजून बनावें—(नोनकी गोली) जो कोष्ठकी बात को गुणकरे और कोष्ठको पुष्ट कारक है और श्वित्रकी को दूर करती है और पाचक है लाहौरी नोन, कालानोन तीन २ मिस्काल, पोदीना नरकचूर पांच २ मिस्काल, पीलेहड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, पीपल, कालीमिरच, सोंठ, बच, काला जीरा, सपेदजीरा, लालनोन नौ २ मिसकाल धनिया आठ टंक, सौंफ, अजवायन बीस २ टंक कूट छान कर नींबू के रसमें खमीराकरके सुखावें फिर सूखे या हरे आमले के पानीमें मिलाकर सुखाकर कूट छानकर नींबू के रसमें बेरके बराबर गोलियां बनावें—(अन्य)स्वभाव को नरम करती है और पाचक अग्निको बढ़ाती है पीलेहड़ की छाल सोंठ, पीपल, अनारदाना, सना, तुरबुद खोखले मुनक्केदाने निकालकर एक२भाग कंद छःभाग गोलियां बनावें—(सना की गोली) वद्धकोष्ट अफरा और अजीर्ण को दूर करती है सना, पीलेहड़की छाल, कालीमिरच एक२टंक, बड़े मुनक्के बारह टंक, कूट छानकरपानीमें गोलियां बनावें और नौ मासे प्रभातके समय खावें कदाचित् अधिक आवश्यक हो तो दोनोंसमय खावें—(सुहागेकी गोलियां)भूखलाती और कोष्ठकी पीड़ाको दूर करती है सुहागा दोटंक, अजवायन साढ़े दशटंक, कालीमिरच बारह टंक, एलवा सोलह टंक, कूट छानकर घीकुवार के रसमें खरल करके चने की बराबर गोलियां बनावें बातके लिये तीन गोलियां और बद्ध कोष्ठके दूर करने के लिये दोगोली और पेट बढ़जाने

के लिये आजमाई हुई है—(गोली) पाचक—काली जीरी राई, गुड़ बराबर लेकर बेरकी बराबर गोलियां बनाकर एकगोली पानीसे निगलजावें—(अन्य)पीलेहड़ोंकी छाल सना चार२टंक,सोंठ एकटंक,सुनके अढ़ाई टंक,शक्कर पांच टंक कूट छानकर जाबफल के बराबर गोलियां बनावें खुराक एकगोली सोने के समय —(अन्य)गोली जो पाचक है और बात और तिल्ली और कोष्ठकी अफरा को दूर करती है और भूख लाती है सोंठ दोभाग,भुना सुहागा पीलेहड़ की छाल, सेंधानोन, हींग एक२ भाग,सहँजने की जड़का रस,या उसके पत्तोंके रसमें जंगली बेरकी बराबर गोलियां बनाकर प्रतिदिन एकगोली खावें—(अन्य) भूख लावे और वैद्यको प्रशंसित करे पीले हड़की छाल,बहेड़ा आमला, काला नोन, सना, बराबर कूट छानकर नींबूके पानीमें गोलियां बनावें एक तोला वा न्यूनाधिक्य स्वभाव के अनुकूल गरम जलके साथ सोनेके समय खावें—(गोली) बद्ध कोष्ठको दूरकरे और उदर और पहलूकी पीड़ाको श्रेष्ठहै एलुवा सातर दो २ टंक, कालीमिरच, इंकूत के फल की गिरी एक२ दाम कूट छानकर नींबूके रसमें चने की बराबर गोलियां बनायें खुराक चार गोलियां गरम पानी से—गोलियां कि भूख लाती हैं पीलेहड़ की छाल सौंफ, पोदीना, लाहौरीनोन, खट्टी चूक एक २ तोला सोंठ कालीमिरच, पीपल, चीत, अजवायन साढ़ेतीन २ मासे, दो नींबू के जल में पीस कर गोलियां बनावें — (पाचक गोलियां) काला नोन, खट्टी चूक दो २ तोले अजवायन दो मासे, लौंग, कालीमिरच एक २ मासा यह सम्पूर्ण औषधि कूट छानकर चूक में मिलाकर गोलियां बनावें भोजनके उपरांत एकमासाखावें अमलबेद हिन्दी दवाहै भोजनको पचावे और भूखलावे और कोलंज † और इस्तस्का अर्थात् जलंधर को श्रेष्ठ है और बात

† वह पीड़ा जो कूलों और अंतडी में उत्पन्न हो

को पचाताहै पीपल, हड़ और नमकों आदिको नींबू के रस या तुरंज की खटाई में खमीर करके एक खट्टे को अन्दर से खाली करें उसमें यह दवा भरदें और खट्टा दो प्रकार का है एक तेज़ खट्टा कि जो उसमें सुई रक्खें गल जावे और दूसरे में तेज़ी और खटाई कम होतीहै-(अन्य) जो बद्ध कोष्ठ कफ और वात और कोष्ठ की सरदी को गुण करे विशेष करके दूध पीने वाले लड़कों के लिये श्रेष्ठ है कालीहड़ चार दाम, नरकचूर, सौंफ दो२ दाम, भुना सुहागा एक दाम कूट छान कर चने के समान गोलियां बनावें खुराक एक गोली—(नोन की गोली) बात को खो देतीहै और भोजन को पचादेतीहै और हैज़ को गुण करतीहै लाहौरी नोन, इन्दरानी नोन, साम्हर नोन, कालाबोन, नमक नफ्तो, पीले हड़की छाल, बहेड़ेकी छाल आमला, सौंफ़, अजवायन एक २ टंक, काला जीरा, सपेद जीरा, शैतरज, सोंठ, कालीमिरच, पीपल, सुहागा नौसादर, सना छः छः मासे भुनी हींग एक मासा सम्पूर्ण औषधियों को बराबर पीसकर चौबीस नींबू के रसमें खरल करके जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली प्रति दिन खाया करें—(अन्य) कोष्ठ की बात को दूर करतीहै पीले हड़ की छाल, सोंठ, कालानोन, बायबिडंग, शैतरज, हींग बराबर कूट छान कर तिगुने पुराने गुड़में मिलाकर छः मासे के अनुमान गोलियां बना कर गुनगुने पानी से सुबह के वक्त खावें—(चूर्ण) कालानोन भूख लाताहै और पाचक है, अजवायन, शैतरज सात २ टंक पीपल दो टंक, पीले हड़ की छाल दो टंक, सोंठ बारह टंक, काला नोन पचास टंक कूट छान कर नींबू के रस में तीन बेर पीस कर सुखावें दो टंक के अनुमान खावें (हरीरा) कोष्ठ की पीड़ा को गुण करे कुसुमके बीजों की गिरी एक तोला पानी में रस निकाल कर दो तोले शक्कर मिला कर हरीरा पकाकर गुनगुना पिये

(अन्य) भूख के लिये अति उत्तम है लाल मिरच नींबू के रस में चालीस दिन खरल करके दो रत्ती की बराबर पानमें खावें—(अन्य) सोंठ दो दाम, सौंफ़ एक दाम, हींग तीन दाम कूट छान कर नींबू के रस में टिकियां बना कर तवा कोलों की आग से गरम करके टिकिया को उस पर रक्खें जब लाल होजावे पीस कर आवश्यकता के अनुकूल खावें—(अन्य) कोष्ठ की पीड़ा को श्रेष्ठ है सिरस की पत्तियां, काली मिरच बारह पीस कर पियें—(अन्य) अजवायन, काला नोन भंगरे के रस में मिला कर खावें (अन्य) भूख के लिये बहुत गुण करे राम पची जो सूरत और स्वाद में जो तरीके के समान होती है एक तोला खरल में महीन पीस कर उसमें पारा मिला कर फिर दो पहर पर्य्यन्त खरल करें जब खूब मिल जावे प्रभात को दो चावल के बराबर पान में रख कर खाया करें और सरदी में चालीस दिन पर्य्यन्त खावें कि गुण उसका प्रकट हो और जो पारा दवा में कच्चाहै हानि भी नहीं करेगा—(अन्य) भूख के लिये श्रेष्ठहै अजवायन, घीकुवारके पानी में पहिले भिगोकर सुखावें फिर नींबू के रस में सातबेर भिगोकर सुखाकर स्वभावके अनुकूलखावें बातघ्न और पाचक है—(चिकुटा) यह संस्कृत शब्द है इसके अर्थ तीन औषधि के हैं—सोंठ, कालीमिरच, पीपल बराबर लेकर कूट छान कर खावें बातघ्न और पाचकहै—(चतुर चातिक) यह संस्कृत शब्द है इस के अर्थ चार औषधि तज, तेजपात, नागकेसर, इलायची बराबर कूट छान कर चूर्ण बनाकर उसकी बराबर शक्कर मिलावें कोष्ठ को गुण करे और बात को नाश करे—(लालहरतालकारस) इस को नागकेसर बोलते हैं भूख लाताहै और वीर्य्य को पुष्ट करताहै और कासस्वास को दूर करता है छः टंक शीशा गला कर एक दाम लालहरताल की उसको चुटकी दें अर्थात् गलने में पिसीहुई हरताल थोड़ी थोड़ी उस पर

डाल कर लोहे के दस्ते से चलावें फिर उतार कर ठण्ढी करें फिर गलाकर एक दाम हरताल की चुटकी दें इसी प्रकार चार बेर करके चार दाम हरताल की चुटकी दें इसके उपरांत दो दाम पारा और एक टंक शोधा तांबा कूटा छना चार पहर पर्य्यन्त तुलसी के पत्तों के रस में खूब पीस कर दो सकोरों में रख कर कपड़मिट्टी करके गजपुट आगदें अब ठंढा होजावे निकाल कर घीकुवार के रसमें चारपहर खरल करके यथाविधि आँचदें फिर भंगरे के जलमें चारपहर खरल करके उसीप्रकार आँचदें खूराक आधीरत्ती पान में-गजपुट आग उसे कहतेहैं कि एकगढ़ा गोल एक गज का गहरा और उसका मुंह एक गज का हो खोद कर उस में कण्डे भर कर दवाका उसके बीच में रखकरआंचदें-(पञ्चकोल)पांचदवाकेअर्थहैं पीपल, बहेड़ा मूलचाट,चीत, सोंठ कूट छान कर फंकी बनावें भूख पैदा करता है और बात और कफ को दूर करता है—(बेद-अंजीरकातेल) उस कोष्ठ की पीड़ा जो बात से हो गुण कारक है अरण्ड के पत्तों का रस निकाल कर बराबरतेल में जलावें जब पानी जल जावे पेटपर मलें—(सोयेकातेल) शीत की पीड़ा को नाश करता है और बातको गुणकरे सोये के पत्तों का रस आधा उसका तिलोंका तेल लेकर उसमें जलावें और बाजों के विचार से चौथाई तिलों का तेल चाहिये—(नक्छिकनीकातेल)भूख पैदा करे नक्छि-कनी सूखी चार सेर पीसकर छान कर दश सेर अद रक के रसमें खरल कर टिकियां बनाकर दशसेर घीमें भूने जब टिकियां जलजावें घीको छान रक्खें और दो मासे उसमें से खाया करें—(चूर्ण)उदर की पीड़ाको श्रेष्ठ है त्रिफला चिकुटा, हींग, लाहोरीनोन, छिलाहुआ पीपलामूल अकलीलुलमलक, शैतरज, चाब बराबर कूट छान कर चूर्ण बनावें खुराक एक टंक से दो टंक पर्य्यन्त—(शुंठ्यादि चूर्ण)कोष्ठ की तरीको नष्टकरताहै औरक्षुधा लाताहै सोंठ

दश टङ्क, सौंफ पांच टंक, मस्तगी तीन टंक, मिश्री बराबर मिलाकर फंकी बनावें—(अन्यसनाकाचूर्ण) उदर पीड़ा और कौलंज को गुण करे और पित्त कफ और सौदर को निकालता है सना पीले हड़ की छाल, कालानोन बराबर कूटछान कर चूर्ण बनावें और दो तोले प्रति दिन खावें गरम पानीके साथ—(अन्य)भूख के लिये कालानोन, काली मिरच, पीपल दो २ दाम, भुना सुहागा एक दाम बारहपहर नींबूके रसमें खरल करें और चार रत्ती से एक मासे पर्य्यन्त भोजन के उपरांत खावें—(चूर्ण)आमला काबड़ीहड़ सात २ टंक, पीपल, शैतरज, लाहोरीनोन बराबर कूटछानकर खूराक एक टंक—(अन्य) काली मिरच, अजवायन, शैतरज, पीपल नौ टंक, हड़ की छाल दश टंककालानोन पचासटंक कूटछानकर तीनबेरनींबू के रस में पीसकरसुखावें एकटंक खावें—(अन्य) बद्धकोष्ट दूरकरे पीली हड़की छाल तीनमासे, लाहोरीनोन दोमासे कूट छानकर चूर्ण बनावें और एक तोले मुनक्के के साथ मिला कर खावें— (अन्य) लौंग, कालानोन, पीपल, काली मिरच, सोंठ, गुलाब के फूल, भुना नौसादर बराबर कूट छान कर खुराक एकटंक—(अनारदाने का चूर्ण) जो भूख लाता है और कोष्ठ को बल देता है और अतीसार को गुण करताहै अनारदाना पावभर, सोंठ, सपेद ज़ीरा एक२ दाम, लाहोरी नोन अढ़ाई दाम सबको कूट छान कर एक तोला वा न्यून अधिक खावें और चाहिये कि औषधियों को बज़त महीन पीसें—(भोजन के पाचन का चूर्ण) जो प्रकृति को नरमकरे पीलेहड़की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, सपेद ज़ीरा, सौंफ़, काला नोन, सना एक २ तोला सोंठ छः मासे चूर्ण बनावें खूराक छः मासे सोने के समय—(चूर्ण) कोष्ठकी पीड़ाको गुणकरे भुना नोन और उससे दूनी सौंफ, पुदीना सातर और थोड़ी सोंठ और हींग और कालीमिरच मिलावें—(पान का अरक)

कोष्ठकी पीड़ाको गुणकारक और पाचकाग्नि को बलदे दोसौ पान, साज़िज, आधपाव, बालछड़, अजवायन, सौंफ छटांक २ भर, छोटीइलायची के दाने आधपाव, पुदीने की पत्तियां, कुलींजन, नरकचूर दो २ दाम, इलायची के दाने और कुलींजन और नरकचूर अधकुचला करके रात्रिको पांच सेर जलमें सब औषधियों के साथ भिगोदें प्रभातको पान मिलाकर अरक खींचें—(टिकिया) कोष्ठकी बल कारक लोबान चार टंक, तुरंज की छाल तीन टंक लौंग, मस्तगी, बालछड़, इलायची, जाविची दोदो टंक कूट छानकर गुलाब में टिकिया बनावें खूराक दो टंक य-द्यपि यह टिकिया गरीबों के योग्य नहीं परन्तु पुस्तक निर्मापक ने एक मित्र के कोष्ठ के बलके लिये बनाई थी लाभकिया इसलिये लिखा—(बालछड़की शरबत) बालछड़ की शरबत शीत कफ और कलेजेके रोगको गुणकरे बाल-छड़ बीसटंक डेढ़ सेर जलमें औटावें जब आधसेर शेष रह जाय सेरभर शहद में क़वाम करें—(लेप) उदर पीड़ा और गर्भाशयकी पीड़ाको श्रेष्ठहै चूहेकी मेंगनियां जो पन्सारी की दुकान से मिलें उत्तम नहीं तो जहांसे मिलें उसके बराबर सौंफ़ पानीमें पीसकर गुन गुना लेप करें—(अन्य) पेट के दर्द को गुण करे निरमली पानी में घिसकर गुन-गुनी नाभिके गिर्द लगावें—(अन्य) कोष्ठकी पीड़ाको गुण करे बालू सिरके में खमीर करके कपड़े में पोटली बांध-कर गुनगुनी सेंक करें—(अन्य) काले तिल, अजवायन, पीले फड़ की छाल, खारी नोन सिरके में मिलाकर टकोर की भांति सेंक करें—(चूर्ण) कोष्ठ की शीत और मन्दाग्नि और कलेजे की निर्ब्बलता को गुण करे—(नाज़बो की शरबत) अढ़ाई सेर शहद, आधसेर मिश्री, बालछड़ दो मिसकाल, लौंग दो मिसकाल, बड़ी इलायची, छोटी इलायची के दाने छः २ मिसकाल, लोबान तीन मिसकाल दारचीनी तीन मिसकाल, सोंठ, कालीमिरच दो २

मिश्रकाल, केसर आधामिसकाल, कस्तूरी चौथाई टंक अम्बर पांचटंक यह सम्पूर्ण औषधि कुचलकर थैलीमें बांध कर नाजबो के शरबत के साथ चांदी या तांबेके कलईदार बरतनमें दो दिन भिगोकर शहद और शक्कर में मिला कर औटाकर क़वाम में लावें और थैली को प्रति समय मलते जावें फिर कस्तूरी और केसर और अंबर उस में मिलावें और बाकी कालीमिरचके बदले पीपल मिलाते हैं (गुलक़न्द शकरी) जो पक्वाशयको बलकारक और पाचक और स्वभावकी नरम करने वालीहै—गुलाब के फूल एक भाग, शक्कर दो भाग खूब मिलाकर चालीस दिन धूपमें रक्खें जो शक्करकेबदले शहद मिलावें तो उसको गुलक़न्द असली (शहदकी) कहतेहैं॥

विशूचिका अर्थात् हैज़े का यत्न॥

जब भोजन कोष्ठ में उपद्रव कारक होजावे उसको क़ै और दस्तोंसे निकालें और जबतक वह उपद्रवकारक मल दूर न होले शीघ्रही बन्द न करें और जिस जगह प्यासकी अधिकता या स्वभाव में गरमी या हरी क़ै हो कभी भी गरम दवायें न दें पानीके बदले गुलाब या सौंफका अरक़ या मको का केवल अरक़दें और इस रोग में उत्तमोत्तम उपाय सोना या भोजन न करना है—(गोली) हैज़ेकी गुण कारक—मदारकी जड़ बराबर के अदरक के जलमें खरल करके कालीमिरच की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली हैज़ेवाले रोगीको दें जो मरताभीहो तो गुणदाय-कहै—(काढ़ा) हैज़े को गुण करे सौंफ़ तीन टंक, पोदीना दो टंक, लौंग चार, गुलक़न्द दोतोले औटाकर पियें (औषधि) चोबहयात घिसकर पियें—(अन्य) नरकचूर का काढ़ा पीना विशूचिकाको गुण करताहै—(अन्य) हैज़े को गुण करे—सपेद छोटी इलायची की छाल एक तोला किन्तु दो तोले तक जो गुलाब हो तो उत्तम नहीं तो

आधसेर जल में औटा कर जब आधा पानी शेष रहे तो पियें—(अन्य) पेठे के फूल छः मासे पीस कर हैजेवाले को पिलावें शीघही अच्छा होजाय—(अन्य) सिरफूके की जड़ दो मासे पानी में घिसकर पियें—(अन्य) जो सुख्य करके विशूचिका को गुणकरे नीला कपड़ा जलाकर मनुष्य के मूच में मिलाकर पियें—कहा है कि जब मनुष्य को हैजे का असर मालूम हो उसी समय अपना मूच पिये हैजे के अवगुणसे बचाताहै और बहुधा मनुष्य यही सेवन करतेहैं (अन्य) हैजेकी गुणकारक पांचमासे खरैटी की जड़ पानी में घिसकर पियें चोबहयात के बदले है—(अन्य) लाल मिरच का बीज एक मोम में गोली बनाकर खावें बहुतही गुण करैहै—(अन्य) तितिली वह वृक्ष है कि गेहूंके खेतों में पैदा हो वह थोड़े जलमें पांच कालीमिरचों के साथ पीस कर पिलावें जो क़ै होजावे फिर पिलावें॥

हिचकी का यत्न॥

जो भोजन के उपरान्त बराबर हिचकियां आवें बमन कराना चाहिये और हाथों पावोंका बांधना और क्रोध भय और हर्षका आकस्मात् पैदा करना और अनजानमें मुंहपर ठंढा पानी छिड़कना और छींक लाना और हिलनाऔर श्रम करना और स्वास रोकना और कोख और कन्धों पर पछने बिना सेंगी लगाना हिचकी को दूर करता है—(अन्य) हिचकी के लिये आजमाया हुआ है कलौंजी तीन मासे पीसकर एक टङ्क मक्खन में मिलाकर खावें—(अन्य) काले उड़द तम्बाकू के बदले हुक्केमें रखकर पियें—(अन्य) चने या अरहर का भूसा तम्बाकू के बदले हुक्के में पियें—(अन्य) खुलासतुलतिजारब में लिखा है कि जो मूंज हाथसे मलकर हुक्केमें पियें गुणकरती है—(अन्य) नारियलके बाल जलाकर उसकी भस्मपानीमें मिलावें जब राख पानीके नीचे बैठजावे साफ़ पानी उसका लेकर पियें (अन्य)मोरके पर जलाकर तीन मासे गुड़ में मिलाकर

खावें-(अन्य) झाड़ूका जीरा औटाकर पियें (अन्य) कुप्प
को पुरानी रस्सी हुक्के में रखकर पियें(अन्य) हिचकी को
ठहरावे बबूलके कांटे सूखेहों या हरे लेकर आधसेर पानी
औटावें जब आधा पाव शेष रहे साफ़ करके घोड़ा शहद
मिलाकर पियें और शहदके बिना भी पीना गुण करता है
(अन्य) टाट जलाकर उसकी चारमासे भस्म पानीमें मिला
कर फिर उसजलको साफ़करके पियें बातकी हिचकी को
गुणकरे जमालगोटा हुक्केमेंपियें-(अन्य) हींग दो तीनमासे
चार बादामों की गिरी मिलाकर पीसकर पियें—(अन्य)
जीरा सिरके में औटाकर पीना प्यास और हिचकी को
दूर करता है—(अन्य)आंब के सूखे पत्ते चिलम में रखकर
पियें—(अन्य)पुदीना शक्कर में मिलाकर चावें—(अन्य)उस
हिचकी को गुणकरे जो ज्वरसे हों—सिकंजबीन पानी में
घोलकर पिलावें मल क़ै का दूर होगा—या पच जावेगा
(अन्य)कमलके बीज पीसकर पीना हिचकी को दूरकरता
है—(अन्य) कासनीके बीज, उड़द का आटा, बूदार चमड़ा
मिलाकर तम्बाकूकी रीतिपरपियें—(कुन्दरकी टिकिया)
कि हिचकी और बातकी पेंचिश और भीतर के अंगों के
अफरा को गुणकरे कुन्दर दोटंक, तज, पोदीना, अजवा-
इन, नागरमोथा, छोटीइलायची के दाने, सौंफ़ एक २
टंक लेकर पानी में टिकियां बनावें (अन्य) लड़कों की
हिचकी को गुणकरे नारियल शक्कर में पीसकर दें और
कहाहै कि जो दूध पिलानेवाले के कपड़ेसे एक टुकड़ा
कपड़े का लेकर पानी में भिगोकर लड़के के माथेपर ल-
गावें तो मुख्यकर हिचकी ठहर जातीहै—(अन्य)रीठे को
लड़के के गलेमें लटकावें॥

प्यास की अधिकता का यत्न॥

बहुधा प्यास गरमीसे होतीहै उसका यत्न खुरफेके बी-
जोंका शीरा या सादी सिकंजबीन पियें या इसबगोल का

खुश्राब नीलोफरकी शरबत में मिलाकर दें और नींबूकी शरबत और उसकारस प्यासको दूरकरता है—(औषधि) जो प्यास और बमनको गुणकरे पीपलकी छाल जलाकर पानीमें डालें जबवह नीचे बैठजावे उसका स्वच्छरस लेकर पियें—(अन्य)लड़कों की प्यास के लिये जोकि गरमियों में होतीहै कमल गट्टा जव कुटकर जिस बरतन में कि लड़का पानी पीताहै।डालदें और वही पानी लड़के को पिलावें और जोसफ़ी कमलगट्टे केबीचमें होती है पीसकरलड़के को पिलावें—(अन्य)प्यासकी अधिकताको गुण करेनींब की पत्तियां पिंडोल मिट्टी में मिलाकर गोलियां बनाकर अग्निमें डालें जबखूब गरम होजावे पानीमें ठंढा करें और वह पानी पिलावें और जो वह प्यास कि जिसको वैद्यक में तोंस कहतेहैं होतो जंगली कांडा जलाकर उसकी राख कांसी के बासन में डालें फिर उसमें जल मिलाकर उस बासन को प्यासेकी नाभि पर रक्खें रखतेही जलन और गरमी और प्यास दूर होजावेगी (अन्य)आंवला और सपेद कत्था मुखमें रखना प्यासको शान्त करताहै॥

पक्काश में दूध और रुधिर केजम जाने का यत्न॥

उसके लक्षण उदरका फूलना और मूर्च्छा और ठण्ढा पसीनाहै और कभी कांपनी आजातीहै और कभी ज्वर होताहै और रोगसे पहिले खाना दूधका—(यत्न) अंजीर की लकड़ीको राखकरके ताज़े पानीमें मिलावें जब राख नीचे बैठजावे उसका साफ़ पानी लेकर फिर उसमें राख मिलावें इसी प्रकार सात बेर करके उसका साफ़ पानी लेकर पिलावें और इस जगह फ़स्द कराना अति उत्तमहै (औषधि) उस रुधिर को जो कोष्ठमें जमगयाहो पिलावें पोदीनेका अरक शक्करमें मिलाकर या पोदीना सुखापीसकर खावें—(अन्य)खुश्कदाना पानीमें पीसकर खिलावें (अन्य) कोष्ठ में रुधिर जमजाने के लिये दोदामराई पानी

मेंपीसकर पियें—(अन्य)चनेभूनकर खारी नोन मिलाकर सेवन करें गुण करे और कबूतर के बच्चे की हड्डी भून कर चाबना उत्तमहै॥

स्वभाव का कोलों और मिट्टीकी इच्छा करनेका यत्न॥

(यत्न) कोष्ठ कोसंफ करें और एकदाम नानख्वाहहर सुबह कोखाना इस रोगके लिये उत्तमहै॥

जीके मतलाने और उबकाई आनेका यत्न॥

जीका मतलाना क़ैका मुक़द्दमाहै और वह इस तरह परहैकि वमन केवास्तेप्रेरणा हो वमन वहहै कि मुंह मेंसे कोष्ठसे कोई बस्तु निकले जब कै बहुतहो और बन्द नहो यत्न और कारण और हर एक कोलक्षण बड़ी पुस्तकों में लिखेहैं सुगम रीति यहहै कियोड़ा गेरू लेकर आग में गरम करके दोतीनबेर पानीमें भिगोकर वह पानी पिलावें—(गोली) किमतली औरक़ै कोगुण करे कपूर,कचरी कूटछान कर मूग कीबराबर गोलियां बनाकर दो तीन गोलियां खावें—(अन्य) जोमतली कोगुण करे—रीठे की गिरी तीन चार घड़ी पानीमें भिगोदें जब नरम होजावे थोड़ा २ चाबे—(अन्य)बमनकी अधिकता कोगुण करे मट्टी का पुराना चिराग आगमें जलावें जब आग उसकी बुझ जावे पानीमें ठंढा करके उस जलसे थोड़ा पियें बमन और उबकाई कोलिये आश्चर्यदायक है—(अन्य) पुराने बमन को गुणकरे—झड़बेरी के बीजोंकी गिरी, तुलसी की पत्तियां,मिश्री एक २ टंक, कालीमिरच आधा टंक कूट छान कर पानी में मिलाकर अंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली खावें—(अन्य) बमनाधिक्य के लिये उत्तम है थोड़ी मक्खी की बिष्टा गुड़ में मिला कर खावें क़ै बन्द होजावे—(अन्य) उस क़ैके लिये गुणकरे जो मद्य पीने से होती है—लालचावल सांठी के पानी में भिगोकरवह पानीलेकरपियें—(अन्य)क़ैकीगुणकारक—शेख उलरईस ने क़ानूनमें लिखाहै कि बादामका रस पानीमें

निकाल कर पियें बमन के लिये बज़ूत बड़ा यत्न है—(अन्य) नींबकी टहनियां कि उसमें पत्तियां भी हों भभलमें रक्खें जब गरम होजावें पीस कर साफ़ करके पियें क़ै और मतली को गुण करे—(अन्य) टाट जलाकर उसकी राख पानी में डालें जब राख पानीमें बैठ जावे वह पानी साफ़ करके पियें—(अन्य) उस क़ै और मतली को गुण करे कि वह पित्त के कारण से हो इमली मुख में रक्खें—(अन्य) बड़े मुनक्के, खट्टा अनार दाना सात २ मासे, कालाज़ीरा एक मासे पीस कर थोड़ा २ दें— (अन्य) क़ै को बन्द करे पीपलकी लकड़ी या उसकी सूखी छाल जलाकर उसकी राख एक तोला भर लेकर मट्टीके बासन में ताज़े पानीमें मिलावें—जब मिलकर थिरा जावे साफ़ पानी लेकर पियें (अन्य) विशेष कर कफ की क़ै को गुण करे दो बताशों को घी में गरम करके उसमें डालें फिर निकाल कर ठंढा करके एक २ बताशा एक घड़ी की देर में खावें—(अन्य) बरगदकीजटा जलाकर उसकीथोड़ीसीभस्मखावें क़ैबन्द होजावे—(इलायचीकी जवारिश) क़ै बन्दकरती है और पाचक, और पक्वाशयकी बल दायकहै—ज़दगरकी इलायची, जो छोटी हो तो उत्तम नहीं तो बड़ी बीस मिसकाल पीस कर पाव भर शक्कर में क़वाम करें जो सामर्थ है तो पानी के बदले गुलाब मिलावें—सादे तुरंज की शरबत, बमनको शांत करे बिशेष करके पैत्तिकी बमन को—तुरंज का पानी पचास मिसकाल एक सेर शक्कर में क़वाम करे (इमलीका शरबत) पैत्तिक बमनको गुण करें और कोष्ठ कोबलदे और गरमपित्तोंकोनाशकरे इमली के बीज निकालकर उसकी आधी शक्करलेकर पानीमें भिगोदें फिर साफ़ पानी उसका लेकर दुगनी शक्करमें क़वाम करें (अनारकी शरबत) क़ै को बन्दकरती है मीठे अनारका रसबराबरकीशक्करमेंक़वाम करेंफालसेकी शरबत पैत्तिक बमन और उबकाई को गुणकरे और पक्वाशय की बल

कारकहै और अनार की शरबत के बदले भी दीजाती है गरम पित्तों और रुधिर के उपद्रवों को गुणकरे और स्वादिष्ठ है भोजन के साथ भी खावें काले रंग के काले फालसे को पानी और गुलाब में मलकर साफ़ करके दूनी मिश्री में क़वाम करें—(औषधि) एक टंक बालछड़ जल में पीसकर सेवन करना कफ की क़ै को गुण करे (अन्य) नागरमोथा क़ै को दूर करता है—(अन्य) मतली और उबकाई और हिचकी को गुणकरे हरा पोदीना आधसेर डेढ़सेर पानी में औटावें जब आधा रहे एकसेर शक्कर में क़वाम करें और एक टंक मस्तगी पीसकर मिलावें—(कालीमिरचकी गोली) जिसको मिरचा और गटका बोलते हैं क़ै और मतली को दूरकरे और पाचक और भूख लाती है कालीमिरच तीन दाम, पीपल छः टंक अनार दाना बारह टंक, जवाखार डेढ़टंक, छूट छानकर गुड़ में गोलियां बनावें दोटंक खावें—

कलेजे के रोगों का यत्न ॥

इस्तस्क़ा—(जलंधर) इसकेआरम्भको सूउलकनियाकहते हैं और उसका कारणयहहै कि व्यर्थठण्ढा मल सम्पूर्ण जाड़ों में आजाता है इसके तीन प्रकारहैं लहमी—जकी तबली लहमी में सम्पूर्ण अंगों पर शोथ होता है उसका कारण कलेजेकी निर्बलताहै और जकीमें पेट बढ़जाताहै और त्वचा भारी होजातीहै और जब मलें पेट मशकभरी रुई की भांति मालूम हो और तबली में पेट बढ़जाता है और नाभि निकल आती है और जब पेट पर हाथ मारें उससे तबले का अर्थात् ढोल का शब्द आता है—लहमी बज़त होताहै और इस्तस्काके बुरे प्रकारोंमेंसेहै उसका यत्न यूनानी पुस्तकों में लिखाहै कि जल न दें और पानीके बदले सौंफ़का अरक,और मको का अरक,पिलावें और जो पानी की बज़त इच्छा हो तो जल को औटा कर

ठंढा करके घोड़ा २ दें और भोजन को शोरवा दें और मुंज्जिज और मुसिलोंकासेवनकरें औररोगीको गरमरेत में गरदनके नीचेतक गाढ़ना गुण करता है और सूर्य्यकी ओर पीठकरके धूपमेंबैठना रोगको शान्तिकरे और जब तन्दूर ठंढा होने लगे रोगीको उसमें इतनी देर बैठावें कि पसीना निकल आवे हम्माम से उत्तम है और इतना परिश्रम करना कि अच्छी तरह पसीना बदन से निकले गुणकरे—रेवन्दकी टिकियातबली इस्तस्का को गुणकरे रेवन्द चारटंक, धुलीलाख, मजीठ, सौंफ, कासनीके बीज बालछड़ दो २ टंक लेकर टिकिया बनावें—खुराक दोटंक सिकंजबीन और मको के अरक के साथ—(रेवन्दकी शरबत)इस्तस्काको गुणकरे—रेवन्द पांचटंक, कासनीके बीज सातटंक, कासनी की जड़ दशटंक, सौंफ,धुलीलाख दो दो टंक, मिश्री पाव भर लेकर शरबत बनावें खूराक दो टंक (औषधि)इस्तस्का के लिये आजमाई हुई है लोहे का मैलपक्केबारहदाम आगमें लालकरके तीनबेर उसको गौ के मूत्र में जो जनी नहो बुझावें और तीन बेर दही और तीन बेर कड़वे तेल में बुझाकर कूट छानकर दशसेर उस गौके मूत्रमें जिसने जुफ्ती न खाई हो मिलाकर लोहेकी कड़ाई में डालकर चूल्हे परचढ़ावें जब सबमूत्र सूख जावे नोन की रीति पर फंकी होगी आधा टंक उससे लेकर खायाकरें—(काढ़ा)लहमी इस्तस्का को जो बिना ज्वरके हो गुण करता है अजवायन' सौंफ औटाकर पिलावें—(अन्य)सूउल कनिया को गुणकरे चने तीन दाम पावभर पानीमें औटावें जब आधारहे साफ करके पियें—(गोली) इस्तस्का को गुणकरे मदार के हरे, पत्ते पावभर, हल्दी एक दाम दोनों को पीसकर उड़द के बराबर गोलियां बनाकर प्रतिदिन चार गोली ताज़े पानीसे सेवनकरें और गोलीरोज़ अधिक करें कि सात गोलीतक होजावे और बाक़ी पुस्तकों में मदार के पत्तोंका सेवन इसभांति

पर लिखाहै कि बयालीस मदार के पत्ते, हल्दी दो मासे बेरकी लकड़ी का कोयलापांचमासे खूब महीन पीसकर घी खूब गरम करके उसमें मिलाकर उड़द की बराबर गोलियां बनावें सपेद दाग के लिये एकगोली सुबह और एक संध्या को खावें और कफ ज्वरके लिये चार गोलियां और हड़ फूटन के लिये एक गोली एक सप्ताह पर्य्यन्त खावें और बिशूचिकाके लिये दो गोली स्वभावके बदलने के दूर करने को और फालिज के लिये एक गोली सुबह को चारदिन तक दें और इस्तस्का के लिये चार गोली से सात गोली पर्य्यन्त सेवन करें—(गुण)जो इस्तका के रोगी को स्नान करने की आवश्यकता हो चाहिये कि खारी नोन पीस कर पानी में मिलाकर कई दिन वह पानी धूपमें रखकर गरम करकेउससे नहावे गुणकरे और खारे पानी का नदी से नहाना गुणकरे—एलवेकी गोली इस्तस्का को गुण करे एलवा चारटंक पीले हड़की छाल अजवाइन,कालीमिरच,बिधारा एक २ टंक कूटछान कर चनेकी बराबर गोलियां बनावे खूराक तीन टंक (औषधि)सिरस की छाल औटाकर पियें अकबर नामे में लिखा है कि एक किले में समय के बीतने से अन्न वहां का पुराना होगया और उस अन्नको किले वालों ने खाया उससे सोथ पैदा हुआ फिर जिस मनुष्य ने सिरस की छालका सेवन किया आराम होगया अन्तको यह बात हुई कि उस वृक्षकी छाल सोने के मोलकी होगई (औषधि)इस्तस्का को गुण करे—हुक्के का पानी जो बहुत गंदा होगया हो पीना गुण करता है—(लेप)गौ का गोबर नोनमें मिलाकर लगाना इस्तस्का को गुणकरता है—(अन्य)गोबर जलाकर उसकी राख साढ़े तीन मिस्कालप्रतिदिन खावें-(अन्य)इन्दरायन की जड़औटाकर पीना मलको दस्तों से दूर करता है—(औषधि) ऊंटका मूत्रपीना गुण करताहै और उसकी रीति यहहै कि सुबह

को चार पांच दाम मूच में पीले हड़कीछाल तीन मासे मिलाकर पियें—और ऊंट का दूधभी बज़त गुण करताहै भोजन और जलपान के बदले इसीपर रहें अपूर्व यत्न है—(अन्य)मूली के पत्तोंका पानी गुण करता है—(अन्य) लाल बकरी का मूच छः तोले, उसमें एक दाम बालछड़ मिलाकर पीना इस्तेस्काको गुण करताहै—(अन्य)सूउल-कानिया-कोगुणकरे हरेकरेलेसे छः टंकपानी निचोड़कर साफ़ करके पियें और जो चाहें थोड़ा शहदमें मिलावेंदो तीन दस्त लाकर मलको दूर करता है—(अन्य) ककड़ोंधे कारस एक तोला प्रातः काल पियें और प्रतिदिन अधिक करके दश तोले तक पहुंचावें—(औषधि) (ज़ाफरान का-पाक) सूउलकानियां कोगुणकरताहै औरइस्तस्का और सख्ती और अंगों कीपीड़ा कोजैसे कि कलेजा औरतिल्ली को गुणकरे— केशर, तज,कठ,असारों, बालछड़, करफ्श केबीज,अनीसून, गुलाब केफूल, कासनीकेबीज दोदोभाग मुरमक्की, रेवंद एक २ भाग, शहद तिगुना खुराक एकटंक से एक मिसकाल पर्य्यन्त सौंफ के अरकके साथ—(गोली) बैद्यों की सेवन कीहुई इस्तस्का को गुणकरे धुली गंधक पारा, हड़,बहेड़ा, आमला,सज्जी, जवाखार, कालानोन लाहोरीनोन, सोंठ, कालीमिरच, भुना सुहागा बराबर ले जमालगोटा दो भाग यह सम्पूर्ण औषधि कूट छान कर इक्कीस बेर नींबूके रसमें पीसकर सुखाकर कालीमि-रच की बराबर गोलियां बनावें खुराक एक गोली ऊंट के दूधमें—(चूर्ण)लक्ष्मी और तबली की इस्तस्का को लिये गुणदायक सोंठ, नागरमोथा, शैतरज, सपेदजीरा, कटाई हल्दी, गजपीपल, पीपला मूल बराबर कूट छानकर चूर्ण बनावें खुराक तीन टंक गरम पानी केसाथ—(चूर्ण) इस्तस्का और सउलकानियां को गुणकरे करफ्श के बीज, वायबि-डंग, शैतरज, कालीमिरच, पीपल, पीपलामूल, सौंफ कालानोन एक२टंक,पांच हड़कीछाल,सोंठ दशटंक, कूट

छानकर खुराक दोटंक सौंफके अरकके साथ—(अन्य) तबली इस्तस्का को गुणकरे— करफ्श के बीज, राजि याना, अनीसून, असारों, कड़वी कुठ, रेबन्दचीनी, दोदो टंक, नागरमोथा, बालछड़ डेढ २ टंक, कालाजीरा तीन टंक, कूट छान कर खुराक दो टंक—(अन्य) यह नुस्ख़ा मुजर्रिबात अकबरी से प्रति कियागया मंडवी काआटा कचनालके पानोमें खमीर करके रोटी पकाकर नोन के साथ खावें औरपानीके बदले कचनालकी पत्तियां औटाकर पियें—या उसका अरक निकाल कर सेवनकरें और सिवा कचनाल केपत्तों केकाढ़े केऔर हाथ मुह धोने और नहानेमें दूसरा जल सेवन न करे जो ईश्वर चाहे तो एक सप्ताह में उसका गुण प्रकट होगा—(चूर्णकंघीका) पहिले दिन एक मासे भरखावें दूसरे दिन दोमासे तीसरे दिन तीनमासे फिर प्रतिदिन तीन मासे खाया करें—भोजन मूंग की खिचड़ी—(औषधि) इस्तका की गुणदायक सपेद जौरा अधकुचला तीन भाग कंघी अध कुचली नौ भाग, उसमें से एक तोलाभर लेकर राचि को एक प्याले भर जलमें भिगोदें प्रभात कोऔटावें जब आधापानी शेष रहे साफकरके गुनगुना पियें—(अन्य) पेट बढ़जानेको गुण करे दोदाम शहद, चारदाम पानी में मिलाकर पियें—और थोड़ेदिन उसी भांति पियें और यह रोग बहुधा लड़कों को होजाता है—(गुण) इस्तस्का वाले को गेहूं की रोटी से जौकी रोटी खाना उत्तम है और जो गेहूंकी रोटी खाना चाहेजौके आटेमें गेहूंकाआटा मिलाकर रोटी पकाकर खावें—(गोली) उस स्त्रीके लिये जिसका जननेके पीछे पेट बढ़गया हो मिरच, पीपल पीपलामूल, चाब, शैतरज, अशना, नागरमोथा, बायबिडंग देवदारु, चिफला, किस्तमुरमकी, सौंफ, गजपीपल, इन्द्रजौ एक २ टंक, तुरबुद तीन टंक कूटछान कर पुराना गुड़ औषधियों की बराबर मिलाकर आधे टंक की बराबर गोलियां

बनाकर प्रभात को एक गोली दो सप्ताह पर्य्यन्त खावें—(लेप)इन्द्रायन को पानी में पीसकर लगावें पेट का बढ़जाना जो सन्तानके उत्पन्न होनेके उपरान्तहोता है दूर हो—(लककीमाजून)जो इस्तस्का और कोष्ठ की सरदी और कलेजे को गुण दायक है धुलीछुई लाखचार भाग,बालछड़,रेवंद तीन २ भाग,आसारों,करफ्शके बीज दो २ भाग,कड़वीकुट,कड़वेबादामकी गिरी,मिरच,सोंठ जीरा,साजिज,मस्तगी,एक२ भाग,शहदतीन भाग—(औषधि)जो इस्तस्काकोगुण करेबारह टीड़ी उनकेहाथपांव टूर कर के एकदाम हब्बुल्लास के साथ पीस कर खावें (अन्य)नील अर्थात् बस्मा, अमलतास कूट छान कर खूराक लड़ कों के लिये एककिरात से पांचरात पर्य्यन्त और बड़े के लिये तीन टंक पर्य्यन्त—(लककाटिकिया) इस्तस्का के लिये गुण दायकहै लाख चारभाग, रेवंद,कासनी के बीज,खरबूजेके बीज,खीरे ककड़ी के बीज तीन २ भाग,मजीठ,सौंफ,मको,अजमोद,बालछड़,तज दो २ भाग अजवाइन, कत्था एक २ भाग लेकर टिकिया बनावें खुराक एक टंकसे दो टंक पर्य्यन्त शरबत बजूरी के साथ (लेप)बकरीकी मेंगनियां,गौका गोबर गोखरू सिरके में मिला कर लेप करें—(अन्य) नोन, बालछड़,सिरके में मिलाकर लगावें—

यरकां अर्थात् कमल वायु का यत्न ॥

हिन्दीमें यरकां को कंवलवायु वा कामला बोलते हैं और वहसौदा या पित्तके दोषोंके बिनादुर्गन्ध जारी होनेसे त्वचाकी ओर होता है जोयह रोगपित्तसेहो उसको यरकांअसफर बोलतेहैं औरजो सौदा अर्थात् किसी दोष केदग्ध होने से हो उसको यरकां असूद बोलते हैं और जिसमेंदुर्गन्धिहो उसमें ज्वरहो सुगमयत्न यहहै कि इमलीका पानी,और कासनीका रस,सादी सिकंजबीनसेवन

करें सिरके की सिकंजबीन दो भाग मिश्री तीन भाग कवाम में लावें—(अन्य) कामला को गुण करे—मलयागिरि चन्दन गुलाब होतो उत्तम नहीं तो पानी में पांच मासे आंबा हल्दी के साथ पीस कर सात मासे शहद में खावें भोजन एक सप्ताह पर्य्यंत दाल चावल—(नाक में टपकाने की औषधि) कि कामला को गुण करे—बन्दाल रात को पानी में भिगो कर प्रभात को उसका साफ़ पानी लेकर दो तीन बूंदे नाकमें टपकावें तिबफ़रीदी में लिखाहै कि बकरीकी मेंगनियां बाजी औषधियोंकेसाथखानाकामला का नाशक है—(अन्य) कामला को दूर करे—लौंगसब्ज तीन पाव रात को पानी में भिगोकर रक्खें प्रभात को उसका स्वच्छ जल लेकर पियें—भोजन दाल भात—(अन्य) कमल बायु को गुण करे—बबूल की फली, सखाङ्गली, आमला दो २ टंक, कुचल कर एक सेर शक्कर में औटावें जब चतुर्थांश शेष रहे थोड़ी शक्कर मिलाकर साफ़ करके पियें (अन्य) कमलवायु को गुण करे कड़वी तोंबड़ी पानी में पीसकर नाकमें टपकावें—(औषधि) कंघी सातमासे पानी में पीस कर शहद में मिलाकर खावें भोजन दाल चावल (अन्य)विनौल दो दाम रात्रिको जलमें भिगोकर प्रभात को पीसकर उसका साफ़ पानी लेकर लाहौरीनोन मिलाकर पियें—और खटाई और बादीसे पथ्यकरें—(अन्य) रीठा,गावजबां दो दाम,पावभर पानीमें भिगोकर प्रभात को उसका साफ़ पानी पियें जो ईश्वर चाहेएक सप्ताह में आराम हो—(अन्य)दो तीन कसौंधीकी पत्तियां दो तीन मिरच के साथ पियें—(शरबत) निर्मोप का बनाया हुआ कलेजे की गरमी और कामला को दूर करे—चंदन बूरा बड़े,मुनक्केदो तोले, जिटिश्क, कासनीके बीज, खीरे ककड़ी के बीज एक२ तोला, लाल नोन, इलायची के दाने दोदो टंक, मिश्री पावभर शरबत बनावें खुराक एकतोला उचित औषधियों के रसों के साथ—(हिन्दीदवा)कामल को गु-

गुणकरे आशमाई हुईहै चूनाजवानके लिये तीनमासे तक पक्के केलेकी फली के टुकड़े में रखकर खिलावें ऊपर से बाकी फली खिलावें और जो लड़का हो एकमासा चूना चौथाई केलेकी फली काफीहै—(चूर्ण)बबूल के फूल मिश्री बराबर पीसकर प्रभात को एक तोला भर खावें(चूर्ण) उस पीलाई के लिये कि कँवलबायु के दूर होने के उपरान्त रहतीहै सातदाने कलौंजीके स्त्री के दूधमें पीसकर नाक में टपकावें—(अन्य)नींबू का पानी आंख में टपकावें (अन्य) मूली का अचार कि सिरके में बनाया हुआहो खाना गुण करता है—(अन्य)कुहरबा लटकाना और पीले कपड़े पहिनना कामलारोग को मुख्य करके गुण करता है—(अन्य)कामला के लिये गुण दायकहै एक सप्ताह पर्यंत सेवनकरें मेंहदी की पत्तियां दोदाम कुचल कर राचिको जलमें भिगोदें प्रभात को साफ़ जल उसका पियें—(अन्य) मतबूख का काढ़ा कवँल बायुको गुणकरे॥

तिल्लीअर्थात्॥

तहालकीसख्तीकायत्न॥

तिल्लीकी सख्तीका कारण बहुधा गहरे रुधिर सौदावीका है और तपों में रक्षाबिना जल पीनेसे होती है यह रोग कठिनता से अच्छा होता है—(यत्न) असली मरगकी फस्द का खोलना गुणकरे—(गुण)जो तहाल के रोगीके दाहने हाथकी रग असलीम पर कपड़ेकी बत्ती जलाकर दागदें और एक समय पर्य्यंत उसको बहनेदें बड़ा गुण देगा—(उपाय)तिल्ली की सख्ती दूर करने के लिये चूने की कली थोड़े रीठेकी गिरी के साथ कूट कर केलेकीपक्की फलीके साथरखकर दाहने पौंछचे के अंदर कीतरफ जोड़पर बाच की उंगली के सामनेमोटे कपड़े से एक पहर तक बंधारक्खें कि चूने की तेज़ी से वहां फफोल पड़जावे फिर खोल डालें गुण देगा—(अफतैमूं की

सिकंजवीन) तिल्ली कोकि गरमीके तपसेहो गुण करतीहै अफ़तीमू चार तोला, अंजीर सात, कनेरकी जड़की छाल, कासनीकी जड़ दोदो तोले, संभालूके बीज, खीरे ककड़ी के बीज, परसियावशान, कासनी के बीज, माई,कशूश, के बीज, मुलहठी, गुलाबकेफूल, असारों दो२ तोले, गुलकन्द तिगुनी मिलाकर यथा बिधिसिकंजबीन बनावें-(गोली) कि तिल्लीकी सख्ती कोदूरकरै पीलीहड़की छाल, सोंठ, शेतरज, भुनासुहागा, सज्जीसपेद, कलमीशोरा, बायबिडंग, सपेदजीरा, कालाजीरा, सेंधानोन बराबर ले और दुगनागुड मिलाकर गोलियां बनाकर दो मासे से चार मासे पर्य्यन्त गल पानी के साथ खावें—(गोली) एलवा, हीग, सुहागा, नौसादर, सपेदसज्जी बराबरलेकर घीकुआर के लुआबमें जंगली बेर की बराबर गोलियां बनावें एक गोली रोज खाया करें—(गोली)कालीमिरच, पीपल, भुनीफिटकरी, नौसादर, भुनासुहागा, अजवाइन, कटाई, खारीनोन, लाहौरीनोन, आंबाहल्दी, जवाखार बराबर कूट छानकर जंगलीबेर की बराबर गोलियां बनाकर सुबह और शाम एकगोली खावें—(तुरबुदकी गोली)पीलेहड़ की छाल, एलवा, सुहागा, काली मिरच, बराबर लेकर घीकुआरके रसमें चार पहर खरलकरके गोलियां बनावें खुराक एकटंक—(सम्भालू की टिकिया)उस तिल्ली के लिये जो बज्रतही गरमी से हो गुण करे—कासनी के बीज, कनेर के जड़ की छाल , खीरे ककड़ी के बीजों की गिरी, कशूरू के बीज, गुलाब के फूल, माई दो दो टंक असारों आधा टंक, मको के अरक में टिकिया बनावें खुराक दो मिस्काल—(गोली)तिल्ली के वास्ते आजमाई हुई है कलमीशोरा, भुनासुहागा, भुनीफिटकरी, सोंचर नमक, सेंधानोन, पीलेहड़ की छाल, आंबाहल्दी, सादी अजवायन बराबर कूट छान कर तीन बेर नींबू के रस में तीन बेर अदरक के रस में खरल करके जंगली बेर की

बराबर गोलियां बनावें सुबह और शाम एकगोली खाया करें—(चमगादर की गोली) तिल्ली के लिये शेखउलर-ईसके मुजर्रिब अर्थात् आजमाईशुदे औषधियोंकी पुस्तक में है एक मोटा चमगादर काटके साफ़ करें फिर मट्टी के बरतन में रख कर उस पर तेज़ सिरका भी डाल कर कपड़ौटी करके तंदूर में रक्खें जब जल जावे उस की राख सिरके में मिलाकर गोलियां बनाकर हर रोज़दो टङ्कखाया करें बज़ुत गुण करे—(एलवेकी गोली) लौंग, हिन्दी नमक, रेवंद खताई, कलमी शोरा कूटछान कर एक मासेके बराबर गोलियां बनावें सुबह और शाम एक गोली मक्खन में मिलाकर निगल जावें—(अन्य)कनेर की जड़, नौसादर, मुरमक्की, बराबर घीकुआरके जल में जंगली बेरकी बराबर गोलियां बनाकर प्रभात और संध्या एकगोली खावें—(अन्य)सोंठ,भुना सुहागा, सेंधानोन हींग बराबर सहंजने के रसमें जंगली बेर की बराबरगोलियां बनाकर संध्या और सुबह एक गोली खाया करें (अन्य)कौलंज और कोष्ट और तिल्ली की पीड़ा को दूर करती है और अफरा और बद्ध कोष्ठ को गुणकरे एलवा चार टंक, पीलेफड़ की छाल, अजवाइन, बिधारा, काली मिरच दश२ टंक कूट छानकर चनेकी बराबर गोलियां बनाकर आवश्यकता पर सेवनकरें—(गुण) तिल्ली वाले को उचित है कि लोहे का बुझाहुआ पानी सादे पानी के बदले पियाकरें—(अन्य)भाऊकी लकड़ी से प्याले बनाकर उसमें पानी पीना मुख्य करके तिल्लीको गुणकरताहै—(अन्य) टीड़ी का अचार खाना तिल्ली को गुणकरे—(अन्य)जो खांसी नहो आंबका अचार खाना तिल्ली को काटताहै चाहिये कि उसकोखायाकरें—(अन्य)तिल्लीको गुणकरे और बात को दूरकरे—हालों एकभाग कलौंजी आधा भाग शहद में मिलाकर प्रतिदिन शिकंजबीन के साथ खायाकरें—(अन्य)तिल्ली को गुणकरे—और क्षुधा

बढ़ावे पीलेहड़ की छाल, अजवाइन बीस२ टंक, लोहेका मैल तीस दाम, गुड़ औषधियों की बराबर घीकुवार के पत्ते छिलेउये आधे दाम, मिश्री औषधियों को पानी में मिलाकर लोटे में रखकर तीन सप्ताह पर्य्यन्त घोड़े की लीदमेंगाड़ें फिर निकालकर साफ़करके दो२ दामसुबह और शामखावें—(अन्य)संभालूकीजड़कबरके जड़की छाल बराबरकेतेज़सिरकेमेंभिगादेंऔररोज़ नया सिरका एक सप्ताह पर्य्यन्त बदलतेरहें फिर छायामेंसुखाकर दोदाम शहद कीसिकंजबीनमेंमिलाकरखावें—(अन्य) बातकोदूर करे—कलौंजी एकभाग, हालोंदोभाग, शहदमेंमिलाकर प्रतिदिन दो टंक एक तोले सिकंजबीन के साथ खावें—(अन्य)—सरसोंका तेल गुनगुना तिल्लीपर मलना उसकी सख्तीको दूर करता है—(अन्य) अजवाइन जितनी खासकें प्रभात और सन्ध्या खायाकरें—(अन्य) भुना सुहागा एक भाग राई तीनभाग दोनों को महीन करके एक मासा सुबह और शाम खाया करें—(अन्य) नीबू का रस एक दाम, प्याज का रस एक दाम, आपस में मिलाकर चौदह दिनतक पियें और सिवाय नरम चीज जैसे कि खिचड़ी और दाल और चावल के और कुछ न खावें—(अन्य) नौसादर आधा दाम मूलीके पानी में मिलाकर पियें और मूली और तिल बराबर पीसकर तिल्ली पर बांधें—(अन्य) चूनेकी कली महीन पीसकरशहदमें मिलाकर तिल्ली पर मलकर अंजीरके पत्ते उसपर बांधें —(लेप) शैतरज सिरके में पीसकर लगावें तिल्लीके शोथको गलाता है—(अन्य) मूलीके बीज पीस कर सिरके या सिकंजबीनमें मिलाकर खाना तिल्लीको दूर करता है—(अन्य) करील की सूखी कोंपल साढ़े तीन मिसकाल कालीमिरच उससे आधी कूट छानकर हररोज़ सुबह को पानी के साथ पियें तिल्लीकी सख्ती को दूर करता है—(अन्य) गेहूंकी भूसी और छिलाऊआ लहसुन जलाकर उसकी

राख सिरके में मिलाकर गुनगुना लगावें—(अन्य) प्याज और कांदा तिल्लीवाले के गले में लटकाना मुख्य करके शीघ्र गुण रखता है—(अन्य) जवारिशबज तिल्लीके लिये गुणकरे नुसखा जिसका निसियान अर्थात् भूल की बीमारीके वर्णन में वर्णन हुआ गुणदायक है—(अन्य) जो तिल्ली वाला अपना या लड़केका मूत्र हर रोज सुबहको तीन चुल्लूभर लेकर पिये तो तिल्ली दूर हो—(अन्य) यदि मनुष्य युवा हो छः मासे सज्जी और जो लड़का हो दो मासे गुड़में मिलाकर जो ज्वर न हो इक्कीस दिन खावें और खटाई और बादीसे पथ्य करे—(फंकी) तिल्ली और बायुशूल और स्वभावके नरम करने को गुण करे अजवाइन आध सेर, हरे घीकुआरके पत्तेबीसचिफला; चिकुटा; पांचों नोन, सज्जी,सपेद, कटाई, तुरबुद,कालाजीरा,बज सौंफ़, अजमोद, बिधारा एक २ टङ्क, घीकुआर के रसमें भिगोकर छायामें सुखाकर कूट छान कर रक्खें खूराक तीन मासे तक ताज़े पानी के साथ—(अन्य) झाऊ की पत्तियां एक टङ्क सुखाकर कूट छानकर एक टङ्क शक्करमें मिलाकर खावें—(अन्य) झाऊकी पत्तियां कूट कर एक अदकिया भर पानी उसका निचोड़कर दशटङ्क सिकंजबीन मिलाकर खावें—(अन्य) ऊंटकादूध और मूत्र तिल्ली को दूर करता है—(अन्य) झाऊके पत्तोंका अरक तिल्ली को गुण करता है—(अन्य) नमदे का टुकड़ा सिरके में भिगोकर तिल्ली पर बांधें—(माजून) तिल्ली के लिये आज़माई हुईहै कबरकी जड़की छाल अफ़तैमू बराबर शहद में मिलाकर माजून बनाकर प्रतिदिन पांच मिसकाल खावें—(अन्य) तिल्लीकी कठोरता को दूर करतीहै कबाबा, पुष्करमूल, जवाखार, पीलीहड़, हींग, लाहौरीनोन सोंचरनोन,बायबिडंग, शैतरज,समन्दरझाग,तुरबुदसपेद अजवाइन बराबर कूट छान कर खुराक एक तोला सुबह और शाम—(फरीशकेपत्तोंकी शरबत) फरीशकी पत्तियां

पावभर दो दिन दो सेर जलमें औटावें जब तीयांश र
साफ़ करके पावभर शक्करमें क़वामकरें खुराक दो तोले॥

आंतोंके रोग और अतीसार का यत्न॥

अतीसार कई प्रकार का होता है जो दस्तकोष अर्थात् मेदे के हों उसको खलफा अर्थात् संग्रहणी कहते हैं और जो कलेजे से हो जूसन्तारियाकहतेहैं वह रुधिर का अतीसार है मांसकी धावनके सदृश दस्त आते हैं या कयाम कबदी है उसमें पीब निकलती है जो आंतोंसे हो उसको सहज और जलकुल अमआ और जहीर कहतेहैं इनका बिस्तार बिस्तृत पुस्तकों में लिखाहै इस जगह थाड़ी सुगम औषधि कि अतीसार को गुण करें लिखी जाती हैं—(नरकचूरकी जवारिश) बातकोदूरकरे कोट के अतीसार को गुण करतीहै शक्कर सपेद पावभर नरकचूर पीसकर पांच टङ्क,जवारिश अर्थात् पाक बनावें खुराक़ दो तोले और आमले सादेकी जवारिश जो कोष्ठके रोगों में बर्णन हुई गुण करती है—(आमलेकी गोली) दस्तोंको रोकती है कोष्ठके अतीसार और आंतोंके अतीसार को गुणकरे एक तोला आमला थोड़ें से जलमें भिगो दें जब नरम होजावे कजली करके कालानोन पीस कर मिला कर जंगली बेरकी बराबर गोलियां बनाकर एक गोली सुबह और शाम खावें—(गोली) अतीसार को गुण करे राल,पाषाणभेद,बेलगिरी, नरकचूर, आमला, भुनीसमग अरबी, भुनीहड़,माईं, भुनेमुनक्के, अजवाइन,गेहूं, गुलनार बराबर कूट छान कर चनेकी बराबर गोलियां बनाकर प्रात और सन्ध्या खावें—(अनारकी गोली) कच्चा अनार मिट्टीमें लपेट कर भभल में रक्खें जब पक जावे मिट्टी दूर करके अनारको कूट पीसकर आमला, भुनीसमग अरबी बेलगिरी, अजवायन दोदो मासे, अफीम, नरकचूर एक२ मासा पीसकर उसमें मिलाकर मूंगकी बराबर गोलियां

बनाकर सुबह और शाम खायाकरें—(अन्य) जो काबिज़ और कोष्ठ के अतीसार और सख्ती को गुण करे और पाचक शक्ति को बढ़ावे बालछड़, अजवाइन, सौंफ़ भूनकर सोंठ भूनकर, नागरमोथा पांच २ टङ्क, गुलनार, माई बड़ी इलायचीके दाने पांच २ टङ्क, ज़बुल्लास छः टङ्क, शहद या शक्कर में क़वाम करें—(सिंगरफकी गोली) दस्तों को रोकती है सुहागा एक मासा, सिंगरफ दो मासे, अफीम चारमासे कूट छानकर कालीमिरचकी बराबर गोलियां बनावें एक गोली खावें और लिखा है कि रात्रि को जो अधिक दस्त आवें यहगोली शहदमें मिलाकर खावें और जो दिनको अतीसार ज़ोर करे नींबू के रसमें मिलाकर सेवन करे—(सिंगरफकी गोली) सिंगरफ, लौंग, अफीम तीनों दवा बराबर ले मिश्री एक मासा कूट छान कर चार मासेकी बराबर गोलियां बनावें खुराक़ एक गोली (अन्य) जो कब्ज करनेवाली और रुधिर के अतीसार और पित्तके अतीसार को गुणकरती है—समाक के दाने दो टङ्क, माजू, अनारकी छाल आधा २ टङ्क, ज़बुल्लास दश टङ्क, मुनक्के के दाने तीन टङ्क, समग़ अरबी पांच टंक कूट छान कर गोलियां बनावें खुराक़ दो गोली पर्य्यन्त (गोली) काबिज़ और कफ़के अतीसार को दूर करती है और पाचक है कालीमिरच, पीपल, सोंठ, लौंग, अकरकरा एक२ टङ्क, अफीम दो टङ्क, अदरक के पानीमें पीस कर चनेकी बराबर गोलियां बनावें खुराक़ एक गोली (अन्य) गोली काबिज़ अतीसार को दूर करतीहै रसौंत गेरू डेढ़ २ तोले सुरदार संग बराबर पीसकर चने की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली सुबह और एक गोली सन्ध्या को खाया करें—(गोली) लड़कों के अतीसार को गुणकरे जो ज्वर न हो तब भी गुण करती है कत्था, गुलनार तीन २ मासे, जहरमोहरा पीसकर आमला, समग़अरबी, भुनीबेलगिरी दो २ मासे, अफीम

माजू, भुनीसौंफ, सपेद जीरा एक२ मासे, कपूर एकरत्ती कालीमिरचकी बराबर गोलियां बनाकर स्वभावके अनुकूलदें और कभी जहरमोहरेके बदले बंशलोचन मिलाते हैं और बंशलोचन अधिक भी करते हैं और जो कुछ खटका हो तो कपूर न दें—(अन्य) गोली जो बहुतही काबिज है सुनके बीजों समेत सात दाने, आंबकी गुठली एक, अफीम आधा मासा कूट छानकर मिलाकर सात गोलियां बनाकर एकगोली रोज खावें—(माजूकीगोली) शीघही गुणदायक है अतीसार को दूर करती है और आंतोंके व्रणको गुण करती है माजू चार टङ्क, अफीम दो टङ्क, अजवाइन एक मिसकाल चनेकी बराबर गोलियां बनावें खूराक़ एक गोली- (नक्छिकनी की गोली) उस अतीसार को गुण करती है जो नाफके सरक जानेसे हो नक्छिकनी जलाकर अजवायन, सोंठ, बराबर कूट छान कर एक मासा गुड़ मिलाकर गोलियां बनावें और घीके साथ खावें—(लेप) नाफ के सरक जानेके लिये फिटकरी तीन टङ्क, माजू तीन कूट छान कर सिरके में मिलाकर लगावें ऊपरसे घोरसे पट्टीबांधें—(गोली) अतीसारको गुण करती है सोंठ भूनकर,माईं,लोध पठानी,सपेदराल,धवई के फूल, इन्दर जौ, मीठी बेलगिरी, मोचरस, आंब की गुठली, भुना खुरमा, कालीमिरच कूट छानकर गोलियां बनावें—(अन्य) भुनीभंग, बेरकीपत्तियां, नरकचूर बराबर लेकर चनेकी बराबर गोलियां बनाकर दोनों समय खावें (गोली) आंतों के छिलजाने और रक्तातीसार जो सुहे बिना हो उत्तमहै गेरू, कत्था, राल, गोंद, कतीरा,छिले कौंचके बीज, बेलगिरी कूट छानकर जंगली बेरकीबराबर गोलियांबनाकर खावें सुबह और शाम एक गोलीखावें- (गोली) लड़कों के अतीसार को एक गुलनार इलायची अफीम एक२ मासा, चाकसू,रसौंत,नरकचूर,सफ़ेदजीरा हल्दी, नींबकी छाल,बकायनकी कोंपल, बबूलकी कोंपल

दो दो मासे कूट छानकर मूंगकी बराबर गोलियां बनावें दो गोली तक खावें—(अन्ब) लड़कों के सब्जरंग के दस्त आनेको गुणकरे बबूलकी पत्तियां,लौंग,मुरदारसंग, गुलनार,केशर,नींबकीकोंपल,सौंफ, कालाज़ीरा सपेद ज़ीरा सौंचर नोन, तज, अजवाइन, बायबिडंग, सात २ मासे महीन पीसकर चने की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली प्रभात एक संध्याकोखावें और कभी मुरदार संग केबदले जहरमोहरा याबंशलोचन और कभी तजकेबदले बज मिलाते हैं—(इलायची काचूर्ण) काबिज़ और पाचक है भुनीसोंठ, भुनीसौंफ, बड़ी इलायची कीछाल बराबर पीसकर चूर्ण बनावें एक हथेली भर खावें—(बज का चूर्ण) अतीसार और संग्रहणी को गुणकरे बज कोरे मट्टी के कुल्हड़ में रखकर कपड़ौटी करके गरम तन्दूर में रक्खें जब ठण्ढा होजावे निकालकर पीसकर एक टंक लेकर दोटंक शहद और कुछ नोन मिलाकर खावें भोजन साठी के चावल दही के साथ—(अन्य) अतीसार और खूनी बवासीर को बन्द करती है और पेचिस और रंग की जरदी को गुणकरे मस्तगी, कालीमिरच, बंशलोचन अनारदाना, आँब की बीजकी गिरी पीसकर मुलहठी मार्इं, धवई के फूल, माजू बराबर लें और खशखाशके पोस्ते के पानीमें गोलियां बनावें एक दामखावे साठीके चावलों के पानी के साथ और मूंग और चावल भोजन करें—(कालीहड़का चूर्ण) पञ्चातीसार और ज़हीर को गुणकरे हड़ घीया बादामके तेलमें भूनकर दो तोले खशखाश का पोस्ता घीमें भूनकर एक तोला कूटछानकर चूर्ण बनाकर उसके बराबर शक्कर मिलावें एक तोला प्रभात को और सात मासे शामको खावें निर्माएक ने इसनुसख़े में समग़-अरबी भुनीजुई मिलाई घीबजूत गुणकिया—(तजकाचूर्ण) अतीसार को गुणकरे—तज, गुलनार, सुपारी के फूल बराबर चूर्ण करके स्वभाव के अनुकूल जल के साथ खावें—

(सौंफ का चूर्ण) कफ़ के अतीसार को गुणकरे और कोष्ठ को बलकारक और गुदाकी पवनको दूरकरे सौंफ घृतमें यहां तक भूनें कि लाल होजावे फिर कूट छानकर उसके बराबर शक्कर मिलावें और सात मासे ठंढे पानी से खावें-(अनारका चूर्ण) पैत्तिक अतीसारके लिये गुणकरे खट्टे अनारके दाने, भुना कालाज़ीरा पांच टंक, आमला एक मिस्काल, गूगल, धनियां पिसाहुआ चार टंक, गुलनार समगअरबी एक टंक चूर्ण बनावें दोटंक पर्य्यन्त खावें धनियेका चूर्ण—रुधिरके अतीसारकेदूर करनेमें जो सुहे बिनाहो आज़माया हुआहै जामनकी गुठली जलीहुई कुनारके बीज जले हुये, बारहसिंगे के सींग जलेहुये, भुनी हिलतीत अर्थात् हींग, भुनी खशखाश, भुनेसुनके एक २ टंक, काली हड़,सौंफ, अनारदाना, धनियां, चूकाके बीज समग़ अरबी, निशास्ता, कालाज़ीरा, सपेदज़ीरा, खुरफे केबीज, सोंठ, इसबगोल, बारतंग नाज़बोके बीज हर एक टंक लेकर भूनकर खुरफे के बीज, इसबगोल और बारतंग को साबत रक्खें और धवई के फूल, अतीस, माई आमला, बेलगिरी, राल, कत्था, सपेद कतीरा, कोंचके बीज कीगिरी, बड़ीइलायची कीछाल, नरकचूर, गुलनार आधा २ टंक कूटछानकर चूर्ण बनावें खूराक स्वभाव के अनुकूल दोमिस्काल पर्य्यन्त जलके साथ—(चूर्ण) किअतीसार कोगुणकरे—सोंठ, सौंफ, राल,भुनाकुहारा, कालीहड़ तेलमें भूनकर बेलगिरी बराबर लेकर चूर्ण बनावें—(चूर्ण) किलड़कोंके अतीसारको गुणकरे—अनारकी कली बबूलकी पत्तियां, भुनी सौंफ सब थोड़ी थोड़ीले और खशखाश का पोस्ता जला हुआ सबके बराबर मिलावें और थोड़ासा आयुके प्रमाणदें—(चूर्ण) धवईके फूल,आमला, बेलगिरी, इन्दरजौ कड़वे बराबर कूटछानकर आयु और प्रकृति के अनुकूल शहदमें मिलाकर चाटें—(चूर्ण) लड़कोंके दस्त आनेको कि दांतनिकलनेके समयले आता

बेलगिरी, कत्था, आमले की छाल कूट छानकर चूर्ण बनावें अपने स्वभावके अनुकूल खावें—(चूर्ण) जोअतीसार के सब प्रकारों को गुणकरे—गैतरज, नागरमोथा, लोध इन्द्रजौ, मोचरस, बेलगिरी, धवई के फूल, बराबर कूट छानकर चूर्ण बनावें एक टंक खावें—(चूर्ण) कफ़के अतीसारको गुण करे भुनीसोंठ, धवई के फूल, मोचरस, अजमोद बराबर लेकर चूर्ण बनावें एक तोलाभर खावें—(अन्य) चूर्ण कि अतीसार को रोकता है और बैद्यों का सेवन कियाहुआहै चनेभूनकर छीलकरचूहे की मेंगनियां एक २ टङ्क कूट छान कर चूर्ण बनावें जो बलवान् अतीसार हो छः मासे नहीं तो चार मासे सेवन करें (अन्य) बेलगिरी, खस, सोंठ, धनियां बराबर कूट छानकर साठीके चावल के पानीके साथ सेवन करें—(अन्य) लड़कों के अतीसार को गुण करे अतीस एक मासा या कम या ज़ियादह पानी में पीसकर दें और युवा मनुष्य को एक तोले तक प्रकृति के अनुकूल दें दस्तों को बन्द करता है और चाहिये कि थोड़ा गुलनार भी मिलावें—(अन्य) संग्रहणीके लिये आज़माया हुआहै भुना इसबगोल, बेलगिरी, राल, आंबकी गुठली कीगिरी, जामुन केबीज की गिरी, नमक नफ्ती, नागरमोथा, खशखाश, सोंठ, सिवाय इसबगोलके सम्पूर्ण औषधि कूट छानकर मिलाकर एक हथलीभर प्रभात कोखावें—(अन्य) उस खूनी अतीसारके वास्ते जोसुहेके कारणसे नहो आंबकी गुठली कीगिरी जामनकेबीज, कोंचकेबीज, प्रकृतिकेअनुकूल साठीकेचावल केपानीके साथ खावें—(अन्य) बद्ध कोष्ठ और उदर पीड़ा को गुणदायकहै और भोजन कोभी पचाताहै सौंफ दो टंक, कालाज़ीरा एक मिस्काल, सोंठ एक टंक, तीनों औषधि भूनकर अजमोद अजवायन एक२ टंक, सूखा पोदीना, तज एक२ मिस्काल कूटछान कर चूर्ण बनाकर दो टंकसे दो मिस्काल पर्य्यन्तदें (बेरों काचूर्ण) अतीसारका

नाश्तक बेर हांड़ीमें भरकर मुख उसका बंदकरके कपड़ौटी करें फिर आगमें रखदें जब बेर जलजावें निकाल कर एक हथेलीभर हर प्रातःकाल कोखावें, भोजन दही चावल यामूंगकी दाल—(अन्य) भुनीसौंफ, पुराने आंबकी गुठली कीगिरी बराबरले और दूनके बराबर पुरानी शक्कर मिलाकर आधा दाम खावें—(आमलेका शरबत) अतीसारको दूरकरताहै और दूसको इलायची केदाने केसाथ सेवन करें तोमतली को गुणकरे—और खुरफेके बीजोंके रसके साथ बुखार कोगुणकरताहै अमला चार दाम कुचलाकरके आधसेर पानीमें भिगोकर औटावें जब आधाशेष रहे साफ़करके पावभर शक्कर मिलाकर क़वाम मेंलावें—(बेलगिरी काशरबत) कोबिज़ और कोष्ठ कोबल देताहै,बेलगिरी आधपावआधसेरजलमेंभिगोकर औटावें जबआधापानी रहजावेतो आधपावकंदमेंक़वामकरें और अपने स्वभाव के अनुकूल खावें—(आमले की माजून) कोष्ठ को बलदे और अतीसार को रोके और नोशदारू के बदले भी सेवन कीजातीहै आमले का रस छः टंक, इलायची, नागरमोथा दोदो टंक, नरकचूर, बालछड़, बच समग़्रबी एक२ टंक, बेलगिरी तीनदाम कूटछानकर तिगुने कन्दमें माजून बनावें—(काढ़ा) अतीसार को गुणदायक है दो दाम नेचाला तीनपाव पानी में औटावें जब आधपाव रहे साफ़ करके पियें और संध्या को उसी काढ़ीकी दूसरी दवा को फिर डेढ़पाव पानी में औटावें जब आधारहे साफ़ करके पियें एक सप्ताह में संग्रहणी दूर होगी—(बेलगिरी का अरक़) कोष्ठ को बलदेता है और अतीसारको गुणकरऔर ज़हीर और आँतोंके दर्दोंमें बारतंग के बदलेहै—बेलगिरी सूखी या हरी को पानीमें भिगादें प्रभात को अरक़ खींचे—(जामुन का शरबत) क़ै और मतली को बन्द करताहै और रक्त अतीसार के प्रकारों और कोष्ठ और पेचिश और बवासीर को नाश

करता है पक्का जामुन निचोड़ कर थोड़े गुलाबमें जो हो तो उत्तम नहीं तो पानीमें क़वामकरें फिर चौथाई क़न्द मिलाकर शरबत बनावें और जो क़वाम के अन्तमें बाज़ी क़ब्ज़ करनेवाली जैसे कि वंशलोचन औरचन्दन गुलाबमें घिसकर मिलावें तो बलकारक हो—(काढ़ा) अजमाया हुवा दस्तोंको रोकताहै धनिया, नागरमोथा, खस, सोंठ बेलगिरी पांच२ मासे कुचल कर डेढ़पाव पानीमें औटावें जब तृतीयांश शेषरहे साफ़ करके पियें भोजन चावल मूंग या मसूर की दाल के साथ जो यहदवा दो तीन दिन में गुण न करे दो सप्ताह पर्यंत दें जो स्वभाव में गरमी नहो सोंठ बढ़ावें—(काढ़ा) अतीसार और वह दस्त जो मेदेसे आवे उसके लिये गुणकरे मसूर, गेहूं एक २ तोला, खश-खाश का पोस्ता, बेलगिरी तीन २ मासे आधसेर जल में औटावें जब तृतीयांश शेषरहे साफ़ करके पियें—(काढ़ा) अतीसार के दूरकरने को आज़माया हुआहैं सुगंधबाला में धवई के फूल, कनेर की छाल, अतीस, नागरमोथा, बेलगिरी, सोंठ, लोधपठानी, गिलो डेढ़२ मासालेकरएकसेर पानीमेंऔटावेंजब आधपावरहे साफ़करकेपियें इसीतरह सातदिनसेवनकरें-(अन्य) बरगदकादूधनाफ़मेंभरदें और नाफ के चारों तरफ भी लगावें —(टिकिया) अतीसार के लिये गुणकरे जामन की गिरी, आंबकी गिरी, पीलीहड़, घी में भूने जब फूल जावे बराबर पीस कर टिकिया बनावें एक मिस्काल खावें—(लेप)आंब की छाल दही के पानीमें पीस कर नाभि के चारों ओर लगावें और बाज़ों ने सिरके में पीस कर लेप करना लिखा है—(लेप)अतीसारका गुणदायक—आमला घी में पीसकर नाभिके गिर्द दायरा बनावें और किनारा उस दायरे का ऊंचा रक्खें फिर उसमें अदरक का रस भरदें और इसी प्रकारघड़ी देर रहने दें जो पानीके दस्त आतेहों बन्द होजावें—मुजर्रिबात अकबरीमें लिखाहै कियहऔषधि सम्पूर्ण औषधियों

की राजा है—(औषधि) कोष्ठ के अतीसार को गुण करे हरी बेलगिरी भून कर थोड़ी शक्कर मिलाकर एकतोला भर खावें बज़्त गुणकरे—(लाभ)अतीसार में वमन करना दस्तोंको बन्द करता है—(अन्य)पुराने अतीसार के लिये कैथे के बीज भून कर खाना अतीसार को दूर करता है (अन्य)दस्त बन्द करे—मूली के बीज भूनकर उसके बराबर नौसादर शहद मिलाकर खावें—(अन्य)गूलर की कोपल एक तोलाभर पीस कर पियें—(अन्य)आमला घी में भून कर पानी में पीस कर नाभिकेगिर्द लगावें और थोड़ी अफीम अदरक के रसमें कजली करके दो तीन बूंदे नाक में टपकावें—(अन्य)गूलरके दूधका दूध एकमासा बराबर खावें—(अन्य)गेहूं का सत्तू कब्ज़ और अतीसार को दूर करता है और कोष्ठ के और पित्त के अतीसार को गुण करताहै—(अन्य)पित्तके अतीसारका गुणकारक—चावलों की पीच पियें—(अन्य)दूधीहरी पीसकर एक प्यालापियें (अन्य)पुराना पनीर लेकर इतना धोवें कि उसमें नोन का कुछ भी गुण शेष न रहे—फिर उसको भून कर खावें (अन्य)छिलेहुये मसूर भूनकर सेवन करना अतीसार के दूर करनेवालाहै—(अन्य)जो जमालगोटे के खानेसे अतीसार हो आधा टंक कतीरा पीस कर दही में मिलाकर खावें॥

ज़हीर का यत्न॥

इसको लौकिकमें पेचिशभी बोलते हैं वह दो प्रकार का है सादिक, और काज़िब, सादिक वह है कि नाजके बीज या इसबगोल या उसके सदृश कोईवस्तु खावें वैसा ही मल निकले इसमें कब्ज़ करने वाली औषधियों का सेवन करें और काज़िब वहहै कि दाने विष्ठामें न निकले सो ज़हीर काज़िब में जबतक मुसिल न दें और सुहे दूर नहोलें कब्ज़कर नेवाली औषधियोंका सेवन नकरें क्योंकि

पहिले कब्ज की औषधियों का देना सुहे और पीड़ा और भय का कारण है—(काढ़ा)काजिब ज़हीर को गुण करे—अमलतास पांचटंक, अधकुचली सौंफ़दोटंक, ख़तमी के बीज, खतमीकी जड़ डेढ़२ टंक, लसौड़े २५ यह सम्पूर्ण औषधि औटाकर साफ़करके अमलतास मिलाकर थोड़ा घी डालकर एक तोले भर गुलक़न्द से मीठा करके पियें जो सामर्थ्य हो तो विनफ्शा, आलूबुखारा, मुनक्के, बड़े भी मिलावें नहीं तो ग़रीबों को उतनाही बज़्त है और दूसरे दिन नाज़बो के बीज इसबगोल एक२ मिस्काल सेवनकरें—फिरकोष्ठके कब्जकरनेवाली चीजें औरपौष्टिक द्रव्य दें—(औषधि) अतीसार और पेचिश को गुण करे आँबकी छाल लेकर उसके ऊपरकी काली छाल दूरकरें और अन्दर की उसकी छाल कि पीली होती है लेकर पानी में घिसकर और थोड़ा पानी उसमें मिलाकर शीघ्रही पी लें क्योंकि जो एक पलभर भी बिलम्ब होगा तो जमजावेगा फिर पिया न जावेगा इस औषधिके सेवन से तीन दिनमें आराम होगा—(अन्य)उस पेचिशको गुण करे जो पित्त से हो इसबगोल भुना दो टंक, समग़अरबी गेरू एक २ टंक, अजवायन चौथाई टंक, और जो गरमी नहो किन्तु अफ़रा हो—भुनाहालों दो टंक,भुनीअलसी गेरू एक२ टंक,अबहल आधा टंक,अजवाइन चौथाई टंक (अन्य) ज़हीरसादिक के लिये नाजबो के बीज समग़ अरबी बराबर लेकर भूने और पीसकर नाजबो के बीज साबत रखकर एक तोला सपेदज़ीरे के रसमें मिलाकर पियें—(अन्य)ज़हीर सादिक को दूरकरे—बेरकी पत्तियां एक टंक सपेदज़ीरा आधाटंक पीस कर पियें—(चूर्ण) रक्त अतीसार और ज़हीर सादिक के लिये गुणकरे—राल कत्था, बेलगिरी, कोंच के बीज बराबर लेकर चूर्ण बनावें दो टंक पर्य्यन्त खावें—(अन्य)आँतो के व्रण और रक्तातीसार के लिये कतीरा, बारासिंगे का सींग जलाकर

बराबर लेकर चूर्ण बनावें खुराक एक मिसकालभर (अन्य) कफ़के ज़हीर को गुणकरे सपेदजीरा चारमासे अजवायन पांचमासे, अफीमदोरत्ती महीन कूट छानकर तीन खूराकें बनावें और साठीके चावलके साथ खावें और भोजन खिचड़ी खावें—(काढ़ा) ज़हीर सादिक़ केलिये श्रेष्ठ है—धवईके फूल, सेमलका गोंद बराबर पानीमें औटाकर साफ़ करके पियें और गुनगुने मीठे तेलसे अमल करने से पेचिश दूरहोतीहै आज़मायाहुआहै—(अन्य) पेचिश और रुधिर और कफ़ातीसार को नाशकरे मड़ोड़फली एक दाम पानीमें भिगोकर हाथसे मलकर साफ़करके खावें भोजन खिचड़ीदें—और खटाई और सलौनीचीजोंसे पथ्य करें—(अन्य) पेचिशको दूरकरे सांकर की फली पकाकर पके चावल के साथ खावें—(अन्य) ज़हीरसादिक़को गुण करे राल, सपेद शक्कर एक २ दाम, खशखाशका पोस्ता भुना एक कूट छानकर हथेली भर खावें— (चूर्ण) ज़हीर सादिक़के लिये गुणदायक भुने नाजबो के बीज, गेरू दोनों साबत रखकर चौकाके बीज दो २ टंक गुलनार, समग़-अरबी, निशास्ता एक २ टंक कूट छानकर चूर्ण बनावें—(हड़काचूर्ण) कांब्रिज और ज़हीरको गुणकरे और कोष्ठ पीड़ाको लाभदायकहै कालीहड़ कड़वे तेलमेंभूनकर भुनी समग़अरबी, कालाजीरा भुना, सौंफतेलमें भून कर एक २ टंक, इसबगोल, साबित, हालमकी जड़दो २ टंक कूटछान कर चूर्ण बनावें खुराक चारदाम—(चूर्ण) हालोंका चूर्ण ज़हीरको गुणकरे हालों, नाजबोके बीज, इसबगोल दो २ टंक तीनों वस्तुओंको साबित रक्खे और समग़ अरबी निशास्ता, खतमीके बीज एक २ टंक चूर्ण बनावें और जो ज़हीरसादिक़ हो चाहिये कि तीनप्रकारके बीजोंकोभूने और चारटंक, पर्य्यन्तखावें अन्यपेचिशको गुणकरे फालसे कीजड़अबकूटकरकेराचिको पानीमेंभिगोदेंउसकालुआब सुबह लेकर एक तोला इसबगोल के साथ खावें—(काढ़ा)

पेचिशको बज़त पीड़ाके समयगुणकरे नाजबोके बीज एक तोलापावभर गुलाबमें जोसामर्थ्यहोनहीं तोआधसेरजल में औटावें जबआधा शेषरहे नाज़बोकेबीजोंके साथ पियें (हालोंकामाक) ज़हीर और मड़ोड़ा औरबवासीरको—गुणकरे कालाज़ीराभुनाएकभाग,मस्तगी तिहाई हिस्सा यथाविधि मिश्री में ज़बामकरें दो टंक खावें जो मस्तगी के लेनेकी सामर्थ्य न हो कुन्दर मिलावें—(चूर्ण) ज़हीर को गुणकरे खतमी के बीज भुने, भुनी खुब्बाज़ी पांच २ टंक भुना निशास्ता तीन मिसकाल, समग़अरबी, गेरू दो दो मिसकाल चूर्णबनावें खूराक तीनटंक पर्य्यंत—(अन्य) पेचिश को गुणकरे गेरू, समग़अरबी, इसबगोल, नाज़बोके बीज निशास्ता बराबर चूर्ण बनावें तीन टंक के अनुमान खावें (अन्य) खून आनेको गुण करे—राल, सोंठ, सौंफ, अनार की छाल, खशखाश आधा२ टंक शक्कर दोदाम कूटछानकर आधेदाम के बराबर ताज़े पानीसे हरसुबह और शाम खाया करें भोजन चावल और मसूर की दाल—(अन्य) बेलगिरी एक तोला, कुकुड़ा की छाल दो तोले सौंफ, जंगीहड़ एक२ तोला,इसबगोल छःमासे मिश्रीतीन तोले हड़ों को घीमें भूनकर सिवाय इसबगोल के कूट छानकर सबको मिलावें खुराक सात मासे से एक तोले पर्य्यन्त (अन्य)ज़हीरसादिक़के लिये कालीहड़ भूनकर सोंठभुनी सौंफ एक २ तोला बराबर की शक्कर मिलाकर प्रकृति के अनुकूल खावें—(अन्य)आँतों के छिलजाने को गुणकरे बेलगिरी कत्था बराबर लेकर चूर्ण बनावें—(अन्य) पित्त के और रक्तके अतीसार और ज़हीरके लिये गुणकरे समग़अरबी हररोज़ तीन मिसकाल तीनदिन या ग्यारह दिन तक खावें और जो अतीसार में अधिकता हो खशखाश का पोस्ता महीन पीसकर एक मिसकालसे दो मिसकाल पर्य्यन्त पीना आज़माया हुआ है और समग़अरबी मिलावें अधिक गुणकरे—(गोली) अतीसार और कफ़ के

ज़हीर को गुणकरे—सोंठ, सौंफ, खशखाश तीनों भूनकर दोटंक कूटछानकर गुड़ और घीमें गोलियां बनाकर खावें (अन्य) ज़हीरसादिक़ के लिये—माईं, कत्था, अफीम बराबर लेकर कालीमिरच की बराबर गोलियां बनाकर साठी के चावल के पानी के साथ सेवनकरें—(अन्य)अधिक अतीसार और ज़हीरसादिक़को नाशकरे—साफ़ अफीम साफ़ चूना बराबर लेकर मोठ या मसूर की बराबर गोलियां बनाकर स्वभाव के अनुकूल एक सुबह और शाम को खावें—(अन्य)आँतोंके छिलजाने और ज़हीर सादिक़ के लिये गुणकरे—माजू माईं दोदो टंक समग़ अरबी एक टंक अफीम आधा दाम कालीमिरच की बराबर गोलियां बनावें खुराक जवानके लिये दो गोली और लड़के के लिये एक गोली—(अन्य) माजू चार भाग,अफीम दो भाग, अजवायन एक भाग कूट छान कर चने या मूंगकी बराबर गोलियां बनाकर एक गोली सुबह खाया करें (अन्य) ज़हीरसादिक़ और अतीसार को दूर करे नये मज़्बेके वृक्षकी छाल लेकर रस उसका चार टंकके बराबर निकालकर बरतनमें रखकर आगपररक्खें और तीन मासे सोंठ पीसकर उसमें मिलावें जब दो तीन उबाल खावे उतार कर गुनगुना पियें खटाई और बादीसे पथ्य करें—(अन्य) खुरमा हिन्दी अर्थात् खजूर एक टंक पीस कर थोड़े दहीमें मिलाकर खावें—(अन्य) अनारकी पत्तियां एक प्याले भर पानीमें पीसकर पियें—(अन्य) कतीरा रातको पानीमें भिगोदें सुबह थोड़ी शक्कर मिलाकर पियें (अन्य) लसौड़ेकी कोंपल पीसकर गोलियां बनाकर खावें (अन्य) सुपारी जलाकर दहीमें मिलाकर खावें—(अन्य) नाज़बो के बीजोंको मिट्टीके बरतनमें रखकर ऊपर से दो तीन बूंदें मीठे तेलकी डालकर आगपर लाल करके खावें अतीसारकी आधिकताको दूरकरताहै—(अन्य) मुल्तानी मिट्टी पीसकर बिहीदाने और इसपगोल के लुआबमें

मिला कर दें—(अन्य) सफ़ेदज़ीरा दही के साथ खावें—(अन्य) आँतोंकी छीलनके प्रारम्भको गुणकरे समग़ अरबी चार टंक सरद पानीमें मिलाकर पियें छीलनको दूर करता है॥

कूलंज का यत्न॥

यह रोग सुद्दोंके बढ़जानेसे अन्तड़ी कूलोंमें होजाताहै इसमें गुदाकी पवन और मल कठिनता से पीड़ा के साथ निकलता है—(यत्न) जो कूलंज बात से हो सेंककरें जिस तरह कोष्ठकी पीड़ामें उसका बर्णन हुआ और जो बोझ या कफ़से हो तलीन अर्थात् हलका जुल्लाब आदि देकर मुसिल पिलावें—जो पेचिश में बर्णन हुआ कूलंज के लिये गुणकरे रेंडीके तेलसे जो कोष्ठकी पीड़ा में बर्णन हुई लेप करें—(गोली) कूलंजको दूर करती है और बैद्यकमें लिखी गई है भुनी फिटकरी, अजवाइन, पीपलामूल, कालीमिरच करंजवे कीगिरी, बायबिडंग बराबर कूट छानकर अदरक के पानीमें चार मासे की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली पीड़ाके समय खावें—(औषधि) कूलंज के लिये गुण करे रेंडी, सोयेकेबीज, मको, खतमीकेबीज, बाबूना, थोड़ा२ लेकर पानीमें औटावें जब आधा रहे साफ़ करके उसमें बैठें—(जवारिश) प्रकृति को नरम करती है और कफ़ के निकालनेवाली और कोष्ठ की बलदायक और कूलंजको दूर करती है—बड़े मुनक्के पाव भर, मस्तगी साढ़े छः टङ्क तुरबुद सफ़ेद दश टङ्क कूट छानकर मुनक्केके बीज निकाल कर गुलाबमें पीसकर औषधियोंमें मिलावें खूराक दो टंक और जो सदा सेवन करें तीन टङ्क तकहै—(गोली) कूलंज की गुणदायक हिन्दका सेवन है—करंजुवेकीगिरी रेंड़ी कीगिरी, नकछिकनी, हींग, सोंठ बराबर पीसकर बेर के बराबर गोलियां बनावें एक गोली गुनगुने पानीसेखावें—(गोली) पेट के बोझ के लिये एक गोली गरम पानीसे दें

और उदरपीड़ा और बिशूचिकाके लिये सौंफ़ के रसके साथ दो गोली और बद्धकोष्ठके दूर करनेको पाँच गोली और दस्त लानेके लिये आठगोलियां गरम पानीके साथ दें गुणकरे कदाचित् गोलियोंके सेवनसे गरमी मालूमहो तो मिश्री गुलाबमें पीसकर पियें—(अन्य) शोधा जमाल-गोटा एक टंक, रेंडी कीगिरी दशटङ्क, पीले हड़की छाल दोटङ्क, पारा,भुना सुहागा,जवाखार,हल्दी,कालीमिरच एक२टंक कालीमिरचकी बराबर गोलियांबनावें-(गोली) उदरपीड़ाको गुणकरे पीपलके पत्ते अढ़ाई पीसकर गुड़में मिलाकर गोलियां बनाकर खावें—(अन्य) वायुगोलाको गुणकरे समन्दरफल, कीगिरी, समन्दरभाग, लाहोरी-नोन, कालानोन, सज्जी, सपेद तुरबुद,जवाखार,सुहागा पीले हड़की छाल,पीपल ,सोंठ, हींग, बायविडंग,ढाई २ टङ्क अमलबेत दश टङ्क, कूट छानकर गोलियां बनावें खु-राक दश टङ्क—(अन्य) कूलंज और उसकी पीड़ाको गुण दायक एलवा, सुहागा, सेंधानोन, जवाखार, घीकुवार के रसमें बेरकी बराबर गोलियां बनावें मुसिल की माजून सनायपक्की पच्चीसटङ्क, बिनफ्शा,शीरखिस्त,यातुरंजबीन, गुलाबके फूल,पीलेहड़की छाल,शाहतरा पांच२ टंक, बड़े मुनक्के पावभर,नौशहद,तिगुना खुराकतीनमिसकाल(चूर्ण) जो दस्त लावे और भोजनका पाचकहै पीलेहड़कीछाल, कालीहड़, लाहोरीनोन, सनायमक्की, बराबर पीसकर नौमासे की बराबर गरम पानीसे सोनेके समय खावें—(शाफ़ा) कि दस्त लाताहै गुड़ तांबे के बरतनमें आग पर रक्खें कि घुलजावे फिर नोनपीसकर मिलावें जब खूबमिल जावे ठंढाकरके शाफा बनाकर रोज सेवनकरें और केवल नोनकाभी शाफा खुलासा दस्त लाताहै—(अन्य) कूलंजके खोलनेके वास्ते मजूयेके बीजों कीगिरी पानी में पीसकर शाफा बनावें—(अन्य) मोमदो टंक उस में आधा टंकनोन मिलाकर तेलमें शाफा बनावें और शाफा जब निकल

आवे फिर रखदें—(अन्य) मदारकी जड़ खरल करकेगुदा में रखना खुलासा दस्त लाताहै और पानीमें पीसकर पेटपर भी गुनगुना लेपकरे—(अन्य) चूहेकी मेंगनियां सांभर नोन बराबर शक्कर मिलाकर कि मधुरी आँचपर जमाकर छुहारेकी गुठलीके अनुसार बत्तीबनाकर तेलमें भिगोकर गुदामें रक्खें—(अन्यशाफा) साबूनका टुकड़ा खुरमाकी गुठलीके सदृश बनाकर तेलमें भून कर रक्खें-(काढ़ा) कूलंजको गुणकरे—सोयेके बीज, मेथी दो २ तोले या कम या ज़ियादह स्वभावके अनुसार लेकर औटाकर दोतोले घीडालकर पियें—(अन्य) कूलंज और पेटकीपीड़ा कोगुणकरे—सोंठ, अरंडकी जड़ एक२ टंक, हींग, सोंचर नोन एक २ मासे सोंठ और अरंडकी जड़को तीनपाव जलमें औटावें जब आधपाव शेषरहे साफ़करके मिश्रले हींग और नोन को महीन करके गोली बनाकर खालें फिर काढ़ा पियें—(अन्य)अरंड की जड़ जलाकर उसकी राख हथेली भर खावें बात और पेट की पीड़ा दूर हो-जाती है मुहम्मद ज़करियाने कहा है कि मैंने देखा बहुत मनुष्योंको कूलंजकी बीमारी होतीथी उन्होंने भेड़ियेकी खाल अपने सेवनमें खूबी यहांतक किउसीपर बैठतेथे और सोतेथे और घोड़ेपर डालकर सवार होतेथे सोयह रोग होना बन्दहोगया—(अन्य) सुहाव कातेल अर्थात् तितली मलना कि उसका नुसखा पीछे वर्णन होचुका कूलंज की पीड़ा कोगुणकरताहै—(काढ़ा) उस कौलंजको पीड़ाऔर बद्धकोष्ठके दूरकरनेके लिये जोखभाव की सरदी के साथ हो अरण्ड कीजड़ दोदाम जोहरीहोतो चारदाम लेकर आधसेर जलमें औटावें जब चतुर्थांश शेष रहे साफ़करके रेंडीका तेल दोतोले हींग, तीनमासे, मिलाकर गुनगुना पियें—(अन्य) कालोंके बीज पांचटंक पानी में औटाकर शक्कर और थोड़ा तिलोंकातेल मिलाकर पियें—(औषधि) मुख्य करके कूलंजको दूरकरतीहै मेंहदीके बीज आधे

मिसकाल सौंफ के अरक या उसके रस में मिला कर खावें—(अन्य) रियाज़में लिखाहै किजो मनुष्य बारासिंगे कासींग जलाकर एक चमचा माउल असलमें मिलाकर खावें तोफिर कूलंजनहोगा और पीड़ा दूरहोगी—(अन्य) आधा टंक मीठा तेल शक्करमें मिलाकर पीना कूलंज को गुण दायकहै—(अन्य) गुनगुना जलपीना उस कूलंज को किनिर्ब्बलतासे होवे नष्टकरताहै—(अन्य) बकरीकी मेंगनियां लड़कीके मूचमें औटावें फिर पीसकर कपड़े पर लगाकर गुनगुना मालें—(अन्य) साखूके पत्तों का रस निचोड़कर उसमें पारा पीसकर नाकके चौगिर्द मलें (अन्य) चंबेलीका तेल गरम करके रुई उससे भिगोकर पेटपर रक्खें—(अन्य) साबून गरम पानीमें पीसकर पेटपर उसके चौगिर्द लगावें—(अन्य) ऊंटकापीना कूलंज कीपीड़ा कोगुण करताहै—(अन्य) मुख्यकरके कूलंजकी पीड़ाको गुणकरे जब लड़का पैदाहो उसकी नाक काटकर अपने पासरक्खें कूलंजन होगा—(लेप) रेंडी कीगिरी, एलुवा मज्जये केबीजों कीगिरी सबको कूटकर सिरकेमें पकाकर गुनगुना लेपकरें—(अन्य) लहसुन काखाना और पीसकर लगाना कूलंजकी पीड़ाके लिये अश्चर्य्यदायक गुण रखता है—(अन्य)बकरी कापित्ता गुनगुना नाभिके नीचे मलना दस्त लाताहै और लड़कों के बद्धकोष्ठ केदूरकरने केलिये मुख्य करके उत्तमहै—(लेप) बैद्यकों कासेवितहै दस्त बराबर लाताहै और लड़कों केडम्बे केलिये अति गुण दायक है सुहागा तेलिया, तूतिया, जमाल गोटे की गिरी एक २ टंक थूहड़केदूधमेंपीसकर नाफकेगिर्द लेपकरें—(टिकिया) कुन्दर आंतों कीपीड़ा और पेचिश को गुणकरे—कुदर सोये केबीज, सौंफ, पांच २ टंग करफ्शा के बीज तीन टंक अजवायन अढ़ाई टंक कूटछानकर पानीमें टिकिया बनावें शरबत एक मिस्काल, एक मनुष्यके मेंदेमें कोड़े पड़गये थे उसको मैंने सुसिल दियाकीड़ेदूरहोगयेफिरमन्दाग्नि

हुई और यह अफरा और भोजन के न पचने के कारण कभी २ कोड़े पैदा होते थे यह माजून मैंने उसके लिये बिचारी बहुत लाभ दिया—पोदीना, सौंफ, सातर, अनीसून, जीरा तुरंजकी छाल, दारचीनी एक २ टंक, अजवायन आधा टंक, इलायची, धनियां, चन्दन, गुलाबमें पीसकर दोदो टंक चार आमलोंका मुरब्बा बीजनिकाल कर तिगुने शहदमें माजून बनावें॥

पेटके कीड़ोंका यत्न॥

यह आँतों में पैदा होते हैं और उनके कई प्रकार हैं एक लाँबे साँपों के सदृश होते हैं दूसरे चौड़े कि उनको हब्बुलक़रा और कद्दूदाना कहते हैं तीसरे छोटे कीड़े शिरके कीड़ोंके सदृश स्थिर आँतों में होते हैं यह बहुधा मिथ्या आहार और गुदाके न धोनेसे लड़कोंके आँतोंमें पैदाहोतेहैं—(यत्न)एक दोदिन दूध पीकर यहगोली सेवन करें—सनायमक्की, गुलक़न्द पांच २ तोले, पीलेहड़की छाल जंगी हड़ दो दो तोले, सोंठ, दाख, मुनक्का एक २ तोला शहदमें गोलियां बनावें खुराक़ एक तोला धनियेकी जवारिश खाना जिसका वर्णन कोष्ठके रोगमें हुआ गुणकरे (इतरीफल) जो कीड़ों को निकालता है काबली हड़की छाल, बहेड़ेकी छाल, आमला, बायबिडंग दश टङ्क, तुरबुद खोखली करके हब्बुल नील आधा २ टङ्क, कमीला, कड़वी कूठ, हिन्दीनोन तीन २ टङ्क कूट छानकर तिगुने शहदमें मिलावें खुराक चार टङ्क पर्य्यन्त—(चूर्ण) पेटके कीड़ों को मारता है और दूर करता है और भोजनको पचाता है अजमोद, बायबिडंग, लाहौरीनोन, जवाखार, पीलेहड़की छाल, पीपल, सोंठयह सब औषधि बराबर ले हींग भूनकर एक भागकी आधी कूट छानकर खुराक दो टङ्क निहार मुंह—(कमीलेकी गोली) पेटके कीड़ों को दूर करने के लिये गुणकरे—हींग, पोदीना, बायबिडंग, हिन्दीनोन, पीली-

हड़की छाल बराबर कूट छानकर गोलियां बनावें तीन गोलियां खावें कभी इसमें तुरबुद खोखली कीड़ई अधिक करतेहैं—(अन्य) बायबिडंग, हिन्दीनोन दो२टङ्क,बनीकुई तुरबुद आधी टङ्क, मिश्री बराबर लेकर गोलियां बनावें खुराक दो मिसकाल गरम पानीके साथ—(चूर्ण) हरप्रकार के कीड़ों को गुणकरे—बायबिडंग, लाहौरीनोन, कमीला पीलेहड़कीछाल बराबर कूट छानकर आधा दाम गौके दहीके साथ खावें भोजन खिचड़ी खावें—(दूसरी गोली) दस्त लाती है और कीड़ों को दूर करती है कालाज़ीरा तीन मासे, बायबिडंग, दरमना तुर्की दोदो मासे, खोखली कीड़ई तुरबुद,अफ़नैती,सोंठ, कतीरा,एलवा एक२ मासा कूट छानकर गोलियां बनाकर खावें खुराक एकहै (काढ़ा) कीड़ोंको गुणकरे बैद्यकसे लिखाहै खट्टे अनारकी छाल, तूतकी छाल दोदो तोले कुचलकर पानीमें औटाकर साफ़ करके पियें बड़े कीड़ों और कद्दूदानेको गुणकरे (अन्य) बकायन की छाल दो तोले आठ सकोरे पानी में औटावें जब एक सकोरा भर पानी रहजावे थोड़ा गुड़ मिलाकर खाकर सोरहें इसी प्रकार तीनदिन सेवनकरें (गोली) कोष्ठके कीड़ोंको गुणकरे करंजुवे के बीज, पलास पापड़ा, अजवाइन, कमीला,बायबिडंग,गुड़ बराबर लेकर गोलियां बनावें खुराक आधा टङ्क—(अन्य) छोटे कीड़ोंके लिये जो लड़कों की गुदा में पड़ जातेहैं गुण करे—रसौत चाकसू छिलीकुई,हींग दोदो मासे, एलवा एक मासा कालीमिरच आधामासा, नींबकी पत्तियां दो, लुकड़ौंधे के रसमें पीसकर जवारके बराबर गोलियां बनावें खुराक एक गोली—(अन्य) सुलीम, कत्था सपेद, अफीम, बेरकी पत्तियां, पुराना नारियल बराबर लेकर मूंग की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली लड़के को खिलायें—(अन्य) कीड़ों को गुणकरे दाख सुनके में उसके बीज की बराबर बायबिडंग भरदें जवानको बीस दाने और लड़के को पांच

दानोंसे दश दानों तक खिलावें और उत्तम वह है कि सुनके निगलले—(अन्य)बैलका सुम जलाकरउसकी राख शहदमें या गुड़में मिलाकर खाना झब्बुलकरा को गुण करता है—(अन्य) बड़े कीड़ोंको गुणकरे जो लड़कों की गुदामें उत्पन्न होते हैं शफतालूके पत्ते जलाकर कड़ुवे तेल में मिलाकर गुदापर मलें—(अन्य) काले धतूरों के पत्तोंका रस, पानका रस निकाल कर प्रतिदिन दो बेर उंगली में लगाकर गुदा के अन्दर फेरें या कपड़े की बत्ती बनाकर औषधि से भरकर गुदा में फेरें सब कीड़े मरजावें—(अन्यशाफा) नोनसे शाफा करना लड़कों के कीड़ोंको मारता है—(अन्य) कहूदानेको दूरकरे पहिली रात दो मुट्ठी तिल थोड़े गुड़में मिलाकर खावें उसके प्रभात को चारटङ्क कमीला एक टङ्क साबून मिलाकर तीन गोलियां बनाकर गरम पानीसे निगल जावें सब कहू दाने दस्तों से निकलजावें—(अन्य) दरमना तुरकी, अनारके दानेके साथ जव कुटकर प्रतिप्रभातको बादाम के बराबर खावें खुलास तुलतिजारब ने इस औषधि को परीक्षा कियाऊआ लिखा है—(अन्य) लड़कों के बड़े कीड़ों को गुण करे अरंड के पत्तों का रस या भँगरे के पत्तों का रस, या धतूरे की पत्तियों का रस प्रतिदिन दो तीन बेर गुदा में मलें॥

काँच के निकल आने की औषधि॥

यह रोग बज़धा लड़कों को अतीसार के उपरांत हो जाता है—(औषधि)काँचके निकलनेको गुण करे—पुरानी छलनी का चमड़ा जलाकर उसकी राख गुदापर छिरकें (अन्य) पहिले गुदापर तेल मलें फिर लसौड़ा जलाकर पीसकर उसपर छिड़कें—(अन्य) लड़कों के काँच निकल आने को गुण करे—रोगी अपना मूत्र बासनमें लेकर जब दिशासे हो आवे उस मूत्र से पहिले गुदा को धोवे फिर

पानीसे इस्तंजाकरे तो तीनदिनमें गुण करताहै—(अन्य) बबूल की फली, पान, धवईके फूल औटाकर उसके काढ़े में बैठे या उस के पानी से इस्तंजा करे—(अन्य) आँब की पत्तियां, जामुनकी पत्तियां, और उसकी छाल दोनोंजव कुटकर औटाकर उस जलसे शौच करें—(अन्य) औषधि जब गुदा शोथके कारण अंदर न जावे कईबेर गरमपानी में बैठनाऔर गुलरोगन उसपर मलना आराम देता है (औषधि) कांच निकलनेको गुणकरे बकरीका सुम जला करमाजू, अनार के फूल, अनारकी छाल, भुनी फिटकरी बराबर कूट छानकर छिड़कें—(लेप) अंडे की सपेदी गुदा पर बाहर और भीतर से लगाना पीड़ा और सूजन को गुण करता है और बासलीक की फस्द खोलना सूजन और पीड़ा को दूर करता है—(लेप) गुदा की सूजन को गुण करे—जौका आटा, मसूर, अंडे की सपेदी रोगन गुलमें मिलाकरलेपकरें—(चूर्ण) काँचके निकलनेको और उसकी पीड़ा को गुण करता है— सोंठ आमला एक२ टंक, धनिया, लाहौरी नोन, काला नोन दो दो टङ्क काली मिरच चार टङ्क, पीपला मूलबारह टङ्क कूट छान कर चूर्ण बनावें खूराक दो टङ्क ॥

बवासीर का यत्न ॥

यह रोग दो प्रकार का है एक वह कि गुदा के किनारे मस्सोंकी अधिकताहो वे और उससे रुधिर निकल उस को खूनी बवासीर बोलते हैं दूसरे वह कि गुदा में मस्से न हों और पेट में कराकर होवे और रुधिर न निकले इसको बादी बवासीर बोलते हैं (यत्न) चूतड़की हड्डी पर सींगी लगाना उत्तमोत्तम यत्न है और बवासीर के रुधिर के पहिले बन्द न करें परन्तु जब अधिक निकले और रोगी निर्ब्बल हो जावे बन्दकर दें—हकीमों ने लिखा है कनिष्टिका और अनामिका के

बीच में दाग देना बवासीर को गुण करता है और हंसली पर दाग देना बवासीर के लिये गुणकरे और दाग के उपरांत रुई पानीमें भिगोकर उसपर रक्खें कि जारी रहे सिंघारके बीजोंकीगोली बवासीरकेलिये गुणकारक अद्वितीय है हारसिंघार के बीज छीलकर एक तोलाभर काली मिरचमें तीन मासे कूट छानकर गोलियां बनावें खूराक तीन मासे ठण्ढे जल के साथ—(गोली) बादी बवासीर के लिये गुण करे और कब्ज नहीं करती और स्वभावकोनरमरखतीहै सौंफपीले हड़की छाल, बहेड़ेकी छाल, आमला दो २ टङ्क, गूगल, रसौत चारटङ्क, गुंदनी के बीज एक टङ्क, अंजीरें चार, हड़ोंको पहिले घी में भून कर दो भाग किशमिश कूटकरउसमें मिलाकर गोलियां बनावें अनुमान से खावें—(औषधि) गाय का दूध आध सेर पियें और जब दूध का प्याला मुंहसे लगावें कागज़ी नींबू का रस उस में डालकर तुरन्त पीलें तीन दिन में गुण प्रकट होगा—(कुकरौंधे की गोली) यह नुसखा वैद्यों का आज़माया हुआ है एक सेर कुकरौंधे का रस मधुरी अग्नि पर औटावें जब गाढ़ा होजावे एक टङ्क कालीमिरच पीस कर मिलावें फिर खरल करके जंगली बेरकी बराबर गोलियां बनाकर एक गोली सुबह एक गोली शाम को खावें—(कन्धीकेपत्तोंकीगोली) खूनी औरबादी बवासीरको गुणकरे कंघीकी पत्तियां२१ कालीमिरचें२१ पानी में पीसकर सात गोलियां बनाकर एक सुबह एक शाम खावें—(गोली) बवासीरकेलिये गुणकरे कल्मीशोरा रसौत बराबरपीसकर जंगलीबेरकीबराबरगोलियां बना करएकगोलीप्रभातकोखायाकरें लेपकेलियेभी यहगोली उत्तमोत्तम औषधिहै-(अन्य)खूनीऔरबादी बवासीरको नींब के बीजोंकी गिरी, बकायनके बीजों की गिरी, गूगल रसौत, एलवा, कालीमिरच, गेरू, मकोकी पत्तीके रसमें जंगली बेरकी बराबर गोलियां बनाकर एक गोली सुबह

एक संध्या को खावें—(अन्य)बवासीर का रुधिर बन्द करे रसौतसातमासे,बीजोंसमेत दाख मुनक्के चौदहमासे,कतीरासातमासे, सबको कूट छानकर जंगली बेरकी बरा बर गोलियां बनावें खूराक हर सुबह को एक गोली उसके ऊपर से दो ग्रास रोटी के घतके साथ खावें—(अन्य)खूनी औरबादी बवासीरको गुणकरे—रसौतदोभाग,अनारकी छाल चारभाग,गुड़आठभाग कूटछानकर गोलियांबनावें खूराक चारटंक—(अन्य)बवासीर खूनीके लिये सपेद सब्जी चूनासपेद चने भून कर आठ २ टंक कूट छान कर बत्तीस टंक गुड़में मिलाकर बत्तीसही गोलियां बनावें खुराक एक गोली सुबह और शाम—(अन्य)बादी बवासीर को गुणकरे हड़एकटंक, कालाजीरा आधाटंक,दोनों भूनकर कूटकर गन्दनेके जल में गोलियां बनावें खुराक एकगोली (गूगलकीगोली)खूनी और बादी बवासीर को गुण करे पीलेहड़की छाल,बहेड़ेकी छाल,आमला दश २ टंक,सीप जलाकर बारहसिंगे का सींग जलाकर एक २ टंक अजवाइन तीन टंक,गूगल दुगना औषधियों को लेकर पानी में गोलियां बनावें—(अन्य) कालीहड़,बहेड़ा,आमला एक २ भाग,कन्द बराबर गुलाब या जलमें पीसकर गोलियां बनावें खुराक दो टंक—(गोली)खूनी बवासीरको गुणकरे बकायन के पत्ते पावभर खारी नोन एक दाम पीसकर जंगली बेरकी बराबर गोलियां बनावें—(गोली)खूनी बवासीर के लिये अंडेका छिलका जलाकर सन्दरूश,शैतरज हिन्दी पांच २ मासे लाल नौसादर कूट छान कर रीठे की बराबर गोलियां बनावें खूराक छः गोली—(हलवा) बवासीर के रुधिर बहने को गुण करे मुलकुन्द के पुष्प महीन कूटछानकर शक्कर और घतमें हलवा बनाकर एक तोला खावें—(इतरीफल)बवासीर खूनी और बादी को गुणकरे पीलेहड़की छाल,बहेड़ेकीछाल,आमला,धनिया एक २ भाग गूगल गन्दने के जलमें कलकी करके तीनभाग

पर्य्यन्त शहद में तैयार करें—(चूर्ण) बवासीर का रुधिर बन्द करे एक नारियल के ऊपर की छाल लेकर जलावें और उसकी बराबर शक्कर मिलाकर तीन खूराक करें जारी खून बन्द होजावे और एक वर्ष पर्य्यंत मैथुन न करे अन्यबादीबवासीरकोगुणदायक बकायनकेबीज कीगिरी सौंफ एक २ टंककूटछान कर उसकी बराबर शक्कर मिला कर चूर्ण बनावें खूराक आधा टंक—(अन्य) बवासीर का रुधिर बन्दकरे जलीऊई इस्पन्द,जलेऊए गेहूंबराबर पीस कर खूराक तीनमासे पर्य्यंत दो तोलेघत के साथ—(अन्य) कडुवे इन्द्रजौ कि सब कामोंमें मीठोंसे अति बलवन्त है बवासीर और अतीसारके लिये आजमाये हैं प्रतिदिनछः मासे ठंढे पानी के साथसेवन करें—(अन्य) इंकोल की जड़ कि जिसको अंकोल भी कहते हैं एक मासा कालीमिरच इसकेबराबर लेकर चूर्ण बनाकरखावें और उसकाबफारा देना भी बवासीरको गुण करता है—(अन्य) कुसुम के फूल खूनी और बादी बवासीरको गुणकरें कुसुम के फूल तीन मासे पानी में पीसकर दहीमें मिलाकर खावें—(अन्य) मूलीके वरक वरक छील कर छाया में सुखावें फिर कूट छान कर एक हथेली के बराबर २ की शक्कर मिलाकर चालीस दिन तक फांके—काली जीरी का चूर्ण खूनी और बादी बवासीर के लिये गुण दायक काली जीरी तीन टंक आधी कच्ची और आधी पक्की प्रतिदिन साठी के चावलके पानीके साथ एक टंक खावें—(अन्य) जंगीहड़ घीमें भूनकर शक्कर मिलाकर प्रति दिन एक तोला भर खावें—(चूर्ण) अखरोट का जो बवासीर के रुधिर को बन्द करताहै अखरोट की छाल जलाकर बद्ध कोष्ठ कारक द्रव्यों के साथ खावें—(झलझल का चूर्ण) जो खूनी और बादी बवासीर को गुणकरे झलझल के बीज एक भाग शक्कर दो भाग मिलाकर दोमासे खावें—(चूर्ण) बवासीर के रुधिर को बन्द करताहै—निरमली जलाकर थोड़ी शक्कर

मिलाकर खावें—(अन्य)इमली के चियाकी राख एकमासे से दोमासे पर्यंत दही के साथ खावें—(अन्य)पावभर कन्डे जलाकर उसकी भस्म घड़े में रखकर आधा घड़ा पानी उसमें डालकर आठ दिन रक्खें और प्रतिदिन घड़े को हिलाया करें आठवें दिन पानी को हिलाकर कपड़े से छानकर मट्टी के तगार में रक्खें और फोग उसका दूर करके छाया में सुखावें फिर प्रतिदिन छः मासे उसमें से लेकर उसी प्रकार सात दिन पर्यंत खावें और इस समय में मूंगकी दाल चावल खिचड़ी भोजन करें और सात दिन के उपरान्त फिरखावें और पथ्य नकरें चौदह दिन में बवासीर बिल्कुल दूर होजावेगी सम्भोगन करें—(करंजुवे का चूर्ण) करंजुवे की गिरी एक पीसकर एक तोला शक्कर मिलाकर खायाकरें और इस औषधि के सेवन में चिकना भोजन करें—(चूर्ण) जंगली कबूतर की बीट बबूल के फूलकी जरदी बराबर लेकर महीन पीसकर एकमासा प्रभात को गुलाब मिलाकर खावें बादी और खटाई से पथ्यकरें तीन दिनमें आराम होजावे—(अन्य) बवासीर को गुणकरे—बबूल के फूल बराबर शक्कर लेकर प्रतिदिन एक हथेली भरखावें—(अन्य) अंधाझली छायामें सुखाकर महीन पीसकर उससे आधी कालीमिरच पीसकर मिलाकर आधा दाम ताजे पानी के साथ खावें—(चूर्ण) रुधिर को बन्द करताहै गेरू, खरिया मिट्टी बराबर आधादाम लेकर दही और चावल के साथ तीनदिन पर्यंत प्रभातको खावें—(अन्य) जमीनकन्द टुकड़े २ करके छायामें सुखावें फिर छीलकर कूटछानकर प्रतिदिन एक दाम निहार खाना गुणदायक है—(अन्य)कुड़ा की छाल, गोपीचन्दन नागेश्वर, रसौत बराबर फंकी बनाकर प्रतिदिन दो टंक खावें—(अन्य) बवासीर की पीड़ा को शांत करताहै पीलेहड़ की छाल घृतमें भूनकर सौंफ एक२भाग कूटकर हालों के बीज साबित दोभाग मिलाकर प्रतिदिन नौमासे एक

चमचा शक्कर मिलाकर खावें—(काढ़ा) कि बवासीर को गुणदायक है करील की जड़ छायामें सुखाकर फिर जब कुटकर तीनसेर जलमें औटावें जब आधसेर शेषरहे साफ़ करके पावभर इस जलमें से प्रभात को और शेष संध्या को पियें सातदिन वह दशदिन में रुधिर बन्दहोजावेगा और बवासीर गल जावेगी—(अन्य) रुधिर को बन्दकरे धवई के फूल एकदाम एक प्याले पानी में भिगो कर ओस में रक्खें प्रभात को बिना मले के छान कर पियें ऊपर से एकदाम शक्कर मिलाकर खावें—(अन्य) आमला मेंहदीकी पत्तियां दश २ दाम डेढ़पाव जलमें रात्रिको भिगोदें प्रभात को साफ़ करके पियें—(औषधि) बवासीर को गुणकरे रूसेकी पत्तियां छायामें सुखाकर कूट छान कर रक्खें और चार पांच बेर प्रतिदिन गुदापर मलें (अन्य) बवासीर को गुण करे भंग की पत्तियां, नींब की पत्तियां, बकायन की पत्तियां, इमली की पत्तियां संभालू की पत्तियां,नील कीपत्तियां, बराबर कूनछानकर औटाकर बफारा दें—(अन्य)बन्दाल औटाकर बफारा लें (अन्य)हाथों पांवों के नाखुन छील कर जलाकर बफारा लें—(अन्य) अरहर की पत्तियां, सिरस की पत्तियां, धवई के फूल, भंग की पत्तियां, लोधबराबर एकदाम औटाकर बफारा लें—(अन्य)भंग की पत्तियां गौ के दूध में पकाकर पहिले उसे खावें फिर पीस कर गुदा के छिद्र पर बांधें (अन्य)गैंड़े का सींग जला कर बफारा लें—(अन्य)कुचला जलाकर उसका धुआँ लें पीड़ा और रुधिर दूरहो(अन्य) गलहरी का मांस सुखाकर कूट कर सुबह और शाम थोड़ा जलाकर धुआँलें—(अन्य)अरण्डकेपत्ते जलमें औटा कर बफारा लें—(अन्य)सन्दरूस का तेल मलना बवासीर को सुखाता है मुख्य करके गन्दने के बीज मिलाकर मलना—(अन्य)जवासे के काढ़े में बैठना बवासीर को गुणदायक है—(अन्य)झलझलकी पत्तियां औटा कर उससे

शौच करें और झलझल का साग दही के साथ खाना बवासीर के रुधिर को बन्द करता है—(अन्य)अस्तंजातेल से बवासीर का गुणकारक है सेंदूर चार मासे, घी एक दाम, फूल के कटोरे में डालकर जैत दूध की लकड़ी से कि उसके शिर पर एक दाम सीसा लगायाहो कजली करैं कि सीसे का असर भी उसमें आजावे और मरहम की रीति पर हो जावे और बवासीर पर मलैं—(वस्मेका तेल)हरेपत्ते नील के कूट कर रस निकाल कर मीठे तेलमें औटावें जब तैलमात्र शेष रहे बवासीर पर मलें—(अन्य) गन्दने का तेल, गन्दने का रस निचोड़ कर उसको एक भाग लेकर अर्द्ध भाग मीठेतेल में औटावें कि पानी जलकर तेल रहजावे थोड़ा यह तेल लेकर थोड़ा उसमें गगल मिलाकर बवासीर पर लगावें—(अन्य)घी, आलू, जरद-आलू के बीजकीगिरीको कन्द के मिलानेकेबिना रौगन बादाम की सदृश तेल निकाल कर बवासीर पर लगावें (अन्य)धतूरे का तेल, मीठेतेल में धतूरे का फल जलावें जब तेल शेष रहे उसमें रुई भिगोकर बवासीरपर बांधें—(बिच्छूका तेल)पथरी और पार्श्व शूल को दूर करताहै और बवासीर को गुण करता है—कई बिच्छू मीठेतेल में डाल कर एक शीशी में भरकर चालीस दिवस पर्य्यंत धूप में रक्खें वह तैल लेकर बवासीर पर लगावें—(अन्य)घीदुबरा बवासीर पर मलना पीड़ा को शांति देता है—(लेप) पांच छःतोले सीसेका एक दस्ता बनावें और एकदाम बिनौले की गिरी उससे पीसें जब एक दाम के अनुमान दस्ताभी उसके साथ पीस कर औषधि मरहम सदृश होजावे लेप करें—(अन्य)कचनाल, और जामुन, और मौलसिरी की छाल को पानी में औटाकर इस्तंजा करें बवासीर को दूर करता है—(तैल)तूतिया एक मासा, सुल्तानी मिट्टी पांचमासे, सेंदूर दो मासे, मीठातेल दो तोले पीस कर तेल में मिलाकर दिशा के उपरान्त उंगली से बवासीर

परखूब मलें-(अन्य)बवासीरका गुणदायक-आधपावफिट-करी, भून कर घीमें खूब हल करें कि मरहम की भांति होजावे फिर सोये के बीज पानी में पकाकर पीस कर पहिले उसको गुदापर बाँधें फिरवह मरहम रुई में लगा कर गुदा पर रक्खें और प्रभात से संध्या पर्य्यंत और संध्या से प्रभात तक सातदिन बराबर लँगोट कसेरहैं कि सब मस्से बैठ जावेंगे—(अन्य) बवासीर को गुण करे नदमे के पत्ते दो दाम महीन पीसें और मेंहदी आधीदाम पीसकर उसमें मिलावें और घृत में गरम करकेकपड़े पर रखकर गुदा पर बांधें बज़त गुण करे—(अन्य)बादीबवा-सीर को गुण करे ककड़ौंधे के पत्तोंका रस बवासीर पर मलें और उसके ऊपर उसके पत्ते बांधें—(अन्य)हरी कनेर की जड़ पानी में पीस कर थोड़ा मस्सों पर कि दिशा फिरते समय निकल आतेहैं लगावें यद्यिपह औषधि बज़त पीड़ा करतीहै परन्तु अति गुणदायक है—(अन्य) खटमल बवासीर पर मलना बज़त गुण करताहै—(अन्य) आवज़न बवासीर और उसकी पीड़ाको गुणकरे—जवासा औटा कर उसमें बैठें जोमूज बन्द होगयाहो उसको भी खोल ताहै—(अन्य) ऊंटके चमड़ेपर बैठना मुख्य करके बवासीर कोगुणकरे—(अन्य) उसज़्केके पानीसे कि पीलाहो और दुर्गन्धितहो शौच करना गुणकरे—(अन्य) मदारके पत्तों से मट्टी के बदले गुदाको साफ़ कियाकरें—(औषधियों की गोली) बवासीर को गुणदायक है मस्सोंको तीन दिन में दूरकरतीहै शोरा कलमी, भुनीफिटकरी पीसकर साबून केपानीमें गोलियां बनावें और दिशासे निश्चिन्त होकर प्रभात और संध्या तीन दिन एक गोली गुदामें रक्खें पर-न्तु इस औषधिसे कुछ दुःख होताहै—(औषधि) हरे अरंड के पत्ते पीसकर गुदापर बांधें—(अन्य) बवासीरके खून को बन्दकरे जंगली गोभी का साग पकाकर खावें—(अन्य) बवासीर की जलन को गुणकरे काई गुदा परमलें—(अन्य)

रुधिर बन्द करतीहै आँब की कोंपल पानीमें पीसकर छानकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पियें—(अन्य) कसौंधी दो तोले के अनुमान आधपाव जलमें पीस छानकर दो तीन मासे गेरू मिलाकर पियें—(अन्य) जामुनकी कोंपल दो दाम का शीरा निकाल कर थोड़ी शक्कर मिलाकर पियें (अन्य) गेंदेकी पत्तियां छः मासे से एक तोले पर्य्यन्त और कालीमिरच दोमासे से तीन मासे पर्य्यन्त पीसकर पियें (अन्य) फरीश कि एक वृक्षहै उसकीकोंपल एकटंक थोड़े जलमें पीस छानकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पियें—(अन्य) बवासीर खूनी और बादीको गुण करे—आँबके पत्ते और जामुन केपत्ते एक २ दाम गायका दूध पावभर पत्तों से पानी मिलाने बिना रस निकालें जोन निकले थोड़ा दूध मिलाकर निकाल कर मिलाकर थोड़ी शक्कर डाल कर आठ दिन पर्य्यन्त इसी तरह पियें खटाई और बादी से पथ्य करें—(अन्य) खूनी और बादी बवासीर को गुण करे छिला हुआ चाकसू तीन टंक पीसकर उंगली से लेप करें—(अन्य) छिलाहुआ चाकसू तीनटंक पीसकर डेढ़टंक लालशक्कर के साथ पियें—(अन्य) खूनीबवासीरको गुणकरे बंदाल पुराने गुड़में मिलाकर शाफा करें तीनदिन में गुण करे—(अन्य) हरे आंबके पत्ते मलकर तंबाकू के बदले हुक्के में पियें—(अन्य) कलौंजी जला कर पीसकर मलना गुण करताहै और शहद में मिलाकर गुदामें रखना भी बवासीर कोगुण करे—(अन्य) रेंडी का गूदा बवासीर की पीड़ा को जो बहदाह बिना हो ठहराता है—(अन्य) मेथी का काढ़ा बवासीर को गुण करे= (अन्य) सूखे या हरे गूलर पानी में पीसकर मिसरी में मिलाकर पीना खूनी क़ै, और खूनी अतीसार और खूनी बवासीर और ऋतुके रुधिर को गुणकरताहै—(गुलेसदबर्गका अरक़) जो बवासीर को गुण करे—पाव भर गेंदे की पंखड़ियां दोसेर केलेकी जड़ के रसमें रातको भिगोकर सुबह अरक़ खींचें

दोतोले सुबह और दोतोलेशामको पीना बवासीर और रोग के दूरकरनेके लिये अति गुणकरे—(अन्य) काँच निकलने को गुणदायक, सनके बीज जलाकर काँच पर छिड़कें—(अन्य) काँच निकलने की गुणदायक—अलसी जलाकर गुदाके घावपर छिड़कें—(अन्य) बकरीकासुम यासींग या अंडे का छिलका या कागज़ जलाकर गुदा खुजलाकर छिड़कना घावको गुणकरे—(अन्य)लसौड़ा जलाकर छिड़कें—(अन्य) पुरानी छलनी काचमड़ा जला कर छिड़कें—(अन्य) माजू, अनारकीछाल पीसकर छिड़कें॥

गुरदे और फुकनेके रोगोंका यत्न॥

पथरी और मसाने और मूचके फ़ुकने दोनों मेंकी पीड़ा जगहसे अंतर में मालूम होसक्ती है रेत और पथरी गुरदेमें लाल रंगकी होतीहै और फूकनेमें श्वेत—(यत्न) गाढ़ी चीज़ों सेपथ्य करना अवश्यहै और प्रकृतिको नरम करना इस रोग मेंउचित है—(अंगूर के पत्तों की शरबत) गुरदे की पथरी को गुणकरे सुनके पंद्रह टंक, गोखरू दश टंक, परशिया वशान अर्थात् हंसराज सात टंक, अधकुचले खरबूजे केबीज पांच टंक, सौंफ अधकुचली तीन टंक अंगूरके नरम पत्ते चालीस टंक एक रात दिन जलमें भिगोवें सुबह को जोश देकर तिगुनी शक्कर में शरबत काक़वाम करें—(हजरूल यहूद की फंकी) पथरी और और फुकनी को गुणकरे—हजरू लयहूद तीन टंक तीन टंक खरबूजेकी गिरी, खीरेककड़ी के बीज, गोखरू और कुलथी हरएक दोदो टंक, सौंफ, अजमोद, समग़ अरबी एक २ टंक कूटछानकर फंकी बनावें खूराक दोदाम चने के काढ़े के साथ और जो इन औषधियों को तिगुने शहद के साथ क़वाम करें उसको माजून हजरूलयहूदकहते हैं (गुलदाउदी की फंकी) फुकनी को गुणकरे संगे मसाने को गुणकरेगुलदाउदी कीपंखड़ियांसुखाकरकूटछानकर

शक्कर बराबर की मिलाकर खावें और औटाकर पीना भी गुण करताहै—(अन्य) जवाखार, सुहागा, दोदो मासे गोखरू के शीरे के साथपियें—(अन्य)नींब के पत्ते जलाकर उसका खार निकालकर दोमासे खायाकरें—(अन्य) अंगूर की लकड़ी की राख छः मासे गोखरू के शीरेके साथ खायें—(अन्य)करंजुवेकी कोंपल सुखाकर जलाकर उसकी दोटंक भस्म दो तोले शहद मिलाकर खावें—(अन्य) तिलकी लकड़ी जलाकर उसको दोटंक भस्म एक दाम सिरके के साथ खावें—(अन्य) जंगली कबूतर की बीट दो टंक उसके बराबर शक्कर मिलाकर पानीके साथ फांकें मुख्य उस कबूतर की बीट जिसको दाने के बदले अलसी खिलाई हो—(करंजुवे की गोली) फुकनी और पार्श्व शूल को गुणकरे करंजुवे की गिरी कूटछानकर एक मासे के अनुमान तीन मासे शहद के साथ प्रतिदिन खावें और एकमासा प्रतिदिन अधिक करते जावें ग्यारह वें दिनसे एक मासा कम करना शुरूकरें यहांतक कि तीन मासे पहुंच जावे पार्श्वशूल दूर होजावेगा—(आबजन) इसके दो अर्थहैं कि औषधि का पानी या गरम पानी सदा बड़े बरतन जैसेकिडेग आदिमें भरकर उसमें रोगी को बैठावें दूसरे तरेड़ा कि पानीको लोटे या मशकमें भरकर दूरसे रोगी के अंगपर डालें—(आबेजन) पार्श्वशूल और फुकनी को गुणकरे करंब के पत्ते, मूलीके पत्ते, शलगम के पत्ते तिलके पत्ते, खतमी के पत्ते छः छः टंक, पानी में औटावें जबअर्द्ध शेषरहे आबजन करें—(अन्य आबजन) कबूतर की बीट, सोये के बीज, करंजवा, सौंफकीजड़, गोखरू, खरबूजे की छाल, मेथी, खतमी के बीज अशनान अर्थात् छड़ीला हर एक थोड़ासा यथा विधि आबजन करें—(काढ़ा) कि संगगुरदे और मसाने को तोड़ता है—मुलहठी, कुलथी हरएक तीनटंक, सौंफ दशटंक चार प्याले पानीमें जोशदें जब एक प्याला पानीरहे साफ़ करके तीनमासे लाहौरी

नोन और थोड़ा घी मिलाकर पियें—(अन्य) मुहम्मद ज़करियाने लिखाहै कि जो अंगूर के वृक्षकी कोंपल जोश करें और थोड़ी शक्कर मिलाकर हररोज़ पियें सब गुरदे की बीमारियां दूर होजावें—(अन्य) काहू चने के साथ जोश देकर उसका पानी पियें—(अन्य)जवारिश कलौंजी की) जिसका नुसखा मेदे के रोगमें बर्णन हुआ संगगुरदा और दर्द गुरदा को दूर करताहै—(अन्य) पत्थर फोड़ी कि एक वृक्षहै उसकी पत्ती एकदाम पीसछानकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पियें संगगुरदे की दूरकरनेवाली है और सूखे पत्ते हरों से कम गुण रखतेहैं—(अन्य) संगगुरदे को दूरकरे—और मूत्र जारी करे झाड़ू की सींक के फूल दो तोले लेकर दोपहर जलमें भिगोकर उसका साफ़ पानी लेकर उसमें खीरे ककड़ीके बीज, गोखरू, जवासा छः छः मासे, भंगएक दोमासे पीसछानकर मिलावें और थोड़ी शक्कर डालकर पियें—(अन्य) मूली के पत्तों का रस चार दाम निचोड़कर, अजमोद तीन मासे फाँककर उसी रस से निगल जावें—(अन्य) संगगुरदे और मसाने को गुण-दायक—पूये की पत्ती महीन पीसकर पियें—(अन्य) चौ-लाई का साग खाना पथरी को गुणकारक है—(अन्य) यदि दर्द गुरदा वायुसेहो रेंडी की गिरी पीसकर गुन गुनी लगावें—(आबज़न) पथरी को गुणदायक तिलकी पत्ती पानीमें औटाकर रोगीको उसमें बैठावें—(औषधि) उस दर्द गुरदे को गुणकरे जो सरदी से हो पांच दाने इस्पन्द के निगलना शुरू करें और हर रोज़ पांच दाने बढ़ावें जब सौ दाने होजावें पांच२ दाने प्रतिदिन कमकरें पार्श्वशूल दूर होजावेगा—(अन्य) यदि तिल के वृक्ष की कोंपल छायामें सुखाकर जलाकर दोतीन टंक खायाकरें संगगुरदा दूरहोजावे—(अन्य) जवासे का अरक़ गुरदे की बीमारी को गुणकरे ऋतु के रुधिर की रुकावट को भी दूर करताहै—(अन्य) तिलकी का तेल जो शीत की पथरी

और मसाने और गुरदे की पीड़ा के लिये उसका मर्दन करना लाभदायक है उसका नुसखा फालिज के रोग में वर्णन हुआ—(लाभ) जालीनूसने कहाहै कि लोहे की अंगूठी या छल्ला पहिनना मुख्य करके पथरी के रोग को गुणदेताहै॥

सोज़ाक का यत्न॥

उसमें ऐसी ठंढी औषधियों का सेवनकरें कि मूचलावे और सब लुआब मूचकी चिनग को गुण करतेहैं॥
(बीजों की गोलियां)मूच की चिनग को गुण करती है खुरफे के बीज, सफेद खश खाश के बीज, खीरे ककड़ी के बीज, खरबूजे के बीज, तरबूज के बीजों की गिरी, पांच२ टंक छोटा गोखरू, समग़अरबी,कतीरा दो२ टंक, इसब-गोलके लुआबमें गोलियां बनावें खुराक तीन मासे(गोली) पेशाब की चिनग के लिये वहरोज़ को गलाकर पानी में डालें और उसके बराबर कतीरा और भूनेछिले चनेपीस कर मिलावें और चने की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली गोखरू के शीरे के साथ खावें—(गोली) सोज़ाक को गुण करे पियाबाँसे का छोटा टुक्ष जलाकर उसकी राख कतीरेके पानीमें मिलाकर चनेकी बराबर गोलियां बनावें हर सुबह एक गोली गुलखैरू के जल से कि रात को भिगोया हो पियें नये और पुराने सूज़ाक को गुण करती है—(चूर्ण)सूज़ाकको गुणकारक संगजराहत, राल मिसरी दो दो तोले, तालमखाना, गोखरू, सरयाली एक २ तोला कूट छान कर चौदह भाग करें प्रतिदिन एक भाग बकरी के दूध के लस्सी के साथ फाँकें—(अन्य) सूज़ाक को गुण करे और पीप बन्द करे भुनी फिटकरी, गेरू, एक एक टंक, शक्कर बराबर लेकर चूर्ण बनावें और प्रतिदिन सात मासे गाय के दूधकेसाथ खावें—(आजमाई हुई औषधि)ठंढे स्वभाव के सूज़ाक को गुण करे सहंजने का गोंद हर सुबह एक तोला पीसकर सातदिनदही के

साथ खावें—(चूर्ण)सोज़ाक को नाश करे तालमखाना, खुरफे के बीज, सरयाली, गोखरू, काहू के बीज, संगजराहत, बराबर लेकर चूर्ण बनावें—खुराक एक तोला गायके दूध के साथ—(अन्य,सूज़ाक की पीप को बन्द करने के लिये कतीरा, भंग के बीज, सरयाली, राल सफेद, काली बीजबन्द लाल बीजबन्द, बराबरलेकर चूर्ण बनावें खुराक दो टंक—(अन्य)सूज़ाक को लाभ करे हल्दी, आमला बराबर कूट छान कर उसकी बराबर शक्कर मिलावें खुराक एक तोला पानी के साथ नबीन सूज़ाक को एक सप्ताह में दूर करताहै और जो रहजावे चाहिये कि दो महीने सेवन करें—(अन्य)सोज़ाक की पीप को चिनगके रहजाने के उपरांत बाकी रहेगुणकरेराल पीसकरउसके बराबर मिसरी मिलाकर तीनटंकरोज खावेंअठारहदिन तक—(अन्य) सोज़ाककोगुण करताहै और पीपको नाश करताहै ढाककी कोंपल सुखाकर ढांकका गोंद ढाककी छालढाकके फल कूटछानकर उसके बराबर शक्कर मिलाकर दोमिस्कोल हररोज दूध के साथ खावें आज़माया हुआ है—(अन्य)सोज़ाक के लिये आज़माया हुआ है शोरा कल्मी, लाल इलायची एक २ दाम कूट छान कर छः भाग करें एक हिस्सः सुबह और एक शाम खाया करें और चौथे दिन से इसी तरह खावें कि दोतीनदाम साठी के चावल के जल में भिगोवें और सुबह को उसके पानी के साथ खावें तीन दिन पर्य्यंत—(अन्य) ताजखरूस कि एक वृक्ष है उसे हिन्दी में मुरग का केश कहते हैं उसके बीज एक तोला दो तोले कन्द में चूर्ण बनावें और हर सुबह बीस दिन पर्यंत खावें—(अन्य)बरगद की कोंपल छाया में सुखाकर पीसकर उस के बराबर शक्कर मिलाकर दूध की लस्सीके साथ सुबहको सात दिन तक खावें—(औषधि)दो तोले निशास्ता एक प्याले पानी में रात को घोल दें सुबह निहार पियें—(औषधि)मेंहदी के

पत्ते, आमला, सपेद ज़ीरा, धनियां, गोखरू, एक२ तोला जव कुट करके रात्रि को भिगोदें सुबह साफ़ करके एक तोला भर शक्कर मिलावें पहिले तीन मासे कतीरा कूट छान कर खावें उसके ऊपर यह कल्कपियें—(अन्य) छिले चने पाव भर, टेसू के फूल, ज़ीरा सपेद, दो दो दाम सब को एक सेर जल में आठ पहर भिगोवें आध पाव उसका पानी सुबह को और उतनाही संध्या को पियें जब पानी कम होवै और डाल दें—(अन्य)फालसे की जड़ एकदाम जब कुट करके पानी में भिगोदें सुबह मलकर साफ़ करके थोड़ी शक्कर मिलाकर पियें—(अन्य)अधकुचली आंब की छाल दो दाम रात को पाव भर जल में भिगोदें सुबहको मल कर छान कर एक सप्ताह पर्य्यंत पियें—(अन्य)नये सोज़ाक को गुण कारक फनीश्फली दो तोले रात को पानी में भिगो दें सुबह छान कर थोड़ी शक्कर मिलाकर पियें—(अन्य)नये सोज़ाक के लिये सदा सुहागन वृक्ष के पत्ते एक तोला रात्रि को जल में भिगोदें सुबह मलकर छानकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पियें—(अन्य) कुहलतलख़ एक दाम जव कुट करके रातको जलमें भिगोरक्खें सुबह को उसका स्वच्छ जल लेकर आठ दागसुरमकी रात को पानी में भिगोरक्खें सुबह को उसका साफ़ पानी लेकर थोड़ी मिसरी मिलाकर पियें—(अन्य)रीठा एक तोलेभर रात को भिगोरक्खें सुबह को उसका साफ पानी लेंकर पियें—(काकुंज की कुरस अर्थात् टिकिया)सूज़ाक गुरदे और मसाने के घाव को गुण देतीहै और मूत्र को जारी करती है काकुंज चार टंक, खीरे ककड़ी के बीज, खुरफा मुलहठी छिलीउड़द अधकुचली, खशखाश, सपेद हर एक तीन टंक, कतीरा, समग़ अरबी, गेरू दो२ टंक, अजमोद एक टंक, अफ़ीम आधी टंक, कूट छान कर इसबगोल के लुआबसे टिकियाबनावें खुराकएकदाम—(काढ़ा)सोज़ाक का गुणदायक— सांबाहल्दी जोशदेकर पियें —(अन्य)

सोज़ाक औ सुज़िकल से पेशाब उतरने को गुण कारक काड़र के बीज सात प्याले पानी में औटावें जब एक प्याला शेष रहे साफ़ करके इसी तरह तीन दिन पियें (अन्य) सोज़ाक को लाभदायक गुड़हलके फूल पहिले दिन एक बतासे के साथ खावें इसी प्रकार चार दिन पर्य्यन्त एक २ अधिक करें पांचवें दिन से एक २ कम करें कि एकहीरहे जो ईश्वर चाहेतो सोज़ाक दूरहोजावेगा (अन्य) सोज़ाकके लिये गुण कारक है नींबके पत्ते, चंबेलीके पत्ते औटाकर उसके गुनगुने जलमें लिंग को रक्खें और उसका बफ़ारालें आध घड़ी के उपरांत उसमें मूत्र करें इसी तरह हररोज़ तीन बेर करें—(अन्य) सोज़ाक को गुणदायक सदयारा अर्थात्तुखमताजखरूसजिसे हिन्दी में कलगा कहतेहैं तीन टंक महीन कूटकर आधसेर दूधमें रातको चाँदनी में रक्खें सबहको पियें सोज़ाक और प्रमेहको गुण करे और वीर्यको पुष्ट करताहै परन्तु थोड़ी शक्कर मिलालेना उचित है कि शक्कर सद यारा की जुज़है (अन्य) चिनगको गुणकरे—केलेके वृक्ष का रस निचोड़कर पियें—(अन्य) सोज़ाक को दूर करे जोंक एक हिन्दी वृक्ष है कि बड़धा बरसात में उगताहै उसकी पत्तियां और फल एक तोला लेकर पानीमें पीस छान कर थोड़ी शक्कर मिलाकर पियें—(अन्य) सोज़ाक को गुणकरे दो बतासे लेकर उसमें बरगद का दूधभरकर तीन दिन प्रभात के समय खावें—(अन्य) सात मासे जवाखार गायके दही में पियें—(अन्य) गंदा बिरोज़ा दोरत्ती थोड़े गुड़में लपेट कर खावें और उसके ऊपर दही पानीमें घोलकर पियें (अन्य) सोज़ाक को गुण कारक सिरस वृक्ष के पत्ते पानी में पीसकर अपने स्वभाव के अनुकूल थोड़ी शक्कर मिला कर पियें—(अन्य) बबूल की कोंपल एक तोला, गोखरू एक तोला दोनोंका रस निकाल कर थोड़ी शक्करके साथ पियें—(औषधि) गौका दूध थोड़ी शक्कर और कतीरे को

साथ सदा पीना पुराने सूज़ाक को अच्छा करता है (अमल) स्त्री के सोज़ाक को दूरकरताहै स्त्री एक लत्ता अपनी भगके मल से भिगोकर बच्चेदार कुतिया को तीन दिन पर्य्यन्त खिलावे सोज़ाक को दूरकरे—(पिचकारी) सोज़ाक के उस घावको गुणकरे कि लिंग के भीतरहो (काढ़ा)तूतिया तीन मासे, फिटकरी छः, मासे आधसेर पानीमें औटावें जब आधा रहजावे शीशेमें रखकर पिचकारी लें यदि इस औषधिसे रुधिर आनेलगे तो कुछ चिन्ता नहीं जोपीड़ा अधिक होजावे तो स्त्रीके दूधकी पिचकारी लेलें बाजेइस दवामें एक तोला सफेद कत्था भी अधिक करतेहैं (पिचकारी) मूचकी चिनग को गुणकरे— देकामाली एक तोला तीन तोले कड़ुवेतेलमें पकावें जब खूब जलजावे साफ करकेतेलसे पिचकारीलें (अन्य) सोजाकको गुणकरे कत्था सुरदारसंग, रसौत आधा २ दाम, भुनी तूतिया चार रत्ती यथा बिधिपिचकारीलें—(अन्य)सोज़ाक कोगुणकरे, पीले झड़की छाल, बहेड़े की छाल, आमला एक २ टंक, सब्ज तूतियाआधा दाम सबको कूटकरराचिकोजलमेंभिगोकर सुबह पिचकारी दें—(शाफा)सोज़ाक को गुणकारक कत्था सफेद, सुरदार संग, राल, समग़ अरबी, गेरू, बराबर महीन करके शाफा बनाकर लिंग के छिद्रमें रक्खें और कभी इसमें पीड़ाकी अधिकतासे अफ़ीम अधिक करतेहैं और दाहकी अधिकतामें काफूर बढ़ाया जाताहै लिंगके व्रण को गुण कारक समग़ अरबी, निशास्ता स्त्री के दूधमें घोल कर और इसपगोल का लुआब यह सब लिंग के घावको गुण करतेहैं—(अन्य) तालाबकी काई निचोड़कर उसका थोड़ा जल लिंग के छिद्रमें टप कावें॥

मूत्र के अधिक आनेका यत्न॥

जोमसाने की सुस्ती और सरदी की अधिकतासे हो गरम और कब्ज करनेवाली औषधिदें—(जवारिश) जो

मूच के रोकने वाली है पीलेहड़की छाल, बहेड़े की छाल तिलमें भून कर गुल नार, नागर मोथा दो २ मिस्काल कुंदर, अजवायन, एक२ मिस्काल, अदरक में जवारिश बनायें (जवारिश) सादको फी मूच की अधिकता और निर्बलता और मसाने की सरदी और गर्भाशय को गुणकरे और कोष्ठ और कलेजेको गरम और बातको दूरकरती है नागर मोथा पांच मिस्काल पीसकर सिरके में मिलाकर तीन दिन अदरक में भिगोदें और सुखाकर कूट छान कर पाव भर शक्कर में क़वाम करें—(जवारिश) कुन्दर मूच की अधिकता को गुण करे—कुन्दर, गुलनार एक मिस्काल मस्तगी एक टंक कूट छान कर अदरक में मिलावें खुराक तीन मिस्काल—(कुलीजनकी जवारिश) मूच की अधिकता को गुणकरे इसका नुसखा कोष्ठ की बीमारियोंमें बर्णन होचुका (फंकी) मूच को रोकती है कुन्दर, नागर मोथा काला कुलीजन जीरा बलूतहबुल्लास, धनियां सिरके में भिगोकर सुखावें और पीसकर चूर्ण बनावें खुराक डेढ़ मिस्काल—(अन्य) तिल दोभाग अजवायन एकभाग लेकर चूर्ण बनाकर एक हथेली भर खावें या गुड़ में गोलियां बनावें खुराक आधा दाम—(औषधि) मूचकी अधिकता कोगुणकरे लसौड़केनरमपत्ते एकतोलाभर लेकर उसका रसनिकाल करएकतोलाभरशक्करमिलाकरपियें—(तिला) अधिक मूच को नाशकरे इमली केबीजकी गिरी, सहँजने के पत्तेदोनों पीसकर प्रतिदिननाभिकेनीचे लगावें—(चूर्ण) अधिक मूच आनेको गुणकरे सूखा सिँघाड़ा कूट छानकर शक्कर मिलाकर एक तोला भर खावें—(अन्य) बबूल की कच्ची कली छायामें सुखाकर कूट छानकर घीमें भूनें और शक्कर मिलाकर सुबह और शाम धेला भर खाया करें (औषधि) सोतेमें मूच होजानेको गुणकरे माजू एक तुखम रैहां थोड़ी कूट छानकर खा लें—(अन्य) कुलीजन ठण्ढे पानीके साथ खाना उत्तमोत्तम गुण रखता है—(अन्य)

सोतेमें पेशाब होजानेका गुणकरे कबूतरकी बीट आटे में गूंधकर रोटी पकाकर खावें—(अन्य) नर बकरे का सींग जलाकर शहदमें मिलाकर खाना अधिक मूचके दूरकरने का उत्तम गुण रखता है खूराक दो दाम पर्य्यन्त ॥

मूत्रके बन्द होने का यत्न ॥

इस रोगके उत्पन्न होनेके कारण बहुतहैं यदि मूचका बन्द होना मसाने या गुरदे की सूजनसे हो पहिले बासलीकफसद खोलें उसके उपरान्त वह औषधि कि जिस्से मूच जारीहो सेवन करें—(औषधि) मूच बन्द होजाने को गुणकरे—राई, कल्मीशोरा एक २ मासे, शक्कर बराबर मिलावें यह दो खूराकहैं सुबहको खावें पेशाब जारी होजावे—(औषधि) पेशाब बन्द होजाने को खोले गेंदे की पत्तियां दो तोले पानीमें रस निकाल कर थोड़ी शक्कर मिलाकर पियें—(तिला) मूचको खोले चूहे की मेंगनी दो दाम पानी में पीस कर गुनगुनी नाभि के नीचे लगावें (औषधि) थोड़ा कपूर जलाकर लिंग के छिद्रमें रक्खें मूच खुल जावे—(अन्य) शोरा कल्मी कपड़ेमें भिगोकर नाभि के नीचे रक्खें—(अन्य) मूच खोले पारा दो मासे पिचकारी में रखकर छिद्रके अन्दर पहुंचावें तुरन्त मूच खुलजावे यदि पेशाब बन्द होजाने का कारण शोथ न हो थोड़ा शोरा लिंगके छिद्रमें रक्खें मूच खुलजावे—(अन्य) पांच रत्ती क़लूचा पीसकर पानी के साथ फाँकें मूच खुल जावे (अन्य) भैंस के कान का मैल रोगी के नाभि के नीचे मलें (अन्य) टेसू जोश देकर नाभिके नीचे तरेड़ादें—(लेप) तिपतिया पेड़ू पर लेप करें—(औषधि) पथरचटा अर्थात् बिसखपरेके पत्तोंका रस निचोड़कर दूधमें मिलाकर खावें (अन्य) एक जूं लिंगके छिद्रमें छोड़ें—(अन्य) खटमल पीसकर लिंगके छिद्रमें छोड़ें—(अन्य) रोगीको गरम पानीमें बैठावें—(अन्य) गोखरू, खीरेककड़ी के बीज, सौंफ़,खरबूजे

के बीज पानीमें पीसकर पियें—(अन्य) बकरीके गुनगुने दूधमें लिंग को रक्खें—(अन्य) रेवन्द चीनी सौंफ़के रसमें पीसकर नाभिके चहुं ओर लगावें—(अन्य) सीप पी सकर नाभिके नीचे लगावें—(अन्य) रियाजुल अदबियामें लिखा है कि अण्डे के छिलके को अंदर के परदे से साफ़ करके पीसकर उसकी बराबर शक्कर मिलाकर पियें मूचबन्दको खोलताहै (अन्य) मूंगका दानापानीमेंएकरत्ती रगड़कर पियें (अन्य) लाहौरीनोन गुदामें रखने से मूच खुलताहै और स्वभाव नरम करता है पेठे के बीज पीसकर नाभिके ऊपर लगावें और कौड़ीभर काफ़ू रखावें—(अन्य) सहतूत के रसमें शोरा कलमी पीस कर नाभि के नीचे लगावें (अन्य) एक दाम इन्दरायण की जड़ औटाकर पियें॥

मूत्रमें रुधिरके आनेका यत्न॥

फिटकरी की कुर्स अर्थात् टिकिया बनावें उसका नुसखा यहहै भुनी फिटकरी, बारासिंगेका सींग जलाया-हुआ, कतीरा, गेरू, गुलनार, समग़अरबी एक २ टङ्क कूट छानकर टिकिया बनावें खूराक एक मिसकाल खुरफे के बीजके शीरे के साथ और यह टिकिया सोज़ाक को भी गुण करती है—(औषधि) रुधिर के मूचके लिये आज़माई हुईहै इक्कीस दाने चाकसू के महीन कूटकर खावें उसके ऊपर चन्दन बूरे का पानी कि उसमें भिगोया हो पियें (अन्य) जवासा पीसकर पियें गुण करेगा—(आबजन) रुधिरके मूचको गुणदायक है और मूचकी अधिकता को बन्द करता है अनार की छाल, छिलेमसूर, पक्कीबबूलकी फली, अलतीस, बाजरा, चन्दन हर एक थोड़ा २ लेकर पानीमें औटावें जब आधा रहे उसमें बैठें॥

नपुन्सकता का यत्न॥

अर्थात् वीर्यका कम होजाना अधिक वीर्य आजाय-

रईसा अर्थात् मन ब्रह्माण्ड और कलेजेकी आरोग्यता और कोष्ठ और गुरदे के बलसे होता है इस जगह कई सुगम औषधि इस रोगकी गुणदायक वर्णन कीजाती हैं (माजून) जो वैद्योंकी बनाई हुईहै वीर्यको बल देती और मनीको गाढ़ा करतीहै और वीर्यको गर्भके लायक करती है और स्तम्भन करतीहै और हर्ष करतीहै निबोले कड़-कीगिरी, खरबूजेके बीज, चिरौंजी, तिल, खशखाश सपेद सेमलका मूसला, मूसलीसपेद, शतावर, असगंध, सिंघाड़े का आटा, इमलीके बीज छिलेहुये, लसौढ़ा एक२ तोला केवड़ेकेबीज, प्याजकेबीज, शलगमके बीज, मूलीकेबीज, बङ्ग फली, तालमखाना भुनाहुआ, समुद्रशोष, मैदालकड़ीनौ२ मासे, कुलीजन, चीनियांगोंद, नागरमोथा, तज, कोंचकेबीज छोटागोखरू, इन्द्रजौ मीठे, बबूलकीफली, कंवलकीगिरी धवईकेफूल, सेमलकागोंद, बीजबन्द, मोचरस छः छः मासे भुनी इस्पन्द गुजराती, उटंगनके बीज, अकरकरा, सोंठ पीपल, खुरासानी अजवायन तीन २ मासे कूट छानकर तिगुने कन्दमें क़वामकरें और जो बादामकी गिरी और पिस्ता और चिलगोजा अखरोटकी गिरी तोला २ भर भंग दो तोले इस औषधिमें डालें तो उत्तम है नहीं तो ग़रीबोंके वास्ते इतनाही बहुत है खुराक एक तोला उस दूधके साथ जिसमें खुरमा जोश दी हो—(किशमिश की माजून) वीर्यको बल देती और वीर्यको पैदा और गाढ़ा करती है मोचरस, सालिब मिसरी, समुद्रशोष, काली-मूसली, सपेद मूसली, बादामकी गिरी पांच२ टङ्क, शता-वर, दश दाम, सोंठ, कुलीजन आधा २ दाम, किशमिश आधसेर, कन्द एक सेर यथाविधि क़वाम करें खुराक दो तोले से तीन तोले गौके दूधके साथ जिसमें खुरमा जोश दियाहो—(मालकँगनीकीमाजून) वीर्यको बलदेतीहै माल कँगनी, अकरकरा, केवड़ेके बीज, लौंग, केसर एक२ दाम इस्पन्द सपे दआधा दाम, खशखाश, सपेद पांचटंक तिल

चार दाम, मुरगके अण्डेकी ज़रदी पांच शहद और चौगुने कन्दमें यथाविधि माजून बनावें—(दूसरानुसख़ा)माल कँगनी की माजून जो हिन्द की रीति पर है मालकँगनी भँगरे के रसमें भिगोकर गायके दूध और जलमें औटावें जब दूध सूख जावे पीसकर बराबर शक्कर लेकर माजून बनावें आधा टङ्क पहिले दिन खावें और प्रतिदिन आधा टङ्क अधिक करके आठ टङ्क पर्य्यंत पहुंचावें और चालीस दिन पर्य्यंत खायाकरें बूढ़ेको जवान करती है माजून जो बल करती है अकरकरा, लौंग, सोंठ दोदो तोले, पच्चीस मुरगोंके अण्डेकी ज़रदी एकसौ बीस टङ्क शहदमें क़वाम करें खूराक चार दाम भोजन के पहिले—(माजून) सपेद पियाज़का रस एक सेर शहद एक सेर अग्नि पर रक्खें जब क़वाम होजावे तो दरी सुर्ख और सपेद सालिब मिसरी, बहमन सुर्ख औरसपेद सोंठ, पियाज़केबीज, मूलीके बीज, गंदना, शलगम के बीज, तालमखानासपेद, और काली मूसली, एक २ सेर शाही कूट छानकर यथाविधि माजून बनावें—(पेठेकीमाजून) तत्काल बीर्य गिरनेके वास्ते अद्वितीय है और बीर्यको भी पुष्ट करतीहै खरबूजेके बीज सपेद मूसली, पेठेकी मिठाई आध २ पाव, घीकुआर के पट्ठे दो, कबाब चीनी छः मासे सबको महीन पीस कर आधसेर सपेद कन्दमें क़वाम करें खूराक एक तोला (लहसुनकीमाजून) शीतल स्वभाव वालों के बीर्य को बल देतीहै और फालिज और लकवेको गुण करती है लहसुन को दूधमें ऐसा औटावें कि दूध सूखजावे फिरउसको घीमें भूनें और शहद के साथ माजून बनावें—(माजून) तत्काल बीर्य गिरने को गुण करती और पतले बीर्य को गाढ़ा करतीहै और पौष्टिक है पीलेहड़की छाल, बहेड़ा आमला, भुना खुरमा, सालिबमिसरी, मेदालकड़ी, गोखरू सपेद मूसली, औरकाली मूसली, बालछड़, कौंच के बीज सूखा सिँघाड़ा, कँवलगट्टेकी गिरी, लसौढ़ा, मीठेइन्द्रजौ

दूमलीके बीज की गिरी दोदो टङ्क, गुलनार, शहदाना काली अजवायन, हबुल्लासका जीरा, धनिया, बंशलोचन बरगदकीकोंपल, मस्तगी, शाहबलूत, बीजबन्द, सरयाली लोध, इस्पन्दभुनी एक २ टङ्क, तज, असगंध, भुना तालमखाना, समुद्रशोष, चीनियांगोंद, नागरमोथा, धवईकेफूल मोचरस, शतावर, बबूलकीफली, केवड़केबीज, एक२ मिसकाल, कन्द तिगुना—(कड़काचूर्ण) वीर्यका पौष्टिक और गर्भ देनेवालाहै कड़ दोटङ्क, कालेतिल सातटङ्क, खशखाश सपेदपाचटङ्क, निबौलेकीगिरी, तज, इन्द्रजौमीठे चार२ दाम, मिश्री सम्पूर्ण औषधियों की बराबर खूराक एक तोला गौके दूधसे—(पीपलकाचूर्ण) कि बीर्यको बल देताहै एकसेर पीपलको दो सेर दूधमें औटावें जब दूध सूख जावे पीपलको सुखाकर पीसकर प्रतिदिन एक दाममें छः दाम मिसरी मिलाकर दूधके साथ खावें—(चूर्ण) बीर्य को बल देताहै और उस को पैदा करता है सेंभल का मूसला महीन पीसकर उस के बराबर शक्कर मिलाकर प्रतिदिन एक तोलेभर गौके दुग्धके साथ खावें—(अन्य) प्रमेह के लिये अद्भुतहै गोखरू पांचटङ्क, सिँघाड़ा, साठीकेचावल कँवलगट्टे कीगिरी हरएक तीनटङ्क, तालमखाना दो टंक मोचरस, समुद्रशोष, सरयाला, बीजबन्द एक२ टंक सम्पूर्ण औषधियोंकी बराबर मिलाकर चूर्ण बनावें खूराक एक तोला—(अन्य) मनीकोगाढ़ा करतीहै कच्ची बबूलकीफली मोलसिरीकी छाल, शतावर, मोचरस बराबर लेकर बराबरकी शक्कर मिलाकर हथेली भर खावें—(अन्य) पतली मनीको जमाती है बरगदकी कोंपल, गूलरकी छाल बराबर लें और सपेद शक्कर बराबर मिलाकर एक तोले भर दूधके साथ खावें—(अन्य) बीर्यकी पौष्टिक पिस्ता दोतोले मिसरी दो तोले, पिसीछुई सोंठ छः मासे सबको मिलाकर प्रतिदिन एक तोलाभर शहदमें मिलाकर एक रत्ती भंग महीन पीस कर उस पर छिड़क कर तीन दिन खावें

(अन्य)तत्काल बीर्य गिरनेको गुणकरे बबूलकी कच्चीफली छायामें सुखाकर तालमखाना चीनियां गोंद छिलेजुये भुने चने बराबर लेकर बराबर मिसरी मिलाकर हररोज एक हथेली भर खावें—(अन्य) मनी को गाढ़ा करे और शीघ बीर्य पातको गुणदायकहै खिरनीकेदरख्तकी छाल तज, मेदालकड़ी, सबके बराबर शक्कर मिलाकर एकतोला भर गायके दूधसे खावें—(अन्य) चीनियांगोंद, बड़फली बराबर पीसकर एक तोलाभर हर रोज दूधके साथ चालीस दिनतक खावें—(अन्य) बीर्यके शीघगिरनेको गुण कारक है सिरसके बीज, पलासके बीज बराबर कूट छान कर बराबर की मिश्री मिलाकर एक तोलाभर आध सेर गायके दूधके साथ खावें अत्यन्त गुणदायक है—(अन्य) बन्दकुशाद को गुण करे और मनी को गाढ़ा करता है तालमखाना , सरयारा , असबन्धगौरी , समुद्रशोष मोचरस बराबर कूटछानकर बराबरकी शक्कर मिलाकर एक हथेली भर खावें—(गोली) पतली मनीको गाढ़ी करे और शीघ्र बीर्य पातको गुणकरे इमलीके बीज तीन चार दिन पानीमें भिगोदें फिर उसकी काली छाल दूर करके पीसकर बराबरकी सपेद शक्कर मिलाकर चनेकी बराबर गोलियां बनायें खूराक दो गोली—(चूर्ण) प्रमेह और शीघ बीर्यपातको गुणकारक बबूलकी छाल, बबूलकीफली बबूलकागोंद, बबूलकी कोंपल बराबर कूट छानकर शक्कर मिलाकर चूर्ण बनावें खूराक एक तोला भर—(दूसराचूर्ण) पतली मनीको गुणदायक गूलरके उस वृक्ष की छाल कि उसके रेशे पृथ्वीके अन्दर हों गोखरू, तालमखाना, कँवल गट्टेकीगिरी हरएक पांच तोलेभर बड़फली, मखाना, बीज-बंद, सरयाली, चीनियां गोंद हर एक तीनतोले कूटछान कर चूर्ण बनाकर एक हथेली भर गाय के दूध के साथ खावें—(अन्य) वीर्य के पतले पन और जलदी मनी गिरने को गुणकारक कच्चे कोंचकेबीज छायामें सुखाकर महीन

पीसकर तीन टंक पावभर गाय के दूध के साथ औटा-कर खावें—(अन्य) लिंग के छिद्र को गुण करे समुद्रशोष अजवायन पांच २ दाम, जलानेवाली इस्पन्द तीन दाम कूट छानकर सुबह और शाम एक दाम भर पानी केसाथ फांकें खटाई और बादीसे पथ्य करें—(अन्य)प्रमेह को गुणदायक है झलझल के बीज तीन दाम, बीजबंद तीन दाम, तालमखाना, इन्दरजौ मीठे, छोटा गोखरू हर एक छः छः दाम, लसौड़ा चौबीस दाम, शक्कर औष-धियों की बराबर कूट छानकर चूर्ण बनावें—(अन्य) स्तंभन के वास्ते गेंदे के बीज एकदाम उसके बराबर शक्कर मिला कर खावें—(अन्य) पतली मनी को गुणदायक है समुद्र-शोष, तालमखाना, तुखमरैहा हर एक पांच टंक कूट छानकर चूर्ण बनाकर आधा दाम निहार खाया करें खटाई और बादीसे पथ्य करें—(अन्य) वीर्य के शीघ्र गिर-ने को आँब का गोंद दो दाम, कालीमूसली और सपेद मूसली,मोचरस हर एक आधा दाम काकिनार एक भंग दो मासे खूराक एक तोलाभर गायके दूधके साथ—(अन्य) मनीको गाढ़ा करतीहै और मनीके बहाव और प्रमेह को गुणकरे सूखा सिंघाड़ा, चीनियां गोंद,समुद्रशोष हर एक दो २ भाग,बीज बन्द, मोचरस,तालमखाना, गोखरू कोंचके बीज, धनियां,मैदालकड़ी एक भाग काहू के बीज आधा भाग बराबर शक्कर मिलाकर एक तोलाभर खावें (अन्य) शीघ्र वीर्यपात को गुणदायक बरगद की कोंपल चीनियां गोंद, खिरनी की जड़की छाल, लसौड़ा, बङ्ग-फली, शतावर बराबर कूट छानकर चूर्ण बनावें खूराक एक तोलाभर गाय के दूध के साथ—(दूसरा चूर्ण) प्रमेह और मनीके बहाव को गुणदायक है बबूलकी कच्ची फली तीर दाम,छोटी दुद्धी जड़ और पत्तों समेत छायामें सुखा कन पीसकर उसकीबराबर कन्द मिलाकर चूर्णबनावें—(अन्य) पतली मनी को गुणदायक और बीर्य को बलदे ढाक

के दरख्त की छाल और गोंद गूलर के दृक्ष की छाल और गोंद सेंभल के दृक्षका मूसला और गोंद मोलसिरी की छाल भुने चने बबूल का गोंद बराबर लेकर चूर्ण बनावें खूराक चार टंक—(अन्य) प्रमेह को गुणकारक और बीर्य को पुष्ट करे काली और सपेद मूसली, तालमखाना, कौंचके बीज, उटंगन के बीज, मोचरस, ऊंटकटारू के जड़कीछाल, लाल और काला बीजबंद, बज्र, फलीकमरकस साठीके चावल, शतावर, समुद्रशोष, मीठे इन्दर जौ एक २ टंक, सिंघाड़ा डेढ़ टंक, सपेद शक्कर बराबर लेकर दो टंक गाय के दूध के साथ खावें—(हलवा) पतली मनी को गाढ़ाकरे—आमलेके बीज छिले हुये, ढाकका गोंद, निशास्ता एक २ तोलाभर, लाल शक्कर तीन तोलेभर, घी चार तोला, घी गरम करके निशास्ता भूनकर इमली के बीज और गोंद पीसकर मिलाकर हलवा बनावें खूराक एक तोले से दो तोले पर्य्यन्त—(चूर्ण) मनी के बहने को गुणदायक तालाब की काई फिटकरी पर रखकर आग पर चढ़ा कर जलावें और उसकी राखमें बराबर शक्कर मिला कर चार मासे हर रोज़ खाया करें—(अन्य) बरगद का फल सुखाकर गायके दूधके साथ खावें पतली मनी गाढ़ी होतीहै—(गोली) बीर्य के स्तम्भन के वास्ते खशखाश, भुनी इस्पन्द, शिंगरफ, गोखरू, कुचला जलाकर बराबर कूटछानकर उस पानीसे जिसमें खशखाश का पोस्ता भिगोया हो गोलिया बनावें और चार घड़ी भोगके पहिले एक गोली खावें और ऊपरसे एकप्यालाभर दूधपियें—(गोली स्तम्भनकी अजवायन पांच मासेभर, कहूके बीजों की गिरी छःमासे, इसबन्दनौमासे, भंग के बीजआठमासे, भुनेचनेसात मासे, अफीम तीन मासे, केसर चाररत्ती, इलायचीके दाने एक मासा, खशखाश के पोस्ते २ यह सब औषधि कूटछान कर उस पानीमें जिसमें पोस्ते भिगोयेहों गूंधकर जंगली बेरकी बराबर गोलियां बनावें समय पर एक गोली खावें

जो अधिक गर्मी करे कद्दूके बीजों और तरबूजों और खुरफेकेबीजोंका रस पिये—(गोली) स्तम्भन की हकीम उलबीखां का नुसखा इसमें यह उत्तमता है कि अफीम नहींहै अकरकरहा एक दाम, रेहांके बीज आठ दिरम सपेद क़न्द,नौदिरम कूट छान कर गोलियां बनाकर एक दिरम खायें लिखाहै कि जब तक नीबू का पानी न पियें वीर्यपातनहोगा—(गोली) वीर्यको रोकतीहैभुनी इस्बन्द काफूर, मुरमक्की, अजवायन, बराबर कूटछान कर अदरक के जलमें चने की बराबर गोलियां बनाकर मैथुन से पहिले एक गोली गाय के दूध के साथ खायें—(गोली) कि जो रेचें की बराबर बनाकर लिंग के छिद्रमें रक्खें स्तम्भन करे खूबकलां सपेद, साफ़की छुई मिसरी, काफूर, काली मिरच,और मेंडक के सिरको खूबनिचोड़ें जो कुछ निकले सीपसे खुरच कर उठालें—(गोली) बैद्यक की आजमाई छुई है बीर्य को बल देतीहै और भोग करने के उपरान्त कान नहीं लाती और वीर्यको रोकतीहै जलानेका इस्बन्द पांच टंक आधा कच्चा आधा पक्का, पोस्ता, काले तिल दो २ दिरम,गुड़ २० दिरम तीनों औषधि कूट छान कर पुराने गुड़ के साथ कूटें जब मिलजावे सात भाग करके हर भाग की एक गोली बना कर रक्खें और सम्भोग के समय एक गोली खावें—(गोली) बीर्य के शीघ्र गिरने और प्रमेह को गुणकारीहै छिले इमली के बीज, छिले बबूलके बीज, तालमखाना, सेवल की बौंड़ी, छिले सिरसके बीज उटंगन, भंग के बीज बराबर लेकर भँगरे के रसमें खरल करके काली मिरच की बराबर गोलियां बनावें खुराक छःमासे दूधके साथ—(गोली) प्रमेहको गुण करती है धतूरेकेबीज छःमासे,कालीमिरच छःमासे कूटछानकर काली मिरचकी बराबर गोलियां बनाकर हर सुबह एकगोली एक तोलेभर सौंफ के रसके साथ खावें जो बीमारी पुरानी हो एक दिनमें आराम होताहै—(गोली) बीर्यको बलकरे

ताज़ा केचुवा साफ़ और सुखाकर छः दाम अजवायन दो दाम कूटछानकर चार दाम गुड़ मिलाकर एक२ तोले की बराबर गोलियां बनाकर इक्कीस दिन खावें खूराक एक गोली—(गोली) पौष्टिक कसौंधीकी छाल महीन पीस कर शहदमें मिलाकर गोलियां बनावें और दोदाम खाकर ऊपर से एक प्याला भर दूध पियें—(गोली) वीर्य को बल करे—काले धतूरे के फूल सुखाकर चनेकी बराबर गोलियां बनायें खूराक एक गोली (गोली) मनीको गाढ़ा करती है और वीर्य को बल देती है छोटी दुद्धी छाया में सुखाकरपीसकरजंगलीबेरकीबराबर गोलियां बनावेंऔर सुबह को एक गोली गाय के दूधमें खावें—(गोलीपौष्टिक) नकछिकनी, काली मूसली,शतावर, कोंचके बीज,उटंगनके बीज, जंटकपटेकी जड़, मालकंगनी, गुड़ बराबरकूट छान करअदरककेरसमें जंगलीबेरकी बराबर गोलियां बनाकर हररोज एकगोली गायके दूधके साथखायें—(गोली) सुगम उपाय—वीर्य को बलदे गुड़, काले तिल दो दाम, असगंध नागौरी चारदाम, दो दामकचेदो दाम भुने कूटछानकर चौदह गोलियां बनाकर एक गोली प्रतिदिन खावें (चूर्ण) जो प्रमेह को गुणदायक है—(चिफला) बबूलके फूल हल्दी बराबर लेकर मिसरी सबसे आधी संयुक्त करके कूटछानकर चूर्णबनावें तीनदिरमगायके दूधमेंखावें—(चूर्ण) वीर्य को बलदे अजवायन की भूसी आधसेर, मूलीके बीज भुने चने, जरदक के बीज, काले तिल पाव २ भर कूट छान कर चूर्ण बनावें और हर रोज एक तोलाभर खावें—(औषधि) नक छिकनी, काली मूसली, सपेद मूसली, सोंठ, बराबर लेंकर चूर्ण बनाकर हर दिन आधा दिरम गाय के दूध के साथ खावें—(अण्डे का हलवा) वीर्य को ताक़त दे मुरगेका अण्डा, बतासा, और दो दिरम घी लेकर खूब तलकर के कोलोंकी आगपर रक्खें और चमचेसे हिलाते रहें जब पकजावे ठण्ढा करके खावें— (शकर कंद का

हलवा)मनी को पैदा और गाढ़ा करता है हरी शकर कन्द खुश्क करके कूट छानकर घी और शक्कर मिला कर हलवा बनावें बाजे भुनी शकरकन्द को घी में मिलाकर हलवा बनातेहै—(सिंघाड़े काहलवा) मनीको गाढ़ा और पैदा करताहै सूखा सिंघाड़ा पीसकर शक्कर और घी में बनायें—(औषधि) लिंग छिद्रके तंगहोनेके वास्तेढाकके वृक्ष की कोंपल जो खुली नहो वह पत झाड़ के पीछे मिलती है जितनी हो नरम कूटकर छः बर्ष के पुराने गुड़ में या जितना पुरानाहो उत्तमहैपीसकर अखरोटके बराबरचार दिन खावें—(अन्य) वीर्य की पौष्टिक भुने चनेकी दाल उस के बराबर छिले बादाम लेकर हर सुबह और शाम खाना अति पौष्टिकहै—(अन्य) जो ठण्ढे मिजाज़ वाला शीत ऋतु में इसको खावें बीर्य में बल और आरोग्यता की रक्षा और पाचन को हर प्रकार से गुणदायक है, पारा हर दिन एक कौड़ी भरखाना शुरू करकें एक दांग तक पहुंचावें और निगल कर ऊपरसे यखनी पिये—(अन्य) वीर्य का बल कारक— चिलगोंजे की गिरी मीठे सुनके उत्तमो त्तम औषधिहै इन दोनों को जलमें एकरात दिन भिगोकर थोड़ी शक्कर मिलाकर खावें—(अन्य) अधिक पौष्टिक है जंटकटारे के जड़की छाल एक दाम के बराबर लेकर कुचल कर पोटली बाँधकर आधसेर दूध और आधपाव पानी में उबालें जब पानी सूखकर दूध रहजावे साफ़ करके मिठाई मिलाकर पियें और जो उसमें दो तीन छुहारे डालें तो अधिक बलकारक होजावे—(अन्य) शहद उबालें और कफ उसका निकाल कर मूलीके बीज पीसकर उसमें मिलाकर सुबह और सोते वक्त खायाकरें (अन्य) कि बीर्य को बलकरे ढाककी जड़ एक पावलेकर दोतीन सेर पानीमें उबालें जब आधा पानी जलकर शेष गाढ़ा होजावे उसमेंसे थोड़ा लेकर पान के साथ खाया करें—(अन्य) कफकी प्रकृति वालोंके बीर्य को बलदे शहद

मिलावा, गाय का घी बराबर क़वाम करके खुराक प्रकृतिके अनुकूलदें—(अन्य) वीर्यकी पुष्टिकेलिये जा छःमहीने खावें सब तरह से प्रभाव करे जंगली सहँजने का वृक्ष जो नर्म और छोटाहो उसकीजड़ लेकर टुकड़े २ करके छाया में सुखावें और अजवायन की भूसी और छिले उर्द तीनों को बराबर लेकर उसके बराबर गुड़ मिलावें और अखरोट के बराबर गोलियां बनाकर हर सुबह एक गोली खावें—(अन्य) गुड़हल के फूल सुखाकर कूट कर कन्द में मीठा करके चालीस दिवस पर्य्यन्त दो मिस्काल रोज खाया करें—(अन्य) चार दाम असगन्ध कूटछानकर एक सेर दूधमें औटावें और दश दिरम मिश्रीमिलाकरदोनों समय खावें बदनका रंग लाल होजावे और तैयारी और वीर्य अधिकहो—(अन्य) जो मैथुन के उपरांत खायें कम ताक़ती न होवे--खैरुल तिजारब में लिखाहै कि जो मैथुन के अनन्तर चार दाम गुड़खावें निर्बलता न होवे (अन्य) वीर्यको बलकरे—सिंघाड़ा हरदिन गायके दूध में खावें—(अन्य) वीर्यको पुष्टकरे अरण्डकी कोंपल आधपाव मांस आधसेर दो प्याला पकाकर तीनदिन तक खावें (अन्य) खशखाश दो तोले, शहद चार तोले, सोंठ आधा दिरम कूटछानकर मिलाकर चालीस दिन खावें—(अन्य) गोखरू, शक्कर, गायका घृत सबकोकूटकर मिलाकर खायें और उस के ऊपर गाँय का दूध पियें—(अन्य) भूख और वीर्य को बलदे आमलासार गन्धक लेकर बिषखपरे के रस में इतना खरल करें कि गाढ़ा होजावे सो हरदिनएक चावल के बराबर पन्द्रह दिवस पर्य्यन्त खावें—(अन्य) दूध चावल खाना वीर्यको पैदा करताहै और चनेका होला खाना उसको पुष्ट करता है—(अन्य) मनी और अधिक खुले छिद्रको गुणदायक एक बताशेमें थोड़ी बूंदें बरगदका दूध डालकर खाया करें—(अन्य) दो तोले बिनौले आधसेर गायके दूध में पकाकर खावें—(अन्य) बेर

की गुठली की गिरी पुराने गुड़में मिलाकर पीसकर खावें (अन्य) सर्व्व प्रकारके प्रमेह को गुणदायक ईंट पुरानी कच्ची कूट छानकर एकभाग शक्कर दो भाग चूर्ण करके हर रोज एक दिरम खावें—(अन्य) मनीके बहनेको गुणदायक और शीघ्र वीर्यपातको लाभदे यदि स्त्रीको खिलावें योनि सङ्कीर्ण होजावे अण्डेका छिलका जितना चाहें जलमें डालकर उसके अन्दरके महीन परदेको दूर करके छिलकों को बरतनमें रखकर उसमें नींबू का रस इतना डालें कि एक उंगल छिलकोंके ऊपर आजावे फिर उसपर कुछ कुछ छिपाकर रखदें यहांतक कि रस छिलकोंमें पचजावे तीनबेर इसी तरह करें फिर उसके छिलकों को मट्टीकी कुल्हियामें रखकर कपड़मिट्टी करके जंगली कण्डे की गजपुट अग्नि दें जब ठण्ढा होजावे फिर उतनीही आगमें रक्खें इस तरह तीन बेर आग देनेमें छिलके जलकर सपेद होजावेंगे सो निकालकर दोरत्ती शहदमें मिलाकरखावें खटाई और बादीसे पथ्यकरें—(अन्य)दूबकाबूंड़ाहरसुबह को बासी जलमें पीसछानकर एकसप्ताहपियें(चूर्ण) लिंगके छिद्रके बढ़जानेकोगुणकरे,खिरनीकीछाल,गोंदीकी छाल लसौड़ेकी छाल,आंबकी छाल हरएकबराबरलेकर शक्कर बराबर मिलाकर निहार एक बहलोली पर्य्यंत पानी के साथ खायें—(अन्य) बीर्यको रोकेआकके फूल, धतूरेके फूल कालीमूसली, इस्पन्द पांच २टंक पीसकर घीमें भूनकर पन्द्रह टंक शहद में मिलाकरबराबर एकटङ्क के शहद में मिलाकरखावेंऔर उसकेऊपरदूधपियें(अन्य)बीर्य कोपुष्ट करेसोंठ,पीपल,जरदकेबीजबराबरलेकरअण्डेकी जरदी के साथ खावें—(अन्य) अजवायन, कालेतिल एक २ भाग खशखाश आधा भाग गुड़में मिलाकर चूर्ण बनावें खूराक एक तोला(अन्य) खिरनीकेबीजकीगिरीसुखाकर तीसरा हिस्सा उसका शक्कर मिलाकर गायके दूधके साथ खायें बीर्यको बल देता है—(अन्य) चाहिये कि हर सुबह को

मीठा आंब खायें ऊपरसे गौका दूध जिसमें दो तीन खुरमे और कुछ सोंठमें जोश दियाहो पियें बीर्यको अधिक और शरीरको पुष्ट करता है और दिमाग़को बलदेता है और पकाहुआ शरीफा खाना मनी को पैदा करता है और कटहल भी बीर्यको बल देता है इसी तरह कटहलके बीज भूनकर खाना गुण करता है—(आंबोंकाहलवा) जो बीर्य को बलकारक और मनी को पैदा करता है मीठे आंबों का रस तीन सेर, शक्कर सपेद एक सेर, गौकाघी आधसेर शहद पावभर, सोंठ एक तोला, पीपल छः मासे, शतावर एक तोला, सालिबमिसरी बादामकी गिरी चार २ तोले कुलीजन छः मासे, लाल बहमन और सपेद बहमन एक२ तोला, सेंभल का मूसला एक तोला, सूखा सिँघाड़ा चार तोले, सुरमेकी तरह कूटकर चारतोले पहिले आंबका रस और शक्कर मिलाकर दूध डालकर शरबत बनावें फिर गिरियां पीसकर घीमें भूनकर शरबत में मिलावें और औषधियां बनाकर हलवाबनावें—(लहसुनकातेल)लिंगकी सुस्ती को गुण करे लहसुन को अलसी के तेलमें औटा-कर साफ़ करके राई, अकरकरा, नींबूके बीज, मालकँगनी हर एक थोड़ा कूट छान कर तेलमें जलाकर उस तेल में कईदिन मर्दन करें सुस्ती दूर होजावे—(गुलशब्बोकातेल) बीर्यको बल देता है गुलशब्बो लेकर तेलमें मिलावें जब फूल कर कुम्हला जावें और बदल दें इसी प्रकार तीन बेर बदलें फिर साफ़ करके थोड़ा अकरकरा पीसकर मिलाकर लगावें और उसपर पान बांधे—(तेल) बीर्य को बलदे—भटकटैये की पत्तियां, कड़ुआतेल चार २ दाम, बड़ा काला बिच्छू जो मिलजावे तो अच्छा नहीं तो जिसतरह का हो पहिले तेलको गरम करके पत्तियों की टिकिया बनाकर बिच्छू और टिकिया को उसमें डालकर जलावें जब खूब जलजावे कपड़े से छानकर रक्खें और एक रत्ती भर पानमें लगाकर लिंगपर बांधें—(अन्यतेल) कहवा कि

एकजीव टीड़ीके सदृशहै और उसके परनहीं होते उसको दबान औ रसूलभी बोलते हैं और उससे बुलबुल को पकड़ते हैं पांच छः लेकर चार पांचदाम गायका घी और एकदाम केसर मिलाकर बरतनमें रखकर जलावें फिर छलकरके लिंगपरमलें ऊंटकटारेकातेल लिंगकी सुस्तीको गुण करे ऊंटकटारे का वृक्ष जड़टहनी और पत्तों समेत बकरी के दूध में भिगोकर पाताल यन्त्र से तेल खींच कर लिंगपर मलें—(चेंटियोंकातेल)सौबड़ी चेंटियां जो बड़ी कबरों और आँबके दरख्तों पर होती हैं लेकर चंबेलीके तेलमें डालकर शीशेमें भरकर चालीसदिन धूप में रक्खें फिर तेल लेकर मर्दन करें—(चंबेलीकीपत्तियोंकातेल) स्तम्भन करनेवाला और बीर्यको बलदेता है सपेद चंबेली की पत्तियां पीसकर उसका रस निकाल कर मीठे तेलमें जलावें जब पानी जलजावे तेल लेकर शीशेमें रक्खें भोगके दो घड़ी पहिले लिंगपर मलकर पान बाँधें—तेल जो हथरसवालेको गुणकरे और बीर्यको बलदे कपड़ेको मदारके दूधमें एकदिनरात भिगा रक्खें फिर निकालकर सुखाकर उसमें घी लगाकर दो बत्तियां बनाकर जलावें औरउसके नीचे कांसेकी थाली रक्खें जो तेल बत्तीसे थाली में टपके लिंगका सिर छोड़ कर मलें ऊपर से पान या अरंड के पत्ते बांधें—(अन्य) चंबेली की पत्तियां एक पाव, मीठा तेल एकपाव,दोनोंको कड़ाहीमें डालकर औटावें जबपत्तियां जलकरतेलमाच रहजावे कड़बीकुठ,कच्चा सुहागाआधी२ बहलोली थोड़ा तेलमेंडालें जबमलकर औषधियोंका रंग लालहोजावे उसीसमय कड़ाही उतारकर जहरतेलिया आधी बहलोली मिलाकर तेलको फूलके बरतन में डाल कर नींबकीलकड़ी दोपहर छलकरके शीशेमें रक्खें और एक मासा लेकर लिंग का सिर छोड़ कर लेप करें और उसके ऊपर पानबांधे इसी प्रकार एक सप्ताह पर्य्यंत एकदिन बीच देकर लगावें इस अवसर में मैथुन न करें—(चँ

बेलीकातेल) वीर्यको बलदेताहै चंबेली की पत्तियोंका रस धतूरे की पत्तियोंका रस हरएक दोदाम मीठा तेलिया कड़वी कुठ एक दाम, मैनसिल आधा दाम, सुहागा एक दाम, तिलों का तेल सात दाम, औषधियां पीस कर टिकिया बनाकर तेलमें पानी मिलाकर उसमें जलावें जब पानी जल जावे दवायें पीस कर रक्खें और एक सप्ताह पर्य्यंत मर्दन करें—(जोंकका तेल) वीर्यको बलदे सात बड़ी जोंके आधपाव मीठे तेल में जलाकर साफ़ करके लिंग पर मलें—(तेल) जो वीर्य को बलदे मालकँगनी, और कुचले का बुरादा, पलास के बीज, जंगली कबूतर की बीट चार चार दाम, सपेद कौड़ी दो टंक, रातको बकरी के दूधमें भिगोकर सुबह आतशी शीशे में तेल निकाल कर मर्दन करें और दूसरे नुसखेमें सपेद कौड़ीके बराबर अकरकरा भी लिखा है—(अन्य)एक बालिश्त कपड़ा महीन लेकर आधसेर धतूरे के रसमें इक्कीस दिन तक रक्खें कि रस कपड़े में सूख जावे फिर पांच टंक तिलों के तेल में मधुरी आँच पर पकावें उसके उपरांत निकालकर कपड़ेको लोहे की सीख में लटकाकर उसके नीचे थाली रक्खें और एक ओर से कपड़े में आग लगादें जो कपड़ेसे तेल उस थाली में टप के उसको लेकर रक्खें और दो बूंदे प्रतिदिन चार दिन पर्य्यंत मलें—(अन्य) सुगम वीर्य का बलकारक और हथरस लगानेवाले को गुण करे—मीठा तेलिया दो दाम मूली के बीज आधा दाम, जमालगोटे की गिरी सम्पूर्ण औषधि महीन पीस कर आधपाव तिलों के तेल में खरल करके उसमेंसे थोड़ासा लेकर सेवन करें—(अन्य)सुगम और बलकारक छः टंक मीठातेल मधुरी आँचपर जोश दें और आधा टंक लाल हरताल पीस कर उसमें मिलावें उसके उपरान्त सुहागा फिर कड़वीकुठ एक २ टंक उस में मिलावें फिर चंबेली की पत्तियों का रस डाल कर अग्नि पर रक्खें जब पानी जल कर तेलमात्र रहे लिंगपर

मलें और ऊपर से पान बांधे अन्य वीर्य को बल देता है और लिंग की सुस्ती को दूर करता है लोध, फिटकरी अरण्ड के जड़ की छाल, नख, असगंध एक२ टंक, दोटंक कूट कर पानी में टिकिया बनावें और आध पाव तिलों के तेल में जलाकर साफ़ करके मलें—(अन्य) लिंगके छिद्र बढ़जाने को गुण करे तिलों का तेल, बाम मछली का तेल आठ टंक, असगंध ग्यारह टंक, लाल मिरच एक टंक यह सम्पूर्ण औषधि पीस कर तिलों के तेलमें मिलाकर रक्खें और एक लिंग के छिद्रमें टपकावें जो छिद्र बज़ुत तंगहो नींब का तेल टपकावें और बाम मछली के तेल बनानेकी यह रीतिहै कि बाममछली को टुकड़े २ करके पानी में औटावें जितनी चिकनाई पानीपर आये उसका सेवन करें—(अन्य) मैंने एक पुस्तकमें लिखा देखा कि कई भिड़ों को मीठे तेलमें जलाकर वह तेल लिंग परमलें बज़ुतही बलदेता है—(लाभ) बन्दकुशाद अर्थात् लिंगके छिद्र बढ़ जानेको कहते हैं और वह हिंदू वैद्यों के बिचारमें कठिन यत्न है और जो चीजें वीर्य को गाढ़ा करती हैं वही इस रोग को गुण करती हैं—(तैल) वीर्य का बलदायक लाल और सपेद घुंघची की दाल, हरताल एक २ दाम बकरी के दूधमें खरल करके चनेकी बराबर गोलियां बनाकर तीन दिन सुबह और शाम आतशी शीशेमें रखकर तेल निकाल कर लिंगपर मर्दन करें और ऊपर से पान बाँधें (पट्टी) वीर्य को बल करे महीन कपड़ा थूहरके दूधमें तीन बेर भिगोकर सुखावें और तीन बेर प्याज के रसमें भिगो कर सुखावें फिर कपड़े को अलसी के तेलमें एक रातदिन भिगोदें फिर लिंग को सिर छोड़ मक्खन मलकर ऊपरसे यह पट्टी चार घड़ी पर्य्यन्त बाँधे रक्खें जो आवश्यक हो तो दूसरे दिन भी यही क्रिया करें और कपड़े को प्रति समय अलसी के तेल में भिगो रक्खें—(पट्टी) कपड़ा आँवा-हल्दीमें रँगकर सुखावें फिर धतूरे के रसमें तीन बेर फिर

मदार के दूधमें तीन बेर भिगोकर छाया में सुखावें फिर भैंसके घृतमें मधुरी आँच पर भूनकर आवश्यकता पर पट्टी पर शहद लगाकर हीरा हींग एक रत्ती के बराबर पीस कर उसपर छिड़ककर तीनदिन बाँधें—(अन्य) वीर्य का बलकारक मदार का दूध आध पाव साफ़ शहद अढ़ाई पाव कड़ाही में डालकर लोहे के दस्तेसे इतना घोटें कि क़वाम बँध जावे और कड़ाई लसके कारण दस्तेके साथ ज़मीन से उठआने लगे फिर चार मासे अफीम डाल कर हलकरें कि खूब मिलजावे सो औषधि को चीनीके बरतन में रक्खें और आवश्यकता के समय लिंग को सिर छोड़ यह तेल मलें और उसपर पान लपेटकर गजीकी पट्टी से लपेटकर एक पहर बैठे रहें फिर पट्टी दूर करके गौ का घी इक्कीस बेर धोकर लिंग पर मलें और तीन दिवस पर्य्यन्त यही क्रिया करें—(लेप) वीर्य की निर्ब्बलता का गुणकारक—और हथरस लगाने वाले को भी अच्छा है मदारका दूध उसकी बराबर गौका घी मिलाकर बारह पहर खरल करके एक रत्ती भर लिंग पर लगावें और बाज़े इसमें शहदभी डालतेहैं और बाज़ोंने लिखाहै कि दोदाम मदारके दूधमें एकदामघी मिलाकर जलावें और लकड़ीसे खूबहलकरें जब दूधजलकर तेलमाच आरहे छान कर दो आतशाशराब मिलाकर खरल करके रक्खें और लिंगके सिरको छोड़ कर मर्दन करके ऊपर से लसोड़े के पत्ते बाँधें और एक पहर के पीछे खोल डालें—(अन्य)कि हथरस लगाने वाले और नपुंसक को गुणकरे कालेजवान मुर्गका जिसने जुफ्ती न कीहो काटकर उसका रुधिरले-कर उसकी बराबर जवान गधेका रुधिर मिलाकर लिंग लेप करें और हवादें कि वह सूख जावे इसी प्रकार तीन बेर बराबर लेपकरें पहिले जलनपैदाहोगीदूसरी बेर दाह कम होगा तीसरी बेरबिलकुल जलनकम होजावेगी और भोग की इच्छा अधिक होगी उसदिन मैथुन न करना

चाहिये फिर भोग करें—(लेप) जो वीर्यको बल देताहै मूली कबीज, बिनौला हरएक दो भाग, अकरकरा, कड़वी कठ एक २ भाग महीन पीसकरलगावें—(लेप)कि उसकोशाह लेप कहतेहै लौंडेबाज और हथरस लगाने के वास्ते अस्त का गुण रखता है और लिंगके टेढ़े पने को दूर करता है और वीर्यको पुष्ट करता है एक मारू बैंगन जो दरख्त में पककर पीला होगया हो लेकर उसमें सात पीपलें छोड़ कर लटकावें जब बैंगन सूख जावे आधसेर मीठे तेलमें उसे औटावें जब तेल औटजावे सातताले सूखे केंचवे तेलमेंमिला-वें जब केंचवे जलजावें लहसुन छीलकर उसमें डालें फिर खरल करके एक शीशेमें रक्खें और प्रतिदिन पन्द्रहदिन पर्यंत हररोज एकमासा भर लिंगपर मलकर बरगद या लसौड़े के पत्ते उसपर बांधें जो ईश्वर चाहे तो आराम होगा—(अन्य) वीर्य का बल दायक सपेद घुंघची, अकर-करा, बीरबहूटी सवा तीन २ मासे, संखिया एक मासे दो आतशे शराबमें तीन दिन खरल करके रात्रिको लिंग पर लगाकर उस पर पान कच्चे तागे से बांध कर सोरहें इसी प्रकार एक सप्ताह पर्यंत बांधे इसी अवसर में सं-भोग न करें—(अन्य)वीर्य को बल करे मनुष्य के कान का मैल सूअर की चरबी मिलाकर तीन दिन खरल करके सात दिन लेप करें—(अन्य)वीर्य को बल दे सपेद कनेरके जड़ की छाल बराबर गधेके मूत्र में पीस कर लिंगपर मलें और बाज़े इसमें घोड़ा शिंगरफ भी डालतेहैं उसके ऊपर अरण्ड के पत्ते बांधें कि सूख जावे—(लेप) वीर्यको बलदे जहरतेलिया , आंबाहल्दी , मेदालकड़ी, आधा २ दाम अलग २ कूट छान कर तीन पुड़िया बनाकर एक पुड़िया ताज़े पानी में खूब मिलाकर सुपारी और सीवन छोड़ कर लिंग पर लगावें ऊपर से पान लपेट कर सारे दिनबाँधा रक्खें दूसरे और तीसरे दिनभी इसीतरहकरें चौथे दिन घी धोकर लिंग लेप करें—(अन्य) एक बड़ी

जोंक जो तालाब में होती है गौ का घी पाव भर पहिले घत को लोहे के बरतन में गरम करके जीती जोंक उसमें डाल दें जब जोंक का पेट फट जावे और इसके फटने का शब्द कान में पहुंचे उतारकर सेंभल का गोंद एक टङ्क मैदे की सदृश महीन पीस कर उसमें मिलावें और नीम की लकड़ी से चार पहर रगड़ कर लिंग पर लगावें और जो बड़ी जोंक न मिले सात छोटी जोंकें तेल में जलावें (अन्य) वीर्य को बलदे—कनेरकी जड़, धतूरेके जड़की छाल धतूरेकीजड़,भंगकेजड़कीछाल,मदारकीछालबराबरलेकर छाया में सुखाकर कूट कर धतूरे के पत्ते के रस में बेर की बराबर गोलियां बनावें और समय पर एक गोली अपने मूत्र में पीस कर लिंग पर लगाकर सुखाकर भोग करें (अन्य)सपेदसरसों, कड़वीकुठ, बड़ीकटाई का फल, असगंधकी जड़ बराबर लें और कूट छानकर पानीमें मिलाकर लिंग पर मलें जब सूखने लगे छुड़ा डालें तीन चार दिन इसी तरह करें लिंग बढ़जावे जो सरसों सपेद न मिलें पीले काफी हैं—(अन्य)कोंचुवा एक तोला गौ का घी दो तोले मिलाकर दो पहर पर्य्यंत खरल करके घोड़ा लेकर मलें उसके ऊपर कनेरके पत्ते या अरण्डके पत्ते बांधें (अन्य)इस्पन्द रेंडो की गिरी, पीले सरसों तीन तीन दाम कूटछानकर चंबेली के तेलमें खरलकरके दोनों समय इस तरह पर लिंगपर मलें कि सुबहको धूपमें और शाम को निर्वात बन्दमकान में बैठकर लगावें जो जाड़ोंकेदिन होंतो अंगीठी जलाकर आगे रख लें और हरबार अंगीठी से हाथ सेंककर नाभि के नीचे से रानतक मर्दन करे मर्दन का कमसे कम अवसर पांच घड़ी है यह रीति साहब जादुल गरीब के आजमाईहुईपुस्तकसे है—(लेप) कि बहुत मजा देता है ताजी बीर बहूटी उसकी बराबर भिड़का छत्ता लेकर तिलोंके तेलमें कजली करके लेप करें (अन्य)पारा तीनदाम, गायके बारह पित्ते आधसेर भंगरे

के रस में लोहे की कड़ाही में लोहे के दस्ते से एक पैसा उस पर लगा कर छः दिवस पर्यंत कजली करें जब गाढ़ा होजावे जंगली बेरकीबराबर गोलियां बनाकर आवश्यकता पर थूक में घोलकर लगावें—(लेप) स्तम्भन करता है खुश्की में रहनेवाली मेढ़क को साये में सुखाकर उसके शिर और पांव काटकर महीन पीसें फिर एक जायफल और दो मासे केशर मिलाकर गोलियां बनावें समय पर लिंग पर सुपारी छोड़ कर लेपकरें—(अन्य) कि लिंग की सुस्ती को दूर करे असगंध, गजपीपल, कड़बीकठ महीन पीस कर गौ के मक्खन में मिलाकर पन्द्रह दिन पर्यंत हर रोज़ दो बेर मलें और गरम पानी से धोवें और दूसरे नुसखेमें गजपीपल के बदले दालचीनीलिखाहै और एक पुस्तक में लिखा हैकि एक बड़ा मेढ़क जोकुयेंमें रहता हो लेकर उसकी गुदा सीदें और दो तीन टंक पारा उसके मुख में डालकर रक्खें जब सूख जावे मेढ़क का पेट फाड़कर पारे को कि गोली बंधजावेगी निकाल लें और मैथुनके समय मुखमें रक्खें वीर्यपात न होगा—(अन्य)गौ का पित्ता शहदमें मिलाकर लिंगपरमलें और गरमपानी से धोवें पन्द्रह दिवस इसीप्रकार सेवन करें—(अन्य)मज़ा देता है जंगली कबूतर की बीट और उसकी चरबी और लाहोरी नोन और शहद यह चारों बस्तु बराबर लेकर पीस कर लिंग पर मलें और भोग करें बड़ा मज़ा पावेंगे (लेप)बज़ुत मज़ादे मारू बैंगन पट्टी में लपेट कर भूभल में रक्खें फिर मिट्टी दूर करके बैंगन का पानी निचोड़ कर छान कर कई पीपलें तीन दिन पर्यंत उसीपानीमें भिगोवें चौथे दिन निकालकर सुखाकर महीन पीसकर शहद में मिलाकर लेप करके मैथुन करें—(अन्य)वीर्य को बलदायक कनेरके जड़ कीछाल महीन पीसकर भटकटैयेके रस मेंखरल करके कईदिन लेपकरे—(अन्य)टढ़े लिंग के वास्ते जो हथरस लगाने से होवे गुण करे लिंग को पहिले

तिलों का तेल लिंग में मलें फिर हालो पीसकर गुन गुना लेप करें फिर ऊपर पान या अरण्ड का पत्ता लपेट कर उसकेगिर्दागिर्द खपाचें रखकर पट्टीसे दृढ़बांधें और एक पहर के पीछे खोलकर गुनगुने पानी से धोवें सातदिन के सेवन से टेढ़ापन दूर होजावेगा—(अन्य) लिंग के स्थूल होने के वास्ते हर रात को ताजे दूध से लिंग को मलकर सूखे केंचवे पीसकर उसपर मलाकरें—(अन्य)कायफल भैंस के दूध में पीस कर लेप करके सारी रात बांध रक्खें सुबह गरम जल से धोवें कई दिन यही क्रिया करें—(अन्य)रीठे की छाल, अकरकरा बराबर तेज शराब में खरल करके सिवाय लिंगके सिर के मलें और उसके ऊपर पान लपेटें इस प्रकार कई दिन सेवन करने से गुण मालूम होगा (अन्य)वीर्य का बलकारक कँवलगट्टे का जीरा उत्तम शहद खूब महीन पीस कर मिला कर सुपारे के सिवाय लिंग पर मलें ऊपर से कपड़ा लपेटें और दो पहर के पीछे दूर करके गरम पानी से धोवें और फिर इसी तरह करें अन्य लिंगको बड़ा करता है दो टंक इन्द्रजौ भैंस के ताजे दूधमें भिगोकर चार पहर उसको पीस कर गुनगुना लिंगपर मलें ऊपर से कपड़ा लपेट कर सो रहें सुबह गरम पानी से धोवें कई दिन बराबर यही क्रिया करें—(अन्य)लिंगको सख्त करे उटंगन के बीज कूट छान कर लिंगपर हररोज दो बेर लेप करें कईबेर यही सेवन करें—(लेप)स्तम्भन और लिंगके सख्त होने को गुण करे असगंधकी जड़ जव कुटकर काले धतूरे के रसमें बीस बेर भिगोकर सुखावें फिर पीस कर रक्खें समय पर थूक में हल करके लिंगपर मलें और एक पहर के पीछे मैथुनकरें और भोगके उपरान्त गौका घी लिंगपर मलें—(अन्य)चम्बेलीके तेलमें राईपीसकर लिंगपरलगावें—(अन्य)अकरकरा दो भाग जंगली प्याजकारस दशभाग पीसकरलिंग पर लगावें—(अन्य)गांजारेंडीके तेलमें खरल करके फिर

लत्तेपर लपेट कर बांधें थोड़ा छीलता है परन्तु बीर्य को बल देता है और हथरस वाले को गुण करता है—(अन्य) हलहल के बीज दो भाग उसकी छाल एकभाग महीन कूट छान कर मीठे तेलमें चार पहर खरल करके लगावें (अन्य)लौंग समन्दर फलकी गिरी एक २ शहद में पीस-कर लगावें—(रेंडीकातेल)हथरस वालेके वास्ते मीठा तेल रेंडीकी गिरी पाव २ भर दोनोंको औटाकर हल करके शीशे में रक्खें और रोज़ मलाकरें हथरस वाले को बज़्ज़त गुण करे—(अन्य)जंगली कबूतरकी बीट को सपेदी चंबेली के तेलमें पीसकर लेप करें—(अन्य) लिंगके खड़े होने और सख्तीके लिये गुणकरे इस्पन्द चंबेली के तेल में पीस कर लगावें—(अन्य) चमगादर का लहू लिंगपर मलें वीर्य में अधिक बल होवे—अन्य सूस भार अर्थात् गोहका गूह लगाना बीर्यको बल देता है अन्य सर्पकी चर्बी और म-छली और जंगली सुवर की चरबी बकरी के मूत्र में तीन दिन खरल करके लेप करे—(अन्य)रोहू मछलीकी चरबी मलना गुण करता है—(अन्य)चूहे की मेंगनियां शहद में मिलाकर लिंगपर लगाना वीर्य को बलदेता है—(अन्य) छोटी कटाई का फल बीज दूरकरके पीसकर लिंग पर लगावेंऔर उसपर अरंडकेपत्ते बांधें-(अन्य)पाराएकदाम शहददोदाम दोनोंको लोहेके पात्रमें लोहेकेदस्तेसे हल करें जबएक जात होजावे कपड़ेपर लपेटकर लिंग के ऊपर लपेटेंजबखड़ा होजावे दवाकोदूरकरके सम्भोग करेंऔर एक रोहू का मगज इसमें डालेंउत्तम है और लेपकरनेके उपरान्त बँगलापान गरम करके कच्चेतागेसे उसपर लपेटें इसका सात दिन सेवनकरना उचित है—(अन्य) असारों बकरी के ताज़ें दूधमें पीसकर सदालिंग पर लगाना बीर्य को बल देता है—(अन्य) लिंग की सख्ती के वास्ते मूली के बीज दश टङ्क मीठे तेलमें औटाकर दोनों समय लिंग पर मलें सुस्ती दूर करता है—(अन्य) सुरदार संग सुरगी के

पित्ते में पीसकर लिंग पर लगाकर स्त्रीके पास जावें परन्तु बीर्यपात न हो स्त्री बँध जावेगी—(अन्य) हींग गौके पित्तेमें हल करके गोली बनाकर आतशी शीशेमें तेल निकालें वह तेलमलें—(अन्य)मज़ेके वास्तेस्त्रीके शिरके केश जलाकर उसकी राख चम्बेली के तेल में मिलाकर लिंग पर लगावें और मैथुन करें और जो कबूतर की बीट की सपेदी भी मिलावें बज़ुत गुण करेगा (अन्य) बीर्यके स्तम्भनके वास्ते गुणकरे थूहरका दूध गौका दूध दोनों बराबर लेकर सारे दिन धूपमें रक्खें रातको तेल में मलें जबसूख जावे दो घड़ी के पीछे मैथुन करें—(अन्य)काले धतूरेकी पत्तियोंका रस निकालकर दोनोंटखनों पर लगावें जब सूख जावे भोग करें (अन्यस्तम्भन) कपूर कटाईके ज़ीरेके साथ शहदमें पीसकर छोटे ज़ीरेकी बराबर शाफा बनाकर लिंगके छिद्रमें रक्खें एक साइतके पीछे मैथुन करें स्तम्भन करताहै और लिंगके छिद्रके बढ़जानेको गुण करताहै—(अन्य)हींग खाली शहद में पीसकर ज़ीरेके सदृश बत्तियां बनाकर एक बत्ती लिंग के छिद्र में रक्खें एक घण्टे के पीछे मैथुन करें—(अन्य) मैंने एक पुस्तकमेंदेखाहै कि कोंजकी जड़ उंगलीके सिर मोरके बराबर भोगके समय मुखमें रक्खें जबतक मुखमें रहेगी बीर्य पात न होगा—(अन्य) स्तम्भनको गुण करे ऊंट के बाल की रस्सीबनाकर रान पर बांधें—(अन्य)लिखाहै कि फिटकरी कमरमें बांधना स्तम्भन को गुण करताहै—(अन्य) लिखाहै कि इतवारको घोड़े और खच्चर की पूंछका एक २ बाल लेकर पीलीकौड़ीमें छिद्र करके इन दोनों बालों में पिरोवें और दहने बाजू पर बांधकर सम्भोग करें बीर्यपात न होगा—(अन्य) लिखाहै कि छछूँदर का खुसिया चमड़े में रखकर यंत्र बनाकर कमरमेंबांधें जबतक कमरमें रहेगा बीर्यपात न होगा जब उसको पेटकी तरफ लावेंगे बीर्य गिर जावेगा—(अन्य)कुचला दो आतशे शराबमें पीसें और नख पर गाढ़ा २ लेपके सूख जाने के उपरान्त भोग करें

स्तम्भन करता है—(अन्य) करंजवेकी पत्तियों का रस निकाल कर हथेलियों और तलुवोंमें मलकर चार घड़ी के पीछे भोग करें एक पुस्तक में लिखाहै कि स्तम्भन करता है—(यंत्र) कि मुख्य करके बीर्य को रोकता है कुत्ता जिस मादासे जुफ्ती करे और कुकरघट होजावे नर कुत्तेकी दुम काटकर चालीस दिन ज़मीनमें गाड़दें जब दुम गलकर हड्डियां शेष रहें उसको तागेमें पिरोकर अपनेबालों में बांधकर भोग करें—(लाभ) भोग करने में चाहिये कि मज़ेकी तरफ मन न लगावें किन्तु और बातों का बिचार रक्खें जब जाने कि बीर्यपात हुआ चाहता है ठहर जावे एक पलके पीछे फिर आरम्भ करे इसी तरह बीर्यपात के समय क्रिया करता जावे और उत्तम यहहै कि एक नियत संख्यासे जैसे पांच या सातके प्रारम्भ करके हरदफ़ा एक बिषम संख्या बढ़ाता जावे—दूसरी बात यह कि जब जाने कि मनी निकलती है छिंगुन्या और बीचकी उंगली से वह रग कि अण्डकोष्ठके नीचे और गुदाके बीचमेंहै जोर से पकड़ ले मनी फिर जावेगी इसी तरह हरबेर करे और उत्तम वह है कि जब भोग करने बैठे एड़ीसे वह रग दबाये रक्खे—(स्तम्भनकीगोली) शिंगरफ,मोचरस,अफीम चार२ मासे,सुहागा एक मासे, पीसकर कालीमिरचकी बराबर गोलियां बनावे एक गोली भोगके पहिले खावे—(यन्त्र) लिखाहै कि ऊंटकी हड्डीमें छिद्र करके जिसके सिरहाने रखदें बीर्यपात नहो॥

अण्डवृद्धिका यत्न॥

जो दहिने अण्डमें शोथहो बायें हाथकी रग असलीम को दागें और जो बायें अण्ड में शोथ हो दहने हाथ की रग असलीमको दाग दें अण्डकोष्ठ की सूजन और पीड़ा दूर होगी—असलीम एक रगहै छिंगुन्या और उसके पास की उंगलीके बीचमें उसको रेशमी कपड़ा जलाकर दागें

और दागनेकी रीति बहुधा लोग जानतेहैं कि अपने हाथ पांव दागा करते हैं औषधि बैद्यक की अण्डोंके बढ़ जाने को गुणदायक ढाकके जड़ की छाल छाया में सुखाकर महीन पीस छानकर सात मासे ताज़े पानीसे फांकें नाभि की पीड़ा को भी गुण करे—(चूर्ण) अण्ड के लिये कुन्दर बायबिडंग पुरानीईंट बराबर कूट छानकर दो दाम घी के साथ खावें जो पहिले दिन क़ै होजावे अण्डे अपनी दशा पर आजावेंगे—(काढ़ा) अण्डवृद्धिका गुणकारक पांच टङ्क हब्बुल्लास तीस टङ्क जलमें औटावें जब चतुर्थांश शेष रहे साफ़ करके दश टङ्क घृत मिलाकर गुनगुना खड़ेहो-कर पियें—(औषधि) अण्डवृद्धिको गुणकारक भुनासुहागा छः रत्ती पीसकर पुराने गुड़में मिलाकर तीन गोलियां बनावें एक गोली हर सुबह खावें उसके ऊपर थोड़ा घृत पियें भोजन मालीदा बे नमक—(लेप) अण्डके शोथको गुण-कारक ऊंट की मेंगनी और थोड़ी हल्दी औटावें जब गाढ़ी होजावे पीसकर गुनगुना पोते पर लगावें—(अन्य) ठण्ढे पोतेकी सूजन को गुणदायक खुरमे की गुठली का आटा खतमीके बीज सिरकेमें मिलाकर लेप करें—(अन्य) पोतेकी सूजन और उसकी खुजलीको गुणकरे आध पाव भंग आधपाव जलमें औटावें जब आधा शेषरहे उस जलमें पोतेको धोवें और उसकी बस्तुका लेपकरें—(अन्य) बकरी की मेंगनी जलाकर अजवाइन खुरासानी उसकी बराबर लेकर पानीमें पीसकर गुनगुना लगावें—(लेप) मैनफल के बीज नाजबोके पत्तेके रसमें पीसकर लेपकरें—(अन्य) अर-ण्डकी जड़ सिरके में पीसकर गुनगुनी लगावें—(अन्य) कोयलके दूध कूट छानकर गुनगुने लगावें—(अन्य) सूजन और पोते की पीड़ा को गुणकरे—भँगरा, चूहे की मेंगनी नकछिकनी बराबर लें और खासनके बीज दुगने ले अरंड के पत्ते के रसमें पीसकर लेप करें—(अन्य) लड़कों के पोते बढ़ने के लिये गुणकरे अरहर पानी में पीसकर गुनगुना

लगावें—(औषधि) गरम पोतेकी सूजन को गुणदायक भंग को पानी में भिगोकर पोतों को जबतक होसके उसमें रक्खें दो बेर इसी तरह करें और उसकी बस्त पोते पर बांधें—(लेप) पोतेकी गरम सूजन को गुणकरे छिले मसूर अनार की छाल बराबर पानीमें पकावें जब गलजावे पीस कर लेप करें—(अन्य) पोतेके ठण्ढी सूजनको गुणकरता है रेंडी का गूदा पीसकर गरम करके रोज़ दो तीन बेर लगावें पोतेका बड़ा होना दूर होजावेगा—(लेप) माजूफल असगंध पानीमें पीसकर गुनगुना लेप करें—(अन्य) नरकचूर पीसकर गुनगुना लेप करके उसके ऊपर पान के पत्ते बांधें—(औषधि) पोतेकी ठण्ढी सूजनको गुणकरे मरवाट्ट के पत्ते और टहनी को कूटकर रोटी बनाकर पोते पर बांधें सूजन दूर होजावेगी और पीड़ाको भी गुण करे (लाभ)पोतेके गरम सूजनका यत्न साफ़ नकीफसूदहै और खुरासानी अजवाइन और जौका आटा और कहू की लकड़ी और धनियेकी पत्तियोंका रस और काई और लालचन्दनका लेप करना और जो शीतसे सूजनहो मेथी अलसीके बीज शहदमें लेप करें—(तरेड़ा) गरम और पोते की पीड़ाको गुणकरे टेसूके फूल औटाकर उसके पानीसे तरेड़ा करें और उसका फोग गुनगुना बांधें—(लेप) पोते की चोटको गुणकरे थोड़ी हल्दी पीसकर अण्डे की जरदीमें मिलाकर गुनगुनी लगावें—(अन्य)पोतेकी सख्ती को गुणकरे सपेद जीरा काली मिरच पानी में पीसकर पकावें और लेप करें—(अन्य) पोतेको सख्ती को गुणकरे पित्ता जीरा शहदमें मिलाकर लगावें—(लेप) पोतेकी खुजलीको गुणकरे सिरसवृक्ष की छाल पीसकर लेप कर (अन्य) पोतेकी सूजनको गुणदायक नाज़बो जल में पीसकर लेप करें—(अन्य) पोते और लिंगके व्रण को गुणकरे जलायाहुआ गेंगटा अंगूरकी लकड़ीकी राख व्रणको थूक से भिगोकर उसपर छिड़कें—(अन्य) पोतेके घावको गुण-

करे कीकर की छाल जवकुटकर पानी में औटाकर व्रण को उससे धोया करें—(अन्य) लिंगके व्रणको गुणकरे कमीला तिलोंके तेलमें मिलाकर लगावें—(अन्य) चाकसू मक्षीन पीसकर व्रणोंपर छिड़कें—(लेप) नाभिके ऊंचेहोने के लिये जो नाभि ऊंची होजावे इस औषधिसे मुख्यदशा पर आजावे और वह ऊंचान कृत्रिम होतीहै जाता रहता है अजवाइन कूट छानकर मुरगे के अण्डे की सपेदी में मिलाकर लेप करें और उसके ऊपर शीशेका टुकड़ा बांधें

उनरोगों का यत्न जो मुख्य स्त्रियों को होतेहैं॥

स्त्री के बांझ न होने का यत्न॥

जिस स्त्री को यह रोग हो उसको अरबी में अकीया और उर्दू में बांझ कहतेहैं और बांझ होना उन्हीं कारणोंसे होता है कि गर्भ को दूर करते हैं इस प्रकार के बांझ होनेको मजाजी अर्थात् कृत्रिम बोलते हैं यह साध्य है और कभी यह रोग किसी कारण बिना होताहै बाज़े दरख्तों के सदृश कि वे नहीं फलते यह मुख्य बांझपन है इसका यत्न नहीं और बांझपन के कारण कभी मरदों से होतेहैं औ कभीस्त्रियोंमेंइसकी परीक्षाकीरीतियों लिखी है कि बाकले या गेहूं या जौ के सात दाने अलग २ मिट्टी के नये बरतन में रक्खें एक बरतन में मरद दूसरे में स्त्री सात दिन पर्य्यंत मूतकरें जिसके मूत से वह दाने उगें वह बांझ होने का कारण नहीं है और जिसके मूत से दाने न उगें उसी में बांझ होने का बिकार मौजूद है या स्त्री पुरुष अलग २ प्याले में पानी भर कर अपना २ वीर्य उसमें डालें जिसका वीर्य पानी में बैठ जावे उसकी ओर बांझपना नहीं है या स्त्री पुरुष अलग२ काहू या कह की जड़ में मूत करें सो जिसके मूत में वृक्ष सूखजावे बांझपन उसीकी ओर होगाअब थोड़ी औषधि बांझपने की लिखी जाती हैं—(चूर्ण)गर्भ होने के वास्ते गुणकरे—हाथीदांतका

बुरादा कूट छानकर मिसरी बराबर मिलाकर रक्खें जब स्त्री ऋतु से निश्चिन्त हो नौ मासे सातदिन पर्य्यंत खावें सात दिवस के उपरांत पुरुष से मैथुन करे तीन दिन में गर्भ स्थिर होजावे—(अन्य)गर्भके लिये कायफल कूट छान कर बराबर शक्कर मिलाकर ऋतु के उपरांत तीन दिन पर्य्यंत एक हथेली भर खावें भोजन दूध चावल फिर मैथुन करावे—(अन्य)असगंध कूट छानकर ऋतु के प्रारम्भ के पहिले एक टंक से दो टंक पर्य्यंत खावें भोजन दूध चावल और निश्चिन्त होने के उपरांत भोग करावे—(गोली)गर्भ को गुणकरे मुरमक्की नौसादर बराबर पीसकर चार २ तोलों के अनुमान गोलियां बनावें स्त्री ऋतु में एक गोली रोज खावे निश्चिन्त होनेके उपरांत भोगकरे—(औषधि) गर्भ पर नियत है हाथी का मूत्र भोग के पहिले या भोग के समय स्त्री को पिलावें बांझपनें को गुण करे—(अन्य) पिया बांसेकी जड़ आधाटंक पानीमें पीसकर थोड़ा गाय के दूध के साथ पुरुष खावे और स्त्री को तीन दिन पर्य्यंत खिलावें उसके पीछे भोग करे—बांझपन को गुणकरे (अन्य)काले धतूरे के फूल पीस कर शहद और घी में मिलाकर खिलायें—(अन्य) एक समुद्र फल थोड़े दही के साथ निगल लें मुख्य गुण करता है—(अन्य)करंजुवे की गिरी स्त्रीके दूध में पीस कर बत्ती रक्खें—(शाफा) थोड़ी सरसों पीसकर तीन दिन पीछे ऋतु केशाफाकरें गर्भवती होजावे—(अन्य)अजवाइन एक हथेलीभर कई दिनपर्यंत खावें—(अन्य) कि गर्भ रहने को सहायता देताहै बाज की बीट कपड़ेमें लगाकर बत्ती करके जबस्त्री ऋतु से निश्चिन्त हो भगमें रक्खें और लिखाहै कि थोड़ा शहद मिलाकर खिलावे मुख्य करके गर्भस्थित करे—(अन्य) कबूतर की बीट ऋतु के उपरान्त भग में रक्खें॥

गर्भवती के यत्नका वर्णन॥

गर्भवती स्त्रीको फस्द और सुसिलसे मुख्य चौथे महीने

के पहिले और सातवें महीने के पीछे पथ्य करना उचित है और पछने और फटुके रुधिर निकलवाने और भयकी बातों और भयानक शब्दसे प्रति समय पथ्य करना चाहिये और दो महीने के पीछे भोग न करना चाहिये और उचितहै कि भोजन बकृत न करें और अजीर्णसे डरा करे और गर्भवती अति प्रसन्न चितहो और उसकी क्षुधा शुद्धहो और उसको कोई रोग दौरान् और शिर पीड़ा और मतली के सदृश नहो और उसको दाहने तरफ बोझ मालूम हो और दहनी छाती बड़ी हो और कुचों पर सुरखी मालूमहो अवश्यकरके लड़का जनेगी—और जिस स्त्रीको बेटी का गर्भ होगा उसमें उसके विपरीत चिन्ह पाये जावेंगे और उसका शिर भारी और मुखका पीला रंग और तेज रहित मुख होगा और भूख कम और आलस्य अधिक और कुच पतले और दूध भी पतला होगा और निद्रा बकृत आवेगी और चलने में पहिले दाहना पांव उठावेगी और खड़े होने के समय दाहना हाथ टेक कर उठेगी और हकीमों ने यह भी लिखाहै कि गर्भवती हाथपर जूं रखकर उसपर अपना दूधडूहे जो जूं उस दूध में हिले उदरमें लड़का होनेका चिन्हहै और जो न हिले और मरजावे लड़की होनेकी निशानी है और यह भी लिखाहै कि चुकन्दर के पत्ते सुखाकर गर्भवती स्त्री के नाक में फूंके जो छींक आवे तो लड़की जो न आवे तो लड़का जनेगी॥

वह औषधियां जो गर्भको गिरने न दें॥

बाजी स्त्रियोंकी आदत है कि उनका गर्भ शुरूमें गिर पड़ता है लाल कपड़े में लाल तागेसे कि कुसुम में रंगहो एक करंजुवा बांधकर नौ महीने पर्यंत कमर पर बांधेरक्खें और कुहरवा यशमई और दरूनज अकरबी भी कमरपर बांधना गुण करताहै—(अन्य)वह सूत कि कुंवारी लड़की ने काताहो स्त्रीके शिरसे पांवके नख पर्यंत नापकरउसको

इक्कीस तार का बनावें और काले धतूरे की जड़ लेकर इसको सात टुकड़े करके उस तागे में जुदा २ बांध कर स्त्री के कमर में बांधें—(अन्य) जमुर्रद की अंगूठी बांये हाथमें पहिनना गर्भवतीके ऋतु के रुधिर के बहनेको बन्द करताहै—(लेप) गर्भवती स्त्री के भगकी खुजली और दाह के लिये खतमी के बीज मुल्तानी मट्टी मकोकी पत्तियोंके रस में पीसकर लगावें—(अन्य) भीमसेनी कपूर गुलाब में पीसकर भगमें मलें—(लाभ) कुहरबा कमर पर बांधना गर्भ के गिरने को रक्षा करता है और मेदे पर लटकाना तुखमे को गुण करे और गरदन पर कँवल बायु को गुण करताहै और छातीपर रखना मनको गुण करताहै और +ताऊन को दूरकरताहै यह सब गुण इन औषधियों में मुख्य करके है—(औषधि) गर्भवती स्त्रियों को क्षुधा के उपद्रव के दूर करने को गुण करे बड़ी इलायची दस टंक छः मिस्काल कन्दके साथ पीसकर तीन मासे रोज खिलावें—

कठिनतासे प्रसूत होनेका यत्न॥

गर्भवती स्त्री के निकट जनने के समय सुगन्धित बस्तु न जानेदें और चार मिस्काल अमल तासके छिलके पानी में औटाकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पिलाना कठिनता से प्रसूति को आश्चर्य दायक गुणरखताहै और घोड़े के सुम की धूनी गुणकरे बाजे हकीमोंने लिखाहै कि थोड़ी घोड़े की लीद कबूतरकी बीट के साथ पानीमें घोलकर स्त्री को खिलाना प्रसूतिकी कठिनता को गुण करताहै और सर्प की केचुल का बफारा मुरदा लड़के को तुरन्त निकालता है और गाजर के बीजों का बफारा भी सुगमता से प्रसूति करता है और बाबूने के पुष्प नौ मासे थोड़े पानी में औटाकर शहद आवश्यकता के अनुकूल मिलाकर पिलावें गुणकरे(औषधि) यदि गर्भकी दशामें रुधिरऋतु का जारी

+(१)वहफोड़ाहैजोअण्डोंयाछातियों याबगलकेनीचेनिकलाकरताहै॥

होजावे गूलरकी जड़ जवकुट कर औटाकर पिलावें—(चूर्ण) प्रसूतिके लिये गुण करे नीलोफर मुलहठी रगड़ा हुआ चन्दन घिसीहुई मिसरी बराबर चूर्ण बनावें और साठीके चावल भिगोकरउसकेजलसेएक हथेली भरखावें—(क्रिया) मुख्य करके प्रसूतको गुणकरे मकनातीस पत्थर बांये हाथ में लेना आजमाया हुआ है—(अन्य) सुगमता से प्रसूतके लिये करंजुवा चमड़ेमें रखकर बाईं पिंडली पर बांधें,थोड़ी हींग,खाना प्रसूतको गुण करताहै औ प्रसूतिकी पीड़ा के समय मनुष्यके सिरके बालों की धूनी लेना प्रसूतकी कठिनता को गुण करता है और मनुष्यके केशजलाकर उसकी राख गुलाब में मिलाकर स्त्री के शिर पर मलना मुख्य करके प्रसूत को गुण करे और जो लाल कपड़े में नोन बांधकर स्त्री की बाईंओर लटकावें मुख्य करके प्रसूतिकी कठिनता को दूरकरे और सर्पकी केचुल स्त्रीके चूतड़ पर बांधना और उसकी धूनी देना प्रसूति की सुगमता को गुणदेताहै और चकमाकका पत्थर लत्तेमे लपेट करस्त्री के रानपर बांधना मुख्य करके प्रसूति की कठिनता को गुण करे और इसी प्रकार बारा सिंगेका सींग बांधना सुगमतासे प्रसूत करता है और गिद्धका पर स्त्रीके पांवके नीचे रखना प्रसूत को गुण करे और जो सिर फूकाकी जड़स्त्री की कमर में बांधे शीघ्रही निकालदे और जीते सर्प के दांतस्त्रीके गलेमें लटकाना प्रसूति की सुगमता गुणकरता है—(अन्य)प्रसूति की सुगमता को गुणदायक इन्द्रायण कीजड़ पीसकर गौके घीमें मिलाकर भगमें दें—(औषधि) उस मुरुल को ठहराती है कि प्रसूति के उपरांत गर्भाशयमें ठहराती हैकि प्रसूति के उपरांत गर्भाशय मेंहोता है दो दाम खरबूजेकी छाल सुखाकर सौंफके अरक में पीसकर पियें—(अन्य)पुराना खोपरा खाना गुणकारीहै (अन्य)सातर औटाकर पियें—(अन्य)माजून बरशाशा एक डिबा भर मीठे जलमें पीना गुण करता है—(अन्य)असूल

कीशरबत गुण करता है—(अन्य)बचका काढ़ा गुणदायक है—(अन्य) खश खाश का पोस्ता पिलाना गुण करता है॥

उन औषधियों का बर्णन कि स्त्रीको बांझ करें॥

हाथीका ताजा लेंड़ निचोड़ कर एकतोला शहद में मिलाकर तीन दिन पर्य्यंत ऋतुके होने के पीछे पियेंऔर हाथी लेंड़से बत्तीको भिगोकर भगमेंरखनास्त्रीकोबांझ करता है—(औषधि) कि स्त्रीको बांझ करे नौसादर फिटकरीपानीमें पीसकर ऋतुकेपीछे भगमेंरखलें—(अन्य)यदि प्रतिदिन सुबह को एक लौंग निगलें गर्भ न रहे—(अन्य) इस्पन्द नाम्पैरी जलाकर ऋतुके दिनों के उपरान्त खावें (अन्य)यदि लिंगके शिर में मीठातेल और नोन मल कर सम्भोग करें बीर्यको गर्भाशय नलेगा—(अन्य)शाफा कि स्त्रीको बांझ करदे बावची मीठे तेल में पीसकर ऋतु के पीछे शाफा करे—(औषधि) हल्दी पीसकर ऋतुके समय खावे और ऋतुके दिन हो चुके तोनदिवस पर्यंत खावेगर्भ न रहेगा—(अन्य)स्त्रीको बांझ करदे चम्बेलीकी जड़ और गुले चीनिया का जीरा बराबर पीसकर छायामें सुखाकर ऋतुके प्रारम्भ में तीनदिन तक खावें और उसकेऊपर एक घूंट जल पियें—(काढ़ा) कि गर्भ को न रहने दे करीश इच्छकी छाल और गुड़ औटाकर पियें—(अन्य) कालीमिरच सम्भोग के उपरान्त भगमें रखना गर्भ न रहने दे—(औषधि)जो एक मिस्काल नील स्त्री खावे तो भोग न रहेगा—(अन्य) काली जीरी काबलीहड़के बीज नागेसर, नरकचूर, कलौंजी, कायफल, हरएक पांच टंक कूटछान कर गोलियां बनावें ऋतुके समय से स्त्री सात दिनपर्यंतएक२ गोली खावें—(अन्य)लिखा हैकिचम्बेलीकी एक कली जो स्त्री निगले एक बर्ष पर्य्यंत गर्भन रहे(अन्य) एक रेंडी की गूदी निगल जावें एकबर्ष पर्य्यन्त गर्भनरहे और दो निगलें दो बर्ष पर्य्यन्त न रहे—(अन्य)खाने का

नोन भगमें रखना गर्भ न रहने दे—(अन्य)चूहे की मेंगनी शहद में मिलाकर भगमें रखना गर्भ को न रहने दे—(दूसराउपाय)कि गर्भ न रहने दे स्त्री अपनी रान सम्भोगके समय ऊंची नकरे और पुरुष वीर्यपात होने के समय अपना लिंग बाहर निकालले और इस बातका ध्यानरक्खे कि अपने वीर्यपात होनेके साथ स्त्री की रज न छूटे और स्त्री वीर्यपात होने केपीछेशीघउठखड़ी होके छींके—(अन्य)मुख्य करकेगर्भनरहनेदे लड़के काजोदांत पहिले गिरे और जमीनपरनगिरनेपावे उसकोलेकर इतवार के दिन चांदी मे मढ़कर स्त्री भुजापर बांधे—(अन्य)चूके के बीजबा ईंभुजा पर बांधे गर्भ न रहनेदे—(अन्य)जो मेडक की हड्डी स्त्री अपने निकट रक्खे गर्भ न रहे—(अन्य)जो स्त्री सर्प का दांत अपने पास रक्खे गर्भ न रहे—(अन्य)काकुंज के सात दाने ऋतुके दिनों के पीछे स्त्री निगल ले—(अन्य)धूहरकी खकड़ी छाया में सुखाकर जलाकर उसकी एकमासाभर राख लेकर बराबर की शकर मिलाकर इक्कीस दिन तक हर रोज खावें—(अन्य)मनुष्य के कानका मैल एक दाना बाकले का लेकर बराबर कालेरंग के पशमीने में बाधकर स्त्रीके गरदन में लटकावें जब तक गलेमें रहे गर्भन रहने दे (शाफा)सहंजने के बीज महीन पीसकर गौके घी औरशहद में मिलाकर ऋतुके उपरान्त शाफा करें—(लाभ)लिखाहैकि स्त्रीअपने पुत्रकेमूत्रपरमूतकरे कभीगर्भनरहेमुख्य गुण रखताहै— (औषधि) यदि स्त्री हर महीने में थोड़ा खच्चर का मूत पिये कभी गर्भ न रहे—(अन्य)गर्भ न रहने दे और गर्भाशय की पीड़ा को कि भोगके उपरान्त रहे दूरकरे माजू महीन पीसकर उसमें रुई भिगोकर गोला बनाकर भोगसे पहिले गर्भाशय के मुख पर्य्यंत पहुंचावे॥

गर्भ गिरानेकी औषधि॥

इन्दरायण निचोड़कर उसमेंरुई डुबोकर भगमें रक्खें (शाफा)कि गर्भको गिरावे कडुवी तोरई बीजोंसमेत पीस

कर शाफा करें—(शाफा) साबून शाफे के सदृश बनाकर गर्भाशय के मुख में रक्खें या उस को कडुवे तेल में पीस कर उस में रुई भिगो कर गर्भाशय के मुख में रक्खें—(अन्य) मुरमक्की गुड़में लपेट कर खावें और कटोल पीसकर शाफा करें—(काढ़ा) कि पेटसे लड़का निकालने के वास्ते अद्भुत औषधि है—बथुवेके बीज डेढ़ तोला आध सेर जलमें औटावें जब आधा पानी शेष रहे छानकर पियें (चूर्ण) कि गर्भको गिरावे अशनान एकटंक चूर्ण करकेफांकें-(शाफा) कि गर्भको गिरावे और क्षतु के रुधिर को जारी करे एलवा बन्दाल मुर बराबर लेकर तेज शराब में खरल करके शाफा करें—(काढ़ा) कि लड़के का नाल झिल्ली गर्भाशय से निकालता है सहँजने के वृक्ष की छाल गुड़के साथ औटाकर पियें—(अन्य) गर्भको गिराता है जंगली कबूतर की बीट और गाजरके बीज बराबर लेकर बफारा दें—(दूसरा शाफा कि गर्भको गिरावे) सुनसुन कि गेहूं में होताहै और एलवा बराबर लेकर शाफा करें—(लेप) कि गर्भ गिराने में सहायता करताहै ऊंटकटारेकी जड़ पानी में पीसकर स्त्रीके उदर पर लेप करें—(अन्य) गुड़हल का फूल पानी में पीसकर नाभि पर उसके चहुं ओर लगावें (अन्य) बफारा कि गर्भ को गिराता है गन्धक मुरमक्की हींग गूगल पीसकर बफारा लें जो इसमें गायका पित्ता भी मिलावें अधिक बलवान् होजावे—(बफारा) जीते और मुरदे लड़के को उदरसे निकाले और गर्भको गिरावे घोड़े की लीद स्त्री अपने आगे जलाये और बफारा ले—(अन्य) अनारकी छालका बफारा भी गुण करता है—(औषधि) जो कि लड़का गिरावे बिसखपरेकी जड़ छः उंगल काटकर उसका एक तरफ महीन बनावें और एलवा गायके पित्तेमें पीसकर इसको महीन तरफमें खूब लगाकर सुखा कर मर्भके मुख पर्य्यन्त पहुंचावें और उसकी दूसरी ओर एक तागे से दृढ़ बांधदें इसी तरह दो चार दिन रक्खें कि

बच्चा गिरजावे—(औषधि) शोरा आधा दाम निहार मुंह खावें गर्भ गिरजावे—(शाफा) अरण्डकी नरम टहनी रेंडी के तेलमें भिगोकर शाफा करें—(बफारा) गधे के सुम और गूहका बफारा लें—(औषधि) गर्भ को गिरावे मेथी, हल्दी फिटकरी एक २ दाम, तूतिया, भड़भूजेके छप्पर का धुंवा आधा २ दाम कूट छानकर पानीमें मिलाकर शाफा बना कर सुखावें पहिले चिकनी और नरम करनेवाली चीजें जैसे कि घी और पुदीने की पट्टी गर्भाशयमें लगावें फिर सुबह और शाम वही शाफा रक्खें और गर्भके गिरने के उपरान्त घीमें एक लत्ता भिगोकर भगमें रखना उचितहै कि पीड़ादूरहोजावे और गर्भके गिरजानेके उपरान्तभी गोखरू छः मासे, खरबूजेकेबीज, सौंफएक२ तोलाऔटाकर छानकर मिसरी मिलाकर पियें और भोजन कुछ न करें और पानीके बदले कपासकीहरी कलियांऔर बाँस की हरी गांठेंचार२ दाम पानी में औटाकर पिलाया करें—(औरकाढ़ा)गाजरकेबीज, सोयेकेबीज, मेथीछः२टंकदोसेर जल मेंऔटावें जब एक सेर शेष रहे मलकर छानकर दो सप्ताह पर्य्यंत इसी प्रकारपियें गर्भगिर जावे—(अन्य)आजमाया हुआ एलवा, बिसखपरेकी जड़, तूतिया, खिरनी के बीज, मकुवेकेबीज बराबरकूटछानकर बत्तीकरके रक्खें (शाफा)गर्भ के गिराने को आजमाया हुआ है अरण्ड की कली एक दाम, एलवा चार मासे, खिरनी के बीज की गिरी चार मासे, महीन पीस कर शाफा बनाकर सुबह और शामगर्भाशयकेमुखमेंरक्खाकरें—(अन्य)गर्भगिरानेके वास्ते चूके की लकड़ी कि मशहूर लकड़ी है उसे बकुधा ऊटों की खारिश के वास्ते लगाते हैं एक भाग उसमें से लेकर पानीमें घिसें और तीन भाग रसौत मिलाकर छुहारे की गुठली के बराबर शाफा बनावें और शाफा कर के गर्भाशय के मुख में रक्खें दो या तीन दिन में गर्भ गिर जावेगा और जो गर्भाशय के मुख के गिर्द गिर्द दाने

पड़जावें उसमें घृत लगावें—(काढ़ा)अखरोट की छाल, बिनोला, मूलीके बीज, गाजरकेबीज, सोयेके बीज, कलौंजी बराबर लेकर जव कुट कर दुगना गुड़ मिलाकर स्वभाव के अनुसार लेकर जल में औटावें जब तृतीयांश शेष रहे पिलावें—

भग के सङ्कीर्ण करने का यत्न ॥

बैंगन सुखाकर पीसकर भगमें रक्खें—(चूर्ण)भगकी तंगी के लिये ढाक की कलियां छाया में सुखाकर बराबर की शक्कर मिलाकर तीन टंक रोज खाया करें चौदहदिनमें तंग होजावेगी—(शाफा)मदार की जड़ स्त्री अपने मूत्र में पीस कर शाफा करे चार घड़ी के पीछे पुरुषके पासजावे पुरुष उसपर मोहित होजावें—(अन्य)केंचवे सुखाकर स्त्री अपनी भग में मले कोई मनुष्य उससे जीत न पावे—(अन्य) तंगीके लिये बबूलकी छाल, झड़बेरीकी छाल, मोमसिरी की छाल, कचनार की छाल, अनार की छाल बराबर ले कर थोड़े जल में औटाकर उस जल से शौच करें और औटाते समय एक सपेद कपड़ा उसमें डालदें जब रंगीन होजावे थोड़ा कपड़ा भग में रक्खें—(चूर्ण)ढाककी कोपल छायामें सुखावें और कूट छानकर उसके बराबर मिसरी मिलाकर आधे टंक से दो टंक पर्य्यंत खावें सात दिन में तंगी का गुण प्रगट होगा—(औषधि)तंगी के लिये पीस पीस कर हर रोज दो बार भगमें मलें—(अन्य)सूखी बीर बहूटी घी में पीस कर मलें—(अन्य)भग को तंग करे गेंदे की छाल जलाकर उसकी राख मलें—(अन्य)जाही जूहीके फूल कूट छान कर भगमे रक्खें—(अन्य)बकायन के वृक्षकी छाल सुखा कर पीस छान कर भग में रक्खें बहुत गुणकरे—(अन्य) खट्टी पालक के बीज कूट छानकर भगमें रक्खें—(चूर्ण) उसतरी को दूरकरै जो गर्भाशय से बहतीहै मौलसिरी की छाल सुखाकर कूट छानकर उसके

बराबर शक्कर मिलाकर हर सुबह एक हथेली भर ताज़े पानीसे फांके—(अन्य)इमली के बीजकी गिरी कूटछानकर सुबह और शाम भगमें मलाकरें—(अन्य) समन्दर झाग हरके बीज की गिरी बराबर लेकर पीसकर भगमें रक्खें तंग होजावे—(अन्य)भगके संकीर्ण होनेके वास्ते आज़माई हुईहै और इससे उत्तम कोई औषधि नहीं है चीनिया गोंद छः मासे महीन पीसें और दो तोले फिटकरी भूने और भूनते वक्त पानीमें वही चीनियागोंद मिलाकर उस पर छिड़कें ठण्ढा होनेके पीछे पीसें फिर थोड़ा गुलधावा मिलाकर दूसरीबेर पीसकर भगमें रक्खें—आश्चर्य दायक लाभदेखें—(अन्य) तंगीके वास्ते गुणकरे कचनाल की कली एकदाम, अनार की छाल, मोचरस पांच २ मासे, बबूल की फली कच्ची सुखाकर चार, माजू एक महीन पीसकर कपड़े में छानकर सेवनकरें—सुहागा, सोंठ, यह वैद्यों का नुसखाहै स्त्रियोंकी कमरकी ताक़त के वास्ते—सोंठ आध पाव तीनपाव घी और गौके दूधमें औटावें जब गाढ़ा होजावे खरबूजे के बीज की गिरी, चिरौंजी, निशास्ता सिंघाड़ा दो२तोले,असगंध,सपेदमूसली,मोचरस,गोंदना-गौरी इलायची के दाने, सतावर दो २ तोले, तेजपात चन्दन पीसकर तज, गुलधावा, नौ२मासे गोखरू, पीपल काली मिरच, बालछड़, नागरमोथा, कोंच के बीजोंकी गिरी, चीनियागोंद छः छः मासे कूट छानकर शक्कर में माजून बनावें॥

स्त्रीके ऋतुके रुधिर के अधिक बहने का यत्न॥

यदि नियत दिवसों में नहो उसको इस्तखासा बोलते हैं इस रोगमें छातियों के नीचे सिंगी लगाना बज़त गुण दायक है—(औषधि) जो ऋतु के रुधिर को बन्द करदे बकायन की कोंपल एक तोला भंगकी तरह घोटकर रस निकालकर पियें—(अन्य)कि रुधिरको बन्द करदे कपास

के फूल जलाकर उसकी राख एक २ हथेली भर पानी के साथ फांके—(अन्य) सरयाला जलाकर उसकी राख एक हथेली भर फांकें—(अन्य) कुड़ा की छाल सात मासे कूट छानकर थोड़ी शक्कर के साथ पानीसे फांकें—(चूर्ण) ऋतु के अधिक रुधिर को बन्द करता है—मसूर, अरहर, उड़द दो तोले, साठी के चावल एक तोला सबको जला कर महीन पीसकर चूर्ण बनाकर एक हथेली भरखावें—(चूर्ण) कि रुधिरको बन्दकरे चने जलाये जुये, तज, लोध बराबर पीसकर बराबर शक्कर मिलाकर एक हथेली भर फांकें (अन्य) ऋतु के रुधिर के बन्द करनेके लिये मालतीके फूल शक्कर तरी छः छः मासे मिला कर खावें—(अन्य) राल पीस कर शक्कर के साथ चूर्ण बना कर खावें (अन्य) संगज राहत गेरू बराबर लेकर चूर्ण बनावें खूराक छः मासे सुबह को ठण्ढे जलसे फांकें—(अन्य) छोटी दुद्धी छाया में सुखाकर कूट छानकर हरसुबह एक हथेलीभर खावें—(अन्य) इस्तखा से दूर करने के लिये लाखके दाने शक्कर बराबर पीसकर एक हथेली भर जल से खावें—(अन्य) असगंध कूटछानकर मिसरी बराबर मिलाकर एक तोला भर पानीसे फांकें—(अन्य) बबूलका गोंद भून कर गेरू बराबर पीसकर हर सुबह दो मिस्कालखावें—(अन्य) ऋतु के रुधिर की अधिकता को गुणदायक—हरसिँघार की कोंपलें सात पानी में पीसकर छानकर पियें—(अन्य) मुल्तानी मट्टी पानी में भिगोकर उसका साफ़ जल पिये—(काढ़ा) कि ऋतुके अधिक रुधिरको गुणकरे सूखीधनिया एक हथेलीभर औटाकर छानकर कईदिन खावें—(अन्य) कचनाल की कलियां, और हरा गूलर, और खुरफे का साग, और मसूर की दाल, और पटसनके फूल, पकाकर लाल चावल के भात के साथ खाना ऋतुके रुधिर को रोकता है—सुपारी पाक जो ऋतु के रुधिर और भग की तरी के दूर करने के वास्ते गुणकरे गौ का दूध पांच सेर

सुपारी चिकनी पावभर कूट छानकर दूधमें मधुरी अग्नि पर औटावें कि पक जावें फिर आधसेर शक्कर डालकर कवाम करें फिर छोटी बड़ी माईं पक्के अढ़ाई २ दाम पक्की सुपारी के फूल, धवई के फूल पक्के पांच २ दाम, ढाक का गोंद आध पाव सबको सुरमें की भांति महीन कूट छानकर जब कवाम टण्ढाहोनेलगे औषधि उसमें मिलावें और साफ बरतन में रखकर आवश्यकता के अनुकूल एक दाम से तीन दाम पर्यंत खावें—(टिकिया) कि रुधिर की अधिकता को बन्दकर दे रसौत, बबूलका गोंद, राल एक २ मासा, सुपारी अढ़ाई मासे पीस छानकर पानीमें एक मासे की बराबर टिकिया बनावें दो तीन टिकिया खावें—(अन्य) कि रुधिर को बन्दकरे गधे की लीद सुखा कर पोटलीमें बांधकर भगमेंरक्खें—(अन्य)बकरीकी मेंगनी सूखी पीसकर पोटली बनाकर गर्भाशयके मुख के निकट रक्खें जो उसमें थोड़ा कुन्दर मिलावें अधिक गुण करेगा (अन्य) रुधिर को रोके—अनार की छाल औटाकर एक तोला भर पियें—(अन्य) ऋतु के अधिक रुधिर आने के लिये आजमाया हुआ है जीरा भुना और कच्चा लाल चावलों की पीच में पीसकर भग में रक्खें॥

ऋतुकेरुधिरके बन्दहोजानेकायत्न॥

यदि शरीर में रुधिर के कम होने के कारण होजावें कोई हानिनहीं और जो किसी और कारण बन्दहोतो यत्न करना चाहिये साफन की फसद ऋतु के दिनों के पहिले खोलना रुधिर को खोलताहै—(काढ़ा) कि रुधिर को जारीकरे तोंबा सुर्ख,मजीट,मेथी,गाजरकेबीज,सोयेके बीज, मूलीकेबीज,अजवायन,सौंफ,तितलीकीपत्तियां, गुड़ बराबर मिलाकर औटाकर पियें—(अन्य) रुधिरको खोलनेके वास्ते नरमें अर्थात् कपासकेपत्ते औरफूल आधपाव सेर भर जलमें औटावें जब चतुर्थांश शेष रहे साफ करके

चारदाम गुड़ मिलाकर पियें—(काढ़ा) कि गर्भकोगिरादे और रुधिरजारीकरे अखरोटकी छाल,मूलीकेबीज, अमलतासकी छाल,परसियावसान,वायबिडंग,जवकुटकर हर एक नौमासेले और गुड़ औषधियोंसे दुगनाले सबको मिलाकरऔटाकर पियें और बाजे कलौंजी और नरमें की छालभी अधिककरतेहैं—(काढ़ा)रुधिरजारीकरनेकेवास्ते अधकुचली नींबकी छाल दो तोले, अधकुचली सोंठ चार मासे, गुड़ दो तोले डेढ़ पाव जलमें औटावें जब आधपाव जल शेष रहे छानकर पियें—(काढ़ा) कि कमर की पीड़ा के लिये कि ऋतु में स्त्री को होता है गुण करे सोंठ, वायबिडंग आधादाम,गुड़ दोदाम औटाकर पियें—(कल्क) कि रुधिरको जारीकरे काले तिल, गोखरू एक २ तोला रात को जलमें भिगोदें सुबह को रस निकालकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पियें—(चूर्ण)कि रुधिर जारी करे मूली के बीज, गाजर के बीज, मेथी कूट छानकर एक हथेली भर गुनगुने पानी से फांकें—(अन्य) मजीठ पीसकर एक हथेली भर फांकें— (अन्य) कलौंजी की जवारिश स्त्री के ऋतु का रुधिर और मूत्र लाती है और गर्भाशय की पीड़ाको दूर करती है—(बत्ती) ऋतु के रुधिर को आराम से जारी करे गुड़ थोड़े घृत में मिलाकर किसी बरतन में आगपर रक्खें जब बत्तीबनानेके योग्य होजावे थोड़ा बीरोज़ा सूखा पीस कर मिलाकर बत्ती बनाकर गर्भाशय के मुखमें पहुंचावें—(अन्य) जो नखका धुवां स्त्री कई बेरले रुधिर जारी होजावे—(अन्य) गंदेबिरोज़े का धुवां भी रुधिर जारी करता है—(लेप) गर्भवती स्त्रियों के नले की पीड़ाको गुण करे कालीजीरी दो दाम, रेंड़ी का गूदा आधपाव, सोंठ एक दाम सबको औटाकर पीसकर गुनगुना लेप करें—(अन्य) कि गर्भाशय को तरीसे साफ करे मुरमकी लौंग बराबर कूटछानकर लत्तेमें बांधकरसुबह औरशाम गर्भाशय के मुख में पहुंचावें तीन दिन में साफ करे—(अन्य)

गर्भाशय की तरी को सुखावे अजमोद, वायबिडंग सूखा गंदाबिरोज़ा एक २ भाग, सोये के बीज, लाहौरीनोन आधा २ हिस्सा, शहद मिलाकर उसमें रुई भिगोकर गर्भाशय पर्यंत पहुंचावें—(अन्य) बायबिडंग, समुद्रझाग एक २ भाग, गंदाबिरोजा सूखा, लाहौरी नोन दो २ भाग कूट छाकर कपड़ेमें बांधकर भगमें रक्खें—(अन्य)उस गर्भाशय की पीड़ा को कि शीत से हो गुणकरे तिल मीठे तेल में पीसकर गुनगुना नाभि के नीचे लेप करें—(अन्य) गन्दाबिरोज़ा, लोंग, बायबिडंग, लाहोरी नोन, नरकचूर थोड़ा २ लेकर मीठे तेल में पीसकर उसमें रुई भिगोकर रक्खें गर्भाशयको तरीसे साफ़करताहै—(अन्य) गर्भाशय के व्रण को गुण करे पहिले शहद से शाफा करें कि पीब और मैल दूर होजावे फिर माजू जल में औटाकर उस जलसे कपड़ा भिगोकर शाफा करें कि सूखजावै और कुछभी तरी भगमें न रहें—(अन्य) हल्दी महीन पीस कर घृत में मिलाकर उसमें रुई भिगोकर शाफा बनावें और गर्भाशय पर्यंत पहुंचावें गर्भाशय के शोथ को बिल्कुल नष्ट करे और बहुत गुण करे—(केसर का तेल) कि गर्भाशय की सख़्ती को गलावे पचास मिस्काल केसर साढ़े तीन रतल मीठे तेल में डालकर पांच दिवस पर्यंत रहनेदें और हररोज़ हिलाया मिलाया करें फिर सेवन करें॥

शूल रोग का यत्न॥

वजे मुफासिल जोडों की पीड़ा को कहते हैं और नकरस पांव के उँगलियों की पीड़ा का नाम है और वजे उज्जहर पीठ और कमर के दर्द को कहते हैं और अरकुन्निसा को हिन्दी में रांधन कहते हैं और वह पीड़ा है कि चूतड़से शुरू होती है और पांवकी उंगलियों पर्यंत पहुंचती है यद्यपि यह सब रोग बराबर मुंजिज़ और मु-

सिल के बिना नहीं जाताहै परन्तु थोड़ी औषधि सुगम कि जो गुणदायक है ग़रीबों के वास्ते लिखीजाती है फ-स्द जो सब रोगों को नाश करे इन रोगों में बज़्त गुण करे फस्द के पीछे जो दवा सेवन करें शीघ्र गुण करेगी काढ़ा मुंजिज वजह वजेमुफ़ासिल को गुणकरे सौंफ, का-सनी के बीज, मको, परसिया वसान दो २ टङ्क, सौंफ़ की जड़, कासनी की जड़, मुलहठी, कबर की जड़ दो २ मि-स्काल, बाबूनेके फूल, गुलकन्द तीन तोले औटाकर पियें (चूर्ण) सोरंजान का जोड़ों की पीड़ा को गुण करे और दोषों को निकाले मलके पकाने के उपरांत पांच दिन पर्यंत सेवन करें मीठा सोंरजान दस टङ्क, सना सात टंक पीले हड़ की छाल चार टंक तुरबुद सपेद, खोखली की जड़ तीन टङ्क, बदाम की गिरी तीन टङ्क, मेंहदी के पत्ते दो टङ्क; केसर एक दाम कूटछान कर चूर्ण बनावें कंद औषधियोंके तोलसे आधोलें खूराक पांच टङ्क, पर्यंत चीते की गोली जो मुसिल है और जाड़ों की पीड़ा को गुण करे एलवा दस टङ्क, पीले हड़ की छाल पांच टङ्क, बनाईजड़ तुरबुद, सोरंजान, गूगल दो २ टङ्क, सोंठ, चीत, राई, हिन्दीनोन, इन्दरायण का परदा मजीठएक२ दाम, अजवाइन, पीपल, कालीमिरच हरएक आधा टङ्क कंद तीन टङ्क कूट छान कर गोलियां बनावें खूराक तीन टङ्क स्वभाव के अनुकूल यह गोलियां ठण्ढे स्वभाव वालों केयोग्यहैंगूगलकी गोलीजो जोड़ोंकेदर्दऔघटने औरपीठ की पीड़ा को गुण करे गूगल एक भाग, गुड़ दो भाग, बेर की बराबर गोलियां बनावें एक गोली थोड़े घृत के साथ निगल लिया करें इस का सेवन मुसिल लेने के पीछे चाहिये—(गोली) मुसिल के उपरांत सेवन की-जाती है जोड़ों की पीड़ा और कमर के दर्द और पीठ को गुणकरे काली और सपेद मूसली, पीपल अजवायन पिपलामूल एक २ दाम, सतावरबिधारा सोंठ असगंध

दो २ टङ्क, कूटछानकर गुड़ में मिलाकर जंगली बेर की बराबर गोलियां बनावें खूराक स्वभाव के अनुकूल गोली सम्पूर्ण शरीर की पीड़ा का जिसको हड़फूटन बोलते हैं गुणकरे पीले हड़ की छाल, काली हड़,सौंफ, कालीमिरच, पीपल, करंजुवे की गिरी काली जीरी एक २ भाग, दाख सुनके पांच भाग कूट छान कर गोलियां बनावें खूराक दो टङ्क, शिंगरफ की गोली जोड़ों की पीड़ा और आतशकका गुणकरे शिंगरफ,हल्दी, अजमोद, अकरकरा नीवके पत्ते, अजवायन, सँभालू के पत्ते इन्दरायणकी जड़ सिरफूका, असगंध, पाढ़ी, कालीमिरच, बकायन की जड़ मदारकीजड़, भिलावा बराबर कूटछानकर बराबर गुड़ मिलाकर गोलियांबनावें खूराक एकटङ्क—(अन्य)शिंगरफ पारा अफीम दो २ दांग, अजवाइन पांच दांग, भिलावे की टोपी दूरकरके सातदांग पुरानागुड़ पांचदांग पारा और शिंगरफ मिलाकर पीसकर औषधियों को कूटछानकर अदरक के रसमें खरल करके गोलियां बनावें और एकगोली खावें इस बात का विचार रखना चाहिये कि शिंगरफ की गोली और पारेकी गोली और सलुलफ़ार के खाने के दिनोंमें खटाई बादी मांस और नोनसे पथ्य करें और चावल दूध या चटनी या गेहूं की रोटी बिना नोन के बकुत घी डालकर या चावल और दही खायाकरें (काढ़ा) वैद्यकी रीतिसे कमरकी पीड़ाको गुणकरे अंजीर की जड़की छाल , सोंठ, धनिया बराबर लेकर जव कुटकर दशदाम लेकर एक रतिल जलमें रातको भिगोकर सुबह को औटावें जब चतुर्थांश शेषरहे छानकर पियें (हलवा) कमरकी पीड़ा को गुणकरे सोंठ, रेंडी की गिरी, छः छः दाम,घी और शक्करबार२ दाम,गायकादूधआधसेरपहिले रेंडी की गिरी पीसकर घीमें भूनें फिर दूधमें मिलाकर औटावें जब गाढ़ा होजावे शक्कर डालकर हलवा बनावें खूराकस्वभाव के अनुकूल खावें चार दाना जोड़ोंकीपीड़ा

और कफ वात के रोगों को गुणकरे हालों, अजवायन कलौंजी, मेथी बराबर लेकर सुबह को एक चुटकी भर अर्थात् तीन उंगलियों से जितनी उठे फांक कर पानी के घूट से निगल जावें इस नुसखे को हाकिम बदन कहते हैं माजून जोड़ों की पीड़ाको सोरंजान दश टंक, सना पांच टंक, सोंठ, असारों, सपेद जीरा दो २ टंक, शहद सबके बराबर लेकर माजून बनावें खूराकदोमिस्काल गरम जल से—(औषधि)कमर और जोड़ों की पीड़ा को कि गरमी से हो गुणकरे—धनिया एक टंक, कन्द तीन टंक मिलाकर खावें और तीन टंक खशखाश, तीन टंक कन्द, के साथभी गुण करे—चार दाना कि ठण्ढी बीमारियों में सेवन करते हैं मालकंगनी, पंवारके बीज, बावची हालोंबराबर मिलाकर रक्खें तीन मासे सुबह को पानी के साथ निगल जावें यह औषधि सफ़ेद दाग को भी गुणकरती है—(औषधि) जोड़ों की पीड़ा और बाई की पीड़ाको गुणकरे— और कफ की निवृत्ति कारक और आरोग्यता की देनेवाली है मालकंगनी लेकर पहिले दिन एक दाना निगलें और हररोज एक दाना बढ़ायाकरें जब सौ दाने तक पहुंचे एक २ कम करें इस अवसर कमी और जियादती में यह रोग नाशहोजावेगा और क्षुधा अधिक होगी जो जियादाकरनेकेदिनोंमें गरमी मालूमहो अधिक न करें किन्तु उसीसमयसे एक२ कमकरें (अन्य) कमरकीपीड़ाको गुण करे करील की लकड़ी जलाकर दो मासेयोड़े घतके साथ खावें—(अन्य)हाथ पांव के रहजाने को गुण करे और सदा के कब्ज को दूर करता है और जिस मनुष्य को कौलंजीके उसको बहुत गुण करे रेंडी छीलकर निगल जावें पहिले दिन एक दाना दूसरे दिन दो दाने इसी तरह एकएक अधिक करते रहें जब सात दाने तक पहुंचे एक २ दाना हररोज कम करें— (अन्य) बाई की पीड़ा को गुणकरे हररोज एक मासा भर रवासन के बीज खावें—(अन्य)

जोड़ों की पीड़ा को गुण करे खशखाश का पोस्ता अपने स्वभाव बल के बराबर पानी में भिगोदें और इतना पिसें कि नशा न हो—(अन्य) कल्मीशोरा, दो मासे कतीरा छः रत्ती एक दाम शहद में मिलाकर तीन दिन खावें और दो मासे मीठे तेल में मिलाकर कमर पर लगावें (अन्य)शक्कर और खोपरा खाना कमर की पीड़ा को गुण दायक है—(अन्य)मक्रवे के बीज का तेल कि कोल्हू में निकालते हैं और घीकी तरह पीला निकलता है जोड़ोंपर मलना बाई की पीड़ा और जोड़ों की पीड़ा आदि को और शीत के रोगों को गुणकरे—(अन्य)कमर की पीड़ा को गुण करे रेंडी, लाहौरी नोन, मैदालकड़ी, एक एक तोला हींग छः मासे, गेहूं का आटा आध पाव, सब को साथ पीसकर रोटीपकावें जबएकतरफरोटीपकजावेपीड़ा कीजगहपरबांधें—(फलवेकातेल)कन्दके वृक्षके सदृश जरदी माइल होता है कि पहाड़ से लाते हैं उसको मुसिल के उपरान्त मलना जोड़ों की पीड़ा और बादी और कफ और शीत की पीड़ा को गुण करताहै—(सम्भालू कातेल) उसका मलना जोड़ोंकी पीड़ा को गुणकरे—सम्भालू कूट कर उसका रस निचोड़ कर उसकी बराबर मीठा तेल मिलाकर औटावें जब पानी जलजावे और तेल माच रहे छान कर गुनगुना पीड़ा पर मलें और सम्भालू के पत्ते गरम करके उसपर बांधे—(वेदअंजीर का तेल) जोड़ों की पीड़ाको गुण करे अरण्ड को जड़दोसेर आठसेर जल में औटावें जब दोसेर रहे रेंडीके तेलमें डालकर इतना औटावें कि पानी जलकर तेल माचरहे मर्दन करें—(अन्य) जोड़ोंकी पीड़ाको गुण दायकअलसीका तेलसरसोंकातेल तिलोंकातेल, आध २ पाव धतूरेके वृक्षका रस कि पत्ती फल और जड़ समेत निकाला हो इन सब तेलों में डाल कर मधुरी अग्नि पर जोसदें जब तेल जलकर तेलशेष रहेछानकर पीड़ा परमलें उसपर अरण्ड या मदार के पत्तेबांधें

(मदारकातेल)बातको पचाताहै और उसका मर्दनजोड़ों की पीड़ाको गुणकरे अधकुचली मदार की जड़ कड़ुवे तेल में जलावें जब जलकर नीचे बैठजावे तेल छान करमलें और केवल मदार के पत्ते गरम करके घुटनों की पीड़ापर बांधना भी गुणकरता है—(तेल)जोड़ों की पीड़ा औरफालिज को जिसे बाईने पकड़ा हो गुणदायक है मीठातेल पावभर, लहसुन आध पाव, भिलावेचार, लहसुन छिलाहुआ और भिलावा मीठे तेलमें जलावें कि राख होजावे फिर छानकर सेवन करें और हवा से पथ्य करें—(इस्पन्द कातेल)कमर और पिंडली और पहलू की पीड़ा और रांघन को गुण करे इस्पन्द मीठे तेलमें जलावें और छान कर सेवन करें और बाजोंके बिचार में इस्पन्द के तेलकी यह रीति है इस्पन्द आठ दाम, सोंठ दो दाम रात को पानी में भिगोदें सुबहको आधसेर तिलोंके तेलमेंऔटावें जब पानी इस्पन्द और सोंठ जलकर तेलमात्र रहे छान कर मर्दन करें और बाजे इसमें कड़वी कठ मिलाकर मलते हैं और बावची के तेलका मर्दन कि फालिज में वर्णन हुआ रांघन को गुण करे—(गोली)जोड़ों और पांवकेउंगलियों की और रांघनको अधिक पीड़ाको गुण करेचीत अफीम दो२टंक, काहू के बीज, अजवाइन दश२ टंक कूट छान कर चिल गोजेकी गिरी के बराबर गोलियां बनावें और एक गोली खावें—(अजवाइनकातेल)जो गठिया को गुण करताहै अजवायन पीसकर मीठे तेलमें मिलाकर मलें तम्बाकू का तेल जोडों के दर्द के वास्ते—तम्बाकू आधसेर तिलों का तेल पावभर तम्बाकू तोड़कर आधसेर पानीमें रातको भिगोवें सुबह तम्बाकू का पानी तिलों के तेल में मिलाकर मधुरी अग्निपर औटावें जब पानी जलकर तेल मात्र शेषरहे साफ़ करके मलें—(नाज़बोकातेल) घुटने की पीड़ाको गुणकरे नाज़बो की पत्तियों का पानी दो भाग मीठा तेल एक भाग लेकर औटावें जब तेल रहजावे एक

तोला भर चनेका पानी कि उसमें ज़ीरा पकायाहो मिलाकर पियें और जोड़पर भी मलें—(चोब चीनीका तेल) जोड़ों की पीड़ा और पीठकी पीड़ा और उसपीड़ा को जो आतन्शक से पैदाहो गुणकरे अधकुचली चोब चीनी मीठातेल दश२ मिस्काल, पांचसेर जलमें औटावें जबपानी जलजावे साफ़ करके सेवनकरें—(चमगादर का तेल)जोड़ों की पीड़ा और बदनकी ऐंठन और फालिज और कांपनी को गुणकरे चमगादर बड़ा मोटा मीठे तेलमें औटावें जब चमगादर गलजावे साफ़ करके सेवनकरें और इस तेलको लिंगके छिद्रमें टपकाना मूचको भी जारी करताहै—(मेंहदी का तेल) जोड़ों की पीड़ाको गुणकरे मेंहदीको पतियां चार दांग पानीमें औटावें जब आधा शेषरहे साफ़ करके आधसेर मेंहदी के तेल के साथ जलाकर सेवन करें—(तेल) जोड़ोंकी पीड़ाको गुणकरे निम्मीपक का बनाया हुआहै मेंहदी के पत्ते,सम्हालू,नाजबो के पत्ते,धतूरे के पत्ते, मदार के पत्ते,अरण्ड के पत्ते,मको के पत्ते, बराबर लेकर उनका रस निकाल कर और पत्तों की बराबर तिलों का तेल डालकर औटावें और इसमें एकतोला, सोयेके बीज एक तोला, अजवायन छः मासे, मिलावें जबयह औषधि जलकर तेलमात्र रहे साफ़करके पहिले अफीम दोमासे तेलमें मिलावें फिर सोरंजान कड़वो एक तोला भर मिलाकर सेवनकरें—(सोंठका तेल)जोड़ोंकी पीड़ाको गुणकरे और हवाको पचावे अदरक का पानी, चार भाग मीठा तेल आधा भाग मिलाकर औटावें जब पानी जलकर तेलरहे साफ़ करके गुनगुना मर्हनकरें—(केवड़े का तेल)पीठ और जोड़ोंकी पीड़ाको गुणकरे और ढीले जोड़को सख्तकरे केवड़े का फूल मीठे तेलमें डालकर चालीसदिन धूपमें रख कर मर्हनकरें—(तितली का तेल)मलना पीठ और जोड़ों की पीड़ा को गुणकरे —(बफारा) कंधे की पीड़ा के वास्ते करंजुवा औटाकर बफारा लें और पत्ते बांधें और हवासे

बचेरहें और जिसको सरदी पकड़ ले यह बफारा गुण करताहैसिरसके पत्ते, संभालूके पत्ते, सहँजनेके पत्ते पानीमें औटाकर बफारालें और औषधियोंकोपानीसेनिकालकर जोड़पर बांधेंऔर हवासेबचेरहें—(बफारा)जोड़ों मेंगांठ पड़ जाने में और हर जोड़ की पीड़ा को गुण करे संभालू की पत्तियां, सोये के बीज, इस्पन्द औटा कर बफारा लें (औषधि) जोड़ों की पीड़ा को गुणकरे धतूरे के पत्ते गरम करके बांधे—(लेप)पीठ और घुटने की पीड़ा को गुण करे मैदालकड़ी पीसकर गुनगुनी बांधें—(अन्य)घुटने की पीड़ा के वास्ते नींबकी कोंपल और उसके अंदर की छाल पीस कर उसका गरम पानी लेकर गुनगुना लेप करें—(लेप) जोड़ोंकी पीड़ा और घुटने की पीड़ा और पांव की उंगलियों की पीडा को गुण करे नरमे की पत्तियां मीठे तेल में पीसकर लगावें—(अन्य)घुटने और जोड़ और कमरकी पीड़ा को गुणकरे बिनौला कूटकर थोड़े पानीमें औटावें जब गल जावे पीसकर टिकिया बनाकर एक दिन में दो बेर जोड़पर गुनगुना बांधें कई दिनमें पीड़ा दूर होजावे (लेप)जोड़ की पीड़ा को गुणकरे गाय का ताजा गोबर सिरके में पकाकर पीड़ा की जगह और सूजन पर बांधें (लेप)घुटने की पीड़ा को गुणकरे कनेर की पत्तियां औटा कर कूट कर मीठे तेल में मिलाकर लगावें—(अन्य)बकरी की मेंगनियां दोभाग जौ का आटा एकभाग सिरके और अरण्ड के तेल में मिला कर लेप करें—(लेप)पांव की उंगलियों की गरम पीड़ा को गुणदायक बजरक़ुतूना सिरके में पकाकर लेप करें—(अन्य) गरम पांव की उंगलियों को गुणदायक है काई लगावें और इसी प्रकार जौ का आटा और खतमी कूट छानकर लेप करना और शहद में मिलाकर लगाना ठण्ढे पांव की उंगलियों की पीड़ा को लाभ देताहै—(अन्य)घुटने की पीड़ाको गुणकरता है सहंजने के बीज पीस कर गुनगुने लेपकरें जोपुराना घुटने

की पीड़ाको दूरकोजावे—(अन्य)कांटेदार थूहरको फाड़ कर पीड़ा की जगह पर एक रात दिन बांधे रक्खें और कई दिन इसी प्रकार सेवनकरें— (लेप)जोड़ों की पीड़ा के लिये छिले तिल, बाबूना एक २ तोला, रेंडी की गिरी छः मासे पानी में पीसकर लगावें— (अन्य)सरकण्डे की जड़, सोंठ, पीसकर मीठे तेल में मिलाकर गुनगुना मलें और जो सरकण्डे की जड़ न हो तो नरकुल की जड़ काफ़ी है—(लेप)पांव की उंगलियों की पीड़ाको गुणकारक अरण्ड के पत्ते औटाकर पीसकर लेपकरें— (अन्य) शिर पीड़ा को ठहरावे लोबान पीसकर लगाकर सेंक करें पीड़ा दूर होजावे—(लेप)घुटने की पीड़ा और रांधन को गुणदायक साबून मेंहदी में मिलाकर पानी में पीस कर लेपकरें और बाज़ोंनेइन्द्रायण मिलानाभी लिखा है—(लेप)घुटने की पीड़ाको गुणकरे मेंहदी की पत्तियां अरण्ड की पत्तो पीस कर गुनगुने घुटने पर बांधे— (औषधि) कि कमर और पीठ की पीड़ा को गुण करे झल २ की छाल उसके ऊपर की स्याही दूर करके अंदर की छाल लेकर छायामें सुखाकर कूटकर पकावें और उसकी बराबर शक्कर मिलाकर निहार पांच टंक सौंफ के रसके साथ खावें—(अन्य) पांवकी उंगलियों की पीड़ा को गुणकरे बकरी की मेंगनिया शहद में मिलाकर लगावें (औषधि) रांधनको गुणकरे सोंठ, पावभर महीन कूटछान कर एक तोला पारा खूब उसमें दोनों मिलाकर उस से थोड़ा लेकर मर्दन करें—(लेप) बाईकी पीड़ा को गुण करे सहजने की पत्तियां पानीमें पीसकर गुनगुनी लेप करें— (औषधि) जोड़ की पीड़ा को जो शीतसे होवे गुणकरे सोंठ, कायफल, असगन्ध बराबरपीसकर मर्दनकरें—(अन्य) उस कमर की पीड़ा को गुणकरे—जो कफ और बात सेहो रेंडी, जाहोरीनोन, मैदाख कड़ी एक २तोला, हींग छःमासे, गेहूं का आटा आधपाव सबको कूट छानकर

मिलाकर रोटी बनावें एक तरफ रोटीको तवेपर सेंककर गुनगुनी पीड़ा की जगह पर बांधें—(लेप) पीड़ा और सूजनको गुणकरे—अजवायन कूटछानकर गरदमें मिलाकर लेपकरें—(लेप) एँड़ी और तलुवे की पीड़ा को गुणकरे मसूर सिरकेमें पकाकर गुनगुना लेपकरें॥

शरीर के प्रगट रोगों का वर्णन॥

आतशक का यत्न॥

यह रोग जलेहुये मल से पैदा होताहै चाहिये कि मुंजिज़ के उपरांत शरीरको कई बेर जले हुये दोषोंसे साफ़ करें और इस रोगका बहुधा यत्न विषैली वस्तुहैं ठंढाई बहुत हानि करती है कि उससे गठिया होजाता है और इलाज की रीतिसे रोगी मरजाता है चाहिये कि पहिले मुसिलले फिर और औषधि का सेवनकरें—(मुसिल) जो बिना खेदके मलको निकाले और आतशक को गुणकरे पारा, गंधक, आमला सार एक २ मासे, गेरू आधामासा जमाल गोटे की गिरी, सब्जी निकाल कर तीनमासे, पठिलेपारेऔर गंधकको मिलाकर खरल करें फिर सम्पूर्ण औषधि डालकर पानी में खरल करके टिकिया बनाकर बरतन में रखकर उसमें जल भरकर अग्नि पर रखदें जब सूखजावे निकालकर तीन रत्ती भर आधसेर दूध के साथ खावें—(दूसरा मुसिल) कफ और पित्तके मलको अच्छी तरह निकालेपारा,गन्धक,आमलासारएक२टंक,सुहागा शीत,कालीमिरच, सोंठतीन २ टंक जमालगोटे की गिरी सब्जीदूरकरके ग्यारह टंक बासीपानीमें एकपहर खरल करें खूराक एक रत्ती से दोरत्ती पर्य्यन्त मिसरी के शरबत के साथ—(गोली) मुसिल आतशक के लिये बनी हुई जमालगोटा एक टंक आमला चार टंक कूट छान कर नींबूके पानी में सात पहर खरल करके चने की बराबर गोलियां बनावें खूराक एक कौड़ीसे तीन कौड़ी पर्य्यन्त

रोगी के स्वभावानुकूल और बाजे नुसख़ों में बना जमाल-गोटा और काली हड़ एक २ भाग आटा दो भाग नींबू के पानीमें खरलकरके बंदूककी गोलीके बराबर गोलियां बनावें खुराक एक गोली—(अन्य)शोधीगंधक,शोधापारा सुहागा, सोंठ, काली मिरच, जमालगोटा शोधा हुआ बराबर लेकर कूट छानकर गायकेदूधमें पीसकर दोरत्ती की बराबर गोलियांबनावें खुराकएक गोली जलके साथ और गोली खाकर जितना जल पियें उतनाही मल गिरे भोजन दहीचावल या दूध चावल—(इन्दरायणकाशरबत) जो सौदावी मलको निकाले और आतशकवालों को गुण कारक है इन्दरायण की छाल टुकड़े २ करके दो भाग दश हिस्से जलमें औटावें जबचतीयांश शेष रहेसाफ़ करके औषधि की तोलके बराबर शक्कर मिलाकर क़वाम करें खुराक बारह टंक सेबीस टंक पर्य्यत—(औषधि)आत-शक के लिये चाहिये की पहिले तीन दिन भुंजिज पिला कर मुसिलदें शहतरे के पत्तों को शीरा दो टंक, सौंफ डेढ़ टंक, गुलकंद दो तोले मिलाकर पियें चौथे दिन हबुल-नील भून कर कूट छान कर बराबर की शक्कर मिलाकर तीनदिनखावें फिर यहजुक्का पिलावें आधा दामशिंगरफ महीन पीसकर एकदाम अफीम में मिलाकर नौ टिकि-या बनावें और तीन दिन एक टिकिया सुबह एक दोपहर एक शाम को तंबाकू की रीति पर बेरके कोलों से मट्टीके जुक्के में नरकुल के नैचे से पिये जब टिकिया खूब जलजावे उसको कोले आदि सहित उसी जुक्केके अन्दर डालदें और तीनदिन जुक्के से न निकालें और उसी जुक्के में पिया करें भोजन केवल भूने चने या चने की अलोनी रोटी तीनदिनतक फिर चौथदिन नरम खिचड़ी एकदो दिन खावें उसके पीछे इख्तियार है कदाचित् मुंह आये कचनाल की छाल औटाकर कुल्ली करें—(तेज) आतशक के वास्ते इन्दरायण की जड़ आधपाव कूटकर दो सेर

जलमें औटावें जब आधसेर शेष रहे मलकर साफ़ करके आधसेर रेंडीके तेलमें मिलाकर मधुरी अग्निमें औटावें जब पानी जलकर तेलमात्र शेष रहे शीशे में रक्खें और प्रभात को एक दाम के बराबर लेकर गौके दूध मेंमिलाकर पियें भोजन मूंग की खिचड़ी दो तीन दिनमें रोग दूर होजावे और यह दवा अतीसार के मल को निकालती है—(कल्कआतशक) को गुणकरे बन्दाल के फल दो आधपाव जलमें भिगोदें सुबह उसका साफ़ पानी पियें—(औषधि)आतशककी गुण कारक दश टंक कोंचकी पत्ती पचास टंक जलमें पीसकर निहार सात दिन पर्य्यंत खावें—(चूर्ण) आतशक के वास्ते आज़माया हुआ है कटोल कूट छानकर पहिले दिन एक मासा दूसरे दिन दो मासे इसीप्रकार हर रोज़ एक मासा अधिक करके सातदिन पर्य्यंत खावें फिर छोड़ दें इससे असर में एक बेर क़ै और दस्त आवेंगे और सिवा खटाई के और कुछइसमें पथ्य नहीं है—(अन्य) आतशक कोगुणकरे मदारकीलकड़ी का कोला पीसकर साफ़ करके उसके बराबर शक्कर मिलाकर दो दाम घृत में मिला कर सातदिन खावें भोजन कलिया—(अन्य)आतशक को गुणदायक अम्बासी के बीज जिसका पुष्प लाल हो जितना चाहें भूनकर उसकी छाल दूर करके उसकी गिरी कूट छान कर बराबर की शक्कर मिलाकर चूर्ण बनावें और हररोज़ एक दाम ठण्ढे जलसे खावें—(अन्य)रस कपूर नौ मासे इक्कीस कालीमिरचें कूट छानकर चूर्ण बनाकर सात भाग करें एक भाग निकाल कर छःभाग एक सुबह एक शाम बकरी या गाय के दूधके साथ खावें भोजन सात दिन पर्य्यंत दूध चावल फीके फिर कचनाल की छाल माजू चँबेली की पत्तियां इस्पन्दके काढ़ेसे गरगरा अर्थात् कुल्ली करें फिर शिर और पांव औटा कर कुल्ली करें—(अन्य) पीलेहड़की छाल काबलीहड़ की छाल, काबली हड़ लाल

मिरचदो२ मिस्काल पारा सात मिस्काल शक्कर सोलह मि स्काल कूट छानकरखूराक बनाकर सेवन करें—(अन्य)आ-तशक दूरकरे पीलेहड़की छाल कालीहड़ कीछाल भुना तूतिया जलीपीली कौड़ी बराबर लेकर नींबूके रसके साथ लोहेकेबरतन मेंसोलहपहर खरल करके कालीमिरचकी बराबर गोलियां बनाकर हररोजएकगोलीपानमें पन्द्रह दिवसपर्य्यन्तखावेंऔर थोड़ी गोलीकोपीसकरकागजपर रखघाव पर लगावेंजो मुंह आवे कचनालकी छालऔटकर कर कुल्ली करें—(गोली) आतशक को नाशकरे हरी तु-लसी की पत्तियां चार टंक, सब्ज तूतिया एक दाम पीस करबेरकी बराबर गोलियां बनावें खुराक एकगोलीसुबह को गरम पानी के साथ भोजन बेघीको खिचड़ी—(संखिये कीगोली) आतशकके लिये कत्था, संखिया, इलायची के दाने, खड़ियामट्टी बराबर ले जो हो सके तो गुलाब नहीं तो पानी में खूब पीस कर जुवार के बराबर गोलियांबना-कर बारह दिन तक रोज एक गोली खावें जो निर्बलता सूचित हो एक दिन बीच देकर खावें भोजन गहरी चीज और बादी और चौपायोंके मांस और खटाईसे बिल्कुल पथ्य रक्खें और नोन भी कमखावें और गेहूं की रोटी और गायका घी और मूंगकी दालखावें—(गोली)आत-शक की नाश कारक मदार की जड़ पांच टंक काली मि-रच अढ़ाई दाम कूट छान कर गुड़में मिलाकर जुवारकी बराबर गोलियां बनाकर एक सुबह एक शाम खावें ख-टाई और बादी से पथ्य करें—(दूसरीगोली) कालीहड़ चार दाम, काली मिरच एक दाम, सब्ज तूतिया चौथाई दाम, कागजी नींबू के रस में खरलकर के जंगली बेरकी बराबर गोलियां बनाकर एक सुबह और एक शाम का-गजी नींबू के रसके साथ चालीस दिन निगल जाया करें भोजन मूंगकी दाल और जो गोली खाने के समय क-ण्ठ में जलन मालूम हो थोड़ा दही खावें और बाजे

नुसखों में जंगीहड़ बीस तोला तूतिया एक तोला भर लिखा है और काली मिरच नहीं है—(संखियेकी गोली) संखिया एकटंक कत्था पांचटंक भंगरे के पानी में चनेकी बराबर गोलियां बनाकर पहिले दिन एक गोली सुबह और एक शाम खावें और जो हवा ठण्ढी और रोगी बलवन्तहो तीसरे दिन दो गोली सुबह और दो शाम चौदह दिन पर्य्यन्त इसी तरह खावें और यदि सम्भव हो इक्कीस दिन पर्य्यन्त सेवन करें और जो रोगी निर्बल और बायु गरम हो एक गरम हो एक गोली सुबहऔर एक शाम खावें औरजो गोलियों के खाने से मतलीऔर क़ै होवै पान बङ्गत खावें और खूब परहेज करें—(पारेकी गोली)गुदा के व्रण और आतशक को गुण करे पारा अ-ढ़ाई टंक, मस्तगी लालशक्कर तीन२ टंक, कुन्दर पांच टंक शिंगरफ दो टंक पहिले पारेको थूकमें मिलाकर उंगली सेखूब सानें कि टुकड़े उसकेअलगहोजावे फिर आधीशक्कर उसमें डाल कर मलें जब पारा शक्करमें मिलकर खूबमिल-जावे थोड़ा थूक और बाकी शक्कर डालकर खूब मलेंइसी तरह से हरदवा अलग कूट छान कर गुड़ औषधियों की बराबर लेकर जंगली बेरको बराबर गोलियां बनाकरएक टंक हर रोज एक सप्ताह पर्य्यन्त खावें—(दूसरीगोली) पारे की आतशक के वास्ते पारा,कत्था,बायबिडंग, अज-वाइन, काली मिरच, मङ्रवेके फूल एक २ भाग कूट छान कर औषधियों की बराबर लेकर जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली सुबह एक शामको जल के साथखावें भोजन गेहूं की रोटी—(अन्य)पारा, अकरकरा अजवाइन, मोचरस छः छः मासे मिलावें सात मासे गुड़ औषधियोंकी बराबर तिलमिलावेंकि तौलके बराबर कूट छान कर गुड़में मिलाकर चौदह गोलियां बनावें एक गोली सुबह और एक गोली शाम दही के साथ खावें (अन्य)जोड़ों की पीड़ा के वास्ते जो आतशक के कारण

होवे गुणदायक और आतशक को भी गुणकरे पारा खुरासानी, अजवायन, भिलावा, टोपी दूर करके अजमोद, इस्पन्द तीन २ मासे, गुड़ दो दाम कूट छान कर जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर हर रोज एक सुबह एक शाम कंठ में रखकर पानीसे इस तहस निगल जावें कि दांतों पर न पहुंचे भोजन खिचड़ी और दाल पके चावल और गेहूंकी रोटी खटाई और बादी से पथ्य करें पांचदिनमें रोगदूर होजावे और मुहं आवे कुल्ली करें मुसिल के पीछे खाना अधिक गुणकरे—(अन्य) आतशक को गुण करे हरेरूसे की जड़ की छाल पीस कर जंगली बेरकी बराबर गोलियां बनाकर घृतके साथ खावें—(अन्य) आतशक दूरकरे अजवायन को भूंसी सरसों कालीमिरच एक २ दाम कूटछानकर गोलियां बनाकर खावें इस औषधिमें कुछ पथ्यनहीं—(गोली) आतशकको गुणकरे सादी अजवायन खुरासानी भिलावा बराबर एक दाम लेकर भंगरे के रसमें कजली करके सुखावें और उस के बराबर गुड़ मिलाकर एक दाम की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली रोज एक सप्ताह बढ़त दो सप्ताह तक खावें और जो मुंह आवे कचनाल की छाल से कुल्ली करें—(शिंगरफकी गोली) आतशक और जोड़ों की पीड़ा को जो आतशकके कारणहो गुणकरे शिंगरफ अफीम पारा दो २ दांग अजवायन पांच दांग भिलावा टोपी दूर करके सात दांग पुराना गुड़ पांच दांग पारा और शंगरफ मिलाकर सम्पूर्ण औषधि कूटछानकर मिलावें और सम्पूर्ण औषधियों को अदरक के रसमें खरल करके सात गोलियां बनाकर एक गोली रोज खावें—(पारेकी गोली) आतशक को गुण कारक पापडिया कत्था एक २ बहलोली भर पारा चार मासे तीन बरस का पुराना गुड़ तीन बहलोली तीनों औषधि पीसकर मिलाकर सात गोलियां बनाकर सेवन करें अन्य (आतशकको गुणकरे) और वीर्यकी बलकारक

भीहैं पारा, गन्धक, हरताल, सुहागा, एक २ टंक काली मिरच, दोटंक कूटछानकर नींबूके रसमें मिलाकर गोलियां बनावें खूराक एक गोली सुबह एक शाम—(अन्य) आतशक को गुणकरे—(पारा) अजवायन मूसली काली दो २ टंक मिलावा एक टंक गुड़ सोलह टंक ग्यारह गोलियां बनाकर हर रोज एक गोली दही के साथ खावें काढ़ा) आतशक के वास्ते अज़माया हुआ है मुह नहीं लाता और परहेज भी इसमें नहीं है जो परहेज करें तो कलिया भात खावें शीघही आतशक कोखो देताहै कचनार की छाल इन्द्रायण की जड़, बबूल की फली छोटी कटाइ जड़ और पत्तों समेत पुराना गुड़ आध २ पाव तीन सेर पानीमें औटावें जब चतुर्थांश रहे साफ करके शीशे में रक्खें और सात खूराक करें ईश्वर चाहे शीघही रोग नाश होजावेगा—(अन्य) सिरस की छाल बबूल की छाल नींब की छाल सवासेर सबको सात लोटे जलमें औटावें जब लोटा शेष रहे साफ करके शीशे में रक्खें और हर रोज आधपाव पियें और एक सप्ताह पर्य्यन्त चने की रोटी भोजन करें, (औषधि)आतशक को गुणदायक बरगद के पत्ते जलाकर उसकी राख दो कौड़ी के बराबर पान में खावें, आतशक जो शेष रही हो दूरहोजावे—(अन्य) झल झल की पत्तियां पीसकर भंग की तरह पियें और उसका लोग व्रणपर बांधें (अन्य) आतशक को गुणकरे, बरगदकी छाल हरफारे वड़ी की छाल पांच टंक काली मिरचतीन टंक पचास दाम पानीमें पीसकर चौदह दिन तक खावें (अन्य) हंसकि एक घासहै पत्ते और बीजडाली और जड़ समेत जलाकर उसकी छःमासे भर राख हर रोज एक तोला भर शहद या गुड़ मिलाकर सात दिन पर्य्यन्त खायें—(अन्य) आतशक को गुणदायक कसौंधीकीपत्तियां यां पांच टंक कालीमिरच एक टंक दोनों को पीसकर पियें और बे नोन भोजन करें—(अन्य) आतशक को गुण

दायक रोग के प्रारम्भ में बड़ी कंघी के वृक्ष की पत्तियां एक दाम लेकर पानीमें भिगोकर उसका जल बीस दिन पर्य्यन्त पियें—(बफ़ारा) आतशक को गुणकरे खुरासानी अजवायन अढ़ाई मासे शिंगरफ पांचमासे तूतिया दो रत्ती अकरकरा पांच मासे मदार की छाल दसमासे कूटछान कर बेरकी लकड़ी की आगपर रखकर उसका धुवांलें (बफ़ारा) आतशक खुरासानी अजवायन झूंझर को फली अकरकरा मुरदार संग एक मासा पीसकर बेरकी लकड़ी से जलाकर धुवां लें—(हुक्का) आतशक दूरकरे शिंगरफ सब्ज़ तूतिया अढाई २ दाम बायबिडंग पांच मासे मदार की जड़ की छाल दस मासे जो स्वभाव बलवान हो बीस मासे कूट पीसकर छः टिकिया बनावेंऔर पानी बिना हुक्केमें बेरकी लकड़ी की आगसे तम्बाकू की सदृश पियें और उसका धुवां व्रणपर लें और उसका गुल कि राख के सदृश होजावे थूक में मिलाकर तीन दिन सुबह शाम घावपर मलें भोजन रोटी घृत शक्कर के साथ चाहिये कि इस औषधि के सेवन के पहिले जुल्लाबलें—(अन्य) शिंगरफ अकर करा, नीमकागोंद, माजू, सुहागा, एक २ दाम सम्पूर्ण औषधि जब कुटकर सात पुड़ियां बराकर एक पुड़िया चिलम में रखकर बेर की अग्नि सेपियें जब उसका एक तरफ जलजावे दूसरा तरफ उसका जलाकर पियें यदि इस अवसरमें कै आवे कुछ हानि नहीं इस तरह न एक दिनमें दो तीन पुड़िया सुबह दोपहर शाम को सेवन करें और उसकी राखघावपर छिड़कें भोजन मोहनभोग करें शक्करतरीकेसाथ तीन रोज निहायत रोज यहक्रिया करें बहुतहै जो मुह आये चम्बेली की पत्तियां औटकर कुल्ली करें—(औषधि) आतशक को गुण कारक करंजुवेकी हरी पत्तियां नींबकीपत्तियांपन्द्रह२ मासे काली मिर्चे साढ़ेसात मासे पत्तियों का रस निकाल कर चोब चीनी चार मासेपीसकर छिड़केइसी तरह सातदिनपियेंभोजन

मेंनोन नखावें—(अन्य)गरमी को गुण करे शिंगरफ फिट-करी इस्पन्द अजवाइन एक टंक२ सबको पीस करआधा २ टंकदोनों समय चिलममेंरखकर तमाकूकीसदृश बेरकी अग्नि से पियें और बन्द मकान में जहां बदन को हवा न पहुंचे रहे तेल और नोन से पथ्य करेंऔर सूखीरोटी खावें—(अन्य)आतशक कोदूर करे स्त्रीके रुधिर के कटुका कपड़ा जला कर उसके बराबर गुड़मिलाकर बेरकीबरा-बर गोलियां बनावें हर रोज़ सुबह को एक गोली खावें भोजन चावल या रोटी नोन खटाई से पथ्य करें—(अन्य) आतशक केलिये रस कपूर शिंगरफ छः २ मासे सब्जतूति-यासाढ़े तीन मासे सपेद मोम दोदाम गायका घी चार दाम कपड़ा चार गिरह नीब की पत्तियों की टिकिया पहिले टिकिया को तेलमें पकाकर दूर करें फिर मोम डालें जब वह गलजावे बरतन को नीचे उतार कररस कपूर डालकर हल करें फिर शिंगरफ पीसकर मिलावें फिर तूतिया डालकर मोमजामा करके छः बत्तियां बना वेंऔर अपने को चादर से छिपा कर एक बत्ती लेकरबेर की लकड़ी की आग से धुवां ले भोजन तीन दिवस पर्य्यंत दूध चावल खावें—(मरहम) आतशक को गुण करे रस क-पूर काश गरी सपेद हर एक सात मासे छोटी इलायची के दाने साढ़ेतीन मासे घृतमें हलकरके मरहम बनावें—(मरहम) कत्था दो मासे संग जराहत एक मासा तूतिया एक चनेके बराबर जली छालिया एक घी आवश्यकता के अनुकूल लेकर एक सौ एक बार धोवें फिर औषधियों में मिलाकर मरहम बनाकर घाव में रक्खें जो पीली कौ-ड़ी जलाकर मिलावें उत्तम है—(अन्य) इक्कीस मदार के पत्ते सरसों का तेल आध पाव सात २ पत्ते तीन बेर तेल में जलाकर राख करें फिर मोम छःटंक मिलाकर मरहम बनावें—(अन्य) आतशकका गुणकारक कीमुख्त जलाकर तूतिया पीलीकौड़ी जलाकर बराबर कूटछानकरछिड़कें

(अन्य) कत्था सफेद पुरानी सुपारी अढ़ाई २ दाम अंगार एकदाम सम्पूर्ण औषधियों को एक दाम जल में पीसकर कागज़पर लगाकर जलावें और उस की राख लेकर घावपर छिड़कें—(अन्य) पुरानेजूते का चमड़ा, मसूर चने जलाकर पीस कर छिड़कें—(अन्य)पीलीहड़, सुहागा आमला, सबको जलाकर पीसकर घाव पर बांधें ॥

कोढ़ का यत्न ॥

यह रोग सौदाबीहै जब दृढ़ होजाता है आराम नहीं होताआरम्भमें फस्द और मुसिल्लेना उचितहै चाहिये किहर महीने में मुसिल्लें और खेदचिन्ता और जागनेसे पथ्य करें और जो खुश्की अधिक हो तो जो चीज़ें कि असली रतूबत को पचाती हैं उनसे पथ्यकरें और कोढ़ी के लिये उत्तमोत्तम भोजन बकरी का दूध है बच्छनागकी माजून—यह नुसख़ा कोढ़ी के लिये बैद्यों का जारी किया हुआ है—कालीहड़, चीता दश २ टंक, कालीमिरच पांच टंक, बच्छनाग अढ़ाई टंक, कूट छान कर गाय के घी में भून कर दुगना शहद मिलाकर माजून बनावें खूराक एक मिस्काल है दो टंक पर्य्यंत या एक मिस्काल—(लाभ) हिन्दुओं का आज़माया हुआ है कि हरताल का कुश्ता चालीस दिन खाना कोढ़ को गुण करता है—हरताल के मारने की यह रीति है—हरताल एक दाम, करंजुवा, फिटकरी दो दो दाम, पहिले आधे करंजुवे की गिरी अध कुचली करके सकोरे में रक्खें उसपर आधी फिटकरी कूटकर बिछावें फिर उस पर हरताल डालें और बाकी आधी और करंजुवे की गिरी और फिटकरी कूटकर हरताल पर बिछादें और कपड़ौटी करके सातसेर जंगली कण्डे में रखकर आग दें जब ठण्ढा होजावे निकाल कर आधी रत्ती हररोज़ पान में खायें पचास दिन में रोग नाश होजावे—(दूसरी रीति)हरताल के मारने की यह है

कि एक दाम हरताल, अंडेकी सपेदी में मिलाकर गोली बनाकर सकोरे में रक्खें ऊपर से एक सकोरा ढाक कर कपड़ौटी करके सुखावें और चार पहर आग में रक्खें कुश्ता होजावेगा—(नींब का चूर्ण)कोढ़को गुणकरे पुरानी नींब के फूल पत्तियां फल छाल जड़ आध२सेर कालीमिरच, पीले हड़ की छाल, बहेड़ेकी छाल, आमला, बावची पाव २ भर कूट छान कर चूर्ण बनावें खूराक दो टंक चार टंक पर्य्यंत मजीठ के काढ़के साथ चारमहीने पर्य्यंत सेवन करें मांस नोन और गरम चीजों से पथ्य करें—(पारे की गोली)कोढ़ को गुण कारक और आज़माई हुईहै पारा दो टंक, संखिया एकटंक, कुन्दर छः टंक, रेवंदचीनी तीन टंक, बबूल का गोंद दो टंक, पारे को कुश्ता करके सम्पूर्ण औषधियों को नींबू के रस में खरल करें फिर कुश्ता और सात बहेड़े के पत्ते उसमें मिलाकर काली मिरच की बरा गोलियां बनाकर सुबह औरशाम एकगोली खावें खटाई से पथ्य करें—(काढ़ा)कोढ़ को गुणदायक शाहतरा, असगन्ध, ब्रह्मडण्डी,पीले हड़की छाल, बराबर लेकर दोतोले के बराबर रात को पानी में भिगोकर सुबह मलकर साफ़ करके पियें—(चूर्ण)कोढ़ और रुधिर के वेग को गुण करे हंसूटकीछाल कूट छानकर इर सुबह एकतोला पानी के साथ खावें खटाई बादी और नोन से पथ्य करें दो सप्ताह में अच्छी तरह गुण करेगा—(काढ़ा)कोढ़ को गुण करे चने की भूसी आध पाव सेरभर जल में भिगो कर सुबह मलकर छानकर इसी रीति से एक महीना उन्नीस दिन पर्य्यंतपियें चावल दूध दही और जो चीज सफेदहो और खटाई से भी पथ्य करें मांस और गुड़ और शक्कर जो इनमें से मिल जावे खावें जो कुछ रोग बाकी रहजावे और थोड़े दिन पियें—(औषधि)कोढ़ को गुण करे पानी के मस्ती के वक्त नींब के वृक्ष से टपकता है लेकर शरीर में मलें—(अन्य)सिरफूके के अरक का सेवन करना कोढ़ को

गुणकरे—(अन्य)नींब के फूलोंका अरक कोढ़ को गुणकरे (अन्य)कोढ़ को गुण करे बिजयसार की लकड़ी एक दाम कूटकर पानीमें भिगोकर हररोज़ इसी तरह से चालीस दिन पियें—(अन्य)मेंहदी की पत्तियां तीन मिस्काल रात को पानीमें भिगोदें सुबह मलकर साफ़करके थोड़ी शक्कर मिलाकर इसी तरह से चालीस दिन तकपियें—(औषधि) कोढ़ को गुणकरे—सिरस की पत्तियां पक्की एक दाम कालीमिरचें दो मासे हररोज़ पानीमें पीसकर चालीस दिन पियें—(अन्य)कोढ़ को गुणकरे बबूल की छाल दो दाम अधकुचली करके पानी में भिगो दें सुबह मल कर साफ़ करके हररोज़ इसी तरहसे पियें—(शीशम का शरबत)रुधिर के उपद्रव के सम्पूर्ण रोगों और कोढ़ को और गरमी को गुणकरे शीशम का बुरादा पाव भर नदी के तीनसेर जल में आठपहर भिगोकर सुबह औटावें जब आधा शेष रहे तीन पाव शक्कर में क़वाम करें खुराक छः तोले हर सुबह और शाम इस रीति से कि शीशम की लाल लकड़ीका बुरादा आधा दाम लेकर आधपाव जल में औटावें जब आधा शेषरहे साफ़ करके वही शरबत मिलाकर पिलावें चालीस दिन इसी प्रकार सेवन करें खटाई दूध दही और तरकारी आदि से पथ्य करें—(औषधि)कोढ़ को गुणकरे समन्दर फल दरख्त की छाल कूट छानकर हर सुबह एकतोला भर पानी के साथ तीनदिन खावें और तीनदिन नागाकरें इसी प्रकार इक्कीस दिवस पर्य्यंत खावें और इस अवसर में मूग की दाल और खिचड़ी भोजन करें पहिले दिनों में क़ैहोगी कई दिनों के पीछे क़ै आना बन्द होजावेगा—(औषधि) नींब की पत्तियों का नोन कोढ़ और खुजली और दाद को गुण करे—(लाभ) बकुत कोढ़ वालों को देखा कि रोग के शुरू में उन्हों ने अफीम और पोस्ता खाने की आदत की रोग शांत होगया—(शरबत) झाऊकी जड़का काढ़ा इस

रोग के दूर करने में लाल गंधक का हुक्म रखता है और साहब तज करै दाऊदी ने आजमाया हुआ लिखाहै—औषधि कि कोढ़ और सपेद दागको गुणकरे नींब की पत्तियां और उसके बराबर कालेतिल लाहारी नोन लेकर पुरानागुड़ सब औषधियों की बराबर मिलाकर इर रोज पांचटंक खावें॥

सिरके गंजका यत्न॥

वह शिर का व्रणहै पीप और खुरण्ड के साथ होताहै इस रोगकी उत्पत्ति सौदासे है लड़क पनमें कि तरी अधिक होतीहै जवानी के शुरू पर्यंत अपना बल करती है—(यत्न)जोकें लगाना गुणकारीहै—(आजमाई हुई औषधि) आमला जलाकर पावभर खशखाश का पोस्ता जलाहुआ आधपाव मेंहदी, कमीला चार २ दाम, तूतिया, भुनासुहागा, भुजवे के छप्पर काधुंवा, भट्ठीकी राख एक२ दाम कूटछानकर सरसों के तेलमें मिलाकर लेपकरें—पत्तों का तेल, गंजको गुणदायक विसखपरे के पत्ते, फराश के पत्ते नींबके पत्ते, चम्बेली के पत्ते, अरण्ड के पत्ते,बकायन के पत्ते और फल दो २ तोले पीसकर टिकिया बनाकर पावभर मीठे तेलमें जलावें फिर एक मासा तूतिया, मेंहदी की पत्तियां, मुरदारसंग, भुना सुहागा, जली हल्दी, कत्था बावची जल, आमला जलाहुआ, कालीमिरच, छः मासे पीसकर तेलमें जलाकर नींबकी लकड़ीसे हल करके सेवन करें—(गधेकी लीदका तेल)शिर के गंजको गुणकरे गधेकी लीद आधीसूखी गढ़ेमें रखकर थोड़े थोड़े कोले डालकर जलावें और उसके ऊपर कांसेकी ऐसी थाली कि उसके किनारे उलटेहुये हों इसतरह इसगढ़े पर रक्खें कि किनारे उसके दोउंगल उठेरहें कि लीदका बुखार उसथाली में समाहो उसको लेकर मलें—(अन्य) गंजको गुणकरे सरसानी आधी भुनी आधी कच्ची पीसकर कड़ुवे तेलमें मि-

लाकर लगावें—(औषधि) शिर के गंज को गुणकरे मेंहदी की पत्तियां चार तोला बावची, सुरदार संग, कमीला कत्था, सुहागा दोदोतोले, तूतिया तीनमासे, कूटछानकर कड़वे तेलमें मिलाकर मलें—(लेप) शिर के गंजको गुणकरे हल्दी छः दाम, तूतिया सब्ज तीन दाम, आधपाव मीठे तेलमें जलाकर पीसकर लेपकरें—(लेप) काबलीहड़ की छाल, कत्था, चीरा, कायफल, एक २ टंक, तूतिया सब्ज आधाटंक, कूटछानकर लेपकरें—(औषधि) लड़कों के शिर के गंज और उनफोड़े और फुन्सियों को जो लड़कों के शिरपर पैदा होतेहैं गुणकरे—कमीला, कत्था, गेरू, शोरा तूतिया एक २ भाग, सुरदारसंग, कालीमिरच, दो भाग मेंहदीकी पत्तियां चारभाग, सरसोंके तेलको गरम करके उसमें मिलाकर सेवनकरें—(लेप) सिर के गंजको गुणकरे अरण्ड की कोंपल कूटकर घोड़ानोन मिलाकर लेपकरें—(औषधि) शिर के गंजको गुणकरे पुराने जूते का तला जलाकर कड़वातेल मिलाकर सेवनकरें—(अन्य)तम्बाकू का गुल पीसकर कड़ुवे तेलमें मिकाल कर लगावें—(आंबके अचार का तेल) जो एक बर्षभर काहो लेकर शिरके गंजपर लगावें—(अन्य)घोड़े का सुम जलाकर मीठे तेलमें मिलाकर शिरपर मलें—(बकायन के फलका तेल) बकायन के फल की गिरी जवकुट कर कड़ुवे तेलमें जलाकर साफ़ करके शिर के गंजपर सेवनकरें—(फर्रास का तेल)शिर के गंजको गुणकरे फर्राश के पत्ते पीसकर टिकिया करके कड़ुवे तेल में जलाकर साफ करके मलें—(लेप)धनियां सिरके में पीसकर लगाना शिर के गंजको गुण करताहै—(अन्य)चुकन्दर के पत्ते पीसकर लगाना गुणकरे—(अन्य) बकरी की मेंगनिया लगाना शिर के गंज फलनेवाले और पीपवाले घाव को गुणकरे॥

बरस वहक अबैज अर्थात् सपेद दागका यत्न ॥

इन दोनोंमें अन्तर यहहै कि बरस उन सफेद दागों को कहतेहैं जो प्रगट में त्वचामें पैदा होतेहैं और मांस और त्वचाके भीतर घुसे होतेहैं और बहक अबैस सपेदी पतली गोल है बरससे आरोग्यता नहीं होतीहै और बहकमें जो शुरूमें यत्न कियाजावे नष्ट होजाता है—(यत्न) मुंजिज के उपरान्त कफ को मलका जुल्लाब दें और दूध इत्यादि और ठण्ढीचीजोंसे परहेज करना चाहिये—(गोली) जंगली अंजीर की छाल तेंतीस टंक, चीत सोलह टंक गन्धक पन्द्रहटंक, कालीहड़, धनिया छः टंक, कूटछानकर गाय के बच्चेके मूचमें मिलाकर औटावें जब गाढ़ा होजावे पीसकर जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर एक महीना बीसदिन तक हररोज एकसुबह एकशाम खावें—(गोली) सपेद दागको गुणदायक और बालों को सपेद नहीं होने देतीहै छिली बावची बनाई हुई कठूमर की जड़ की छाल, नींबको जड़ की छाल, नींब की डाली की छाल बराबर लेकर कूटछानकर रक्खें और कत्थे की लकड़ी के टुकड़े२ करके एक हिस्सा अष्टगुण जलमें औटावें जब आधा शेषरहे साफ़ करके उक्त औषधि उसमें खमीर करें और गोलियां बनाकर एक टंकसे डेढ़ टंक पर्य्यन्त खावें बावची के बनाने की यह रीति है कि बावची को लाल रंग गाय के मूच में जो जनीन हो इक्कीस दिन भिगो रक्खें फिर निकालकर उसकीछाल दूरकरके छाया में सुखावें—(गोली)सपेद दागको गुणकरे बनीहुई बावची कालेतिल बराबर लेकर शहद में मिलावें और तीन २ मासे की गोलियां बनाकर सुबह और शाम एक गोली खाया करें—(गोली)सपेद दाग को गुण करें—अजमोद, बावची, पवाड़के बीज, कवलगट्टा बराबर लेकर शहद या गुड़ मिलाकर गोलियां बनावें खुराक दो टंक—(गोली)

सफेद दाग को गुण दायक—गेरू, गंधक, बावची बराबर महीन पीसकर अदरकके रसमें रीठेके बराबर गोलियां बनावें और एकगोली जव कुटकर आधपाव जलमें रात्रि को भिगोदें सुबहको उसका साफ़ पानीपियें और फोग उसका शरीर पर मलकर धूप में बैठें खटाई और बादी से पथ्य करें और इसी प्रकार सदा सेवन करते रहें—(औषधि)बरस और बहकको गुणकरे कालेधतूरेके बीजदो टंक आधे कच्चे आधे पक्के,भुने चीता दो टंक, काली मिरच एक दो टंक कूटछान कर हर रोज दो रत्ती भर खावें भोजन एक समय दूध चावल—(घूंसकातेल)बरस को गुण करे एक घूंस पकड़ कर पेट चीर कर उसकी मैल दूरकरें और सौ बहलोली मीठे तेलमें औटावें जब तीयांशरहे उसमें लत्ता भिगोकर रात्रिको दागकी जगहपर रखकर बांधदें और सुबह को धो डालें इसी प्रकार पचास दिन पर्य्यन्त सेवनकरें लाभ होगा—(गोली)कसीस कालीपांच टंक तेल पन्द्रह टंक बावची तीनसेर नींबकी सूखीपत्तियां आध सेर कुन्दरकाली डेढ़ सेर कूट छान कर गोलियां बनाकर हर रोज एकगोली खावें—(नींबकाचूर्ण)बरसको गुणकरे नींबकी फल फूल और पत्तियां बराबर पीसकर दोमासे से खाना शुरू करके छः मासे तक पहुंचाकर चालीस दिन सेवन करें—(अन्य) बरस को गुणकरे—मुण्डी एक भाग समुद्रशोष आधा भाग कूट छानकर चूर्ण बनावें खूराक एकमासे से नौ मासे पर्य्यन्त—(अन्यसफेद दागको गुणदायक)बावची आध सेर नीम तीतपाव कूट छान कर एक हथेली भर खावें भोजन सिवाय चनेकी रोटीके और कुछ न खावें—(अन्य)सफेद दाग को गुण करे सफेद गूलर की छाल लालकेबीज दोनों बराबर कूट छानकर पानी से चालीस दिन पर्य्यंत फांकें—(औषधि)बरस को गुणकरे अजमोद पहिले दिन चारमासे फिर एक २ मासा रोज अधिक करके सुबह को ठंढे पानी से फांके यहां तक कि

आठ मासेतक पहुंचे जो दो महीने में गुण न मालूम हो तीसरे महीने बायबिडंग एक मासा भर मिलाकर खावें और खटाई और बादी से पथ्य करें लिखा है कि चनेकी रोटी या चने भून कर खाना आजमाया हुआ है सिवा इसके और कुछ न खावें—(अन्य)अजमोद दोभाग गेरू एक भाग कूट छानकर दो मासेभर खावें भोजन बे नमक और घी के रोटी खावें—(लेप) बरसको गुणकरे—बावची पंवार गेरू बराबर लेकर कूट छानकर अदरक के रसमें गोलिय) बनाकर दो सप्ताह पर्यंत मलकर धूपमें बैठा करें—(अन्य पलाश पापड़ा तीन टंक, कच्चा तूतिया तीन मासे, कत्था सपेद एक तोला महीन कूट छानकर नींबूके रसमें खरल करके गोलियां बनाकर लगाया करें और यहगोलीदाद के लिये भी गुण करती है—(लेप)कलौंजी सिरके में पीस कर लगाना बहक और बरस को गुणकरे—तरातेज के बीज सिरके में पीस कर लेप करना बहक और बरस को गुण करे—(अन्य)कुन्दश शहदमें मिलाकर लगाना बहक बरस और दाद को गुण करता है—(अन्य)मालकंगनी गौके मूत्र में इक्कीस दिन भिगोकर उसका तेल निकाल कर बरस पर लगावें—(अन्य)नौशादर शहदमें मिलाकर बरस और बहक पर मलना गुण कारी है—(अन्य)बरस को गुणकरे कलौंजी नौटंक बावची तीन टंक धतूरेकेबीज डेढ़ टंक मदार के पत्ते आठ पीस कर सपेद दागपर लगावें—(अन्य) बहक को गुण करे—कुन्दश मूली के बीज सिरके में पीस कर लगावें—(अन्य)बकरी के गुरदे को टुकड़े २ करके उसपर गन्धक उसपर छिड़क कर कबाब करें जो पानी उससे टपके उसको बहक सपेद और बरस पर मलें—(अन्य)बरस को गुण करे इमली के बीज छिले हुये बावची दोनों बराबर खूब पीस कर आठदिन तक लकड़ी से दाग की की जगह पर मलें—(अन्य)जंगली अंजीर की जड़ बावची सुहागा इमली ताजे पानी में पीस

कर चालीश दिन तक लेप करें—(लेप)हरताल सज्जी आधा २ दाम कूट छान कर मूचमें मिलाकर दागपर लगावें (अन्य)सपेद बहक को गुणकरे हलदी आंबा हल्दी आमला लाख गंधक, आमला सार, पवांर के बीज बराबर गन्धक छाछ कूट छान कर निर्मल पानी में मिलाकर बहक पर लगावें—(अन्य) सपेद दाग को गुण करे मजीठ चीत, तेल, गेरू बराबर कूट छान कर सिरके में मिलाकर लगावें—(लेप)मूली के बीज दश भाग कुन्दश कठ दो २ भाग पुराने सिरके में मिलाकर लेप करें—(लेप) बरस को गुण करे मूली के बीज चीत कुलींजन मामला बराबरसिरके में मिलाकर लगावें—(अन्य) बरस को गुण करे यह नुसखा किताब गंजआबाद आवर्द से नकल कियागया है सज्जी चूने की कली बराबर पीस कर जिस जगह कि सपेद दागहो लेप करें जब सूखजावे सख्त कपड़े से छीलकर दूर करें और फिर लगावें इस तरह थोड़े दिनोंके सवनमें उस जगहकी खाल दूर होकर एकदाग पड़जावेगा फिर उस जगह पर मीठा तेलमलें कि उसका असली रंग होजावे—(लेप) बरसको गुणकरे—बावची दहीमें तीन दिन पर्य्यंत भिगोदें फिर सुखाकर आतशी शीशेमें तेल निकालें और थोड़ा नौसादर पीसकरतेलमें मिलाकर दाग को छीलकर उसपर मलें—(अन्य) केंचुवा एक बरतन में बन्द करके एक महीने तक रक्खें इस औसरमें राख होजावेगा उसको लेकर बरस पर लगावें—(अन्य) बरस को गुणकरे काला बिछू मारकर सुखाकर सिरके में पीसकर बरस पर लगावें—(अन्य) होंठों की सपेदी को गुण करे अंधाझलीकी जड़ पानीमें घिसकर लेपकरें—(अन्य) तम्बाकूके बीजों का कोल्हू में तेल निकाल कर मर्दन करें थाड़े दिनों में दाग असली रंग पर आजावे—(अन्य) बरस को गुण करे केलेके पीले पत्ते कडुवे तेलमें जलाकर सुरदार संग मिलाकर मलें—(अन्य) सिरसके बीजोंका तेल निकाल

कर बरस पर मलें—(अन्य) बैंगनसादे का तेल बरस को गुणकरे बैंगन पानीमें पकाकर जब गलजावे उसका साफ पानीलेकर मीठे तेलमें मिलाकर फिर औटावें जब पानी जलकर तेल माचरहे सेवन करें—(अन्य) छुहारे का तेल बरसको गुणकरे एक छुहारा सरसोंके तेलमें जलाकर हलकरके रक्खें रातको दागपर मलकर कोलोंकी आग से सेकें कि गरम होजावे इसी तरह से थोड़े दिन सेवन करें बाजी पुस्तकों में लिखाहै कि खुरमेकी गुठली निकालकर साफ़करके तेलमेंजलाकर थोड़ा संगरफ मिलावे इस तेलको छाजन की जगह और नासूर परभी मलना गुणकरे॥

नारू का यत्न॥

व एक दाना है जब फूटजावे तो उसके अंदर तागा निकलताहै—(अन्य)मलको शरीरसे साफकरें औरनारूके गिर्दजोकें लगावें और गरम पानीसे कि उस में तेल डाल करजोश कियाहो तरेड़ाकरेंकि तागा सुगमता से निकले और रक्षाकरें कि टूट न जावे—(औषधि) नारूको गुणकरे पहिले नारू और सूजनको गुनगुना तेल मलकर मदारके पत्तोंसे सेंक करें और वही गुनगुने पत्ते सूजन पर बाँधें (औषधि) नारूके लिये गुणदायक है सपेद बिसखपरे की जड़ उसके पत्तोंके रसमें पीसकर नारूपर बाँधें और बाजे थोड़ी सोंठ भी अधिक करते हैं—(लेप) नारू को गुणकरे जमालगोटा पीसकर लेपकरें या कलौंजी दहीमें पकाकर लेप करें—(औषधि) जो केचुवा सूखा नारूवालेको खिलावे शीघ्रही सुखाता है—(अन्य) आधा दाम सुहागा गुलरोगन में हल करके तीनदिन खावें और इस अवसर में चिकना भोजन खावें—(अन्य) नारू को गुणकरे प्याज एक गिरह,लहसुन एक गिरह, थोड़ा साबुन, भिलावा एक राई आधा दाम कूट छानकर टिकियां बनाकर नारूपर

एकदिन रातबांधेंतीनदिनमें तागा बिलकुलनिकलआवेगा (औषधि)नारूकोगुणकरे—राल एक दाम साबुन दोदाम अफीमदशमासेकूटपीसकर आठदाम तिलोंकेतेल में पका करमरहमकी सदृशकरकेपानपर लगाकरबाँधेंऔर सुबह और शाम मरहम बदल दियाकरें तीन दिन में आराम होजावे—(लेप) नारूको गुणकरे मोठका आटा चारदाम थोड़ी हींग मिलाकर पीसकर खमीर करके नारूपर बाँधें (अन्य) चौलाईकी जड़ पीसकर नारू पर बाँधें—(गोली) नारूके लिये गुणकरे जंगली कबूतरकी बीट दो दाम गुड़ दो दाम कूट पीसकर जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर रक्खें रोज़ एक गोली खावें—(औषधि) नारूको गुण करती है कबूतरका पर दो चावल के बराबर गुड़ में मिलाकर खावें—(अन्य) सात दाने बकायन के हररोज़ निगल जावें—(अन्य) एलवा पहिले दिन आधादाम दूसरे दिन एक दाम तीसरे दिन एक मिस्काल भर खावें और ऊपरसे भी लगावें—(औषधि) पीले हड़की छाल,बहेड़ेकी छाल,आमला, सोंठ,केला,बराबर हररोज़ दो टंक छः टंक शहद मिलाकर खावें और दूध भी बज़ुत खाना गुण करता है ॥

रक्तपित्तका यत्न उसको सुर्खबादा भी बोलतेहैं ॥

यह रोग बज़ुधा लड़कों को होता है इसका कारण बज़ुत गर्मी और रुधिरका जोश है—(यत्न) दाईको साफ करनेवाली और रक्त शोधक औषधि पिलावें—(गोली) लड़कों के रक्तपित्तको गुणकरे—धमासा, रक्तचन्दन, ब्रह्म-दण्डो, नीलकण्ठी तीन २ मासे, बकायनकी पत्तियां, नींब की पत्तियां पांच २ मेंहदी की पत्तियां पांच मासे धनियां तीन मासे, कालीमिरच, सुल्तानी मिट्टी एक २ मासा मेंहदीकी पत्तियां और धनियां पानी में भिगोकर सुबह उसके पानीमें सब औषधि पीसकर चनेके बराबर गोलियां

बनावें भोजन मूंग की दाल और चावल बे नोन खावें खटाई और बादीसेपथ्यकरें—(अन्य) लड़कोंके रक्तपित्तको गुणकरे रसौत,कालीमिरच,अफीम,नींबकीपत्तियां चाकसू की गिरी,पेठेकेबीज बराबर कूटछानकर बाजरेके बराबर गोलियां बनाकर एक गोली लड़केको उसकी दाईके दूधमें मिलाकर दें—(औषधि) लड़कोंके रक्तपित्त को गुणकरे मिकन कि एक बूटी है दो दाम लेकर पानी में पीसकर पावभर आटेमें मिलाकर रोटी पकायें फिर उसमें घी मलकर दूध पिलानेवाली को खिलावें—आश्चर्य्य दायक गुणकरे—(अन्य) सिरफोका औटाकर लड़के को पिलायें (अन्य) रसौत एक चने की बराबर लड़के को खिलावें (काढ़ा) लड़कोंके खूनके उपद्रव और रक्तपित्तको गुणकरे रक्तचन्दन,मेंहदी,धनियां चार२ टंक,गुलमोसफर दोटंक जव कुटकर सात खुराक करें और खुराक आधपाव जलमें भिगोकर सुबह जोश देकर पियें और एक फोग उसका रातको औटाकर पियें और उसका फोग शरीर में मलकर गरम पानीसे धोडालें सात दिन इसी तरह सेवन करें भोजन गेहूंकी रोटी और घी नमक न खावें॥

दाद का इलाज॥

यह रोग सौदावी रोगहै त्वचापर फैलता है रुधिर से भी उत्पन्न होताहै प्रारम्भमें उसका यत्न कि जबतक मांस के अन्दर न घुसे सुगम है और जब मांसमें घुसजावे तो जब तक जोंक और पछने और तेज़ औषधियोंका सेवन न करै दूर नहीं होतीहै—(दादको गुणकरे) राल,गन्धक,सुहागा खुरासानी अजवाइन कूट छानकर पानीसे गोलियां बनाकर दादको खुजलाकर उसपरलगावें—(लेप) दादकोगुण करे मुरदार संग,गन्धक,नौसादर, सुहागा, भाजू, कालीमिरच, सपेदकत्था,अफीम,चीनियागोंद कूट छानकर गोलियां बनावें और नींबके रसमें पीसकर लेप करें—(अन्य)

माजू एक भाग, चूना डेढ़भाग माजू महीन चूनेमें हलकर के थोड़े पानीमें मिलावें जब थिरा जावे पानी लेकर दाद कोखुजलाकर उसपरमलें (लेप) दादको खुजलाकर उसपर घी मलकर चूना उसपर लगावें—(औषधि) दादको गुणदायक मदारकेफूल पवांरकेबीज कूट छानकर खट्टेदही में मिलाकर महीन करें और जो खट्टा दही न मिले पानी काफीहै—(लेप) इमली के बीज नींबूके रसमें पीसकर मलें (अन्य)सूखासिंघाड़ा नीबूके रसमें पीसकर लगावें—(अन्य) हारसिंघारकी पत्तियां पीसकर लगावें—(अन्य) अब्बासी की पत्तियां नोनके साथ पीसकर मलें—(अन्य) हल्दीजलाकर पीसकर चूने और पानमें मिलावें फिर पानीमें हलकरके दादको खुजलाकरलगावें—(अन्य) नींबूकारस हररोज़ दो बेर दादको खुजलाकर उसपरमलें—(अन्य,पाल कजूही की जड़ नींबूके रसमें घिसकर मलें और उसकी पत्ती भी मलना गुणकरे—(अन्य) कलौंजी सिरके में पीसकर मलें—(लेप) पलासपापड़ा, कत्था पीसकर लगावें (अन्य) कसौंधी की जड़ नींबू के रसमें घिसकर लेप करें (अन्य) गेहूं का चोया गुनगुना मलें और चोयेके निकालने की यह रीति है कि गेहूं धोकर रात्रि को हवामें रक्खें सुबह गेहूंको साफ पत्थर पर रखकर एक लोहेका टुकड़ा आगमें लाल करके गेहूंके ऊपर रखकर दबावें जो कुछ उसमें से कालारंग निकले उसको गरम लेकर दादपर मलें—(अन्य) आजमाई हुई दादको गुणकरे आमला लालचन्दन, चीनियागोंद, राल, सुहागा, कत्था बराबर पानीमें पीसकर दादको खुजलाकर मलें—(अन्य) दाद और खुश्क खुजली और तरखुजली को गुणकरे पवांर के बीज पानीमें भिगोदें जब सड़जावें पीसकर मलें फिर गरम पानीसे नहावें—(लेप) दादको गुणकरे रियहको कपड़े में छानकर पानीमें पीसकर लगावें—(अन्य) अमलतास की पत्तियां दाद पर मलें या उसकी कच्ची फली की गिरी

निकालकर पानीमें पीसकर लगावें—(अन्य) दादको गुण दायक मूलीके बीज नींबूके रसमें खरल करके गोलियां बनाकर लगाया करें—(अन्य) मूली के बीज शरीफे की पत्तियोंके रसमें पीसकर गोलियां बनाकर लगावें—(लेप) कुचला सिरकेमें पीसकर लगावें—(लेप) दाद और खुजली को गुणकरे सज्जी एक दाम कूट छानकर दो दाम गाय का घी सौबेर धोकर उसमें मिलाकर लेपकरें—(औषधि) दाद और खुजलीको गुणकरे हराम मग्ज मलें—(अन्य) दादको गुणकरे अंजीर का दूध मलें— (लेप) दादको गुण करे चन्दन,सुहागा,अफीम तीनों औषधि बराबर लेकर नींबूके रसमें पीसकर दाद को किसी खरखरी चीजसे खुजलाकर मलें—(अन्य) मैनसिल पानीमें पीसकर लगावें (लेप) सरेशमलेंमेंलिखाहै कि जबतक दाद अच्छा नहींहो सरेश नहीं छूटता है—(अन्य) पारा सिरके में पीसकर लगावें—(अन्य) मेंहदी सिरके में पीसकर लगावें—(अन्य) सुरमकी सिरकेमें पीसकर लेपकरें—(लेप) नींबकी पत्तियां दहीमें पीसकर लगावें—(लेप)पवाँरकेबीज एकभाग सज्जी दो भाग जवाखार चार भाग कांजी के पानीमें पीसकर अरनाभैंसेके गोबरके उपलेसे दादको खुजलाकर उसपर इतनी देर लगाये रहें कि सूख जावे दो तीन दिनमें दूर होवे—(अन्य)सिंदूर, गन्धक,हल्दी, कालीमिरच, सुहागा बराबर लेकर घतमें मिलाकर हररोज चार पांच बेर लेप करें—(अन्य)पवाँर के बीज,आमला, कत्था दहीके पानीमें पीसकर दादको खुजलाकर लेपकरें—(अन्य)पारा,गन्धक आमलासार,तूतिया,सुहागा नींबूकेरसमें हल करके दाद को खुजलाकर लगावें॥

तर और खुश्क खुजलीका यत्न॥

जोकि यह रोग प्रकट त्वचापर उत्पन्न होताहै त्वचा के रोगोंमें गिना जाताहै और तर खुजलीका मल बहुधा

कफ़ खारीहै और सूखी खुजलीमें सौदाकी अधिकता है (यत्न) हफ्तअन्दाम की फसद लें और भोग और गरम चीजें जैसे कि बैंगन और मिरच और कड़ुवेतेल औरनोन वाली चीज़ों आदिसे पथ्य करें और हर रोज़ शाहतरा का इतरीफल खावें—(औषधि) पीलीहड़ की छाल,काबली हड़की छाल,बहेड़ेकीछाल,आमला,जंगीहड़,सिरफूके की पत्तियां,अफीम दो २ टंक शाहतरेके पत्ते दशटङ्क कूट छानकर गायके घीमें भूनकर तिगुनी शक्करमिलावें खूराक दो तोले—(अन्य) खारिशको गुणकरे नींबकी कोंपल दो तोलेभर लेकर पानीमें पीसकर पन्द्रह दिन पर्य्यन्त पियें इसी प्रकार सिरफूका का पीना गुण रखता है—(अन्य) तरखुजलीको गुणकरे कड़ुवा चिरायता, शाहतरा, जंगीहड़ तीनों औषधि तोलाभर लेकर रातको पानीमें भिगो दें सुबहको पीसकर साफ़ करके पियें—(अन्य) खुजलीको गुणकरे गन्धक,आँबाहल्दी, बावची हरएक आधा दाम शाहतरा एकदाम सबको तीन भाग करके एकभाग उसमें से रातको पानीमें भिगोवें सुबह उसका साफ़ पानी पियें और उसका फोग कड़ुवे तेलमें मिलाकर बदन पर मलकर गरम पानीसे धोवें—(अन्य) इमलीको भिगोकर कई दिन सेवन करना तरखुजली और खुश्क खुजलीको गुणकरे उसका नुसख़ा मतलीकेरोगमें वर्णनहोचुका—(अन्य) खारिशको गुणकरे अधकुचली कालीहड़ बीस टङ्क अफस्तैमू पांच टंक आधसेर गरम जलमें भिगोदें सुबह साफ़ करके दश टंक शक्कर मिलाकर दोबेर करके पियें—(अन्य) मोज़िज में खुश्क खुजली के लिये लिखा है कि हर रोज़ एक सौ तीन टंक दूध और आधी उसकी सिकंजबीन मिलाकर पीना गुण करे और यह औषधि शेखुलरईस के विचार में भी आज़माई हुईहै परन्तु इतनी औषधि देहातियों के योग्य हैं और लोगों के लिये इतनी खूराक बज़ुत भूख लानेवाली और अग्नि मन्द कारक है—(गन्ध-

क का तेल) तर और खुश्क खुजली और दाद को गुणकरे गन्धक मदार के दूधमें दोदिन खरलकरके टिकिया बनाकर छायामें सुखावें फिर बरतनमें डालकर पानी भरकर चार पहर मधुरी आंचपर जोशदें जितना तेल या पानी पर आवे उसको लेकर सेवन करें और बाजे गन्धक को पीली टंग के मदारके दूधमें पकाकर दो दिन खरल करतेहैं—(औषधि) खुजली को गुणकरे सब्ज तूतिया तम्बाकू सूखी एक २ टंक कमीला दो टंक, सपेद चीनी चार टंक कडुवे तेल में मिलाकर तीन दिन लगावें—(सुरमकी कीगोली) तरखुजली को गुण करे—और कफ और पित्तको निकालता है पीलेहड़कीछाल,बहेड़ेकी छाल, आमला, बायबिडंग छिलाहुआ एक २ भाग तुरबुद, खोखली दो भाग, कूट छानकर पानीमें मिलाकर गोलियां बनावें खूराक तीन टंक और कदाचित् अधिक दस्त चलाने स्वीकार हों दशटंक खावें—(तेल) तरखुजली को गुणकरे तीन तोले मैनसिल महीन पीसकर एक सेर गाय के घीमें मिलाकर औटावें जब धुवां बन्द होजावे एक तगार में जल भरकर औषधियों को तेल समेत उसमें डालें जब ठण्ढा होजावे पानी के ऊपर से तेल लेकर मलें—(औषधि) खुजली को गुणकरे पाव भर कडुवे तेल को खूब जोश करें और मदार के हरे पत्ते इक्कीस लेकर एक २ पत्ता उसमें डालें जब सब पत्ते जलकर राखहोजावें उतार कर थोड़ा मैनसिल पीसकर उसमें मिलावें और शीशेमें रखकर खुजलीपर मलें दोतीन दिनमें दूरहोजावे खुजली को गुणकरे कटहल का मूसला, जौ पुराना कि कीड़ोंका खायाहुआ न हो कोलों की आगपर जलाकर महीन पीसें फिर कडुवे तेल में मिलाकर मलें और तीन चार घड़ीके पीछेठण्ढे पानीसे धोवें और जाड़ोंमें यहदवा लगाकर गुनगुने पानीसे नहावें—(औषधि) खारिश को गुणदायक—तूतिया, पारा, कालीमिरच तीन २ मासे

बन्दूक़ की बारूत एक दाम, चार दाम घी मिलाकर मलें और एक पहर के पीछे गरम पानी और बेसन से धोवें (औषधि) खुजली को गुणकरे मदार का दूध जमाकर सुखावें फिर जलाकर कड़वा तेल मिलाकर शरीरपर मलें और चारघड़ी के पीछे नहावें—(औषधि)खुजली को गुणकरे सहँजने की जड़ कड़वेतेल में जलाकर साफ़ करके बदनपर मलें—पीली हरताल का तेल दाद और खुजली को गुणकरे पीली हरताल एक भाग, मीठातेल दो भाग पहिले तेलको औटावें जबलाल होजावे हरताल पीसकर थोड़ा २ उसमें डालकर लकड़ी के चुमटेसे हिलावें और आग नरमकरें जब तेल की रंगत मोर के सदृश होजाये और तेलमें आग लगलग जावे उस समय देकची को बंद करदें कि शीघ्र तेलसे बुझजावे इसीतरह से देकची को पांचबेर खोलें बन्द करदें फिर ठण्ढा करके शीशेमें रक्खें और आवश्यकता पर मलकर धूपमें बैठें और गरम पानी से नहावें—(तेल) खुजली के लिये—पवाँर के बीज एक सेर गन्धक एक दाम, एक सेर गायका दूध और पाव भर घी मिलाकर औटावें जबदूध जलकर तेलमात्र आय रहेसाफ़ करके मलें—(काली दवा) दादों के लिये घुंघची, आमला कालीमिरच एक तोला, तूतिया एक भाग, कड़ुवा तेल आवश्यकता के अनुकूल पहिले घुंघची को तेलमें जलावें फिर हड़, आमला, तूतिया जुदा २ जलाकर कालीमिरच को कूटछानकर तेलमें मिलाकर दादोंपर मलें—(औषधि) तर और खुश्क खुजली को गुणकरे—कनेरकी बीस पत्तियां पाव भर तिलों के तेलमें जलाकर मलें—(पँवार का तेल) खुजली को गुणकरे—पंवार के बीज एकसेर, गंधपक्की एक दाम, जबकुटकर दो सेर गाय के दूध और पावभर घीमें पकावें जबदूध जलकर तेल रहजावे साफ़ करके मलें—(औषधि)खुजली को गुणकरे—पालक के बीज, खशखाश के बीज बराबर लेकर पानीमें पीसकर बदनपर मलें फिर गरम

पानीसे नहावें दो तीन दिनमें आराम होजावे—(औषधि) खुजली को गुणकरे बन्दूक़ की बारूत कडुवे तेलमें मिलाकर बदन में मलकर धूपमें बैठें फिर नहावें—(अन्य) बरगद के पत्ते और थूहरकी लकड़ी सूखी जो जमीन में पड़ीहो और खशखाश का पोस्ता बराबर लेकर जलाकर उसकी राख कडुवे तेलमें मिलाकर मलें और थोड़ीदेर धूपमें बैठ कर गरम पानीसे नहावें—(अन्य) शोरा कल्मी कडुवे तेल में मिलाकर मलें—(अन्य) मेंहदी गुलरोगन और सिरके में मिलाकर बदनपर मलें—(अन्य) साबून पानीमें पीसकर लगावें फिर नहावें—(अन्य) तर खुजली और खुश्क को गुणकरे—सुहागा, चम्बेली का तेल, और गुलाब, और नींबू के रसमें मिलाकर मलें और बाज़े इसमें थोड़ा कपूर भी डालतेहैं—(अन्य) गन्धक दोटंक, पारा, भुना तूतिया आधा २ टंक, गौके घीमें जो इक्कीसबेर धोया गयाहो मिलाकर मलें और दोघड़ी के पीछे ठण्ढे पानीसे नहावें—(अन्य) अफीम तिलोंके तेलमें जलाकर मलें—(अन्य) सेंदूर, गन्धक आमला सार, सुरदार संग, तूतिया एक २ दाम, सबको महीन पीसकर चार तोले गाय के घी में मिलाकर मलें (अन्य) गुनगुने पानीसे रोज़ नहाना तर और खुश्क खारिश को नाशकरे—(अन्य) खुजली को गुणकरे सब्ज़ तूतिया गंधक, आमलासार, कपूर, एक२ दाम, गायका घी धोकर तीनतोले औषधि महीन कूटकर हररोज़ मलकर दोघड़ी धूपमें बैठें फिर नहावें॥

बगल की दुर्गन्धि का यत्न॥

यत्न शरीरको मलसे शुद्धकरे—(औषधि बगल की बास दूरकरे चूना पानीमें पीसकर लगावें—(अन्य) जामुन की छाल, और पत्ती पानीमें औटाकर उससे बगल को धोवें (अन्य) झाड़की पत्तीपीसकर मलें फिर गरम पानीसेधोवें (अन्य) सुरदार संगपीसकर मलें गुण करे॥

हाथ पांव में अधिक पसीना निकलने का यत्न जिसको शीत बोलते हैं॥

(यत्न) मूंग जलाकर पीसकर मलें—(औषधि) बैंगन खश्खाश का पोस्ता अधकुचला पानी में औटाकर उससे हाथ पांव धोवें—(अन्य) शीत को गुणकरे कुल्थी पीली-कौड़ी जलाकर जुदा २ महीन पीसकर मलें— (अन्य) काले धतूरे के बीज जलाकर महीन पीसकर एक मासा भर हररोज़ एक सप्ताह पर्य्यन्त खावें—(अन्य बेर की पत्तियां पीस कर मलें—(अन्य)बबूल की सूखी पत्तियां पीस कर हाथ पांव पर मलें—(अन्य)नीलकी छाल पानीमें औटाकर उसका बुखार लेकर उसके गुन गुने पानी से धोवें इसी प्रकार एक सप्ताह पर्य्यन्त सेवन करें—(अन्य)बालछड़ लगाना शीतको गुणकरे—(अन्य) सोंठ कटारेकीजड़ सुखाकर पीस कर एक तोला भर शहद मिलाकर सात दिन खावें—(अन्य) फिटकरी पानी में हल करके मलें—(अन्य)पुष्कर मूल पीस कर हथेली और तलवे पर मलें (गोली)शीतका गुण करे शिंगरफ,पेठे के बीजों, की गिरी एक २ टंक पीली कौड़ी जली हुई तीनटंक, कालीमिरच पांचटंक,कूटछान करदोटंक खट्टा चूका मिलाकरकाली-मिरचकी बराबर गोलियां बनावें खूराक एकगोलीसुबह एक शाम॥

उंगलियों के फूलने और उनकी खुजलीका यत्न॥

यह रोग हवाकी सरदी से होजाता है—(यत्न) गेहूं कीभूसी और नोन औटाकरधोवें—(अन्य)शलगमयाचुकन्दरके काढ़े या उस जलसे जिसमें मसूर और मटरऔटाया हो धोयें॥

———o———

व्रणका यत्न ॥

जिस जख़्ममें पीप निकले उसको करा बोलते हैं और जिस व्रणपर चालीस दिन बीत जावें वहनासूर कहलाता है—(औषधि) घावको सुखावे पैरा कि एक घास है नदी के किनारे उगती है उससे चटाई बनाते हैं उसको जला कर उसकी राख घाव पर छिड़कें जो सिरके में भिगोकर नासूर पर रक्खें गुण करती है—(अन्य)पीप के घाव को सुखावे कनेर की पत्तियां सूखी पीसकर छिड़कें या संग जराहत पीसकर छिड़के—(स्त्रीके ऋतुका कपड़ा जलाकर घावपर छिड़कें—(अन्य)गधेका मांस खाल सहि जलाकर उसकी राख घाव पर छिड़कें दो दिनमें मांस भर आवै (अन्य) सिरस की छाल सूखी पीस कर छिड़कें—(अन्य) मुरगीकापर जलाकर उसकी राखघावपर छिड़कें (अन्य) घावको गुण करे कछुवे का सिर जलाकर उस की राख लेकर पहिले घावमें मीठा तेल लगावें फिर वह राख छि ड़कें तीन दिन में आराम होवे—(औषधि)घाव को साफ़ करे साबून पानी में पीस कर थोड़ा गेरू मिलाकर मर-हम की रीति पर बनाकर सेवन करें कभी गेरू के बदले चावल मिलाते हैं—(अन्य)घाव से भरा हुआ मांस दूर करे और खेदनदे भुनीफिटकरी महीन पीसकर छिड़कें (औषधि)कि घावका भरदें असगन्ध नागोरी महीनपीस कर घाव पर छिड़कें—घावको गुणकारक घिया तोरईकी पत्ती घाव पर बांधना लाभ करे—(अन्य कंघी की पत्ती पीस कर घाव पर बांधना शीघ्र गुणकरे परन्तु साबत बांधना बहुत गुण दायक है—(अन्य)सरूकी पत्तियां जला कर उसकी राख घावपर छिड़कें—(अन्य)हल्दी महीन पीसकर छिकड़ना घावको सुखाता है—(अन्य)माजू जला कर छिड़कना घावको सुखाता है—(अन्य)कुन्दर पीसकर छिड़कना बुरे घाव को दूर करता है—(अन्य)फैलने वाले

घाव को गुण कारक कमल और बरगद के पत्ते बराबर जलाकर उसकी राख तेलमें मिलाकर घावपर टपकावैं (अन्य) फफोले और घावके सुखाने में अद्वितीय है कपूर चौथाई भाग भुनेरैहां अर्थात् नाज़बोके बीज आधा भाग प्याजका छिलका जलाकर एक भाग बाल जलाकर दो भाग सबको पीसकर छिड़के गोली और गज़बी घावको जिसमें छिद्र होते हैं गुण करे बेलगिरी कत्था सब्ज़ तूतिया बराबर लेकर गोलियां बनाकर लगावें औषधि गुड़ घाव पर बांधना शीघ्र पीपको साफ़ करताहै—(अन्य) मसूर जलाकर भैंस के दूधमें मिलाकर सुबह और शाम लगावें—(तेलोंके नुसख़े)तेल घाव के भरलाने के लिये आश्चर्य दायक प्रभाव रखता है सँभालूके पत्ते, फरीशके पत्ते चम्बेलीके पत्ते, धतूरे के पत्ते एक २ टंक मीठा तेल आध सेर, पत्तों को पीसकर तेलमें मिलाकर जलावें और चुमटे से खूब हल करके आगसे उतार कर फिर चुमटे से हिलावें जब थिरा जावे साफ़ तेल लेकर सेवन करें—(अन्य) घावके भरने के लिये करंजुवे के पत्ते नींब के पत्ते एक २ दाम टिकिया बनाकर मीठेतेलमें भूनें जब काली होजावें तूतिया एक मासाभर पीस कर मिलाकर सेवन करें (अन्य)घावको शीघ्र भर कर अच्छा करे गूलर एक दाम हल्दी एक गांठ सिंदूर चारमासे पहिले तेल में नींब की पत्तियों की टिकिया बनाकर जलावें फिर हल्दी जलावें फिर गूगल सेंदूर मिलाकर सेवन करें—(पत्तोंका तेल)हर प्रकार के घावको गुण दायक मीठा तेल एक सेर कड़ाहीमें डालकर जोशदें फिर नींबकी पत्तियोंकी टिकिया आधपाव कनेर के पत्तियों की टिकिया पाव भर मोम आठ दाम बकायनकी पत्तियोंकी टिकिया पांचटंक, तेल में डाल कर जलावें जब जल कर काली होजावे तेलको साफ़ करके घाव पर टपकावें—(नींबका तेल)घाव को गुण करे नींबकी पत्तियां पीसकर टिकिया बनाकर तेलमें ज-

लावें जब काली होजावे साफ़ करके रक्खें और यह तेल सादा है कानकी पीड़ा को भी गुणकरता है और जो घाव पर टपकावें कमीला कत्था एक २ तोला महीन पीस कर मिलावें कि घाव को भरे और पीप निकालने की इच्छा हो तो थोड़ा तूतिया डालें कमीले का तेल घाव भरनेमें अद्वितीय है थोड़ेदिनोंमें अच्छा करताहै कमीला दशटंक तीन बेर महीन खरल करके दश टंक कड़ुवे तेलमें मिलाकर कपड़े में छानकर आवश्ययकता पर उसमें रुई भिगोकर घावपर रक्खें और कई बूंन्दे टपकावें—(मिलावे का तेल) बहुत घावोंको गुणकरे यहांतक कि चौपायों के ज़ख़्मो कोभी गुणकरे—सात मिलावें आधपाव तिलों के तेलमें जलाकर साफ़ करके दोटंक संग जराहत पीसकर मिलाकर मुरगी के परसे लेकर जखमपर लगावें—कोंचके बीजोंका तेल घाव और नासूरको गुणदायकहै छिलेहुये कोंच के बीज दोदाम, महीन पीसकर टिकिया करके आधपाव मीठे तेलमें जलाकर साफ़करके घावपर टपकावें और बाजों ने लिखाहै कि मीठेतेल के बदले कड़ुवा तेल मिलावें—(कुचले का तेल)नासूर को भरता है और घाव को गुणकरताहै कालीमिरच साढ़ेतीन मासे तूतिया एक चने के बराबर, पांच कुचले कड़ुवा तेल, पांच टंक पक्का—थोड़ी नींबकी पत्तियां—अजवायन एक दाम, कमीला दो दाम, पहिले तेलको कड़ाही में औटावें और नींबकी पत्तियों की टिकिया बनाकर उसमें जलावें जब काली होजावे निकालकर साफ़ करके सम्पूर्ण औषधि जुदा २ पीसकर छानकर तोलकर तेल में जलावें फिर छानकर चीनीया शीशे के बरतन में रक्खें और रुई उसमें भरकर घाव या नासूरपर रक्खें जब सूखजावे फिर भिगोदें—(तेल) घावके भरनेके वास्ते मुलहठी छीलकर पानी और तेलमें औटावें जबपानी जलकर तेलमात्र रहजावे साफ़करें और फूहजूह के साथ लाल करके सेवनकरें—(अन्य) सब घावों

को गुणकरे—यहांतक कि चौपाये के घावको भी गुणकरे मीठा तेल पावभर, नींबकी कोंपल, अरण्ड की कोंपल दो २ दाम, पत्तोंको तेलमें जलाकर साफ़ करके राल दो दाम, कमीला एक दाम, महीन पीसकर मिलाकर घाव पर टपकावें कदाचित् मराज़्आ मांस अधिक होवे एक मासा भर तूतिया मिलावें—(अन्य) घाव के भरने के लिये अद्वितीय है और आतशक के घावको दूरकरे भिलावा कोंच के बीज एक २ दाम खुरासानी, अजवायन, मुरदार संग तीन २ मासे तूतिया दोमासे, तिलोंका तेल आधपाव पहिले तेलको आगपर रक्खें जब औटें उसमें भिलावा डालकर जलावें फिर कोंचके बीज और अजवायन एक२ बेर करके डालें फिर तूतिया, फिर मुरदार संग पीसकर मिलावें और आगसे उतार कर खूब हलकरें जब दूधके सदृश होजावे जो घाव नाज़ुक जगह में हो तेल छानकर टपकावें नहींतो बे छाने सेवनकरें और यह तेल नासूर कोभी गुण करताहै—(कुचले का तेल) उकौताऔर सिरके गंज आदिको लाभदे आठ कुचले मीठे तेलमें जलाकर सेवनकरें॥

हरप्रकार के व्रणोंके मरहमों का वर्णन॥

(मरहम) प्याज, साबून, सपेद कत्थाचार २ दाम, नींब की पत्तियां ग्यारह, मीठा तेल चार दाम, पहिले प्याज और साबून को टुकड़े २ करके तेलमें जलावें फिर नींबकी पत्तियां जलाकर मिलावें फिर कत्था पीसकर डालें और थोड़ाकपड़ा जलाकर मिलावें फिर खरल करके सेवनकरें (कोंच का मरहम) यह वैद्यों का नुसख़ाहै कि घावको जल्दी भरताहै मीठातेल पावभर लोहे के बरतन में गरम करके उतार लें फिर कोंचकी गिरी पीसकर मिलावें और नींबके पत्ते, और नरमेके पत्तोंकी टिकिया बनाकर चार दाम मोम गरम करके तेलमें मिलाकर सेवनकरें—

मरहम कि पानीसे बनताहै और चिकनई उसमें नहीं है और जलका संसर्ग मरहम के सेवन के समय कुछ खराबी नहींलाता और सर्व प्रकार के पीपके व्रणोंको गुणकरे यहांतक कि नासर को अच्छाकरे गूगल पारा एक२ टंक रसौत दोटंक, पहिले गूगल और रसौत को पानीमें हल करें फिरपारा मिलाकर पीसकर सेवनकरें—(दूसरामरहम)जो पानीसे तय्यार होताहै जख्मों और नासूर को गुणकरे राल, घी, आध २ पाव,कत्था, फिटकरी,सब्ज तूतिया छः२ मिस्काल, राल और तेलको थोड़े पानीसे दोघड़ी हाथोंसे मलकर औषधि कूटछानकर मिलावें—(अमरती की गोली) मुरदारसंग, अमरत एक २ दाम कत्था, राल, मोम सात २ मासे, घी आधपाव घीको खूब दाग करके मुरदारसंग पीसकर उसमें डालें जब जलजावे उतार कर राल और मोम मिलावें फिर अमरत और कत्थापीसकर मिलाकर सेवनकरें सबजख्मों और फोड़ों को गुणकरे—(अमरत की गोली) संगमरमर की गर्द, तूतिया, कत्था सपेद, पीली कौड़ीकूट छानकर घृतमें मिलावें और सुरखी के लिये थोड़ा महावर मिलाकर गोलियां बनावें—(मरहम)सब प्रकारके घावको गुणकरे और घावको जल्दी भर लाताहै राल साढ़ेतीन मासे, शिंगरफ एक मासे, मुरदारसंग एकमासे, छिलकोंच साढ़े तीन मासे, सरसों का तेल दो दाम, पहिले कोंचको तेलमें जलावें फिर नींबकी पत्तियों की टिकिया उसमें जलाकर साफ़ करके दवायें हलकरें—(मरहम) बिवाई को गुणकरे राल एकदाम, घी एकदाम, मोम पावदाम घी दागकरके मोम उसमें मिलावें फिर राल डालकर पांवों को खूब धोकर मरहम घावमें भरदें और दो चारबेर सेवन करें (अन्य) सब प्रकार के घावको गुणकरे कीमुख्त जलाऊवा सुपारी जलीऊई हड़के बीज जलेऊये मदार की कोंपल जलीऊई मुरदारसंग,कत्था,आधा २ दाम,घी गरम करके

दवायें मिलाकर मरहम बनावें—मरहम—सब प्रकार के जख़्मों को गुणकरे—जाड़ों के मौसिम में घी दोदाम गरमियों में एकदाम लेकर तूतिया एकमासे, मोम सपेद एक दाम, सेंदूर पाव दाम मिलाकर यथाविधि मरहम बनावें—(मरहम)आतशक नासूरऔर घावको गुणकरे सरसोंकातेल एकदामजंगार चारमासेसंग जराहतएकदाम मोम एक दाम लेकर मरहम बनावें—(मरहम)सब जख़्मों को गुणकारक और आज़माया हुआहै—राल, हिरमची मट्टी छः२मासे,तूतियासब्ज दोरत्ती, मीठेतेलमें खरलकरके मरहम तैयार करें—(मरहम)सब जख़्मों और आतशक के घावको गुणदायक है मोम, राल, कत्था एक तोला मोम को थोड़े तेल में टिघला कर पहिले राल को पीस कर मिलावें और तीन जोश देकर कत्था डाल कर हल करके चार मासे कपूर पीसकर मिलावें फिर औटाकर उतार लें और जो पुराने पीपवाले घाव पर सेवन करें थोड़ी सुपारी जलाकर मिलावें—(मरहम) रालएकभाग, मोमआधाभाग, तेल चार भाग औषधि लेकर यथाविधि मरहमबनावें—(मरहम) हड्डीके टूटजानेके लिये पक्की ईंट महीन पीसकर थोड़े दूध में मिलावें और चावलों को उसमें पकाकर तीन सप्ताह पर्य्यन्त खावें हड्डी उसी तरह दुरुस्त होजावे—(मरहम) बहुत से जख़्मों को गुणकरे जंगीहड़ क़मीला एक २ मिस्काल, सब्ज तूतिया आधा मिस्काल कूटछानकर थोड़े तेलमें पीसकर मरहम बनावें—(मरहम।घावको गुणकरे यह नुसख़ा अंगरेजों का है मोमएकदाम, भुनीफिटकरीदोमासे,सिंदूरदोमासेमुरदारसंगचारमासे,तूतिया दोरत्ती, घी दो दाम, तेल और मोमको दागकरके आगसेउतारकर औषधिउसमेंहलकरें (तेल) घावके भरने को गुण करे रेंडी का तेल पाव भर अरण्डकी कोंपल का रस पावभर दोनोंको औटावें जब पानी जलकर तेल माच रहे एक दाम पत्थर का चूना

मिलाकर घावमें लगावें और चूना चार प्रकारका होताहै एक पत्थर का, दूसरा घोंघेका, तीसरा सीपका, चौथा कंकड़ का—(मरहम) घाव के भरने के वास्ते अति श्रेष्ठ है पुरानी रुई जलाकर उसकीराख छः बहलोलीभर लेकर तीन बहलोली मोम और उसकी बराबर बच खुरासानी और गायकाघी पांच बहलोली तूतियादोरत्ती पहिले घी और मोम को एक बरतन में गरम करें और उसमें रुई की राख डालें फिर बच मिलावें फिर तूतिया भून कर पीसकर मिलावें और मरहम बनाकर सेवनकरें (मरहम) जख़्मके भरनेके लिये कत्था सपेद, सुरदारसंग, संगजराहत एक २ दाम, राल छः दाम, कम्बलका टुकड़ा चौथाई गज जलाकर, घी सात दाम यह सम्पूर्ण औषधि महीन करके घीमें मिलाकर मरहम बनावें—(मरहम) भगन्दरको गुण करे अर्थात् वह फोड़ा जो पोते और गुदाके बीच में हो—जलाहुआ कीमुख्त, पपड़ियाकत्था, संग जराहत मोम हर एक दाम २ भर गौका घी कि सौ बेर पानी से धोया हुआ मोम घीमें टिघलाकर ठण्ढा करके औषधियों को मिलावें—(मरहम) फोड़ेके जख़्म को गुणकरे तूतिया एक मासा, सुरदार संग दो मासे, कत्थासपेद चार मासे राल आठमासे, कमीला सोलह मासे, मोम काफूरी ग्यारह मासे, गाय का घी बत्तीस मासे पहिले घी धोकर हाथ से मलें फिर औषधियां मिलाकर हाथसे मलकर मरहम बनावें—(मरहम सपेद) घाव सुखानेके वास्ते कपूर साढ़े तीन मासे, सपेद मोम एकदाम, मीठा तेल एक दाम सपेदा दो दाम पहिले तेलको गरम करके मोम डालें और साफ़ करके मधुरी अग्नि पर रक्खें फिर उतारकर ठंढा करके सेवन करें॥

उन दानोंका यत्न जो बरसातमें पैदाहोते हैं॥

मसूरके छिलके जलाकर आमला जलाकर उसके बरा-

भर मेंहदी कमीला थोड़ातूतिया भूना थोडे तेलमें मिला करपीसकर दानोंपरमलें—(अन्य) आतशकके चटके पीपवाले घावकेलिये फिटकरी, तूतिया, मुरदारसंग, सुहागा एक २ मासे,कमीला,बावची,पंवाड़ केबीज,पारा,गंधक हर एक आधामासा जली कालीमिरच तीनमासे, पांच जले ज़ये कुचले सम्पूर्ण औषधि महीन कूटछानकर आधपाव घतमें खरल करके सेवन करें—(औषधि) उकौते के वास्ते जली कौड़ी, जलाज़ुआ तूतिया, जली ज़ई हल्दी बराबर के नीबू के रसमें खरल करके लेप करें—(औषधि) उकौते को गुणदायक जली ज़ई सुपारी, जली ज़ई हल्दी, जली ज़ई बावची एक २ दाम, मेंहदी, कत्था, भुना सुहागा भुनी फिटकरी हर एक आधा दाम, मसूर की दाल जली ज़ई,खशखाश का पोस्ता जलाज़ुआ तीन २ दाम, कालीमिरच चौथाई दाम सब महीन कूटछान कर सरसों के तेलमें मिलावें और पहिले तीनदिन बराबर ढाकके पत्ते गरमकरके उकौते परबांधें तीनदिनकेपश्चात् यहतेललगावेंगुणकारकऔर आजमाया ज़ुआहै—(औषधि)उकौतेको गुणकरे बावची कूटछानकर पहिले उकौतेकोसरसों का तेल मलें उसपर यह औषधि उकौते को गुणदायक—घास दूब चिरौंजी महीन पीसकरउकौते पर लगावें—(औषधि) उकौतेको गुणदायक कटहलकी पत्तीघीमें भिगोकर उकौतेकीपीठके तरफसे बांधें—(अन्य)महुवेके पत्तेमीठे तेलमें भिगोकर गुनगुने उकौतेपर बांधेंऔर चारघड़ीकेउपरांत खोलकर दूसरेपत्तेबांधें—(अन्य) गेरू,भुना सुहागा बराबर चम्बेलीके तेलमें हल करके चार पांचबेर लेप करें— (अन्य) करील की लकड़ीका कोयला सरसों के तेलमें मिलाकर मलें—(अन्य) भिलावा मीठे तेलमें मिलाकर खूब हलकरें और थोड़ा तूतिया भूनकर महीन पीसकर उसमें मिलाकर लेप करें—(अन्य) उकौते के लिये तूतिया, कालीमिरच, चूनेकी बरी,सुहागा एक २ दाम,मेंहदी की पत्ति-

यां दो दाम कडुवा तेल चार दाम औषधि महीन पीस कर तेलमें औटाकर मिलाकर कईदिन लेप करें—(अन्य) सेंदूर, कालीमिरच, सुपारी, तूतिया, सपेद कत्था, सपेद कौड़ी जलाकर कुचला बराबर लेकर दुगने तेलमें मिला कर सेवनकरें—(अन्य) साबून चूना इकट्ठा पीस कर लगावें (अन्य) उकौतेके लिये सेंदूर महीन पीसकर रातको नीबू के रसमें भिगोदें सुबह मलकर उकौते को कपडे से छील कर उसपर लगावें—(अन्य) उकौते को गुण करे कुचला साढ़ेसात दाम फिटकरी साढ़े तीन दाम घृतमें हलकर के लेपकरें—(अन्य) उस उकौते के घावको गुण करे जोपां-व में होताहै अलसीकी खली, तालाब की मट्टी दोनों बराबर पानीमें पीसकर लेपकरें जबसूखनेलगे कमीलातेल में हलकरके मलें—(अन्य) खली और नदीकी रेत बराबर लेकरपानीमें मिलावेंऔर उससेएकटुकड़ामोटा बनाकर सुबहसे शामतकबांधें तीनचार दिनमें आरामहोजावे॥

नासूर का यत्न॥

थ्योटन की जड़ पानीमें घिसकर नासूर पर रक्खें या उससे बत्ती भिगोकर नासूर पर रक्खें कई दिन में अच्छा होजावे—(औषधि) नासूरके लिये पुराना कम्मल जला-कर सब्ज तूतिया कूट छानकर बराबर नासूर पर छिड़कें (अन्य) नासूरको गुणकरे कनखजूरा जलाकर उसकी राख नासूर पर रक्खें—(औषधि) पुराने नासूर को गुण-करे सर्पकी केंचुल जलाकर उसकी राख बरगद के दूधमें मिलाकर उससे रुई भिगोकर नासूर पर रक्खें दशदिन के पीछे उठालें—(औषधि) नासूरको गुणकरे गायके सुम की राख जूतीके तलेकी राख बराबर लेकर एक चिड-कली सरसों के तेलमें जलाकर उसमें राख हल करके कई बूंदे नासूर पर टपकावें—(औषधि)नासूरको गुणकरे इमलीके बीज पानीमें भिगोकर छील डालें फिर उस को पानीमें पीसकर उससे बत्ती भरके नासूर पर रक्खें चाहे

इससेपीड़ाहोतीहै परन्तुजल्दी अच्छाहोजाता है और बाजे कौड़ी भी जलाकर पीसकर मिलाते हैं—(औषधि) नासूर और भगन्दर को गुणकरे गूलर के दूधसे फाया भिगोकर घावपर रक्खें और एक समय तक यही क्रिया करें—(अन्य) नासूरको गुणदायक है समुद्रशोष जलाकर उसकी राख नासूरमें भरें—(अन्य) नासूर की पीड़ा को दूर करता है रुई मदार के दूधमें भिगोकर छाया में सुखावें फिर उसकी बत्ती बनाकर सरसोंके तेलमें जलावें और उससे काजल पारकर नासूर पर लगावें—(अन्य) अरण्डकी कोंपल जो कच्ची और नरम हो पानीमें हल करके मेंहदी के सदृश मलें—(अन्य) चिड़िया की बीट महीन पीस कर नासूर पर लेप करें—(अन्य) नासूर को गुणकरे कण्डेकी राख महीन पीसकर छानकर हथेली पर रखकर नासूर पर बाँधें—(अन्य) मकड़ी का जाला कपड़े में साफ़ करके शराबमें भिगोकर नासूर पर रक्खें (अन्य) नासूर को गुणकरे गिलोहल्दी कूटकर तेल में औटावें जब जलजावे पीसकर लेपकरें—(अन्य) नासूरको लाभ करे करील की कोंपल एक मासा,मुरदारसंग एक रत्ती, बरगदका दूध एक बूंद पानीके साथ पत्थर पर पीसकर लेप करके ऊपरसे एक बूंद बरगदके दूध का टपकावें—(औषधि) नासूरके लिये छोटी कटाई का फल कूट छानकर पानीमें मिलाकर उससे फाया भिगोकर नासूर पर बाँधें—(अन्य) नासूर और अकलाको गुण करे घोड़ेका सुम जलाकर अलसीके तेलमें मिलाकर नासूर में लगावें कदाचित् नासूर अंगके भीतर होवे दही में मिलाकर नासूर के भीतर रक्खें—(अन्य) जिस हुक्के में सुलफा पीतेहैं उसका पानी तीन दिन न बदलें जबपानी पर जाला पड़जावे उस जालेको लेकर नासूर पर लगावें (अन्य) नासूरको गुणकरे बिसखपड़ेकी जड़,मेंहदीके पत्ते फराशके पत्ते,नरमे के पत्ते, नींबके पत्ते, जैतके पत्ते, बेरके

पत्ते, अरण्डके पत्ते, राल दो २ दाम, मीठा तेल एक सेर पहिले बिसखपड़े की जड़ टुकड़े करके तेल में जलावें फिर पत्तों की टिकिया बनाकर तेल में जलावें और छान कर मिलाकर हलकरें—(अन्य)नासूरके वास्ते सपेद मोम बच खुरासानी एक २ दाम मीठा तेल पावभर पहिले तेल को गरम करके उसमें बच जलावें और साफ़ करके मोम मिलाकर मरहम बनावें—(अन्य) नासूरको गुणकरे चरचटेकी पत्तियां पीसकर उसमें कपड़ा भिगोकर बत्ती बनाकर नासूर में रक्खें और उसका थोड़ासा रस नासूर में टपकावें शीघ्र गुणकरे—(अन्य) अखरोट की गिरी, मोम, मीठा तेल बराबरलेकर मरहम बनावें—(अन्य) नासूर को गुण करे गूगल भैंस या गाय के मूत्र में हलकरके बत्ती बनाकर नासूर में रक्खें ॥

उनऔषधियोंकावर्णनजोरुधिरकोबन्दकरतीहैं ॥

बलगारका कपड़ा जलाहुआ, दाराई जलीहुई, भुना हुआ सुहागा, हलदी महीन पीसकर कण्डे की राख इन औषधियों से एक जिस जगह कि रुधिर जारी हो बांधें रुधिर बन्द करे—(अन्य) घोड़े की लीद बांधें और अण्डेका छिलका लेकर अन्दरका परदा उसका निकाल कर सुखाकर महीन पीसकर छिड़कें—(अन्य) संगमरमर जलाकर उसकी राख घाव पर छिड़कें—(अन्य) फेफड़ा जिसजानवरकाचाहें सुखाकर जलाकर उसकीराख घाव पर बांधें—(अन्य) भुना तूतिया महीन पीसकर घाव में भरदें—(अन्य) माजूजलाकर घावपर छिड़कें—(अन्य) मूंगा महीन पीस कर छिड़कें—(अन्य) ताजी काई का लेप करें—(अन्य) कुन्दर पीसकर छिड़कें—(अन्य) रुई जलाकर छिड़कें ॥

आग से जलजाने का यत्न ॥

(यत्न)इमलीकी छाल पीसकरगायके घृतमें मिलाकर

मलें—(अन्य) बरगद की कोंपल गायके दही में पीसकर मलें—(अन्य) अरण्ड के पत्तों का रस मलें—(अन्य) धवईके फूल जलाकर सरसों के तेल में मिलाकर लेपकरें—(अन्य) अण्डे की सपेदी मीठे तेल में मिलाकर लगाना गुणकरे (अन्य) दवात की सियाही लगावें—(अन्य) अनार की पत्तियां पीस कर लगावें—(अन्य) सीप घिसकर अण्डे की सपेदी में मिलाकर लगाना गुण करे—(अन्य) जो शरीर जलकर सपेद होगया हो हड़, बहेड़ा, आमला पानी में पीस कर लगाना असली रंग पर लाताहै—(अन्य) पुराने छप्परकी घास पीसकर सरसोंके तेलमें मिलाकर लगावें (अन्य) गेहूं या जौ का आटा पानी में हल करके लगावें (अन्य) जलजाने के पीछे जब दाग रहजावे जामुनकी पत्ती पीसकर लेपकरें—(अन्य) बेरकी कोंपल दहीमें मिला कर कईबेर मलें गुणदे—(अन्य) हींग पानीमें हलकरके लगाना मुख्यकरके गुणदायकहै—(अन्य) झड़बेरी की पत्तियां मीठे तेलमेंलगाकर मलें—(अन्य) माजू जलेजुयेकोगुणकरे-जोसब चमड़ाजलकरगिरपड़ाहोउसीसमय आरामदेता है राल महीनपीसकर मीठेगरम तेलमेंडालेंजब पिघलजावेमिलाकर लेपकरें—(अन्य) मेंहदी की पत्तियां पानी में पीसकर लेपकरें और मक्खन के साथलगाना दूसरा गुण रखता है॥

लेप करने की दवाइयां॥

जबकोईबस्तु किसी अंगपर गिरपड़े उसको जरबाबोलते हैं और सकता वहहै कि आपही अंग किसी बस्तुपर गिरे—कदाचित् उसके कारण शोथ या उभर हो पहिले शोथ या उभरका यत्न फसद पकने और नरम करनेवाली बस्तुओं से करें—(गोली) चोट को गुण करती है पीपल की पत्तियां इक्कीस पीस कर गुड़ में मिलावें और गोलियां बनाकर सात दिन खावें—(औषधि) चोट को गुण करे बारहसिंगे का सींग पानी में घिसकर पियें—(अन्य)

कच्चा बैंगन शक्कर के साथ खावें और थोड़ी सौंफकी जड़ पीस कर पियें—(अन्य) खरियामिट्टी एक टंक आधपाव पानी में हल करें जब मिट्टी बैठ जावे पानी साफ़ करके पियें—(चूर्ण)कि चोट को बज़्ज़त गुण करे और पीड़ा बिल्कुल खो दे नोन छः मासे, शक्कर सपेद छः मासे चूर्ण बनाकर खावें—(औषधि)हजरलयहूद आधे मासे से एक मासे पर्य्यंत खाना मोमिया के बराबर प्रभाव रखता है (गोली)चोट के वास्ते बज़्ज़त गुण करे यहांतक कि चौपाये की चोट को गुण करे गेहूं जलाकर उसकी बराबर गुड़ मिलाकर खूब पीसकर थोड़ाथोड़ा घीमें मिलावें खूराक डेढ़तोले तक तीनदिन खाने से चोट और पीड़ा बिल्कुल नष्ट हो और इस औषधि को मोमियाई हिन्दी बोलते हैं—(दवा)चोट और शरीर में रुधिर जम जाने को गुण करे एक मासा फिटकरी पीस कर चार तोले घी में भूनें जब फिटकरी घीमें जमजावे ऊपर के घी को लेकर उसमें शक्कर और मैदा मिलाकर हलवा बनाकर खावें और उसी हलवे की एक गोली बनाकर वह फिटकरी उसमें रखकर तीनदिन लगावें मोमियाई से उत्तम है—(लेप) बचियार की लकड़ी पानी में घिसकर गुनगुनी लगावें (अन्य)चोट और मोच को गुण करे सहँजने की पत्तियां बराबर मीठे तेल में पीस कर लेप करके धूप में बैठें—(औषधि)माँदगी को गुण करे जिस तेल को चाहें गुन गुना करके नाखनों पर मलें—(अन्य)चोट को गुणदायक और टूटेहुये जोड़ को असली हालत पर लाता है—रेंडी की गिरी, कालेतिल, जुदा २ कूटकर मीठे तेल में मिलाकर लेपकरें—(औषधि)चोट और मोच को गुण करे तिलकी खली कूटकर गरम पानी में डालें जब घुल जावे महीन कपड़े में लेपकरके जोड़पर रक्खें—(अन्य)माँदगी को गुण दायक मीठातेल गरमतलुओंपर मलें और जंगलीकरडों की आग से सेंक करें और पांव ऊंचे रक्खें—(औषधि)

चोटको गुण करे साबून पानी में पीस कर गरम करके मलें और जिस जोड़ में हवा लगीहो उसको भी गुणदायक है और जो साबून में हल्दी मिलाकर लेपकरें गुण करे—(औषधि) चोट और उस गांठ को जो चोट के कारण पड़गईहो गुण करे पुराने नारियल की गिरी जो कड़वी न हो कूटकर चारभाग हल्दी महीन करके मिलावें और थोड़ा पोटली बाँध कर गरम करके दोतीन घड़ी सेंक करें फिर चोट और वरमकी जगहपर बांधदें दो तीन दिनमें आराम होजावे—(औषधि) चोट को गुणकरे हल्दी मैदा लकड़ी गेहूंका मैदा आध२ पाव सज्जी लोटन एकदाम, मीठातेल पावभर, पहिले तेलको गरम करें और मैदा उसमें भूनें फिर औषधि जुदी २ महीन करके पहिले सज्जी फिर मैदा लकड़ी फिर हल्दी मिलाकर थोड़ा पानी डालकर पकावें जबपानी जलजावे गरम२ लेकर सेंक करें इसको लिपड़ी बोलतेहैं—(औषधि) चोट और मोच को चाहे ताज़ीहो या पुरानी अद्वितीय गुणदायक है अशना दो दाम, सोंठ, और कुचला टुकड़े २ करके हांडीमें एक सेर पानीके साथ डालकर सरपोश बन्द करके औटावें जब तृतीयांश जल शेषरहे पहिले बफारा लें फिर जोड़को इसपानीसेधोकर दवाका फोग पीसकर गुनगुना बांधे तीनदिन में बिल्कुल आराम होजावे—(औषधि)मोचको जल्दी आराम देतीहै पहिले जोड़को गुनगुने पानीसे धोवें फिर अंडेकी जरदी और थोड़ा गेरू मिलाकर गुनगुना लेपकरें और जोड़ को आगसे सेंकें कि दवा सूखजावे॥

बहुतमोटाई का इलाज॥

यहरोग कई कारणों से पैदा होताहै स्त्रियोंके स्वभाव में अधिक है और मरदों के स्वभाव में कम—(यत्न) शरीर में रुधिर की अधिकता हो तो फस्द लें नहीं तो कफके

मुसिल दें और वह औषधियां जो शरीर को सुखाती और दुबला करती हैं सेवन करें—(चूर्ण) शरीर को दुबला करने के लिये घुलीछुई लाख दो टंक, काला जीरा, अजवायन, हर एक चारटंक खूराक एकटंक, तोले दोते सिकंजबीन सादीके साथ—(अन्य)चन्दरस एकमासा दोतोले सिकंजबीन और पानी के साथ मिलाकर पियें भोजन में सिरका और मसूर और जौकी रोटी खावें शरीर को दुबला करदे और बबूल की छायामें बैठना मुख्य करके शरीर को दुबला करताहै रांगेकी अंगूठी पहिनना मुख्य करके शरीर को क्षीण करताहै और चीजें कड़वी और खट्टी और दवायें गरम और खुश्क खाना और भूखा रहना और मोटे कपड़े पहिनना और पृथ्वीपर सोना और सरदी में नंगा होना शरीर को दुबला करताहै॥

शरीर के अधिक क्षीण होनेका यत्न॥

जोकि अधिक दुबला होना भी एक रोगहै इसवास्ते थोड़ी सुगम औषधियां मोटा करने के लिये लिखी जाती हैं—(औषधि) जो मुख्य करके स्त्री के शरीर को मोटाकरे असगन्ध, मूसली काली, सपेद मूसली, बराबर लेकर गो दुग्धमें पकावें जबदूध सूखजावे सुखाकर पीसकर उसके बरागर शक्कर मिलाकर हररोज़ सात टंक गाय के दूधके साथखावें—(अन्य)रोटी दूधके साथखाना बदन को मोटा करता है—(औषधि) बदन को मोटा करने के लिये मीठे बादाम की गिरी, निशास्ता, कतीरा,शक्कर बराबर मिलाकर एक तोले भर दूध के साथ खावें—(जवारिश) बदन की तय्यारी के वास्ते यह सुगम औषधि हरबीस सीर से प्रति की गई है कालीमिरच, सोंठ, हरएक दसटंक पीपल तीस टंक, छिले तिल, अखरोट की गिरी, हर एक पचास टंक शक्कर दो सेर शहद आवश्यकता के अनुसार यथाविधि माजून बनावें खूराक एक मिस्काल॥

मुहासेऔरउनदानोंकायत्नकियुवावस्थाकीअधिकता और उसकेजोशसेहोतेहैं ॥

यदि बहुत निकलें और मुहं को दुखदें सरेरूकी फसद खोलें और जुल्लाब के उपरांतठण्ढी औषधियों के लेप को सेवन करें—(यत्न) अमलतास के वृक्षकी छाल, अनार लोध, आंबाहल्दी, नागरमोथा बराबर पीसकर बटने के सदृश मुंहपर मलें और सूखने के पीछे धोडालें—(औषधि) मुहासे को गुण कारक—बेरकी गुठलीकी गिरी मुलहठी कठ बराबर पानीमें पीसकर मुंहपरमलें—(अन्य)जवासा पानीमें औटाकर उससे मुंहधावें—(अन्य) खुरफे के बीज पीसकर गायके दूधमें बटना बनाकर सेवनकरें—(अन्य) नरकचूर समुद्र झांगपानी में पीसकर बटना बनावें—(अन्य) सपेद घुंघची की गिरी लाहौरीनोन पीसकर कुचला भिगोकर उसके जलमें मिलाकर लेपकरें—(अन्य) नरकचूर पानीमे पीसकर लगावें—(अन्य) पीली कौड़ी पीसकर नींबूके रसमें भिगोदें जबरस सूखजावे और डालें जब वहभी सूखजावे पीसकर सुबह और शाम मलें मुख को साफ़ करता है ॥

मुखके रंग के बराबर होजाने का यत्न ॥

जो कलेजे और तिल्ली और कोष्ठ के उपद्रव सेहो उन अंगोंका यत्नकरें और जीज़ै रंग को खराब करतीहैं जैसे कि बैंगन और ज़ीरा, और सिरका न खावें और अधिक भोग और चिन्ता खेद और गरम हवा और धूपसे पथ्य करें—(औषधि) चेहरेको चमकाये और झाइयां दूरकरे हरे कलमली के बीज दूधमें पीसकर बटने की तरह मलें (अन्य) चिड़िया की बिष्टा सुखाकर पीसकर मुखपर मलें (अन्य) मुहासे को गुण करे, सिरस की छाल काले तिल

बराबर सिरके में पीसकर लेपकरें—(अन्य) कलौंजी, सिरकेमें पीसकर रातको लेपकरें सुबह धोडाले मुहासे और सरसें दूर होजावें इसी प्रकार अजवाइन का लगाना गुण करताहै—(लेप) मुहासे का गुण कारक झड़बेरी के बेर जलाकर उसकी राख पानीमें मिलाकर लेपकरें—(अन्य) मुंह चमकायें पीली सरसों आधपाव औटावें जब दूध सूखजावे सरसों सुखाकर पीसकर बटना बनाकर मलें—(अन्य) मुहासे को गुणकारक मजीठ रक्त चन्दन मसूरलोध, लहसुनको कोंपल, कूटछानकर महीन करके रातको मुहासेपर लगाकर सुबह धोडालें—(अन्य) मुखको चमकाये और साफ़करें, चावल, जौ, और चने, और मसूर, और मटर, का आटा हर एक इन्होंसे मुंहको साफ़ करदेताहै बटना बनाकर सेवनकरें—(औषधि) स्त्रीके रंगकी सफ़ाई के लिये उत्तमोत्तम है और मुख्य खानेमें गुण करतीहै, खोपड़ेकी बट्टी लेकर उसमें छिद्रकरके एक दामकेसर, एक दाम सवासा पानी में पीस कर उस में डालकर उसके टुकड़े से छिद्रबन्द करके आठ सेर गाय के दूध में मधुरी अग्नि पर औटावें जब सब दूध सूखनजावे औषधिको खोपड़े से निकालकर पीसकर चनेकी बराबर गोलियां बनावें सुबह के वक्त एक गोली पानमें खावें एक मिज ने इसे बज़ुत आज़माई ज़ुई कहा है—(औषधि)अगर समग अरबी और कतीरा और निशास्ता इसबगोल के लुआब या खुरफेके पानीमें मिलाकर सफ़रमें मुंहपर मलें धूप से रंग काला नहो॥

कालेदाग का यत्न॥

अर्थात् वह काला दाग कि मुंहपर होजावे उसे झाईं कहते हैं—(औषधि) झाईं को गुणकारक तरबूज में छिद्र करके उसमें चावल भरकर सात दिन रक्खें फिर चावल निकालकर सुखाकर बटना बनावें—(अन्य)आंब की बिज-

ली जामुन की गुठली पानी में पीसकर लगावें—(अन्य) झाईं को गुण दायक है नाज़बो की पत्तियां तुलसी की पत्तियां पीसकर मुंह पर मलें—(अन्य) कुलींजन पानी में पीस कर कई दिन लगाना त्वचा के भीतर से स्याहीसुखाकर दूर करता है चाहिये कि थोड़े दिन लगाकरफिर चावल पीसकर लेपकरें कि त्वचा का रंग बराबर होजावे (झाईं को गुणकरे) चौलाई की जड़ और डाल जला कर पानी में पीस कर झाईं पर मलें और एक घड़ी धूप में बैठें सूखने के पीछे गरम पानी से धोवें और लाहौरी नोन पीसकर मुंह में मुंहपर मलें—(अन्य) झाईं को गुण करे—तुलसी की सूखी पत्तियां पीसकर फिर मुंह पर मलें (अन्य) कलमीशोरा हरताल एक २ टंक तीन भाग करके एक भाग पानी में मिलाकर मुंह पर मल कर एक घड़ी धूप में बैठें और गरम पानी से धावें तीन दिन में दूर होवे—(अन्य) कागज़ी नींबू काट कर हल्दी टुकड़े २ करकेउसमें फिर नींबूके दानों टुकड़े एकसप्ताह पर्य्यंत रक्खें फिर निकाल कर नरकुल की पुरानी जड़के साथ पीसकर रातकोलगाकर सुबहगरम पानीसेधोडालें (अन्य)झाईं को गुणकरें करजुवे की गिरी गायके दूध में पीस कर लेप करें चेहरे को बुरीक और प्रकाश मान करता है—(अन्य) झाईं को गुण कारक शहदऔर सिरके और नोन में मिलाकर मलाकरें—(अन्य) झाईं को गुण करे नींबके बीज सिरके में पीसकर मलें—(अन्य झाईं को गुण कारक अंजरूत दो भाग कत्था एक भाग कूटछान कर गायके ताजें दूधमें मिलाकर हररोज कईबेर मुखपर मलें शीघ आराम होवे—(अन्य)झाईं को गुणदायक कबूतर की बीट पानी में पीस कर हर रोज कई बेर लगावें (अन्य)झाईं को गुण दायक मसूर नीबूकें रसमें पीसकर लगावें—(अन्य)भुनी फिटकरी हरामसगजएक२ दामचूना आधादाम कर यह संपूर्ण औषधि नींबूके रस में खूब पीस

कर मरहम के सदृश करके झाईं पर मलें दो एक सप्ताह में दूर होजावे और जब नींबू का रस सूखजावे और डाल दें॥

छीप की दवायें॥

(छीप को गुणदायक) हल्दी काले तिल भैंसके दूध में पीसकर लेप करें—(अन्य) चीनिया के फूल और छाल और पत्तियां उसकी पानी में पीसकर लगावें—(अन्य) चीनिया के फूल नींबूके रसमें पीसकर लगावें छीप और झाईं दूर होवे—(अन्य)छीप को गुणदायक चौलाई की जड़ और डालें जलाकर उसकी राख पानी में मिलाकर छीप पर लगावेंऔर एक घड़ी धूपमें बैठकर गरम पानीसे धोडालें—(अन्य)छीप को गुणदायक पँवारके बीज अधकुचले दही के पानी में मिलाकर दो तीन दिन रक्खें फिर बदन में मलकर नहाडालें (अन्य) छीप को गुणदायक सुहागा, चन्दन पानी में पीसकर लगावें॥

मस्से और तिल की दवायें॥

मस्सों को गुणदायक मोर की बीट सिरके में मिलाकर लगावें—(अन्य) चूना, सज्जी पानी में घोलकर मस्से को जंगलीकंडे से खुजलाकर मलें दो तीन दिनमें आराम होजावे (अन्य)धनियां पीसकर लगाना मस्सों और तिल को दूरकरताहै—(अन्य)चुकन्दरके पत्ते शहदमें मिलाकर लेप करना मस्सों को दूर करता है—(अन्य) खुरफे की पत्ती मस्सों पर मलना गुणदायकहै—(अन्य) सीप जलाकर सिरके में मिलाकर लेप करना मस्सोंको गुणकारक है—(अन्य) पीली हरताल, चूने की कली,मांस, कूटने की बट्टी से कूटकर लेप करें—(अन्य) तोहफ उलमोमनीन पुस्तक के निर्म्मापक ने लिखा है कि जो सूखे चने चांदकी पहिली तारीख से मस्सों की संख्यासे एक २ चना एक २

मस्से में छुलाकर सबको एक लत्ते में बांध कर उस लत्ते को हाथ में लेकर दोनों पांवके बीच से हाथ निकालकर उस पोटली को इस तरह फेंकें कि कंधेके ऊपरसे पीठकी तरफ गिरजावे एक महीने में सब मस्से दूरहोजावेंगे एक मित्र कहताथा कि मैं इसे आजमा चुकाहूं ॥

बद का यत्न ॥

चाहिये कि आरम्भ में उसके गलजाने का यत्न करें क्योंकि जब पककर फूटजातीहै बहुत दुखदेतीहै और कभी उसके चीरनेकी आवश्यकता होतीहै उससमय बहुत दुःख होताहै—(औषधि) बदको गुणकारक केलेकी जड़ मनुष्य के मूत्रमें पीसकर गुनगुना कपड़ेपर रखकर लगावें—(अन्य) पीपल के पत्ते सीधे तरफ गरम करके बांधें—(अन्य) लसौड़े के पत्ते गुनगुने बांधें—(अन्य) नरमे के पत्तेबांधें—(अन्य) संभालूकी पत्ती, गुनगुनी बांधें—(अन्य) मेथीहालोंमें, पीसकर लेपकरें—(अन्य) आमला, लसौड़ेकीछाल, इमलीकी छाल, पानीमें पीसकर बांधें—(अन्य) बिनौला इतना कूटें कि टिकियाकी तरह होजावे गुनगुनाकरके बांधें—(अन्य) घीकुवार का पट्ठा दो टुकड़े करके थोड़ा रसौत और हल्दी पीसकर उसपर राखकर गुनगुना करके बांधें—(अन्य) आरम्भमें चूना और शहद मिलाक कपड़ेपर मरहम की तरह लगाकर बदपर बांधें और बाज़ोंने चूनेमें अण्डे की सपेदी मिलाकर लगाना लिखाहै—(अन्य) बदको गुण कारक—हड़की छाल रेंडीके तेलमेंभूनकर पीसकर सिरके में खमीर करके लेपकरें—(अन्य) बदके तोड़नेके वास्ते शीघ्र गुणकरे तूतिया, आधाभाग हलों हल्दी, राल, एक २ भागगूगल दोभाग, गुड़ अढाई भाग पीसकर लेपकरें—(अन्य)बदको गुणदायक चनेका आटा गूगलमें मिलाकर टिकिया बनाकर बांधें और ऊपर से नींब की पत्तियां गरम करके बांधें और केवल नींबके पत्तेही बांधना काफी

है—(लेप) कुचला चंदन की तरह घिसकर कालीमिरच मिलाकर गुनगुना लेप करें—(अन्य) राई गरम पानीमें पीसकर लेपकरें—(अन्य) बद के लिये आजमाया हुआहै जोबद बड़ीहो चारदिनमें पचादे प्याजको छुरीसे कीमा करके असमर्थ लड़के के मूतमें पकावें जब खूब गलजावे टिकिया बनाकर बांधें—(औषधि)बगल की सूजनको जिसे हिन्दीमें कखुआरी कहतेहैं गुणकारक—राई गरम पानी में पीसकर लेपकरें—(अन्य)कान के पीछे की सूजन और कखुआरी शीघ्र पचावे तुलसी की पत्तियां उसके बराबर अरण्डकी कोंपल पीसकर थोड़ानोन मिलाकर गुनगुना लेपकरें॥

शोथ का यत्न॥

फूलने और अंगके मोटे होनेका नाम सूजनहै कि अंग पर मल गिरनेसे पैदाहो और यहसूजन चारों दोष—या बातसे होताहै, इसका यत्न माहे अर्थात् विकारकी रोकनेवाली और गलाने वाली और पकाने वाली और बहानेवाली चीजोंका सेवन करनाहै—(जदवारकीगोली) कि सूजन के गलाने में तन्ज बीखताई के बदले कामदेतीहै जदवार, रसौत, गेरू, खतमीके बीज, लाल चन्दन, देवन्द चीनी, मको,सपेंद कत्था, कालीजीरी, बराबर कूटछान कर गोलियां बनावें मकोके हरेपत्ते याहरे धनियेंके रस में यासिरके यागुलाब यापानीमें पीसकर लेपकरें—(अन्य) मुखकी सूजन को गुणदायकहै, हल्दी, गेरू, सोंठ, बिस्मार बराबर कूटछानकर गोलियां बनावें और मकोके पत्तों के रसमें पीसकर लेपकरें—(औषधि) जोपीड़ाको ठहरावे और सूजनको गुणकारक और पीड़ाकोशांतकरे, अजवायन महीन कूटछानकर नींबू के रसमें पकाकर गुनगुना सूजनपर बांधें, और जोनींबू का रस नहो सिरके में सेवन करें—(लेप) सूजन और जोशको गुण,करे आंवकी बिजली

पानीमें पीसकर गुनगुना लगावें खैरुल तिजारबमें लिखा है कि गलानेमें जद्वार के सदृशहै—(अन्य) वरमको पचावे अरण्डकी छाल, बिसखपरेकी छाल, सोंठ पीसकर गुन गुना लेपकरें—(औषधि) धतूरे के पत्ते गुनगुने शोथपर बां-धना गलाताहै—(अन्य) बकरीकी मेंगनीलेप करना पुरा-नी सूजनको गलाताहै—(औषधि) कानके नीचे की सूजन और बग़लकी सूजन जल्दी गलावे मिस्सी जो मशहूर दरख्तहै जिसे चकसौनी भी बोलतेहैं उसकी पत्ती लेकर उसकी बराबर अरण्डकी कोंपल पीसकर थोड़ा नोन मिलाकर गुनगुना बगलपर बाँधें—(अन्य) बगलके वरमको गुणकरे और इस औषधि को लालदारू कहतेहैं कत्था मुरदारसंग, तज, रक्तचन्दन, कबाबा, तूतिया ये सब्ज कूट छानकर पानीमें मिलाकर लेपकरें—(लेप) पीड़ाकेठहराने और मलके पकाने को गुणकरे मूंग, और जौ, और लो-बिया और मसूर का आटा बराबर लेकर सिरके और पानीमें घोलकर लपटीकी तरह पकाकर लेपकरें—(अन्य) कि पीड़ा और सूजन को गुणकरे सिरसके पत्ते हररोज कई बेर गरम करके बाँधें—(अन्य) सूजन और सख्ती को गुणकरे बरगदके पत्ते घीमें तर करके गुनगुने बाँधें—(अन्य) गूलरके पत्तोंका रस निचोड़कर जौके आटे में मिलाकर बाँधें सख्त वरमको गलावे—(अन्य) वरमको गलावे पियो-टन के पत्ते गरम करके बाँधें—(अन्य) गाय का गोबर वरम पर बाँधें—(अन्य) धनिया मनुष्यके मूचमें पीसकर लेप करें (लेप) कायफल एकदाम, सोंठ दोदाम, कंघी दोदाम, सि-रके में पीसकर गरम करके लगावें वरम को गुणकारक इन्दरायण की जड़ सिरके में पीसकर गुनगुना लेप करें (अन्य) इसपगोल जव कुटकरकेलेप करें—(अन्य)वरम को पकाकर पीप निकाले पीपल की छाल पीसकर लेप करें (अन्य) अब्बासीके पत्ते गरम करके बाँधें—(लेप) वरम को पकाकर तोड़कर मल निकाले—रवासनके बीज पीसकर

गुनगुना लेप करें—(अन्य) कंघीके पत्ते इमलीके पत्ते,चावल थोड़े २ लेकर औटावें और पीसकर फोड़ेपर लगावें एक दिनमें पकावें—(अन्य) इमलीके बीज पकाकर बाँधें फोड़ा के तोड़ने और पकाने को गुणदायक है—(अन्य) फोड़े के तोड़नेको गुणदायक है सरूकेपत्ते,मूंगकीदाल,कबूतर की बीट पीसकर गुनगुना फोड़ेपर बाँधें—(लेप) फोड़ेको गुण-दायक है और मलको पकाकर निकालता है थोड़ी खाने की तम्बाकू पानीमें पकाकर लेप करें—(लेप) फोड़े को गुणदायक जिसदिन फोड़ा निकले चूना और तेल मिला कर लगावें बढ़ने न देगा—(औषधि) उस फोड़ेके वास्ते जो पीड़ा अधिक करे और फटा न हो इससे अधिक कोई औषधि फाड़ने में बलवान् नहीं सिरस के बीज, मैनफल अंगार नौ २ मासे, रेवंदचीनी एक तोलाभरप्याज नींबके पत्ते एक२ तोला, एलवा छः मासे, नाखुना,गूगल,अलसीके बीज सात २ मासे, मेथी छः मासे पीसकर तेज शराब में मिलाकर गुनगुना लगावें—(अन्य) फोड़े को गुणदायक कबूतरके पर जलाकर उसकी राख तेलमें मिलाकर लेप करें फोड़ेको पकाकर तोड़डाले—(पट्टी) मैदा लकड़ी दो टंक कूटकर लड़के के मूत्रमें पकाकर पीसकर कपड़े पर रखकर पट्टी की सदृश बाँधें—(औषधि) घावको खोलने के लिये हल्दी जलाकर उसकी राख कड़ुवे तेलमें मिलाकर घावपर रक्खें—(लेप) फोड़े के तोड़ने के वास्ते साबून,रेवन्द चीनीगूगल, मैनफल पीसकर कपड़े में रखकर गुनगुना लेप करें—(अन्य) घावको गुणदायक है लसौड़े की पत्ती गोंदी जलाकर उसकी राख घीमें मिलाकर घावपर रक्खें (अन्य) बगलके फोड़ों के वास्ते गुणकरे सोंठ रेंडी दोनों पानीमें महीन पीसकर गुनगुना लेप करें—और ऊपर से बरगडके पत्ते बाँधें—(औषधि) पांव के छालों को कि राह चलने से पड़जाते हैं गुणदायक है चावल पकाकर दहीमें मिलाकर लेप करें तुरन्त आराम होजावे—(अन्य) भग-

न्दर को गुणकारक अड़ूसे की पत्ती पीसकर थोड़ा नोन मिलाकर भगन्दर पर बाँधें—(अन्य) भगन्दरकी सूजनको गुणकरे करीलके पत्ते और अरण्ड गरम करके बाँधें वरम को पचावे—(अन्य) बातकी पीड़ा को गुणदायक अकरकरा, कायफल खुरासानी अजवाइन, सोंठ, नरकचूर बराबर लेकर तिल और रेंडी के तेल में मिलाकर लेप करें (अन्य) बातकी पीड़ाको गुणदायक रेंडी के तेल या मीठे तेलमें महीन करके मज़बे के पत्तोंपर वह तेल लगाकर गुनगुना बाँधें—(अन्य) उस सूजनके वास्ते जो भिलावें के धुवेंसे पैदाहो गुणकरे—(अन्य) आंबाहल्दी, साठीकेचावल, घास दूब पानीमें पीसकर वरम पर लेप करें—(अन्य) चिरौंजी खाना भिलावेकी सूजनको गुणदायक है—(अन्य) गूलरकी छाल पानीमें पीसकर लेप करें भिलावे के धुवेंके वरम को गुणकरे—(अन्य) सुरदारसंग पीसकर लगावें—(अन्य) मीठा तेल मलें उसी समय सूजन दूर होजावेगी—(अन्य) उस सूजनके वास्ते कि भिलावे के धुवें से हो तेंदू की लकड़ी पीसकर लेप करें—(अन्य) रसूली सूजन के वास्ते गुणकरे ककड़ौंधेकेपत्ते घीमेंभिगोकर शुरूअमें एक सप्ताह पर्य्यंत रसौली पर बाँधें॥

छोटे दानोंकोजिसेफुन्सियांबोलतेहैंउनका यत्न॥

सिरस के दरख्तकी छाल पानीमें पीसकर लगावें (गोली) फुन्सी और बदनके जोशको गुणकरे गेरू, रसौत, जंगीहड़, सुरदारसंग, कत्था, लालचन्दन बराबर कूटछान कर गोलियां बनावें और मकोके रसमें लेप करें—(गोली) हर प्रकार की फुन्सियों को गुणदायक है सुरदार संग पीलेहड़की छाल, भंग, चूनेकी कली, सफेदकत्था एक२भाग तूतिया आधाभाग पानीमें गोलियां बनाकर आवश्यकता पर घी में रगड़कर लेप करें—(गोली) फुन्सीको गुणदायक कत्था, सुरदारसंग, भुनातूतिया, बेलगिरी बराबर पीसकर

गोलियां बनावें और समय पर पानीमें पीसकर लगावें ये गोलियां उस फोड़ेको भी गुण करतीहैं जिसे और गजेबी कहते हैं अर्थात् वह फोड़ा जिसमें चलनी के सदृश छिद्र होतेहैं—(लेप)उन फुन्सियोंको गुणकारक कि जिनमें दाह हो गेरू,माजू,कत्था, सिरके में पीसकर लेप करें (गोली) फुन्सीको गुणकारक सपेद कत्था, भुना तूतिया जली सुपारी,सुरदारसंग,पीलेहड़की छाल, रेवन्द खताई बराबर पानीमें पीसकर गोलियां बनावें और आवश्यकता पर लगावें—(लेप) कण्ठमालाको कि गरदन के नीचे होताहै गुणदायक है सनके बीज,मूली के बीज, सहँजने के बीज,जौ,सरसों, अलसी बराबर कूटछानकर गौके दूध में पीसकर लेप करें—(अन्य) चटों और दाद को गुणदायक अमचूर पानीमें पीसकर थोड़ा खारीनोन मिलाकर लेप करें—(अन्य) उस फुन्सी के लिये कि मकड़ी मलने से होजावे गुणदायकहै मण्डवा पानीमेंपीसकर लगावें—(अन्य) सपेद जीरा सोंठ पानीमें पीसकर लेप करें—(अन्य) मकड़ी के बिष और उसके दानों कोगुणदायक है केंचुवा पीसकर मलें जो केंचुवा न मिले उसकी मिट्टीका लेपकरें (अन्य) मकड़ीके दानोंको गुणकारक चूना नींबूके रस में खरल करके लेप करें जो नींबू न मिले मीठे तेल और चिरौंजी में पीसकर लेप करें—(अन्य) मकड़ी के बिष को रक्तचन्दन,श्वेतचन्दन, सुरदारसंग पीसकर लगावें-(अन्य) खली और हल्दी पानी में पीसकर लेप करें मकड़ी का विष दूर होजावे॥

हाथ पाँवके फटजानेका यत्न॥

इस रोगका कारण खुश्की है—(औषधि) हाथ पाँवके फटजाने के लिये मेंहदी पानीमें पीसकर लगावें चारघड़ी के पीछे दूर करके रेंडीका तेलमलें—(अन्य) एड़ी फटजाने के लिये बरगदका दूध घावमें भरदें—(अन्य) बबूलकागोंद

पीसकर उसमें भरदें—(अन्य)गायकी कलम या बकरीकी कलमकी मींगी भरदें—(अन्य) साबून लाहौरी पानी में पीसकर रात को सोने के समय घाव में भरदें सुबह को धो डालें (लाभ) जानना चाहिये कि जो खुरदरापन हथेली में पैदा हो उसको छाजन कहते हैं और जो दाना कि पांव के घाव पर हो जावे उसको उकौता बोलते हैं उकौते की दवायें वर्णन होचुकी हैं—(बफ़ारा) छाजन को गुणकारक बबूल की छाल आंवकी छाल औटावें और हांड़ी पर सरपोश मज़बूत छिपावें कि बुखार बाहर न जावे फिर हांड़ी को उतार कर हथेली और तलुओं को बफ़ारा दें और बफ़ारे के उपरान्त घी या मक्खन मलें—(अन्य) छोटी कटाई जड़ पत्ते और डालीके रेज़ा २ करके पानी के साथ हांड़ीमें डालकर मज़बूतसरपोशसे छिपाकर औटावें कि उसकाबुखार बाहर न जावे फिर रोगी के हाथ पाओंमें घीमलकर उसका बुखार लें और जब ठण्ढा होनेलगे पानी से हाथपांव धोवें—(औषधि) छाजनकोगुणदायक थोड़ानौसादरमीठे तेलमें पीसकर मलें—(यत्न) हाथ पांवके बिगड़जानेके लिये कि सरदीसेकाले होजावें पहिले हाथपांवको गरमपानी में रक्खें फिर तेल गुन गुना मलें॥

जूंके अधिक होने का यत्न॥

इसका कारण शरीर में मलका अधिकहोनाहै शरीर को मुसिलोंसे साफ़ करें किताबुल खवासमें लिखा है कि चांदनी में बैठकर बालों में कंघीकरना मुख्य जूंको पैदा करताहै-(औषधि) गाय का पित्ता शिरमें डालें-(औषधि) पारा मूली की पत्तियों के रसयापान के रस में हलकरके उसमें तागा भिगो कर शिरमें रक्खें दो तीन दिनमें सब जूं मरजावेंगी॥

———o———

सिरका जिसे हिन्दीमें बफा बोलतेहैं उसका यत्न॥

इस रोगका यत्न शिरमें तेल डालना है—(अन्य)जवासा कलोरी के मूचमें पीसकर शिरमें डालें—(अन्य) चने के आटे को एक घड़ी सिरके में डालदें फिर वह सिरका लेकर शहदमें मिलाकर शिरपर मलें—(अन्य) नीबूका रस शक्कर में मिलाकरमलें और दोपहरके पीछे सिरधोडालें (अन्य) साबूनसे शिर धोना जूं को मारता है और बफा को शिरसे दूर करता है—(अन्य) चुकन्दर की जड़ और पत्तोंका काढ़ा थोड़े नोनके साथ तरेड़ा देना बफा और जूंके दूर करने के वास्ते गुणकारक है॥

नाखूनों की दवायें॥

नाखूनके टूट जानेको गुणदायक अनार की पत्ती पीस कर बाँधें कदाचित् हाथ या पांव का टूट गयाहो उसपर नीला कपड़ा बांधकर मूच कियाकरें—(यत्न)नाखून के फट जाने का एकभाग सिरका दोभाग तिलोंके तेलमें औटावें और उसमें थोड़ा सरेश डालकर गलावें जब मरहम के सदृश होजावे लेपकरें॥

चेचक का यत्न॥

चेचक कई प्रकार की है एक छोटी चेचक जिसको खसरा बोलते हैं और एक वहहै कि जिसके दाने बड़े हों उसके उत्तम प्रकार को मोतिया कहते हैं उसका कारण दूध के बिकार या तरी के बिकार का जोश करना है चाहिये कि जब शीतल की ऋतु कि हिन्दुस्तान में बज़ुधा चैतका महीना है शुरू हो दूधपीने वाले लड़के और उसकी दूध पिलाने वाली को वह दवायें कि रुधिर को साफ़ करने वाली हैं जैसे कि शाहतरे का अरक़ और सिरफूके का अरक़ और खूब कलां और सादी उन्नाब की शरबत और काहूके बीज काशीर और इसब-

नालका लुआब कभी २ पिलाया करें और जिस लड़के की आयु दो वर्ष से कम हो शीतला के दिनों में निकलने के पहिले जोंके लगानी चाहिये और उस ऋतु में चिकनाई मांस और मिठाई से पथ्य करें और जब शीतला निकलआवेंगरमऔर ठण्ढीचीजें नदेंऔरहिन्दुस्तान में जब लड़कों के शीतला निकलती हैं गरम चीज़ों का सेवन करते हैं और भोजन में चने और गुड़ खिलाते हैं ऐसे उपाय से ईश्वर बचावे उबर और चेंचक में केवल खिचड़ी या मूंग की दाल खिलावें और मसूर की दाल भी गुणदायक है कई प्रकार चेचक के बड़े हैं उन मेंआरोग्यता कम होती है उनमें से काली और ऊदीहै उत्तमोत्तम सपेद और कम वह है कि जिसमें कम दाने हैंअब थोड़ी दवायें सुगम लिखता हूं जो चेचक के कम निकलने के पहिले दें निश्चय है कि न निकले और कदाचित् निकले तो ईश्वरकी कृपासे कमनिकले—शकायक की शरबत लड़के को पिलाना चेचक निकलने को गुणकारक है उसका नुसख़ा सिरगी में वर्णन हो चुका—(अन्य) चेचक के दूर करने और कम निकलने के वास्ते जब चेचक का संदेह हो अगर लड़का दूध पीता हो चारतोले खोपड़ा उसके दूध पिलाने वाली को एक सप्ताह पर्य्यंत खिलायें यदि दो वर्ष का लड़का हो दो तोले भर खोपड़ा और अगर तीन बरस का हो तीन तोले इसी तरह एक सप्ताह पर्य्यन्त उस लड़के की दाई को खिलावें ईश्वर की कृपा से चेचक कम निकलेगी यह नुसख़ा एक फ़रंगी ने बताया है—(अन्य)जो चेचक के दिनों में खिलावें चेचक न निकले और जो निकले कम निकले ऊदराज कि हिन्दू उसकी माला बनाते हैं पीस कर लड़के को पिलावें (अन्य)चेचक के दिनों में निकलने के पहिले घोड़ी का दूध पिलावें—(अन्य)तीन या चार सेंभल के बीज निगल जावें चेचक बहुत कम निकले गी—(अन्य)आसारों तुरंज के अ-

रक्त के साथ चेचक निकलने के पहिले खिलाने से चेचक बज़्त कम निकलेगी—(अन्य)हिन्दी लड़के की चेचक के वास्ते गुणदायक है छिली मुलहठी अधकचली अनार दाना बराबर अपने स्वभाव के अनुकूल पानी में औटा-कर शहतरे के अरक्त के साथ पिलावें—(अन्य) चेचक के दोनों को अच्छा करदे सिरसके दरख्त की छाल, पीपल के दरख्त की छाल लसोडे के दरख्त की छाल, गूलर के दरख्त की छाल कूट छान कर गाय के घी में मिलाकर दानों पर लगावें अगर चेचक दाह संयुक्त हो बज़्त गुण-दायक है बटना चेचक के दानों को गुणदायक है आंवा हल्दी सर कंडे की जड़ जलाई जई कौड़ी बराबर कूट छान कर भैंस के दूध में मिलाकर रातको मुंह पर लगा कर सुबह भूसी पानी में भिगोकर उस पानी से धोवें (बटना) रंगको लाल करे और साफ़करदे छिले मसूर खर बूजे के बीजों की गिरी दोनों बराबर पीसकर बटना बनावें—(अन्य) नागरमोथा औटाकर सुबहको उससेमुख धोयाकरें॥

बालों की दवायें॥

बालों का बढ़ना और काला होना—(औषधि) बालों को बढ़ावे नींब के पत्ते और बेर के पत्ते पीसकर नहाने के समय शिर में लगावें और चार घड़ी के पीछे धो डालें (औषधि) बालों के लम्बे होने की शीशे के बीज बेर के पत्ते बराबर पीस कर दो दाम बालों की जड़ में मलें चार घड़ी के पीछे गुन गुने पानी से धो डालें—(औषधि) बालोंके लम्बे होनेकेलिये कलौंजी पानीमें पीसकर उससे बाल धोवें इसी प्रकार एक सप्ताह पर्य्यन्त धोया करें (अन्य) आमला नींबूके रसमें पीसकर बालोंकी जड़ोंमें मलें—(अन्य) करीलकी जड़पीसकर बालोंकी जटोंमें मलें बाल लम्बेहोजावेंगे और बफादूर होगी—(तेल) किबालों

को कालाकरे एक सेर मीठेतेलमें गेंदेकी पंखडियां काट कर डेगचीमें डालकर औटावें फिर उसे जमीन में गाड़ें एकमहीनेके पीछे निकालकर वहतेल बालोंमें मलें—(तेल) बालोंको काला रक्खे और सपेद न होनेदे हरी भाऊकी जड़ खूब कूटकर उतनेही तिलके तेलमें औरदोनोंके बराबर पानीमें औटावें जबसब पानी और आधा तेल जलजावे लेकरगाढ़ा २ सिरपर लगावें थोड़े दिनोंमें सपेद बाल भी कालेहोजावें औरकभीसपेद ननिकले—(मक्खीकातेल) कि बालोंको काला रक्खें सौ मक्खियां तिलोंकेतेलमें डालकर चालीस दिन धूपमें रक्खें फिर साफ़ करके बालोंमें लगाया करें—(तेल) बालोंके बढ़ाने और काला होने के लिये सरूके पत्ते एक भाग आमला दो भाग पानीमें औटावें जब गलजावे तिलका तेल मिलाकर औटावें कि पानीजल कर तेल माच शेषरहे औषधियों समेत छलकरके बालोंमें मलें—तेल बालोंके बढ़ने के लिये भंगरे का अरक़ मीठे तेल में औटावें जब पानी जलकर तेल माच शेष रहे हर रोज़ बालोंमें मलें—(औषधि) नहाने के समय काले तिल की पत्तियोंसे बालोंको धोवें बाललम्बे और नरम करता है (अन्य) बालोंकेलंबे होनेके वास्ते कड़ अर्थात् कुसुमके बीज कुसुम के वृक्ष की छाल दोनों बराबर जलाकर राख करें और चंबेलीके तेलमें मिलाकर मरहम के सदृश बालोंकी जड़ोंमें मलें लंबे और नरम होजावेंगे—(अन्य) परसिया वशान जलाकर सिरपर लगावें बालोंके गिरनेसे रक्षाकरें (औषधि) किबाल खोरें को गुणकारकहै हाथीदांत जलाकर उसकी बराबर रसौत मिलाकर लगावें—(अन्य) बाल खोरे की गुणकारक— कदीर की कोंपल बिना पानी के पीसकर मलें दोतीन दिनमें बाल निकल आवें—(अन्य) भंगरा पीसकर मलना बालखोरेकोगुणकारकहै—(अन्य) बालखोरेको गुणदायकचुकन्दरके पत्तोंकारस चारदाम कडुवे तेलमेंजलाकर लेपकरें—(अन्य) बालखोरे कोगुणदा-

यकहै घोड़ेया गधेका सुम जलाकर उसकीराख मीठेतेलमें मिलाकर मलेंऔर सींग जलाकर मलनाभी गुणदायकहै (अन्य)बालखोरे को गुणदायकहै गन्धक पानीमें पीसकर शहदमें मिलाकर लगावें—(अन्य)बालखोरेको गुणदायक आमला चुकन्दरके रसमेंपीसकर लेपकरें पांच छः दिनोंमें बाल निकल आवें—(अन्य) बाल खोरेके लिये—थोड़ा दही बेकलई तांबेके बरतनमें डालकर पैसेसे इतना हलकरें कि सब्ज हो जावे फिर लेपकरें—(अन्य) बाल खोरेको गुणकारक पहिले आमले के पानीसे जहां बाल खोराहो धोकर हलकेकई घावों परउस जगह परलगावेंकि रुधिर निकल आवे फिर नौसादर महीन पीसकर मक्खनमें मिलाकर मह्नकरें एकसप्ताहमेंबालनिकल आवेंगे—(अन्य) बड़ोंका निश्चयहैकि कुन्दश और हाथीदांत का बुरादा मुरग की चरबी में मिलाकर जिसजगह परलगावें यहां तक कि हथेलीमें भी बाल निकल आतेहैं॥

वह ओषधियां जो बाल निकलनेदें॥

जो बैलका पित्ता मुरगके अंडेकी सपेदीमें मिलाकर बालउखाड़कर लेपकरेंबालकभीन जामें—(अन्य) जोंकको नोनमें लथेड़कर सुखाकर बकरी के मूतमें पीसकर जिस जगह बालहों उखाड़कर लगावें फिर वहां बाल न जमें (अन्य) इसबगोल का लुआब सिरके में मिलाकर बाल उखाड़कर मलें अगर थोड़ा समन्दरझाग मिलावें बहुत गुण रखताहै—(अन्य) बकरीकी मेंगनी और राई महीन पीसकर बाल उखाड़कर मलें—(अन्य) रेंडीकी गूदी पीसकर बाल उखाड़करमलें—(अन्य) समन्दरझाग अजवायन साफ़ अफीम सिरके में पीसकर इसबगोल का लुआब मिलाकर बाल उखाड़कर लेपकरें—(अन्य) कुचला पानी में पीसकर बाल उखाड़कर लगावें—(अन्य) जोंक सिरके में जलाकर बालोंके उखाड़ने के पीछे लेपकरें—(अन्य)

बाल उखाड़कर चींवटी के अण्डे लेपकरें—(अन्य) बाल उखाड़कर सर्पकी केंचुल लगावें—(अन्य) चमगादर का रुधिर और मुरग का पित्ता और खरगोश का रुधिर और कछुवे का पित्ता और तीतर की चरबी हर एक बालोंको उखाड़ कर लगाना बालनिकलने नहीं देता (अन्य) नौसादर गाय के पित्तेमें हल करके बाल उखाड़ कर लगावें—(अन्य) अंजीर का दूध और सूखे मेंढुक की राख और मेडक का रुधिर जो बाल उखाड़कर लगावें यही गुण रखताहै—(अन्य) बकरीका भेजा चूनेमें मिला कर बालउखाड़नेके पश्चात् लगावें—(अन्य) प्याजका रस कालानोन सिरकेमें मिलाकर बाल उखाड़लें॥

बाल गिरकर फिर न निकलें उसका यत्न॥

चूहे की मेंगनिया सिरकेमें मिलाकर लेपकरें—(अन्य) लसौड़ा पानीमें औटावें जब पानी गहरा होजावे मल कर बाल गिरने की जगह पर मलें—(अन्य) हरे परसिया वशानको निचोड़कर मलना गुणकरताहै—(अन्य) पुराना बादाम रौग़न लगाना गुणदायकहै—(अन्य) किस्त सिरके और शहद में पीसकर मलें—(अन्य) बिच्छू मीठे तेल में जलाकर लेपकरें—(अन्य) समन्दर झाग जलाकर सिरके में मिलाकर लगावें—(अन्य)चुकन्दरके पत्तोंका लेपकरना गुणदायक है—(अन्य) मेडक जलाकर सिरके में मिलाकर लगावें—(अन्य)बकरीका सुमजलाकर सिरकेमें मिलाकर बाल गिरने की जगह पर मलें॥

लूंलगने का यत्न॥

इस रोगके नाशकरनेके लिये कच्चा आंब भूभलमें गाड़ दे जब गलजावे निचोड़कर शक्करमें मिलाकर शरबत बना कर पियें लूंके दुःखको कि बज्रंत विदेश में पछचताहै गुण करताहै॥

ज्वर का यत्न ॥

एकहमीयोम अर्थात् दिवसिकका मुख्यकरके ज्वरके तीन प्रकारहैं वह कि अधिक चिन्ता शोच और हर्ष और जागने और तकान और मिरगी और जुकाम और नजले और पेचिश आदि से होता है बज़ुधा तीन चार दिन से अधिक नहीं रहता है उस का यत्न कि उस कारण को दूर करना है जैसे कि चिन्ता और बिकल्प के ज्वरमें हर्ष औरआनन्द देना और क्रोध ज्वरमें धीर्य देना और हर्ष ज्वरमें अप्रतिष्ठा और ग्लानि करना भूखके ज्वरमें भोजन देना इसी तरह थोड़ी ठण्ढाई और मनकी पौष्टिक औषधि इसको काफीहै—दूसरावह ज्वर कि किसी दोषसे उत्पन्न हो उसमेंजो मल रगोंके अन्दर दुर्गन्धितहो वह तप प्रति समय बराबर रहतीहै और जो मलरगों के बाहर सड़ जावे बहतपहरवक्त नहीं रहता और रुधिररगोंके अन्दर रहताहै जो खूनके जोशसे ज्वरहो उसे सोनोखस कहतेहैं और रुधिरकी अधिकता के लक्षण वर्णन होचुकेहैं उन लक्षणोंसे रुधिरकी अधिकता मालूम होसक्तीहै उसका यत्नफस्दके पीछे रुधिरको ठंढी दवाओंसे साफ़करना जैसे कि इसबगोल का लुआब, काहूके बीजों का शीरा काशनी, शरबत, उन्नाब आदि उन्नाबकी शरबतका नुसखा यहहै कि पावभर उन्नाब पानीमें भिगोकर औटाकर छानलें और आधसेर कन्द में कवामकरके रक्खें पैत्तिक ज्वरजो उसकामलरगों के बाहर सड़गयाहो तीसरेदिन जड़ीसे आतीहै और पित्तकी अधिकता मुंह का कड़ुवा होना और प्यास की अधिकता और रंगकी जरदी से मालूम हो जातीहै और जो उसका विकार यदि वह ज्वर बराबर होताहै परंतु तीसरेदिन बेग करताहै और कदाचित् पैत्तिक ज्वर का बिकार कलेजे के पास की रगों के अन्दर सड़जावें ज्वरमें दाह और गरमी बज़ुतहोती है

उसको मुहरका बोलतेहैं उसका यत्न ठण्ढी चीजें पिला-
ना और पित्तके पकानेके उपरांत निकालता—कल्क पैत्तिक
ज्वर को जो दिनी होजावे गुणदायक है सदा पिलावें
पैत्तिक ज्वर बिल्कुल जाता रहे इमली दो तोले रात को
पानी मेंभिगोदें सुबहकोउसका साफ़ पानी लेकर थोड़ी
शक्कर मिलाकर पहिले एक तोला इसबगोल फांककर
उसपर पियें—सिकंजबीन बजूरी, पैत्तिकज्वरकोगुणकारक
और यह नुसखा साहब जखीरा सय्यद इस्माईल साहब
काहै कासनीकीजड़की छाल,कासनीकी जड़पालक केबी
ज,खीरेककड़ीकेबीज,बराबरलेकर तीनभागसिरके दोभा-
ग शक्करमेंकवामकरें औरतरबूजकेबीजोंकी गिरीकाशीरा
यामीठेकद्दू के बीजों कीगिरीके शीरेके साथपियें औरजो
सिरका न मिलावें उसको शरबत बजूरी बारदककहते हैं
तरबूज की शरबत पैत्तिक ज्वरको गुणकारक बड़े तरबूज
के पानी के बराबर सपेद शक्कर मिलाकर क़वाम करें खू-
राक स्वभावानुकूल बंशलोचन की टिकिया—पैत्तिक ज्वर
को गुणकारक सुसिल के पीछे देनी चाहिये बंशलोचन
गुलाब के फूल पांच२ भाग, काहूके बीज, कासनी के बीज
तरबूज के बीजों की गिरी, खीरे ककड़ीके बीज, हरएक
तीनभाग, नीलोफर के फूल दोभाग, कूटछानकर टिकिया
बनावें खुराक दोटंक—पैत्तिक ज्वरको गुणदायक काहूके
बीज, खुरफे के बीज दो २ टंक पानीमें शीरा निकालकर
अलका साफ़ पानी दोतोले भर अधिक करके इसबगोल
एक तोला छिड़क कर पियें—(अन्य) पैत्तिक ज्वरको गुण
दायक शहतरे के पत्तोंका शीरा कासनी के बीज दो टंक
पानीमें पीसकर सादी सिकंजबीन दो तोले मिलाकर
पियें—नींबूकी शरबत, पैत्तिक ज्वरको गुणदायक है और
जलेछये दोष और रुधिर की गरमी का दुरुस्त करताहै
आधे रतिल शक्कर का कवाम करके छः दाम नींबूका रस
छानकर अधिक करके कवाम पर आनेके पीछे उतारकर

रखछोड़ें—(काढ़ा) उस पैत्तिक ज्वर को कि तीसरे दिन आतीहै वैद्यों की रीतिपर गिलो अर्थात् गुड़च, धनिया रक्त चन्दन, कँवलगट्टे की गिरी, नींब के वृक्ष के अंदर की छाल हर एक पांच मासे कूटछानकर तीन पाव पानीमें औटावें जब आधपाव रहे साफ़ करके पियें और चिकारी करने के लिये शरबत नीलोफर दो तोले अधिक करें तो कुछ हर्जनहीं—शरबत नीलोफर की ठंढे शिरके दर्द और गरम तपको गुणदेती है हरे नीलोफर के फूल आधे रतल गोखरू चारतोले चार रतिल पानीमें औटावें और छानकर सेर भर कन्दमें क़वाम करें खुराक इक्कीस टंक पर्य्यंत कहका रस लौकी लेकर कपड़ौटी करके हल्के तन्दूर में एक ईंट पर रखदें जब पकजावे निकालकर उसकी मिट्टी ऊपर से दूर करके कहमें छेद करके उसका पानी लेकर क़न्द या तुरंजबीन या शीराबिश्त ता शरबत या नीलोफर या सिकंजबीन या शरबत बिनफ्शे के साथ जो उचित हो पियें—(काढ़ा) गरम और पुराने तप को गुणदायक गिलो, शहतरा, धनिया, मुलहठी, अधकुचली काकड़ासिंगीकडवी, खश, रक्तचन्दन, नीबके पत्ते, खरबूजेके बीज अधकुचले बराबर इसमें से दो दाम लेकर आधसेर पानी में औटावें जब चतुर्थांश शेषरहेछानकरपियें—(अन्य)और पैत्तिकज्वरको गुणदायक नीलोफर दो मिस्काल, खाकशीराएकमिस्काल दोनोंको डेढ़पाव पानीमें औटावें जब आध पाव रहे भूने कपड़ेमें छानें कि नीलोफर रहजावे और खाकशीरा छनआवे और थोड़ी मिसरी डालकर मीठा करके पियें—(अन्य) ज्वरको गुणदायक गुड़च, नींब की छाल, धनिया, पद्माक, रक्तचन्दन, खस, बराबर दो दाम के अनुमान एकसेर जलमें औटावें जब आधपाव रहे छानकर पियें—(अन्य)ज्वरको गुणदायक छिलीअड़ई मुलहठी, काकड़ासिंगी, गिलो शहतरा, चिरायता, खस, रक्त चन्दन, नेचबाला, अरलूकी छाल, धनिया, जवासा, दोटंक

बराबर लेकर प्रतिदिन तीनपाव पानीमें भिगोकर सुबह को औटावें जब आधपाव शेषरहे साफ़ करके पियें—(करं-जुवेकी गोली)कफ और पित्तकी जूड़ी बुखार को गुणकरे करंजवे की गिरी, पीपल एक२ टंक, सपेद जीरा, बबूल के पत्ते आधा २ टंक कूटछानकर पानीमें फालसे के बराबर गोलियां बनावें तीनदिन तक एक गोली सुबह और एक दोपहर और एक शाम को खावें—(गोली) पैत्तिक ज्वर को गुणदायक सपेद कत्था चारभाग कपर एक भाग कूट पीसकर जंगली बेर की बराबर गोलियां बनावें खुराक एकगोली—(अन्य) जूड़ी बुखार को गुणदायक हिन्दुओं की रीतिपर सपेद कत्था एकमासा संखिया एकरत्ती पीसकर मोठकी बराबर गोलिया बनावें एकगोली जूड़ी से पहिले खावें—(अन्य)जूड़ी बुखारके वास्ते चनेके बराबर अफ़ीम एक रत्ती नींब के पत्ते ढाई खूबपीसकर गुड़में मिलाकर गोलियां बनावें और आनेसे तीन घड़ी पहिले एक गोली निगल जावें जब तप शुरूहो दूसरी गोलीदें निश्चयहै कि तीसरी गोली की आवश्यकतानहो—(अन्य) जूड़ी बुखार को गुणकारक झलझल के पत्ते दाहने हाथमें कलाई के जोड़पर बाहर की तरफ़ रखकर उसपर एक छोटी फिटकरी मजबूत बांधे वहांएक फफोला पैदाहोगा नौवत के दिन जूड़ी न आवेगी और ज्वर नष्ट होजावेगा (अन्य)कि जूड़ीबुखार दूरकरे भुनीफिटकरी मिश्री दोनों पीसकर रोगी के स्वभावानुकूल आधे मासे से दो मासे पर्यंत दें जो खांसी हो इस औषधि का सेवनकरें—(अन्य) ज्वर को गुणदायक तुलसी के पत्ते छः मासे, कालीमिरचें चार, पीपल एक, पीसकर एक तोला भर मिश्री मिला-कर पियें—(अन्य)जूड़ी बुखार को गुणदायक अफीम एक मासा, कालीमिरच दो मासे, कीकर की लकड़ी का कोयला बराबर लेकर छः मासे पीसकर एकमासे कम वा ज्यादा स्वभाव के अनुकूल तपके वक्तसे चारघड़ी पहिले

दें और निहारनदें कि कै होजावेगी किन्तु पहिले थोड़ा सा भोजन करलें और औषधि खाने के पीछे जब दोपहर या अधिक बीते तब भोजन दें इसके अंदर नदें निश्चय है कि एकही खूराक काफी होजावेगी—(अन्य) जूड़ी बुखार को गुणदायक—धतूरे के बीज एक कुल्हिया में भर कर उसका मुंह बन्द कर कपड़ मिट्टी करके तन्दूर में रक्खें जब बीज जलजावें उसकी राख चार मासे जवान को चाररत्ती लड़के को खिलावें—हिन्दी औषधि कि एक दिनमें कफ और पित्त ज्वर को दूरकरे हरताल फिटकरी हरएक पांच टंक घीकुवार के रसमें नींबके उस सोंटेसे कि जिसमें पैसा जड़ाहो सोरह पहर रगड़ें और टिकिया बनाकर सुखाकर मट्टी के बरतन में टिकिया के नीचे ऊपर पीपल या अरण्ड की लकड़ो की भस्म देकर रक्खें और बरतन को कपड़ मिट्टी करके बारह पहर जंगली कंडेकी आगदें खूराक एक चावल के बराबर भोजन दूध चावल—(बफारा) कि शीत ज्वरको दूर करता है तब की पुस्तकों में लिखाहै कि ऋतुके रुधिर का लत्ता जूड़ी दूरकरने को आजमाया हुआहै—(खसका खमीरा) पित्त ज्वर और प्यासको गुणदायक और मन और कलेजेका पौष्टिक है आध सेर खसके रसमें चार दाम खस रातको भिगोकर सुबह को औटावें जब आधारहे पावभर शक्कर डालकर क़वामकरें और एकमासा खसका अतर अधिक करके खमीरा बनावें और थोड़ा गुलाब अधिककरें और शरबत की अधिकता के लिये कभी एक तोला मीठा कद्दू पीसकर डालतेहैं और तपेदिक के वास्ते इसी शरबत में दो दिन चाररत्ती कपूर मिलाते हैं और अतीसार और नरम स्वभाव के समय दो टंक बंशलोचन मिलाते हैं और इस खमीर में बहुत गुणहैं—(लाभ) समय पर रोगी को भोजन दें किन्तु जब तपकी गरमी कम होनेलगे भोनत दें गरम तपमें उत्तमोत्तम भोजन आश जौ या नरम खिचड़ी

या दाल चावल और खुरफा पालक का साग और कद्दू और तोरई है यदि कफ ज्वर का विकार रगों के बाहर सड़ गयाहो हररोज़ ज्वरआवे और जो उसका विकार रगोंके अन्दर सड़ाहो वह भी हररोज़ आताहै—कफके लक्षण प्यासका होना निद्राका वेग मुखमें सपेदी मुंहका फीका होताहै—(यत्न)मल के पकाने के उपरान्त कफको निकालैं—(काढ़ा) कफ ज्वर को गुणदायक सौंफ एक टंक सौंफ की जड़, मुलहठी छिलीछुई अधकुचली, गावजबां करफश की जड़ दो २ टंक परसिया वशान तीनटंक, औटाकर गुलक़न्द दोतोले सिकंजबीन बजूरी, दोतोले हल करके पिये—(तिलिस्म) एक मक्खी, आधी कालीमिरच बज़ूत थोड़ी हींग पानीमें पीसकर आंखमें लगावें जूड़ी दूर होजावे—(अन्य)तिलिस्म ज्वरको नाशकारक—उल्लू का पर और गूगल काले कपड़ेमें लपेटकर घीमें तरकरके बत्तीबनाकर जलावें उसका काजल लेकर आंखोंमें लगावें चौथिये बुखारको आश्चर्यदायक प्रभाव रखताहै—(अन्य) सपेद धतूरा इतवार को उखाड़ कर दहने हाथ में बांधें एक दिन में तप दूर होजावे—(गोली) कफज्वर को गुणदायक वैद्यों का नुसख़ा—बड़ी पीपल, करंजुवे की गिरी एक २ तोला,सपेद जीरा, बबूल के पत्ते आधे २ तोला कूट छानकर चने की बराबर गोलियां बनावें एकगोली सुबह और एक दो पहर और एक शाम को तीन दिन खावें ज्वर नष्ट हो जावेगा—(काढ़ा)मिले जुये बुखार को गुणकारक और हिन्दुओं की रीति पर धमाया सात मासे बराबर शहदके साथ पानीमें औटाकर पियेंबजूरीकीरुश्वत सामान्य ज्वरोंको गुणकारक सौंफ, कासनीकीजड़ हरएक चार दाम कन्द पाव भर, यथा बिधि दवायें भिगोकर औटा कर छान कर कन्द मिलाकर क़वाम करें (औषधि)कफज्वरको गुणकारक मकड़ीकाएकखपेद जालासाफ करके गुड़में लपेटकर बारीसे पहिले निगल जावें

शीत नहीं आती है औरज्वर दूर होजाताहै परन्तु तीन दिन सेवन करना चाहिये—(औषधि)मदार की कली कि खिली न हो गुड़ में लपेटकर गोली बनाकर निगलजाने से तीन दिन में जूड़ी दूर होती है धतूरे की गोली—जूड़ी बुखार को गुण दायक-धतूरा बाराटंक, रेवंदची आठटंक सोंठ, बबूल का गोंद, हर एक चार टंक कूट छानकर चने की बराबर गोलियां बनावें दो गोलियां जूड़ी आने के पहिले खावें—(औषधि)कफज्वरकोगुणदायक—करंजुवे की कोंपलें तीन, काली मिरचैं दो, पानी में पीसकर पिलावें (अन्य)करंजुवे की गिरी पानी में पीसकर नाक में टपकावें जूड़ी बुखार से छुट्टी मिलती है—(गोली)जूड़ी बुखार को गुणदायक मदारकी जड़ दोभाग, कालीमिरच एकभाग दोनों को बकरी के दूध में पीस कर चने की बराबर गोलियां बनावें खूराक बारी से पहिले एक गोली—(आनन्दभैरव की गोली)हिन्दुओं की बैद्यक में लिखा है कि यह गोली सम्पूर्ण कफके रोग और कफज्वर और जुकाम और अजीर्ण और पांव के ठंढे पसीने को गुण दायक है शोधा बच्छनाग, काली मिरच, पीपल, सोहागा, शंगरफ बराबर नीबू के रस में पांच घड़ी खरल करके उड़द के बराबर गोलियां बनावें खूराक एकगोली सुबहऔरशाम शक्करके साथ और जिसका स्वभाव बज्रतठंढा हो दोगोली दें और दूसरे नुसखे में मैनफल के बीज, अकरकरा, सोंठ अधिक किया है सात दिन पर्य्यन्त पानके रसमें पीसकर बनाना और उसके रससें खाना लिखाहै—(गोली)जूड़ी बुखार को गुणकारक हिन्दुओंके ज्ञान से है पारा,गंधक आमला सार, शोधा बच्छनाग हर एक एक दाम सोंठ काली मिरच पांच २ दांग, धतूरे के बीज, बीस दांग हरताल आठ दांग, पारा और गंधक खूब पीस कर औषधियां कूट छान कर चार पहर अदरक के रस में खरल करें और दोरत्तीकी गोलियां बनावें खूराक एकगोली शक्कर

या पानीके साथ(औषधि)जूड़ी बुखारकोगुणकारक पारा गन्धक, सोंठ, पीपल कालीमिरच, सुहागा, जमाल गोटा शोधा हुआ, बराबर लेकर दोपहर नींबू के रसमें खरल करकेकालीमिरचकी बराबर गोलियांबनावें—खूराकएक गोली—(औषधि) कफज्वर को गुणकारक झलझल के पत्ते कालीमिरच एक पीस कर काली मिरच की बराबर गोलियांबनावें और एक२गोली तीनदिनतक खावें—(अन्य) कफ ज्वर को गुण करतीहै मदार के पीले पत्ते कोलोंकी आग में राख करके सुबह के वक्त चार रत्ती शहद में मिलाकर खावें—(अन्य)रामबाण भूखे को अधिक और बद्ध कोष्ठ को दूर करती है और कफ के तपों को दूर करती है पारा, गंधक शोधा बच्छनाग, लौंग हर एक अढ़ाई अढ़ाई दाम जायफल सवा दांग शोधा जमालगोटा, डेढ़ दाम कूट छान कर तीन दिन नीबू के रस में खरल करके काली मिरच की बराबर गोलियां बनावें दो गोली तक गरम पानी के साथ भंग का चूर्ण बैद्योंका नुसखा जो एक घड़ी तप आने से पहिले खावें शीतज्वर को गुण कारकहै पीपल, कालीमिरच, कलौंजी, चिरायता, गेरू, एक एक मासे भंग के पत्ते दोमासे कूट छान कर चूर्ण बनावें खूराक एक मासा बारी के पहिले खावें जो रोगी कम उमरका हो एक मासे से कम दें—(चूर्ण) बैद्यकी औषधि—कफ और सौदा के जूड़ी बुखारको गुण दायकहै एक दाम संखिया बैंगन में रख कर कपड़ मिट्टी करके थोड़े जंगली कण्डों में फूंक दे फिर इसी तरह दूसरे बैंगन में रखकर आगदें फिर पीसकर लोहेकी कड़ाही में आधसेर पानीके साथ डालकर नरम आगपर पकावें जबसूखजावे उसको कड़ाही से निकाल कर एकदाम गेरू के साथ खरल करें आवश्यकता पर एक चावल से एक रत्ती पर्यन्त बल के अनुकूल रोगीको बतासेमें खिलावें भोजन चावल औरकिली दाल कम नमक खावें—(लाभ)चौथिया तप सौदाबीहै जो

दोदिन बीच देकर आती है उसका बिकार रगों के बाहर सड़ जाता है और तप सौदाबी कि उसका बिकार रगों के अन्दर सड़ जाता है और यह तप बरसों दहती है और कठिनता से दूर होती है इसका यत्न पकाने के पीछे मलका निकालना है अब यहां थोड़ी सुगम औषधि चौथिये के ज्वर की बर्णन की जाती है—(औषधि)कि चौथिये कोगुणकारक हींग नौंन दो २ मासे एक सेर जलमें औटावें जब तीन चार दाम के अनुमान रहे पी जावे चौथिया बुखार कई दिनमें नष्टहोगा—(अन्य)नौसादर तीन रत्ती, कालीमिरचें दो कूट छान कर ज्वर के दिन खिलावें—(अन्य)कलौंजी चार दाम, महीन करके शहद में मिला कर चारदिन बराबर खावें परन्तु जिस दिनसे कि तपकी बारी हो उसी दिन से आरम्भ करें—(गोली)काले धतूरेके पत्ते पानके पत्ते कालीमिरच ढाई महीन करके कालीमिरचकी बराबर गोलियां बनावें एकगोली सुबह और एक शामको गरम पानीके साथ दें चौथियेको गुण कारक और आजमाया हुआ है चूर्ण चौथिये और कफ ज्वर को गुण दायक समन्दर फल की गिरी, कालीमिरच, तुलसी के पत्ते बराबर कूटछानकर चूर्ण बनाकर एक मासा या कम या अधिक रोगी के स्वभाव व आयु के प्रमाण एकघड़ी पहिले समयसे पानीकेसाथखिलावें-(अन्य) टेसू के फूल, धनिया, एक एक दाम चने की भूसी दोदाम कूटछान कर तीन भाग करें एक भाग जल के साथ सेवन करें—(अन्य)चौथिये बुखारको गुणकारक तीनचार मासे चूना पानीमें घोलकर एक नींबू उसमें निचोड़ें जब चूना गाढ़ा होकर थिराय जाय उसका साफ पानी लेकर जब तक आने के लक्षण जैसे कि आलस्य और बोझ प्रकट हो पिलावें जो एक बेर पिलाना उसको नाश न करे दूसरी बेर दें—(औषधि)कफज्वरको गुण दायक तीनटंक अजवायन कूठ छान कर शहद में मिलाकर दें—(अन्य)चौथिये

तप को दूर करे घीकुवार काटकर उसके ऊपर की छाल दूर करके आगपर रक्खें और थोड़ी अफीम और हल्दी महीन पीसकर उसपर डालें फिर आग से उतार कर कपड़े में रखकर निचोड़ें और वुन के दो प्यालों मे भर कर पियें दो तीन दिन में चौथिया नष्ट होजावै—(गोली) चौथिये को गुणदायक पलास पापड़े का लाल छिलका दूर करके उसकी सपेदगिरी लेकर उसके बराबर करंजुवे की गिरी मिलाकर खूब महीन पीस कर काली मिरच की बराबर गोलियां बनावें एकगोली बासी पानी से निगला करें—(अन्य,चौथिये के लिये नींब के वृक्षकी भीतरी छाल पांच दाम आधसेर पानी में औटावें जब आध पाव शेष रहे तीन चार टुकड़े चकमाक पत्थर के लेकर आग में गरम करके उसमें बुझावें जब पांचछःदाम पानी बाक़ी रहे रोगी को पिलावें इसी प्रकार तीन दिन सेवन करें (गोली)पुराने तप के वास्ते इस्पन्द भुना हुआ छः मासे कलौंजी पीपलामूल एक २ तोला भर कूटछानकर सादे तीन तोले भर गुड़ में मिलाकर आधे दाम के अनुमान गोलियां बनावें गरम पानी से निहार एक गोली खाया करें—(शरबत)सबप्रकार केज्वर और खांसीको दूरकरता है गिलो,शाहतरा,नीलोफर,खीरेककड़ीकेबीज, खतमीके बीज, कासनी के बीज, चन्दन, बूरा एक एक तोला भर मुलहठी तीन दाम, लसौड़े तीस दाने बिहीदाना एक टंक डेढ़पाव कन्दमें कवाम करके शरबत बनावें—(काढ़ा) कि तप को गुणकरे खश खाश के पोस्ते दश कालीमिरच के साथ कूटकर औटाकर पियें—(अन्य) कि मुख्य करके चौथिये को गुण करती है एक जूं बाकले में छिद्र करके रखकर उसका मुखबन्द करके निगलजावें—कलौंजी की जवारिश चौथियेके बुखारको गुणदायक और सौदावी तपको भी गुणकरतीहै—तीसरा ज्वरका प्रकार तपेदिक़ है कि ग़ैर असली हरारत मुख्य अर्थात् अवय व हृदयमें

स्थिर होजातीहै और यहीज्वर प्रतिसमय और बज़ुधा दिनीतप या और तप गरम रहते २ तपेदिक होजातीहै दिनी तप अपने आप बज़ुत कमदिक होतीहै और इस ज्वरकी गरमीका वेग भोजनके उपरान्त अधिक होताहै इसका यत्न ठण्ढाई इत्यादि हैं—(कपूर कीगोली) तपेदिक को गुणदायक कपूर,केसर, एक २ टंक छिली मुलहठी,बिहीदाना, सपेद खशखाश हर एक दो टंक, खीरे ककड़ी के बीज छिलेज़ये, काहू के बीज छिलेज़ये, चंदन गुलाब में घिसाज़आ, छिले तरबूज के बीज तीन २ टंक समग अरबी आधा २ टंक दवायें कूटपीसकर टिकिया बनावें खूराक एक मिस्काल, (आवेजन) जीर्ण ज्वर को गुणकारक हराकद्दू तरबूज छिलेज़ये जौ कुचलकर हरे खीरे ककड़ी के टुकड़े, नीलोफर, काहू के पत्ते, खुरफे के पत्ते, इन औषधियों मेंसे जितनी मिलें पानीमें औटावें जब आधी शेषरहे आबज़न करके शरीर से जल पोंछकर ठंढेतेल जैसे कि काह का तेल आदि मर्दन करें—कपूर की गोली दाह ज्वर और तपेदिक को गुणदायक है चंदन गुलाब में रगड़कर एकटंक जहर मोहरा रगड़ा ज़आ सपेद कत्था, कतीरा, खुरफे के बीज, बिनफ्शा, खशखाश के बीज एक २ टंक, केसर आधाटंक, मीठेकद्दू के बीजोंकी गिरी, बिहीदाने की गिरी डेढ़ टंक, कूटछानकर बिहीदाने के लुआब या इसबगोल के लुआब में गोलियां बनावें—(अन्य)तपेदिक को गुणदायक गुड़च जव कुट करके एकतोला भर छिली मुलहठी अधकुचली छ:मासे खतमी के बीज, खवाज़ी दो२ दाम प्रावभर गरम पानीमें भिगोदें सुबह उसका साफ पानी लेकर काहूके बीज और खुरफे के बीज उसी पानीमें पीसकर थोड़ी शक्कर डालकर पियें इसी प्रकार कईदिन सेवनकरें—(काढ़ा)तपेदिकको गुणदायक वैद्यकी औषधि नींब के इक्कीस पत्ते—साबत काली मिरचें इक्कीस—दोनोंको महीन कपड़े में पोटली बांधकर

आधसेर पानीमें औटावें जब चारदाम शेषरहे छानकर हररोज़ दोनो समय पियाकरें एक सप्ताह में अच्छी तरह आराम होगा॥

बोहरान का बर्णन॥

बोहरान रोगके साथ वैद्यके युद्धको कहतेहैं यदि स्वभाव प्रबल होजावेवह बोहरान खराहै और एक लड़ाई में बिल्कुल प्रबल नहो किन्तु दूसरे लड़ाई की इच्छाहो उसको बोहरान जैयद नाकिस अर्थात् कुछ खोटा कहते हैं यह रोगके बढ़जाने का प्रमाणहै और जो रोग प्रबल होजावे उसको बोहरानरदी अर्थात् बुराकहते हैं और जो बिल्कुल न आवे किन्तु दूसरीलड़ाई की एहतियाज हो रदीनाकिस कहते हैं यदि प्रकृति बोहरान के समय विकार आजाय रईसा और शरीफसे रज़ील जोड़ोंकी और दूरकरे उसको बोहरान इन्तकाली कहते हैं और बोहरान जय्यदके बारहदिन हैं चौथा १ सावां २ ग्यारहवां ३ चौदहवां ४ बीसवां ५ इक्कीसवां ६ चौबीसवां ७ सत्ताइसवां ८ इकतीसवां ९ चौतीसवां १० सैंतीसवां ११ चालीसवां १२ और बोहरानरदी अर्थात् बुरे बोहरान भयानक के आठदिन हैं छठा १ आठवां २ दसवां ३ बारहवां ४ पन्द्रहवां ५ सोलहवां ६ अट्ठारहवां ७ उन्तीसवां ८ और वेदिनमें बोहरान नहींहोता है तेरह दिनहैं—बाईसवां १ तेईसवां२ पच्चीसवां ३ छब्बीसवां ४ अट्ठाइसवां ५ उन्तीसवां ६ तीसवां ७ बत्तीसवांट तेंतीसवां ९ पैंतीसवां १० छत्तीसवां ११ अड़तीसवां १२ उन्तालीसवां १३ और पांचदिन सब रहतेहैं उनमें कभी बोहरान होताहै और कभी नहीं होता—तीसरा १ पांचवां २ नवां ३ तेरसवां ४ सचहवां ५ बुकरात के बिचारसे चालीस दिनके पीछे बोहरान नहीं होताहै और बोहरान कई प्रकार का होताहै कभी नकसीर फूटतीहै

कभी दस्त आतेहैं कभी क़ै होतीहै कभी पेशाब आताहै कभी पसीना निकलता है—(लाभ) जिसदिन तप आवे जो दिन उतरते आवे उस दिन को रोग का पहिला दिन गिनेंगे और जो दिन उतरने के पीछे आवे उसके दूसरे दिनको पहिला दिन ठहरावेंगे और बोहरान और बारी के दिन मुसिल न देना चाहिये कि बज़ुत बुरा अब उल्थक के मुखाग्र करनेके लिये जैय्यद बोहरानके दिनों की संख्या॥

बोहरान जैय्यद के बारहोंदिन दोहोंमें॥

दो० चौथा सतवां ग्यारवां और चौदवां जान।
बीस इक्कीस और चौबिसां फिरसैंतीस बखानु॥
पुनि इकतिस और चौंतिसासैंतिसवां मनदेज़।
और अन्तिम चालीसवां द्वादश यह गनिलेज़॥
तिसरे पचवें नवम में सत्रह तेरह जानु।
इन दिवसन के मध्य में कभी नहीं बोहरानु॥
छठे आठवें दशम में और बारवें मानु।
पन्द्रह सोलह आठारवें और उन्निसवें ठानु॥
जो इनमें बोहरानुहो रदीहै ताको नाम।
बुरो बज़ुत बोहरान यह भलो करैगो राम॥

विष का यत्न॥

जिस मनुष्य ने बिष खाया हो उसका यत्न सर्ब मतानुसार गरम पानीसेक़ै कराना चाहिये और कईबेर घृत और दूध पिलाना और मुरगका गूह पानीमें मिलाकर जिसवक्त पिलावें तुरन्तबिषको क़ैकराताहै और जानना चाहिये कि जंगल और नदीमें काटनेवाले जानवर बज़ुत होतेहैं उनके काटने से स्वभाव में रोग प्रगट होतेहैं इसकी पूरी रीति यहहै कि ज़हर को सुखावें और जबतक रोगसे छुट्टी नहो घावको न भरने दें और जद्बार और वह औषधियां कि बिष को दूरकरें खाने और पीने में

सेवनकरें—(अन्य)गरम जहर के सब प्रकारों को गुणदायक है चौलाई की जड़ जो हरी हो एक तोला भर जो सूखी हो छः मासे पानीमें पीसकर गायके घीके साथखावें (अन्य) बिषको गुणदायक गायका घी दसटंक, लाहोरी नोन दो टंक, मिलाकर खावें सांप के काटेहुये कोभी गुणदायक है—(अन्य) जो छोटी कटाई पीसकर खावें बैद्योंके बिचार में बिषका नाशकारक है—(अन्य) कचला कालीमिरच पीसकर थोड़ाखावें सर्प के बिषको गुणदायक है—(अन्य) बिषके सब प्रकारों को गुणदायक है—एक मासा भर दरयाई नारियल पीसकर पिलावें—(अन्य) बहुत जहरों को गुणदायक है बिनौलेकी गिरी कूटकर गायके दूधमें औटाकर पिलावें—(अन्य)कसेरू खाना बिष को गुण करताहै—(अन्य) बिषको गुणकारक बकरी की मेंगनी जलाकर खावें और लेपकरें—(अन्य) अजवाइन खाना बहुत जहरों को दूर करताहै—(अन्य) संखिये को गुणदायक है कत्था दो तीन तोले पानीमें घोलकर पियें (अन्य)संखिये को गुणदायक एक मासा कपूर कई तोले गुलाब में हल करके पिलावें—(अन्य) बिष को गुणदायक संखिया, बकरीका दूध औटाकर गायका घी दाग करके मिलाकर पिलावें—(अन्य)बिष के करने के वास्ते कँवलगट्टा एक मासा, तूतिया दो रत्ती पीसकर गरम पानीमें पियें बिषको के सेनिकालता है—(अन्य) अफीम के जहर को गुणदायक अरण्ड की जड़ पीस बुनका एक प्याला भर पियें—(अन्य) अरहर की पत्ती पीसकर पियें—(अन्य)अरण्डकी कोंपल पीसकरपियें—(अन्य)तेजबलपानीमें पीस करबुनका एक प्यालाभर पियें—(अन्य)अफीमके बिषको गुणकारकदोमासेहींग,दोतीनदफा करकेखावें—(अन्य) अखरोटकी गिरी अफीमका जहर दूरकरें—(अन्य)गाय का घी और ताजादूध अफीमकी हानिसेबचाताहै(अन्य) धतूरेके बिषके वास्ते बैंगन टुकड़े २ करके पानीमें खूबमल

कर पिलावें और जो बैंगन न मिलें तोउसके पत्ते या जड़ पानीमें पीसकर पिलावें—(अन्य)धतूरे के बिषके दूर करने को दो दाम बिनौले की गिरी, पानीमें पीसकर पियें—(अन्य)नोन पानीमें मिलाकर पियें—(अन्य)सेंदूरकीहानि को गुणदायक है सात दिन तक अदरक नोन के साथ किन्तु रोटी के साथ खावें और हरवक्त सुंहमें रक्खें कि उसका रस कंठमें पहुंचे—(अन्य)नोन, तितली की पत्तियां हरएक पांच मिस्काल, चावल दस मिस्काल, अखरोट की गिरी तीस मिस्काल, सबको अंजीर के साथ कूटकर खिलावें (अन्य) गुणदायकपारा और शिंगरफके बिकार को दूरकरे जवासा थोड़े पानीमें पीसकर रस निकाल कर पियें—(अन्य)रेंडीका तेल पांचमासे आधपाव गायके दूधमें हल करके पिलावें—(अन्य)भिलावें की हानिको गुणदायक जो भिलावा खानेसे शरीर में खुजली और सूजन पैदाहो इमली की पत्तियों का रस निकालकर पियें या उस के बीज पीसकर खावें या चिरौंजी और तिल भैंसके दूधमें पीसकर खावें—(अन्य)जो किसीने भिलावा खायाहो उसके बिकार के दूर करनेके लिये अखरोट खावें और भिलावेके धुवेंसे जो अंगपर शोथहो आंबा हल्दी, सांठीके चावल, दूबबासी पानी में पीसकर सूजन वाले अंगपर जोड़से मलें या कालेतिल सिरके और मक्खन में मिलाकर लगावें—(अन्य)बच्छनाग के बिष को गुणदायक सोंठ बहुत गुणकारी है और किन्तु यह शोधकहै जिसतरह चाहें खावें—(अन्य)मकड़ी के बिषको गुणदायक चौलाई का साग पानीमें पीसकर लगावें—(अन्य)उस मनुष्यकी औषधि जिसेशेर का बाल खिलाया हो कसौंडी के पत्तों का रस तीनदिन पियें—(अन्य)तीन चार झींगे निगल जावें और शेर के बाल के खाने के यह लक्षणहै कि बैठने के समय पेटमें पीड़ाहो और जो अरंड के पत्तेपर मूतकरे पत्ता टुकड़े२ होजावे—(अन्य)सबप्रकार

के बिषको गुणदायक है खैरुलतिजारब में लिखाहै कि
कुल बीज पांचटंक पीसकर खावें—(अन्य) सांप के बिषके
वास्तें सांप कई प्रकारका होता है परन्तु काले सांप का
बिष औरोंसे बड़ा बलवन्त है समय नहीं देताहै कि जिस
जगह सांप काटे वह अंग यदि काटने के योग्यहो जैसे
कि उंगली तुरन्त काटडालें और जो काटने के लायक
नहो वह जगह आगसे जलादें और सांप काटेहुये को
सोने नदें और चक्कीकी आवाज सांप काटेहुये के कानमें
पहुंचने नदें—(अन्य) सांप काटेहुये को गुणदायक और
आजमाई है जो काले सांपने काटाहो सात जमालगोटे
और जो और किसी तरह के सांपने काटाहो दो तीन
जमालगोटे छीलकर खिलावें और मूंग के बराबर पीस-
कर आंखोमें लगावें जमालगोटे के खानेके पीछे सींगीसे
जिस जगह कि सर्पने डसाहै खूब चूसें कि बिष शरीर में
न पहुंचें और बहुतसा लहसुन प्याज और राईका खाना
सर्पको गुणदायक है मुनर्रबातअकबरी में लिखाहै कि
सर्पका डसाहुआ मूर्च्छित होगया हो उसके उदर पर
नाभि के ऊपर उस्तरे मारें कि ऊपरका चमड़ा छिलजावे
और रुधिर न निकले फिर जमालगोटा पानीमें पीसकर
लगावें क्रै शुरू होगी और होशमें आवेगा फिर और
उपाय करें और एक पुस्तक में लिखाहै कि सांप डसा
हुआ अगर मूर्च्छित होगया हो और हिलता जुलता
नहो परन्तु अभीतक मरा नहीं किन्तु जीताहै कुचला
पानीमें पीसकर उसके कण्ठमें डालें और थोड़ा पीसकर
गरदन और बदन पर मलें होशमें आजावेगा—(अन्य)
सांप के डसेहुये को गुणदायक और आजमाया हुआहै
तीन मदार की कोंपलें गुड़में लपेट कर खिलावें और
उसके ऊपर घी पिलावें और चार मदार की कलियां
और सात कालीमिरचेंऔर एकमासा इन्द्रायण पीस-
कर देना लिखाहै—(अन्य)मदार का दूध जिस जगह कि

सांपने डसाहो टपकावें जबतक कि सूख न जावे मौकूफ न करें जब ज़हर का प्रभाव न रहेगा दूध सूखना बन्द हो-जावेगा—(अन्य) मदार की जड़ पीसकर सांप काटे कुत्ते को पिलावें और बाज दूसमें मदारकी रुई भी मिलातेहैं (गोली)कालीमिरच, जमालगोटे की गिरी सात २ मासे तीन कागज़ी नीबू के रसमें पीसकर कालीमिरच की बराबर गोलियां बनावें और पानीमें पीसकर सांपकाटे कुत्तेकी आंखमें लगावें और दोतीन खिलावें—(अन्य)सांप के बिषको गुणदायककसौंदीके बीजमहीनपीसकरआंख मेंलगावें-(अन्य)सांपकेबिषकोगुणदायकएकखटमलनिगल जावें(अन्य)सांप केबिषकोदूरकरेसुहागातेलियाएक दाम भूनकर तेलमें मिलाकर पिलावें—(अन्य)चूहे का पेटफाड़ कर जहां सांप ने काटा हो बांधें ज़हर को सुखाता है (अन्य)सांप के बिष को गुण कारक सिरस के दरख्त की छाल, और उसके जड़ की छाल, और बीज, और फूल, चारों एक एक दाम एक चमचे भर गाय के मूत्र के साथ एक दिन में तीन बेर करके पिलावें सांप का बिष अपना फल न करे सिरस का दरख्त कि उसकी छाल कालीहो-गई है उसमें बज़ुत गुण हैं और बाज़ों ने लिखा है कि जब ज्येष्ठ का महीना हो सिरस की छाल तीनदिन हररोज दो टंक सांठी के चावलों के धोवन में पीस कर पियें एक बर्ष पर्य्यंत ज़हर दार जानवरों के बिष से बचा रहे और उस मनुष्य को जो जानवर काटे वह जानवर तुरन्त मर जावे यह बात मुख्य है—(अन्य)जामुन की अढ़ाई पत्ती पानीमें पीसकर पिलावें-(अन्य)ताजा केचुवा दोमासे भर पानीमें पीसकर पिलावें—(अन्य)एक तख्ता सपेद काग़ज़ का घोड़े पानी में घोलै और छान कर पिलावें—(अन्य) जिस जगह सांप का डंक या और बिषैले जानवरों का जैसे कि बावले कुत्ते का लगा हो उस पर मूत्र करना गुण देताहै—(अन्य)कंवल कूटछानकरपानीमें मिलाकरपिलावें

क़ै आयेगी सांप का बिष दूर होगा—(अन्य)सांप के बिष को गुणकरे समन्दर फल महीन पीस कर दोनों आँखों मेंलगावें—(अन्य)गंगनधूलपीसकर नाकमें टपकावें—(अन्य) कसौंदी की जड़ एकटंक, मिरच आधीटंक, खावें—(अन्य) दो टंक फिटकरी पानी में पीस कर पिलावे सांप के बिष को दूरकरे—(अन्य)मजुआ और कुचला पीसकर लेपकरें (लाभ)पुस्तकों में लिखाहै कि बारासिंगेका सींग लटकाना सर्प इत्यादि बिषैले चौपायों को काटनेसे रोकताहै और बारासिंगे का सींग और बकरी का सुम और अकरकरे की धूनीसे सर्प भागता है और राई सर्पको मारडालती है अगर राईको नौसादर के साथ घरमें डालें सांप भाग जावे और फिर न आवे—(अन्य)बिच्छू के बिष को गुणदा यक—तीन तोले लहसुन का रस, और तीन तोले गुहद, उसी समय खिलावें और थोड़ा जमाल गोटा पानी में पीसकर आँख में लगावें और जिस जगह काटा हो वहां भी मलें या तितलीके पत्तोंका पानी थोड़ा मुंह में टपकावें कई बेर के सेवन से बिच्छू का बिष और सर्प का भी दूर होजावेगा—(अन्य)बिच्छू के काटे हुये पर उसका मलना गुणदाई है—(अन्य)मदार का दूध बिच्छू के घाव पर मलें (अन्य)मक्खी का बिच्छू के घाव पर मलना गुणकारी है (अन्य)लहसुन सूखा और अमचूर पीस कर घाव पर लेप करें—(अन्य)समन्दर फल पीसकर लेप करें—(अन्य)सुश्की घोड़े का नाखून पानी में पीसकर लगावें—(अन्य)नौसा-दर, सुहागा,चूनेकी कलीबराबर हथेली पर मलकर सूंघें और कसौंदीकाफलभूनकरखावें औरकसौंदीकेबीजपीस करलेपकरें-(अन्य)मोरका परचिलम मेंरखकर तम्बाकूके तौरपरपियें(अन्य)चूहेकी मेंगनी लेपकरें-(अन्य) सज्जीम-हींनपीसकर गुहदमेंमिलाकर लेपकरें—(अन्य)पलास पा पड़ापानीमें पीसकर घावपर लगावें—(अमल) खैरुलतिजा रबमेंबिच्छूके बिषकेदूरकरनेके वास्ते लिखाहैकि बीसअंक

उल्टे गिने अर्थात् बीससे प्रारम्भ और एकपर पूर्ण करें बिच्छू का बिष दूरहोजावेगा—(अन्य) अशनान और अजावायन औटाकर घावपर तरेड़ादें—(अन्य) बिच्छू के बिषको गुणदायक, मूली, नोनमेंमिलाकर घावपर रक्खें जो मूली बिच्छू पर रक्खें मरजावे—(अन्य) हरताल, हींग साठीके चावल, पानीमें पीसकर लेपकरें—(अन्य) बिच्छू के डंक की पीड़ा को गुणदायक है— भंगके बीज कूट कर मोममें मिलाकर खावें—(अन्य) घासकी पत्ती घीके साथ पीसकर घावपर मलें—(अन्य) नींबूका रस डंकके घाव पर खूब मलें—(अन्य) नागरमोथा, बिच्छू के जहर के दूरकरने के वास्ते पीना और लगाना गुणकारीहै—(अन्य) मोजिज में लिखाहै कि एक मनुष्य के शरीरमें बिच्छूने चालीस जगह काटा उसने शीघ्रही दो टंक इन्दरायण का हरा पत्र खालिया उसी समय आराम होगया—(अन्य) जो बिच्छू किसी जगह जलावें उस जगहसे और बिच्छू भागजावें—(अन्य) हींग, हरताल, तुरंज को पीसकर गोलियां बनावें जिस जगह बिच्छूने काटाहो लेपकरें—(अन्य) प्याज़का ज़ीरा, मलें—और थोड़ा गुड़खावें—(अन्य) मोम जलाकर बिच्छूके घावको उसकी धूनींदें अच्छा होजावे—(अन्य) बिसखपरे के पत्ते और डाली चरचरेके साथ मिलाकर मलें—(अन्य) कौंचकेबीज, छीलकर बिच्छू के डंकपर मलें (अन्य) गोबरौले कीड़ेको कि गोबरमें पैदाहोताहै बिच्छू के घावर परमलना गुणदायक है॥

भिड़के बिष की गुणदायक दवायें॥

इसपगोल सिरके में डालकर लुआब निकालकर पियें (अन्य) भिड़के डंक को गुणकारक तीन हथेलीभर धनिया खावें—(अन्य) काई सिरकेमें मिलाकर लेपकरें—(अन्य) खतमी और खुब्बाजी का लुआब मलें—(अन्य)मक्खी डंक की जगह पर मलें—(अन्य) शहद खावें और लेप करें—

(अन्य) मकोकी पत्ती सिरकेमें पीसकर लेपकरें—(अन्य) घी इक्कीस बेर धोकर लगावें—(अन्य) अंगको दो तीन बेर गरम पानीसे धोवें—(अन्य) हरे धनिये का रस सिरके में मिलाकर लगावें—(अन्य) कपूर सिरकेमें मिलाकर लेप करें—(अन्य) भिड़के छत्तेकी मिट्टी लेपकरें—(अन्य) तिल सिरके में पीसकर लेपकरें—(अन्य) गन्धक पीसकर लेप करें—(अन्य) जिसको भिड़काटे वह अपनीजिह्वा पकड़ले डंकके दुखसे बचजावे—(अन्य) नया गोबर लगावें—(अन्य) जिस जगह गन्धक, या लहसुन जलावें उसकी गन्ध से भिड़ भागतीहै—(औषधि) छिपकलीके काटनेकीतेल और खाल मलें और पानीमें भूसी औटाकर गरम तरेड़ा दें॥

दीवाने कुत्तेका यत्न॥

जिस मनुष्य को कि बावला कुत्ता काटे थोड़ी देर के पीछे उस मनुष्य को एक दशा उन्माद की रीतिपर होजातीहै जबइस दशामें जियादती हो जीनेकी आशानहीं इसके यत्नमें देर न करें और चालीस दिन तक घावको भरने नदें और सींगियों से खूबचूसें और घाव के गिर्द पछने लगावें और लहसुन सिरके में पीसकर लेप करें और हवाकी सरदीसे पथ्यकरें और जब कुत्ते का काटा हुआ पानीसे डरे जीने की आशानहीं—(औषधि) एक तोला भर लसौड़े की पत्ती पन्द्रह कालीमिरच के पीस छानकर पिलावें कुत्तेके काटेहुयेको आश्चर्यदायक और आजमाया हुआहै—(अन्य)प्याज़ कूटकर शहदमें मिलाकर लेपकरें कि घाव न भरे—(अन्य)कुचला मनुष्य के मूत्रमें औटाकर पीसकर लेपकरें और शराब में औटाकर छाल दूर करके एकरत्ती हररोज़ खायाकरें या पानीमें औटाकर कूटकर थोड़ा गुड़ मिलाकर खावें—(अन्य) तीन दाम कडवीकठ अधकुचली एक प्यालेभर पानीमें औटाकर औटावें जबएकदाम शेषरहेसाफ़ करके पियें—(अन्य)

जो उसी कुत्ते की जिह्वा काटकर जलाकर उसकी रा
घावपर छिड़कें घावभरे और उसका ज़हर असर न करे
(औषधि) जो कुत्ते काटेहुये को दीवानगी की हालत में
भी दें गुणकरे यह दवा आज़माई हुईहै कि बरसात में
पैदा होतीहै उसको तलैना भी कहतेहैं उसे एकडिबिया
में बन्द करके सुखाकर चनेके बराबर गुड़में लपेटकर
खावें—(अन्य) अंगूरकी लकड़ी की राख सिरके में मिला-
कर लगावें—(अन्य) कुत्ते काटने के दुःख दूर करने के लिये
मुख्य गुणकारक है डाक्टर अंगरेज़ी की ज़बानी लाल
बानात लेकर चनेकी बराबर सातटुकड़े करके गुड़में सात
गोलियां बनावें और खावें—(अन्य) पछने लगाने और
रुधिर निकालनेके पीछे राईकूटकर लेपकरें-(अन्य)मदार
का दूध घावपर लगावें—(अन्य) उसी कुत्तेके बाल जिसने
काटाहो जलाकर उसकी राख घावपर छिड़कें—(अन्य)
कलौंजी की ज़वारिश खाना गुणदायकहै—(अन्य) मूली
के पत्ते गरम करके घावपर रक्खें—(अन्य) चूहेकी मेंगनी
पीसकरलगावें—(अन्य)सम्भालूकेपत्तोंका लेपगुणकारीहै
(अन्य)बाजरे का फूल कि बाजरे की बालीमें होताहै|एक
मासा भर गुड़में लपेटकर गोली बनाकर हररोज़ खावें
दोदाम कलौंजी गनगुने पानीके साथ तीनदिन फांकना
गुणदायकहै—(गोणा)चूहेकेविषको गुणदायकहै सिरसके
बीज, नींबके पत्ते, करंजुवेके बीजोंकी गिरी बराबरके गाय
के मूत्रमें पीसकर गोलियांबनावें और समयपर रगड़कर
लेपकरें जो गायकी चरबी घरमें जलावें सबचूहे भागजावें
(औषधि)मनुष्य के काटेहुये विष को गुणकारी है गोभी-
के पत्ते शहद में पीसकर मलें—(औषधि) बिल्ली केकाटने के
ज़हर को फायदा करे काले तिल पानी में पीसकर मलें
और पुदीना भी खायें औरमलें—(औषधि) कनखजूरे के
ज़हर को गुणकरे मीठा तेल चराग में जलायें फिर जि-
तना तेल चरागमें रहे लेकर जहां कनखजूरे ने काटा हो

मलें(दवा) बंदर के ज़हर को गुणकरे सुरदारसंग नमक पानीमें पीसकर मलें और कलौंजी और शहद लगायें कि घाव खुला रहे और प्याज़ पीसकर मलना भी लाभदे—(अन्य) मच्छरों के दूर करनेके लिये लिखाहै कि घोड़ेके दुमके बाल कोठड़ी के दरवाज़े पर लटकायें मच्छर वहां कम आयें और भूसी, गूगल, गंधक और बारासिंगे के सींग की धूनीसे मच्छर भागते हैं॥

तौलों के नाम और उनका हाल॥

तौल का नाम	तौलों का हाल
अबरीक़	तिबकी रूसे दोमन और बाज़ों ने पांच रतिल लिखाहै॥
उरज़ा	चांवल को कहते हैं और उससे चांवल छोटासुरादहै कि दोराईके बराबर है॥
असतार	साढ़े चारमिस्काल और हिन्दी के हिसाबसे एकतोला पांचमाशा सात रत्ती॥
औकिया	उसे अदक़िया भी कहते हैं साढ़ेसात मिस्काल कि दो तोले और तीन माशे और छः रत्तीहै॥
बाकला	आधादिरमऔरबाक़लाईइस्कंदिरया॥
औरहाकला	नौक़ैरात और मिसर के हिसाब से बाक़ल अड़तालीस जौके बराबर कि डेढ़ माशाहोताहै॥
परमा	दोक़ैरात॥
बंदक़ा	कोई एकदिरम औरबाज़े एक मिस्काल कहतेहैं॥
बहलोली	एक दाम और कइयों ने चौदह माशे लिखाहै॥
पैसा	बारामाशे अर्थात्एकतोला॥

जो उसी कुत्ते की जिह्वा काटकर जलाकर उसकी राख घावपर छिड़कें घावभरे और उसका जहर असर न करे (औषधि) जो कुत्ते काटेहुये को दीवानगी की हालत में भी दें गुणकरे यह दवा आजमाई हुईहै कि बरसात में पैदा होतीहै उसको तलैना भी कहतेहैं उसे एकडिबिया में बन्द करके सुखाकर चनेके बराबर गुड़में लपेटकर खावें—(अन्य) अंगूरकी लकड़ी की राख सिरके में मिलाकर लगावें—(अन्य) कुत्ते काटने के दुःख दूर करने के लिये मुख्य गुणकारक है डाक्टर अंगरेजी की जबानी लाल बानात लेकर चनेकी बराबर सातटुकड़े करके गुड़में सात गोलियां बनावें और खावें—(अन्य) पछने लगाने और रुधिर निकालनेके पीछे राईकूटकर लेपकरें-(अन्य)मदार का दूध घावपर लगावें—(अन्य) उसी कुत्तेके बाल जिसने काटाहो जलाकर उसकी राख घावपर छिड़कें—(अन्य) कलौंजी की जवारिश खाना गुणदायकहै—(अन्य) मूली के पत्ते गरम करके घावपर रक्खें—(अन्य) चूहेकी मेंगनी पीसकरलगावें—(अन्य)सम्भालूकेपत्तोंका लेपगुणकारीहै (अन्य)बाजरे का फूल कि बाजरे की बालीमें होताहै।एक मासा भर गुड़में लपेटकर गोली बनाकर हररोज खावें दोदाम कलौंजी गनगुने पानी के साथ तीनदिन फांकना गुणदायकहै—(गोली)चूहेकेविषको गुणदायकहै सिरसके बीज, नींबके पत्ते, करंजुवेके बीजोंकी गिरी बराबरके गाय के मूतमें पीसकर गोलियांबनावें और समयपर रगड़कर लेपकरें जो गायकी चरबी घरमें जलावें सबचूहे भागजावें (औषधि)मनुष्य के काटेहुये विष को गुणकारी है गोभी-के पत्ते गहद में पीसकर मलें—(औषधि) बिल्ली केकाटने के जहर को फायदा करे काले तिल पानी में पीसकर मलें और पुदीना भी खायें औरमलें—(औषधि) कनखजूरे के जहर को गुणकरे मीठा तेल चराग में जलायें फिर जितना तेल चरागमें रहे लेकर जहां कनखजूरे ने काटा हो

मलें(दवा) बंदर के ज़हर को गुणकरे सुरदारसंग नमक पानीमें पीसकर मलें और कलौंजी और शहद लगायें कि घाव खुला रहे और प्याज़ पीसकर मलना भी लाभदे—(अन्य) मच्छरों के दूर करनेके लिये लिखाहै कि घोड़ेके दुमके बाल कोठड़ी के दरवाज़े पर लटकायें मच्छर वहां कम आयें और भूसी, गूगल, गंधक और बारासिंगे के सींग की धूनीसे मच्छर भागते हैं॥

तौलों के नाम और उनका हाल॥

तौल का नाम	तौलों का हाल
अबरीक़	तिबकी रूसे दोमन और बाज़ों ने पांच रतिल लिखाहै॥
उरज़ा	चांवल को कहते हैं और उससे चांवल छोटासुराहै कि दोराईके बराबर है॥
असतार	साढ़े चारमिस्काल और हिन्दी के हिसाबसे एकतोला पांचमाशा सात रत्ती॥
औकिया	उसे अदक़िया भी कहते हैं साढ़ेसात मिस्काल कि दो तोले और तीन माशे और छः रत्तीहै॥
बाकला	आधादिरमऔरबाक़लाईइस्कंदिरया॥
औरहाकला	नौक़ैरात और मिसर के हिसाब से बाक़ल अड़तालीस जौके बराबर कि डेढ़ माशाहोताहै॥
परमा	दोक़ैरात॥
बंदक़ा	कोई एकदिरम औरबाज़े एक मिस्काल कहतेहैं॥
बहलोली	एक दाम और कइयों ने चौदह माशे लिखाहै॥
पैसा	बारामाशे अर्थात्एकतोला॥

टंक	चार माशे और बाज़ों ने चौबीस घुंघची भर बताया है॥
छटांक	हिन्दीमें सेरके सोलहवें हिस्सेको कहतेहैं एक छटांक आलमगीरी सेर का चारतोला है॥
दाम	एक तोला आठ मासा और बाज़ोंने लिखाहैकि पक्कादाम एकतोलानौमाशा और कच्चा दाम एक तोला दो माशा॥
वांक दवांग	तिब से एक दांग पौनेचार रत्ती और शरासे चार रत्ती और पौन चावल॥
दिरम	तीनमाशे औरबाज़े साढ़े तीनमासे औ कोई दो माशे दो रत्ती बतलाते हैं॥
दिरहम	अड़तालीस जौभर॥
दीनार	एक मिस्काल॥
रत्ती	चार दरु मियानी जौ॥
रतिल	अड़तालीसतोलेसाढ़ेचारमाशे होताहै॥
क़ैरात	सवा चार जौभर॥
माशा	आठ रत्ती या बत्तीस जौ या चौंसठ चावल भर॥
मिस्काल	एकसौ बीस जौभर है कि तीन माशे छः रत्ती होताहै और बाज़ों ने तीन माशे पौनेदोरत्तीलिखा है और शेखउलरईस के हिसाब से बत्तीस जौ भर होता है॥

दूलाजुलगुरबा भाषा संपूर्णम्॥

इति

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भगवद्गीता टी० आ०	विद्यांकर	बालकांड	फौजदारी ऐक्ट २५
गीतगोविंद	पदार्थविद्यासार	अयोध्याकांड	सन् १८६१ ई०
कथासत्यनारायण	पदार्थज्ञानविटप	आरण्यकांड	ऐक्ट रजिस्टरी २० स०
परमार्थसार	भोजप्रबंधसार	किष्किंधाकाण्ड	न् १८६६ ई०
शार्ङ्गधरसंहिता	राजनीति	सुंदरकाण्ड	ऐक्ट स्टाम्प १ सन्
पराशरीसटीक	भाषालघुव्याकरण	लंकाकांड	१८६२ ई०
शीघ्रबोधस०	१ भाग तथा २ भाग	उत्तरकांड	ऐक्ट स्टाम्प १ सन्
लघुजातक	भाषातत्वदीपिका	गुटका १ भाग २ व ३ भा०	१८६२ ई०
षटपंचाशिका	भाषाचंद्रोदय	हिदायतनामा मु०	ऐक्ट स्टाम्प अदा०
सामुद्रिक	भूगोलतत्व	दर्रिसान्	लत २६ सन् १८६७ ई०
गरुड़पुराण	भूगोलदर्प्पण	पशुचिकित्सा	सवालवजवाबपुलिस
रामविवाहोत्सव	इतिहासतिमिरना०	पट्टाबखतकैथी	मजमूआ ऐक्ट अव०
सरिश्तेतालीमकी	शक १ भा० त० २ व ३	तथा क़बूलियत	धलगान १९ सन्
पुस्तकें	अवधदेशीय भूगो०	रजिस्टरदाखिल०	१८६८ ई०
संस्कृत	इग्लिस्तानकाइति०	खारिज तुलंबा०	पुख्तादारी २६ स०
ऋजुपाठ १ भाग	हितोपत्रिका	मदर्सा	न् १८६६ ई० वग़ैरह
तथा २ व ३ भाग	बालाभूषण	रजिस्टरहाज़िरी पा०	ऐक्ट स्टाम्प दस्ता०
धात्वर्णव	पद्यसंग्रह	ठशाला	वेज़ात १८ सन्
नागरीकैथी	भाषाकाव्यसंग्रह	क्षेत्रव्यवहारिक	१८६९ ई०
वर्णमालाकैथी १	कवित्तरत्नाकर १ भा०	तत्व १ भाग त० २	ऐक्ट ताल्लुक़दारा०
भाग व २ भाग	तथा २ भाग	व्योहारपत्रसंग्रह०	न् मक़रूज़ अवध
तथा कैथी फ़ारसी	मंगलकोष	कैथी	२४ सन् १८७० ई०
नागरी	अंकप्रकाश	कानूनकैथी	ऐक्ट चौपायों का
हरूफ़सुफ़र्दात	गणितप्रकाश १ भा०	पटवारियों के क़ायदे	मदाखलत बेजा १
अक्षरारम्भ	तथा २ व ३ व ४ भाग	उर्दूकैथी महाजनी	सन् १८७७ ई०
वर्णप्रकाशिका	गणितक्रिया	टिकटकेला इसन्स	ऐक्ट मजमूआ जाबि
१ भाग तथा २ भा०	क्षेत्रप्रकाश	का ऐक्ट २ सन् १८७८	ता फौजदारी १० स०
सूरजपुरकी कहानी	क्षेत्रचंद्रिका १ भा०	ईसवी	न् १८७२ ई०
धर्मसिंहका वृत्तांत	तथा २ भाग	नागरी	ऐक्ट मालगुज़ारी म०
शिक्षावली	बीजगणित २ भा०	ऐक्ट लगान मग़र	ग़रबी व शिमाली
शिशुबोध	सकीलदायरा	बी व शिमाली १०	१९ सन् १८७३ ई०
पत्रहितैषिणी	रेखागणित १ भा०	सन् १८५९ ई०	इति
पत्रदीपिका	तथा २ भाग	इंडियनपिनलकोर्ट	
विद्याचक्र	रामायणतुलसीकृ०	मजमूआ ज़ाबिता	

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
सभाबिलास	सतीबिलास	दरसी	निर्णयसिन्धु
तुलसीशब्दार्थप्र-	क़िस्सामर्दऔरतका	अक्षरावली	संग्रहशिरोमणि
भजनावली	सांगीतप्रह्लाद	स्वयम्बोध	भगवद्गीतापंचरत्न
प्रेमरत्न	मुतफ़र्क़ाति	ज्ञानचालीसी	दुर्गापाठमूलवस-
युगुलबिलास	शनिश्चरकीकथा	दोहावली	विष्णुभागवत
चित्रचन्द्रिका	ज्ञानमाला	बालाबोध	कथायमद्वितिया
बारहमासाबलदेव	गोपीचंदभरतरी	विद्यार्थीकीप्र०पु०	अपराधभंजनस्तोत्र
मनोहरलहरी	कथाश्रीगंगाजी	किताबजंत्री	कायस्थकुलभास्कर
गंगालहरी	अवधयात्रा	गणितकामधेनु	कायस्थधर्म्मनिरूपण
यमुनालहरी	भरतरीगीत	लीलावती	तथाछोटा
जगदबिनोद	दानलीलावनाग-	पटवारियोंकीपु०४भा-	मथुरासभा
शृंगारबत्तीसी	लीला	वैद्यकभाषा	मार्क्कण्डेयपुराण
राग	दोहावलीवरत्ना-	निघण्ट	ज्योतिष
रागप्रकाश	वली	अमरविनोद	मुहूर्त्तगणपति
लावनी	रसायनप्रकाश	वैद्यजीवन	मुहूर्त्तचक्रदीपिका
क़िस्सावग़ैरह	गोकर्णमाहात्म्य	औषधिसंग्रहकल्प-	मुहूर्त्तचिंतामणिस०
नानार्थनौसंग्रहावली	श्रीगोपालसहस्र-	वल्ली-	मुहूर्त्तदीपक
ब्रह्मसार	कथासत्यनारायण	अमृतसागरब०वछो	वृहज्जातकस०
शिवसिंहसरोज	सटीक	इलाजुलगुर्वा	जातकालंकार
भक्तमाल	हनूनाटक	वैद्यमनोत्सव	जातकाभरण
इंद्रसभा	हनुमानबाहुक	दिललगन	होरामकरंद
विक्रमबिलास	जनकपच्चीसी	ज्योतिषभाषा	मुहूर्त्तमार्त्तण्ड स०
बैतालपच्चीसी	हरिहरसगुणनि-	जातकचन्द्रिका	संस्कृत उर्दू टीका
सिंहासनबत्तीसी	र्गुणपदावली	जातकालंकार	मनुस्मृति
पद्मावतीखंड	बनयात्रा	दैवज्ञाभरण	विष्णुहारीत
शुकबहत्तरी	कायस्थवर्णनिर्णय	ज्ञानस्वरोदय	महिम्नस्तोत्र
बकावलीसुमन	बिहारवृन्दावन	रमलसार	व्रतार्क
चहारदरवेश	समरबिहारवृंदावन	रमलनौरत्न	याज्ञवल्क्यस्मृति
क़िस्साहातमताई	कल्पभाष्य	इन्द्रजाल	संस्कृतभाषाटी०
अपूर्वकथा	लक्ष्मीसरस्वतीसं०	संस्कृतकीपुस्तकें	अमरकोषतीनोंकांड
क़िस्सागुलसनोबर	विजयचंद्रिका	लघुकौमुदी	याज्ञवल्क्यस्मृति
सहस्ररजनीचरित्र	सिद्धान्तसंग्रह	सिद्धान्तचन्द्रिका	संध्यापद्धति
राबिन्सनकाकृतिहा-	रामविनयशतक	भाषातत्वप्रकाश	व्रतार्क
सीताहरण	मंगलविनोद	पंचमहायज्ञ	भगवद्गीतादी०ह०

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
सभा बिलास	सती बिलास	दरसी	निर्णय सिन्धु
तुलसी शब्दार्थ प्र-	क़िस्सा मर्द औरत का	अक्षरावली	संग्रह शिरोमणि
भजनावली	सांगीत प्रह्लाद	स्वयम्बोध	भगवद्गीता पंचरत्न
प्रेमरत्न	मुतफ़र्क़	ज्ञान चालीसी	दुर्गापाठ मूल व म-
युगुल बिलास	शनिश्चर की कथा	दोहावली	विष्णु भागवत
चित्र चन्द्रिका	ज्ञान माला	बाला बोध	कथा यमद्वितिया
बारहमासा बलदेव	गोपीचंद भरतरी	विद्यार्थी की प्र० पु०	अपराध भंजन स्तोत्र
मनोहर लहरी	कथा श्री गंगा जी	किताब जंत्री	कायस्थ कुल भास्कर
गंगा लहरी	अवध यात्रा	गणित काम धेनु	कायस्थ धर्म निरूपण
यमुना लहरी	भरतरी गीत	लीलावती	तथा छोटा
जगद् बिनोद	दान लीला वनगा-	पटवारियों की पु० ४ भा-	मथुरा सभा
शृंगार बत्तीसी	लीला	वैद्यक भाषा	मार्कण्डेय पुराण
राग	दोहावली वरत्ना-	निघण्ट	ज्योतिष
राग प्रकाश	वली	अमर विनोद	मुहूर्त्त गणपति
लावनी	रसायन प्रकाश	वैद्य जीवन	मुहूर्त्त चक्र दीपिका
क़िस्सा वग़ैरह	गोकर्ण माहात्म्य	औषधि संग्रह कल्प-	मुहूर्त्त चिंतामणि म०
नानार्थनी संग्रहावली	श्री गोपाल सहस्र-	वल्ली-	मुहूर्त्त दीपक
ब्रह्मसार	कथा सत्य नारायण	अमृत सागर व छो-	वृहज्जातक भ-
शिव सिंह सरोज	सटीक	टूला जुलगुर्वा	जातकालंकार
भक्तमाल	हनूनाटक	वैद्य मनोत्सव	जातका भरण
इंद्रसभा	हनुमान बाहुक	दिल लगान	होरा मकरंद
विक्रम बिलास	जनक पच्चीसी	ज्योतिष भाषा	मुहूर्त्त मार्त्तण्ड स-
बैताल पच्चीसी	हरिहर सगुणा नि-	जातक चन्द्रिका	संस्कृत उर्दू टीका
सिंहासन बत्तीसी	र्गुण पदावली	जातकालंकार	मनुस्मृति
पद्मावती खंड	बनयात्रा	देवज्ञा भरण	विष्णु हारीत
शुक बहत्तरी	कायस्थ वर्ण निर्णय	ज्ञान स्वरोदय	महिम्न स्तोत्र
बकावली सुमन	बिहार वृन्दावन	रमल सार	व्रतार्क
चहार दरवेश	समर बिहार वृंदावन	रमल नौरत्न	याज्ञवल्क्य स्मृति
क़िस्सा हातमताई	कन्या भाग्य	इन्द्रजाल	संस्कृत भाषा टी०
अपूर्व कथा	लक्ष्मी सरस्वती सं०	संस्कृत की पुस्तकें	अमर कोष तीनों कांड
क़िस्सा गुलसनोवर	विजय चंद्रिका	लघु कौमुदी	याज्ञवल्क्य स्मृति
सहस्र रजनी चरित्र	सिद्धान्त संग्रह	सिद्धान्त चन्द्रिका	संध्या पद्धति
राविन्सन का कृतिहा-	राम विनय शतक	भाषा तत्व प्रकाश	व्रतार्क
सीता हरण	मंगल विनोद	पंच महायज्ञ	भगवद्गीता टी० ह०





